प्रो. प्रीतम सिंह द्वारा हस्तलिखित एवं दुर्लभ पुस्तक संग्रह

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 545** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : अध्यात्म रामायण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ अलग–अलग कांडों की पृष्ठ संख्या अलग अलग है। चित्र ________

आकार : 29 X 16 स०म० लिखित 22 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : अध्यात्म रामायण नामक प्रस्तुत कृति खुली हुई है जो आरंभ से उत्तरकाण्ड के चतुर्थ अध्याय तक मिलती है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : राम जीवन सम्बन्धी राम कथा का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों नमः सरस्वत्यै उों नारायणं नमस्कृत्य नरंचैवनरोत्रमम् देवी सरस्वती व्यासंततो जय मुदीरयेत श्री सूत उवाच ।।

अंत : इति श्रीमदध्यात्मरामायपध्आरामोपि सीता रहिता परात्मा विज्ञान हक केवल आदिदेवः सत्यत्युभोगानाखिलान्वित्का मुनिव्रतो भून्मुति से तितांघ्रः उत्तरकांडे चतुर्थोध्यायः च ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 546** संग्रह (क) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : भविष्यत् पुराण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नहीं

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ 1–25 चित्र ________

हाशिया काली तथा संतरी स्याही से

आकार : 26 X 10 से०मी० लिखित 12 X 6 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : यह एक संग्रह है जिसमें तीन कृतियां हैं। लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है पर आरंभ तथा अंत और महत्वपूर्ण सूचनाओं के लिए संतरी स्याही का प्रयोग भी किया है।

विशेष विवरण : यह रचना की पहली कृति है। इसमें भविष्यत् पुराण के अन्तर्गत गणपित की महिमा का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। विघ्नेशोनः स । पाया द्विदति षुजलग्रियप्रकरा ।।
ग्रेणपीतायस्मिन हृदयहस्रंव तदाखिलंहश्यतेयोम्रिदेवैः ।।

अंत : इति श्री भविष्यत्पुराणे गणपतिस्रवराजः समाप्तः ।। ....श्री शरिका भगवती ।। गंगा भगवती ।। अन्नपूर्णा भगवती महागायत्री ।। श्री यतो ।। श्रीयतांसंतु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 546** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रुद्रमल्ल

टीकाकार : –

शीर्षक : भवानी नाम सहस्रस्तवराज

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नहीं

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ 1–28 चित्र ________

हाशिया काली तथा संतरी स्याही से

आकार : 16 X 10 से०मी० लिखित 12 X 6 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : संग्रह की दूसरी कृति ।

विशेष विवरण : कृति में भवानी की सहस्र नामों की स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों नमः शिवाय । अस्य श्री पंचमुखी हनुमत्मंत्रस्य ।। श्री रामचंद ऋषि ।। अनुमान्यं चमुखी देवता ।। अनुष्टप छंदः ।।

अंत : इति श्री रुद्रियामले तंत्रेनेदिकेसरं संवादे महप्रभावो भवानीनाम सहस्रस्तवराजः समाप्त

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 546** संग्रह (ग) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : सौंदर्य लहरी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नहीं

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ 1–33 चित्र ________

हाशिया काली तथा संतरी स्याही से

आकार : से०मी० लिखित से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना ।

विशेष विवरण : देवी देवताओं की स्तुति से सम्बन्धित रचना।

आरम्भ : उों नमः स्रिपुरसंर्दप ।। उों शक्यायुत्तेयदि भवित शक्ता प्रभवितंनचेदेवंदेवोनख लऊशलः स्पंदितुमपि ।।

अंत : इति श्री शंकराचार्य विरचित सौंदर्य लहरी संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (क) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : भगवान वेदव्यास

टीकाकार : –

शीर्षक : श्रीभगवद्गीता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नहीं

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : 1846 संवत्

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–67 चित्र ________

हाशिया : काली तथा संतरी स्याही से

आकार : 9 X 13 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : संग्रह की पहली रचना । पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचनाकाल संवत् 1846 है। इसमें श्री वेदव्यास प्रणीत श्रीभगवद् गीता को लेखक द्वारा लिया गया है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामाय नमः उों अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य भगवान्वेदव्यास.षिरनुष्टुप् छंदः ।।

अंत : इति श्री भगवद्गीता सूपनिषयद् ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्मार्जुन संवादे मोक्षसंन्यास योगो नाम अष्टादशोध्यायः ।।18।। संवत् 1846 ।।

हस्तलिखित क्रमांक **PPS - 547** संग्रह (ख) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : महाभारते शत सहस्र संहिता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ 67–82 चित्र ________

हाशिया दोनों तरफ लाल स्याही से

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : ग्रंथ की दूसरी रचना । पृष्ठ के दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया खींचा हुआ है। काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया है ।

विशेष विवरण : महाभारत शतसहस्र संहिता के अंतर्गत विष्णु के सहस्र नामों का स्मरण किया गया है।

आरम्भ : श्री रामाय नमः ।। श्री कृहमाय नमः ।। उों यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार वंधनात् ।।
विमुच्यते नमस्तस्मे विस्मवे प्रभविह्मवे ।।1।।

अंत : इति श्री महाभारते शतसहस्त्र संहितायो वैयाशिका स्मृति पूर्वणिदान धर्मेकूतमानुशासने
विहमोर्नाम सहस्रकं सपूर्णम् ।।०।।०।।०।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 547** संग्रह (ग)	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह		
मूल्य	:	—		
लेखक	:	—		
टीकाकार	:	—		
शीर्षक :	:	रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र		
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :				
रचना के विषय का समय :				
रचनाकाल	:	1849		
रचना–स्थान	:			
पृष्ठ	:	82—91 चित्र ________		
हाशिया	:	दोनों तरफ लाल स्याही के हाशिये		
आकार	:	9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०		
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9		
विवरण	:	ग्रंथ की तीसरी रचना ।		
विशेष विवरण	:	रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र में सनत् कुमारों ने राम महिमा का गान किया है।		
आरम्भ	:	श्री परमात्मने नमः ।। अ रामस्तवराज लिख्यते ।। उों अस्य श्री रामचंद स्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमार ऋतिषरनुष्टप छंदः ।। श्री रामोदेवता सीता वीजं हनुमान शक्तिः श्री रामचंद प्रीर्त्धेजपे ।।		
अंत	:	इति श्री सनत्कुमार विरचिता संहितायां नारदोक्त श्री रामचंद स्तवराज स्तोत्र संपूर्णेम् श्रुभू भवतु ।। संवत् 1849 ।।		

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 547** संग्रह (घ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	ब्रह्मांड पुराण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		—
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	92—100	चित्र ________
हाशिया	:	दोनों तरफ लाल स्याही से
आकार	:	9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण :		ग्रंथ की चौथी रचना । पृष्ठों के किनारे काफी जर्जर हैं।
विशेष विवरण	:	ब्रह्मांड पुराण नामक इस रचना में नारद इंद्र संवाद के माध्यम से ब्रह्मांड की स्थिति का वर्णन हुआ है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः गोपिका नामः संरक्षिणी कुतः स रक्षिणी लोकस्य नरकान्मृत्योर्भपाचसंरक्षिणी।। चंदनं तुष्टि करणं चकिं तुष्टिकरणं ब्रह्मानंदकारणं ।।
अंत	:	इति श्री ब्रह्मांड पुराणे इंद्र नारद संवादे विक्त पंजर स्तोत्र सम्पूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (ङ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : भर्तृहरि

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग्य शतकं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : 1845

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–59 चित्र ________

हाशिया : लाल स्याही से केवल कुछ पृष्ठों पर

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–9

विवरण : ग्रंथ की पाँचवीं रचना । पीछे के कुछ पृष्ठों पर लाल स्याही का हाशिया है जबकि आगे के पृष्ठों पर नहीं है।

विशेष विवरण : भर्तृहरि का वैराग्य शतक में 101 दोहों में वैराग्य की अवधारणा बताई है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः सनत्कुमार उवाच ओं ब्रह्ममन् ब्रह्मज्ञ तत्वज्ञ ब्रह्मधाम विशारध त्वत्तोहं श्रोतुमिछामि रहस्य परमाड्डुतं ||

अंत : इति श्रीभर्तृहरि महायोर्गेद्रविरचितायो सुभासित त्रियत्यां वैराग्य शतकं संपूर्णम् शुभ । संवत् १८४५

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (च) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : नारायण चिंतामणि

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : 1845

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 59–67 चित्र ________

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : श्री वाराह नारायण मंत्रराज के अंतर्गत नारायण चिंतामणि सम्बन्धी मंत्र लेखन ।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। उों नमो भगवते वासुदेवाय नमः ।। श्रीपृथिव्युवाच ।। उों स्वामि सर्वेश्वरं ।। १ ।।

अंत : इति श्री वाराह पुराणे शामवेद विधानापृथ्वीधरगीधर संवादे श्री वाराहनारायण मंत्रराज स्तोत्रं नारायण चिंतामणि संपूर्णम् ।। श्री राधा कृहमाय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (छ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री सुदर्शन कवचं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 67–73 चित्र ________

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : सुदर्शन कवच के अंतर्गत सुदर्शन चक्र की आराधना की गई है।

आरम्भ : उों अस्यश्री सुदर्शन कवच महामंत्रस्य अंतर्जामी भगवान नारायण ऋषिः अनुष्टप छंदः श्री सुदर्शलरेम महाविध्मुर्देवता सहस्रारितिवीजं सुदर्शनायेति शक्तिः ।।

अंत : उों अयुुतः जपशि द्विदशासेन होम होम दशांसेन तर्पणं तर्पणा दशांससेन मार्जनं मार्जन दशांसेन ब्राह्मण वैष्णव भोजनं सुदर्शन संहितायां गरुड़ोपदेशः स्वाहा सांतिसुधा पुष्टिन ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (ज) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वैष्भव पत्रसारतः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 73–84 चित्र ________

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : विष्णु स्तुति का प्रसंग है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। अथ वैष्भव पत्रसारतः लिख्यते ।। अथ द्वादशाक्षर मंत्रः ।। उों नमो भगवते वासुदेवाय ।। अस्य मंत्रस्य प्रजापति ऋषिः ।।

अंत : इति नवाक्षरः ।। त्तीकृष्माय गोविंदाय अंमीं द्रव्यपरो नवाक्षरः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 547** संग्रह (झ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक :		
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१८४५
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	85– चित्र ________
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही से
आकार	:	9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	गोपाल रहस्य के अंतर्गत गोपाल सहस्रनाम की रचना की है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। श्री गोपालाय नमः ।। कैलाश शिखरे रभ्ये गौरीह छति शंकरं ।। ब्रह्मांडखिलनाथस्तवं सृष्टि संहार कारकं ।।१ ।।
अंत	:	श्री गोपालोमहदेविवसे तस्यगृहे सदा।। यस्यगृहे सहस्रना–भांतिवति च संवदा ।। ०१ ।। इति श्री संमोहनारत्य महतंत्रे श्रीगोपाल रहस्ये हरगौरी संवादे गोपाल सहस्रनाम संपूर्णम् ।। संवत् ।। १८४५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 547** संग्रह (ञ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	हरिनाम संग्रह
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	98–101 चित्र ________
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया
आकार	:	9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	हरिनाम संग्रह इस रचना में हरि नामों का रहस्य और संग्रह किया गया है।
आरम्भ	:	श्री राधा कृष्माय नमः । हरिनाम षोडशाख्यते ।। ओं श्री वासुदेवा श्री कृहमचंद्रस्य षोडशनाममहामंत्रस्य ।। श्री नारद ऋषि विशट छंदः कृहमचंदस्य ।।
अंत	:	इति श्री अद्वैताचार्य संग्रणे श्री कृष्म चैतन्य प्रकाश येत् नित्यानंद मथने ।। अच्युतानंद अस्वादने च तीर्थ विग्रह संपुटे हरिनाम संग्रह पटन्न संपूर्णम् ।। श्री मते निंवादित्याय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 547** संग्रह (ट) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री गोपाल मंत्रराज जय प्रयोग

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १८४६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 101–105 चित्र ________

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया

आकार : 9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना में गोपाल मंत्र जप के प्रभाव का वर्णन है।

आरम्भ : श्री मते निंवादित्याय नमः ।। सच्चिदानंद रूपाय कृष्मायायात्किष्टकारिणे ।। नमो वेदांतवेद्याय गुरुवुह्निसक्षिणे ।।१।। श्री कृष्ण सन्वेष्टिकहा हंरी तिनो गोपाल मंत्रस्य वरेण्य रूपिणः ।।

अंत : इति श्री भगवन्निदांदित्यमयूच्यत प्रकाशितं श्री गोपाल मंत्रराज जप प्रयोग वर्णनं संपूणं सयात् ।। १८४६।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 547** संग्रह (ठ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	शिव प्रत्रिका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	105—113 चित्र ________
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया
आकार	:	9 X 17 से०मी० लिखित 6 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	ग्रंथ की अंतिम रचना पर अपूर्ण। अंत के पृष्ठ जर्जर हो जाने के कारण फट चुके हैं। पृष्ठों में कीड़े द्वारा छेद भी कर दिए गए हैं।
विशेष विवरण	:	शिव पत्रिका नामक इस रचना में शिव को लिखा गया पत्र है जिसमें शिव को सर्वशक्तिमान देव के रूप में चित्रित किया गया है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। श्री भगवान उवाच ।। दादित्य वारेम्तद्दवुद्देव सोमवारे सर्व सिदयेः ।। मंगलवारे धन विद्यायांच चुध्रवैश्य बंधुवै श्यमेवच ।।
अंत	:	अमृतंअते सर्वेसर्वदामनस स्थितं कल कंटक प्राण घातकं ।। इति शिव पत्रिका संपूर्ण ।। कार्तिके मार्गशिव पौष माघ च ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (क) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भगवद्गीता
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	44–97 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से बना हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	खंडित ग्रंथ है जिसमें आरंभ के 43 पृष्ठ गायब हैं। विषय लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है जबकि पूर्णविराम के लिए लाल स्याही प्रयुक्त की है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है। पर कृति के पृष्ठ जुड़े हुए हैं।
विशेष विवरण	:	भगवद्गीता नामक यह रचना सातवें अध्याय से मिलती है। कृष्ण–अर्जुन का संवाद है।
आरम्भ	:	चतुर्विधि भजंते तांननास्व कृतिनोर्जुन ।। आर्तोजिज्ञासु र्र्थार्थीज्ञानीव भरतर्षभ ।।६।। ज्ञानीनित्ययुक्त पक भक्ति र्विशिष्यते ।।
अंत	:	यत्र योगेश्चरात्कृष्मो यत्र पार्थोधनुर्धरः ।। तत्र श्री विजयो भूतिध्रुर्वानीतिमुतिर्मम ।।७८।। इति श्री भगवद्गीता सु ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ख) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह निजी संग्रहालय
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	विष्णु सहस्रनाम
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६२१
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–24 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया ।
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना । लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट ।
विशेष विवरण	:	महाभारत के शांतिपर्व के अंतर्गत भीष्म पितामह एवं युधिष्ठर के संवाद के माध्यम से श्री विष्णु के सहस्र नामों का कीर्ति गान किया गया है तथा उत्तम अनुशासन की चर्चा की है।
आरम्भ	:	उों श्री रामाय नमः ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ विस्मसहश्र नाम लिष्यते ।। श्लोक ।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार वंधनात् । विमुच्यते नमस्तस्मै ।।
अंत	:	इति श्री महाभारते शतसहस्रयो वैयासकां सहितायां शांतिपर्व उत्तमानुशासने दानधर्मे श्री विस्मोर्नामसहश्रं स्रोत्रं संपूर्ण भवेत् संवत् १६२१

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ग) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भीष्म स्तवराजा
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–17 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	7
विवरण	:	पूर्ववत् । इस रचना से पहले और ख के बाद लगभग आठ–दस पृष्ठ खाली हैं। जिन पर हाशिया लगाया हुआ है।
विशेष विवरण	:	संवादात्मक शैली में महाभारत की सतसहस्र संहिता के अंतर्गत भीष्म की स्तुति का वर्णन है।
आरम्भ	:	उों नमो भगवते वासुदेवाय ।। जनमेजय उवाच ।। उों शरतल्पेशयानस्तु भारतानां पितामहः।। कथमुत्पुष्ट वान्देर्हकिंचि वियोग महाद्वारयत ।। वैशंपायन उवाच ।।
अंत	:	इति श्री महाभारते शतसहस्रयो संहितायां वैष्यसि कयांसुंब भीष्मस्तव राजा समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (घ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : : श्री अनुस्मृति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 18–26 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : महाभारत के शांतिपर्व के अंतर्गत अनुस्मृति का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री शतानीक उवाच ।। महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्र विशारद ।। अधीक्षणंक कर्म बंधस्त्र पुरुषोद्विजसत्तम ।।

अंत : इति श्री महाभारते शतसहस्रयो वैयासकां सहितायां वैयासिसां शांतिपर्वणि उत्तमानुशासवेदान धर्मोत्तरे श्री अनुस्मृत्य संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (ङ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गजेन्द्र मोक्ष

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 26–59 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही से हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ववत् । रचना का आरंभ तथा अंत लाल स्याही से किया गया है।

विशेष विवरण : भीष्म एवं युधिष्ठिर के संवाद में महाभारत के अंतर्गत गजेन्द्र मोक्ष का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री शतानीक उवाच ।। उों मयाहि देव देवस्य विस्मोरमित तेजसः ।।
ऋतासंभूतयः सर्वांगदतस्र वसुत्रतः ।।१।। यदि प्रसन्नो भगवान अनुग्राहस्मि वायदि।।

अंत : इति श्री महाभारते शतसहस्रयां संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि गजेंद्र मोक्षणां संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (च) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	चतुश्लोकी भागवत्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	49–50 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं संतरी स्याही से हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	चार श्लोकों में भागवत् महापुराण के विषय को वर्णित किया गया है ।
आरम्भ	:	श्री भगवान उवाच ।। उँ ज्ञानं परमंगुहांमेत हि ज्ञान समन्विते ।। सरहस्पंतदंगचग्टहाणो दितुंमय ।।१।। या वाहनंयपा भावायडपगुणकमैकः ।।
अंत	:	इति श्री भागवते महापुराणे ब्रह्मनार दसंवादे नाम चतुश्लोकी भागवत् संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (छ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सप्तश्लोकी गीता
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	50–58 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं संतरी स्याही से हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	सात श्लोकों में सम्पूर्ण गीता के विषय का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। जै गोपालक जैय ग्रड्ध्वजै मतायो जै वकुंठपति ।। जै गोविंदजनार्जन जादम जै केसो जै भक्ति निधे ।।
अंत	:	सो हंमे केन श्लोके स्तुत्ये वन संशयः ।।८।। इति श्री सप्त श्लोकी गीता सम्पूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (ज) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री कपाली स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 59–60 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : क्रिपाली देवी की स्तुति सम्बन्धी स्तोत्र रचित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। क्रिपाली काली कः कर वरक्त पाली रस भरी ।।
भवानीवरणी जी त्रिभुवन दवनीवस करी ।।

अंत : तुही कर्ता हर्ता पवन जल पृथ्वी गगन है। तुही भुक्ति मुक्ति सुतुम चरण मेरी लगन है। इति श्री क्रपाली स्तोत्र संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (झ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवराम स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 60–62 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : शिव महिमा एवं राम महिमा का गुणगान किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। शिव हरे शिव रांमसखे प्रभो त्रिविधताप निवारण हे विभो अजजनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरुमे वरं ।।१।।

अंत : इति श्री मत्शंकराचार्य विरचितं शिवराम स्तोत्र संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ञ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	जगन्नाथ
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	पीयूष लहरी
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	—
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	62—78 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा संतरी स्याही के हाशिये
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	गंगा की स्तुति में रचित कृति ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। समृद्ध सौभाग्यं सकल वस्तधाया किमपित न्महैश्वर्ध्य लीलाजनित जगतः रंवम परशोः ।।
अंत	:	इति श्री तैलंग कुलोट्ट भवे नयं मितराज भट्ट जगन्नाथेन निर्मितः पीयूष लहरी र्य्यास्त्यः गंगास्तवः ।। इति संपूर्ण ।। =।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (ट) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पुष्पदंताचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : महिमा स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 78–89 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली, लाल तथा संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : भक्ति की महिमा तथा नाम स्मरण का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः । महिम्नः पारन्ते परम विदुयोयद्य सदृशी । स्तुति ब्रंह्मादीनामपित दवसन्ना स्त्वयि गिरः ।।

अंत : इति श्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नास्तोत्रं समाप्तोयं ।। इति सम्पूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ठ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भजगोविंद
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	–
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	89–92 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा लाल स्याही का हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	भजगोबिंद स्तोत्र में गोविंद/कृष्ण महिमा का गान किया गया है।
आरम्भ	:	शंक्राचार्य उवाच । भज गोविंद भज गोविंद भज गोविंदं मूढमते ।।
अंत	:	भज गोविंद ।।१४।। इति श्री मछक्राचार्य विर्चितं भजगोविंद स्तोत्र संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ड) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	ब्रह्मस्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	—
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	92—93 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	ब्रह्म स्तुति हेतु स्तोत्र रचना की गई है।
आरम्भ	:	छंद भुजंगी प्रयात ।। अयं सच्चिदानंद देवादिदेवं फुरांपडादि रुडादि ईडादिसवें सेवे मुनिडादिक विडादि चंद्रादिमित्रं ।। नमस्ते नमस्ते नमस्ते पवित्रं ।।
अंत	:	कथं सुंदरं सुंदरं नामध्येय ।। नमस्ते नमस्ते नमस्ते प्रमेयं । इति ब्रह्मस्तोत्र सम्पूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ढ) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	नामाअष्टक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	–
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	93–95 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा लाल स्याही से हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	भगवान के आठ नामों का महात्म्य तथा वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	मोहनी छंद ।। आदितं अंततं मध्यतूं व्योमदतूं । वाय तूं तेज तूं नीर तूं भौमि तूं पंचहुं तत्व तैं देहतै ही करे ।। हे हरे हे हरे हे हरे हे हरे ।। १ ।।
अंत	:	सुंदरे सुंदरे सुंदरे सुंदरे ।।८।। इति श्री नामा अष्टक संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (ण) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रार्थना अष्टक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 95–96 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : भगवान् की अनुकंपा पाने के लिए आठ श्लोकों में प्रार्थना की गई है।

आरम्भ : अर्द्धभुजंगा छंद ।। अहो देव स्वामी अहं अज्ञ कामी ।। कृपा मोहि कीजै अभयदान दीजै।।१।।

अंत : करो मौज अैसी रहै बुध्ध वैसी । शुद्धा नित्य पीजै अभय दान दीजै ।।८।। इति श्री प्रार्थना अष्टक संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (त) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : ब्रह्म नामावली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 96–99 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : ब्रह्म की नामावली का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री राम जी सहाय ।। सकृच्छावण मात्रेण ।। ब्रह्मज्ञानं यतो भर्वत् ।। ब्रह्मनामावली माला ।।

अंत : हरिः उों तत्सदिति श्री मत्संकराचार्य विरचितं ब्रह्मनामावली माला संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (थ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : ज्ञान तिलकं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 99–106 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : कृष्ण एवं नारद के संवाद के माध्यम से ज्ञानपूर्ण रहस्यों का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों अपर अपार सोहं तत्वसार सोहं सभ सैमिलरह्या सभ सोहं की तार ।।

अंत : वेद सास्त्र सदा सत्यं सर्व धर्म दया परं ।। ३६ ।। इति श्री कृष्ण नारद संवादे ज्ञान तिलकं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (द) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : त्वं पदस्य वाच्यार्थः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 106–115 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : ईश्वरीय पद वंदना की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। चित्सदानंद रूपाय सर्वधी वृति साक्षिणे ।। नमो वेदांत वेद्याय ब्रह्मणे नंतमूत्तये ।।१।।

अंत : जायते अस्ति वर्द्धत्तेविपर्णिम ते अपक्षीयते ।। विनइ पतिणतीयभदाव विकारैः सहितः।। इति त्वं पदस्य वाच्यार्थः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (ध) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्रीवज्रसूच्युपनिषद्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	115–116	चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	उपनिषद् में ईश्वरीय पद वंदना की गई है।
आरम्भ	:	अथ त्वं पदस्य लक्षार्थ कथ्यते ।। सर्व प्रण ह्रदय स्थितम् द्वियं चैतन्य पदलक्ष्यार्थ।।
अंत	:	निर्मुच्यापि त्वं च सर्वो यथा सर्वसरूपवत् ।। विद्यास्ताखिल मोहोपि मोहकार्य तथात्मवित्।। इति श्री वज्र सूच्युपतिषत्संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 548** संग्रह (न) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	श्री पंचाय नदा
शीर्षक	:	आत्मबोध
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	116–126 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया
आकार	:	16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	आत्म ज्ञान की चर्चा इस कृति में की गई है।
आरम्भ	:	श्री राम जी शहाय अथ आत्मबोध ।। दोहा ।। तपगत पाप विराग युत धीर मुमुक्षु सोत ।। तिन कौं वांछित वरणिये आत्मबोध वेदांत ।। १0।।
अंत	:	इति श्री पंचायनदा सदा हूपंथी कृती आत्मबोध टीका संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (प) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : हस्तावक

शीर्षक : आत्मबोध

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 117–136 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं संतरी स्याही का हाशिया

आकार : 16 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : गुरु शिष्य संवाद में आत्मा एवं परमात्मा पर विचार किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायन्मः हस्तावक लिख्यते ।। श्री गुरु उवाच दोहा ।। हों बालक तुम कौन हौं कहा तुझारो नाम ।। कहाँ आये कहाँ जाहुते कहाँ रहत कहाँ धाम ।।१।।

अंत : इति श्री आत्मबोध हस्तावक गुरु–शिष्य संवादे संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 548** संग्रह (फ) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : विचार माला

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 136–161 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर काली एवं लाल स्याही का हाशिया

आकार : 14 X 8 से०मी० लिखित 13 X 5½ से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : संग्रह की अन्तिम अपूर्ण रचना है जो पृष्ठ 161 तक चलती है उसके बाद पृष्ठ उपलब्ध नहीं है अतः रचना खंडित है। गुरु शिष्य संवाद में गुरु ने शिष्य की आत्मज्ञान, जगत्, मृत्यु, ईश्वर आदि कई शंकाओं का समाधान किया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायन्मः ।। अथ विचारमाला लिख्यते ।। दोहा ।। नमो नमो श्री रामजू सतचित्त आनंद रूप ।।१ ।।

अंत : शिष्य उवाच ।। भगवन आत्मवान पे लीला बत करै भोग ।। वस्त बुद्धि कछु ना ग्रहैं धीजे मान अरोगा ।।१६।। अज्ञानी आशक्तिमति करै सुबंधन हेत ।। ज्ञानी के...............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 549** संग्रह (क) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सनत् कुमार ऋषि

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री रामस्तवराज स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 32 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 10 X 14½ से०मी० लिखित 5½ X 11 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 3 से 6 तक

विवरण : ग्रंथ की दूसरी कृति, जो एक से बत्तीस पृष्ठों तक चलती है इसके बाद के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। अतः रचना अधूरी है। काली, पीली एवं लाल स्याही का प्रयोग ।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में राम के सहस्त्र नाम का स्मरण कर स्तोत्र रूप में राम महिमा का गान है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। ओं देव्युवाच देव देव महादेव भक्तकानुग्रह कारक क्तः श्रुर्तमया पूर्वमंत्रणा शतकोटयः तंत्राणितंत्रजासानिस रहस्पाति पातिच ।। तानि कनि मद्यसिद्धि कल्पितानि शुभानिचं ?

अंत : रामो महाविघ्नहरो रामः श्री त्रिपुरांतकः रामः स्वं भूहंषी केशईपरः कल्मवापहः रामः पीतारुणः श्यामः सर्वदानंदवंध............................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 549** संग्रह (ख) भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	रामसहस्त्रनाम स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	21 चित्र ________
हाशिया		–
आकार	:	10 X 14½ से०मी० लिखित 5½ X 11 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		3 से 6 तक
विवरण	:	हस्तलिखित एवं जर्जर कृति । लाल, काली एवं पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना में राम स्तुति हेतु रचित स्त्रोत है। ऋषि सनत् कुमार द्वारा राम स्तुति की गई है।
आरम्भ	:	ॐ श्री गणेशाय नमः ।। ॐ श्री रामचंद्र स्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य ।। सनत्कुमार ऋषिः ।। अनुष्टप छंदः ।। श्री रामचंद्रो• देवता ।।
अंत	:	राम रत्न महंवंदे चित्रकूट पतिंहरिं कौसल्या शुक्ति संभूतं जानकी कंटभूषणं १•• इति श्री सनत् कुमार संहितायां नारदोक्त श्रीराम सत्वराजंपूर्णम् ।। श्रुभम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 550** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : शंकर भगवत

शीर्षक : केनोपनिषद् भाष्य

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 22 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 35 X18 से०मी० लिखित 26 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 16

विवरण : खुली हुई पुरानी रचना । पृष्ठ आपस में जुड़ गये हैं। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : केनोपनिषद् की भाष्य टीका शंकर भगवत् द्वारा की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों यद्‌ोत्रादेरयिष्टा नंवक्षर्वागाद्यगोचरं स्वतोःध्यक्षं परंब्रह्म नित्य मुक्तं भरामितत् १

अंत : इति श्री गोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य परम हंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीशंकर भगवॅकृतौ केनोपनिषत् पर भाष्यंसम्राप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 551** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सुरेश्वराचार्य

टीकाकार :

शीर्षक : पंजीकरण वर्तिकाभरणं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 12 चित्र ________

हाशिया –

आकार : 35 X18 से०मी० लिखित 26 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : खुली हुई कृति पर जुड़े हुए पृष्ठ जिससे रचना खंडित होने की स्थिति में है। काली स्याही से सुस्पष्ट लिखाई में लिखी गई है। आवश्यकतानुसार लेखक ने पृष्ठों के किनारों पर भी लिखा है। रचना को उपयुक्त देखभाल की आवश्यकता है।

विशेष विवरण : रचना में शरीर के विभिन्न अंगों एवं आत्म तत्व पर चर्चा है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ईहखलुपरमेश्वराराद्यनार्थ मनुष्टितैर्नित्यादि कर्म्मभिः परिश्रद्धांतःकरणाम तप्................विवेकेहात्रमुत्रार्थ फलभोगवैराग्य समदमादि साधनषटक सम्पन्मुतत्वार व्यसायन वतुष्ट.........

अंत : अनया पंचीकरण वर्तिकाभरणवर्तिकाभरण नूपयाकृत्पाकृस्मः प्रीतोभवताहुयाश्च समीत्पमोक्षंताम् १ ।। ।। इति श्री पंचीकरण वर्तिकाभरणं समाप्तम् संवत् १८१ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 552** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : भगवदानंद

शीर्षक : छांदोग्य भाष्यटीका (पंचम प्रपाटकः)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–44 चित्र ________

हाशिया –

आकार : 35 X18 से०मी० लिखित 28 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14–15

विवरण : खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : ग्रंथ में छांदोग्य उपनिषद की भाष्य टीका परिम्राजकाचार्य के शिष्य भगवदानंद ने की है।

आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः ओं वृभमन्द्यवर्तिण मानाप्पा यस्य संगतिं संगिरते सगुणेति विद्यांतरपंचाग्नि विद्यातिरिक्रारागुण.........

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीश्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंदज्ञान कृतायां छांदोग्य भाषा टीकायां पचमः प्रपाटकः समाप्तः ५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 553** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	भगवदानंद
शीर्षक	:	छांदोग्योपनिषद् भाष्य टीका (तृतीय प्रपाटकः)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना—स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1—36 चित्र ________
हाशिया	:	—
आकार	:	36 X19 से०मी० लिखित 28 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		13—15
विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	भाष्यकार भगवदानंद ने तृतीय यप्रपाटक की सरल भाष्य टीका लिखी है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः कर्मागबद्ध वितानं परिसमाप्य कर्मस्या दित्यस्य स्वतंत्रो पासिन विय्पर्थ मटपायांतरमारभमाणः संवयं प्रतिजानीते असाविति ।
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीश्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृतायां छांदोग्यापनिषद् भाष्यटीकायां तृतीयः प्रपाटकः समाप्तः ।।३

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 554** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : भगवदानंद

शीर्षक : छांदोग्य उपनिषद् भाष्य टीका (प्रथमोध्यायः प्रपाटकः)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–48 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 37 X19 से०मी० लिखित 28 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14

विवरण : खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।

विशेष विवरण : भाष्यकार भगवदानंद द्वारा छांदोग्योपनिषद् की टीका सरल भाषा में लिखी गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः नमोजन्मादि संवंयग्यरिखंसहेतवे हरये परमानंद वपु षेपरमात्मने नमसरंप तसंदोह सरसी रूहभानवे गुरवे परपतौद्ययांत यंसपटीयसे छंदोगाना

अंत : इति श्री मद् गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भद्शंकर भगवत्पादकृतौ छादोग्यापनिषदवरेण प्रथमः प्रपाटकः समाप्तः ।।..............इति श्री मद् परमहंस परिव्राजक श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंदलाल कृतायां छादोग्य भाष्य टीकायां प्रथमोध्यायः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 555** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	श्रीशंकर भगवतः
शीर्षक	:	वृहदारण्यक भाष्य (तृतीय अध्याय)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना—स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1—250 चित्र ________
हाशिया	:	—
आकार	:	38 X 20 से०मी० लिखित 28 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10—14
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली स्याही से सुस्पष्ट एवं सुन्दर लिखाई में टीका लिखी गई है। महत्वपूर्ण शब्द दर्शाने के लिए काले शब्दों पर संतरी स्याही तथा अतिरिक्त शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	वृहदारण्यक की इस भाष्य टीका में ब्रह्मविद्या का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों यदविद्यावशाद्विश्व दृश्यते रसनाहिवत् यद्विद्ययाचत द्वानिस्तंवंदे ।।
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीश्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्येण भगवदानंद ज्ञानेन कृतायां वृहदारण्यक भाष्य तात्पर्य टीकायां तृतीयोध्यायः समाप्तः ३ ।। श्रुभम्

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 556** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	शंकर भगवतः
टीकाकार	:	भगवदानंद
शीर्षक	:	वृह्दारण्यक भाष्य (चतुर्थोध्याय)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1—108 चित्र ________
हाशिया	:	—
आकार	:	38 X20 से०मी० लिखित 27 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		15
विवरण	:	खुली हुई हस्तलिखित रचना । काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया है। महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने के लिए काली संतरी तथा अतिरिक्त शब्द मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	वृह्दारण्यक नामक इस ग्रंथ में संवादात्मक शैली मतें ब्राह्मण धर्म और ब्रह्मम विद्या का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः तृतीयेध्याये सूत्रित विद्याविद्ययोरचिया प्रयंचिता संप्रति विद्यां प्रयंचयितं चतुर्थम्ध्याय मारभमाणोवृतं कीर्तयति आत्मेति ....
अंत	:	इति शंकरभगवतः कृतौवृहदारण्यक वृतौ चतुर्थोध्याय समाप्त ।। श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्यभगवदानंद ज्ञान कृतायां वृहदारण्यक भाष्यटीकायां चतर्थोध्यायः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 557** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : शंकर भगवतः

शीर्षक : वृह्दारण्यक भाष्य (सप्तमोध्याय)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : —

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना—स्थल : —

पृष्ठ : 1—43 चित्र _________

हाशिया : —

आकार : 38 X 20 से०मी० लिखित 27 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10—14

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : श्री शंकर भगवत द्वारा सरल भाषा में वृहद् आरण्यक ग्रंथ की टीका की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः पूर्वस्मित्तध्याये ब्रह्मात्म ज्ञानं सफलं सांगोपांगंवादन्यायेनोक्तं इदांनी कांडांतर भवतारपति पूर्णमिति पूर्वाध्याये ....

अंत : इति श्री गोविंद भगवत पूज्यपाद शिष्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकरभगवतः कृते वृहदा रण्यभाष्य सप्तमोध्यायः ७

भगवदानंदज्ञान कृतायां वृहदारण्यरूभाष्यटीकायां सप्तमोध्यायः ७ समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 558** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : भगवदानंद

शीर्षक : वृह्दारण्यक भाष्य टीका (अष्टमोध्याय)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–57 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 38 X 20 से०मी० लिखित 28 X 12 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13–15

विवरण : खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही के वर्णों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : वृहदारण्यक ग्रंथ के आठवें अध्याय का भाष्य टीका परिव्राजकाचार्या के शिष्य भगवदानंद द्वारा लिखा गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उोंकारो दमा दित्रयं ब्रह्मोपासना नितत्फलं तदर्थागतिरादित्याधुपा स्थानमित्येषोर्थः सप्तमेनिर्वृतः संप्रति प्राधन्ये नाबह्मोयास फलं...

अंत : इति श्री परिव्राजक श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृतायां वृहदारण्यक भाष्यटीकायां अष्टमोध्यायः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 559** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : श्रीरामतीर्थ

टीकाकार : —

शीर्षक : मैत्र्युनिषद् दीपिका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : —

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना—स्थल : —

पृष्ठ : 1—96 चित्र ________

हाशिया : —

आकार : 27 X 12 से०मी० लिखित 20 X 7 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लेखक द्वारा किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं बारीक है।

विशेष विवरण : मैत्र्युनिषद् दीपिका में मैत्र्य उपनिषद् की व्याख्या की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। प्रणम्पष्मं प्रणताभय प्रदं गुरुं स्तथाकृष्म मुखांस्तद्दात्मनः ।। मैत्रायणन्मं श्रुतिमर्थतः न्प्रासध्यविध्मोः परमेपदेःर्पये ।।१ ।।

अंत : इति श्री मत्परमहंस परिव्रातकाचार्य श्रीरामतीर्थविरचिता पांमैत्र्युनिषद्दीपिका पांसघृमप्रपाठक समाप्तः ।। नमस्तस्मै भगवते एमापाकुंठमेघसेत्येनांत ह्दयस्थे वनुधमानो विचेष्टयो विचार ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 560**	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह		
मूल्य	:	–		
लेखक	:	श्रीरामतीर्थ		
टीकाकार	:	–		
शीर्षक	:	वाजसनेय संहिता		
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–		
रचना के विषय का समय :				
रचनाकाल	:			
रचना–स्थल	:	–		
पृष्ठ	:	1–7 तथा 35 से 54	चित्र ________	
हाशिया	:	–		
आकार	:	27 X 12 से०मी०	लिखित 21 X 7 से०मी०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		5		
विवरण	:	अपूर्ण कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग पहले पृष्ठों में किया गया है। पहले आठ पृष्ठों में अक्षर का आकार भी बड़ा है बाद के पृष्ठ नहीं हैं और फिर पृष्ठ 35 से आरंभ होता है। पृष्ठ 47 पर वाजसनेय संहिता का सातवां अध्याय समाप्त होता है और कृति आगे बढ़ती है।		
विशेष विवरण	:	पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर 'पुस्तक सहिता की' लिखा है। अनेक देवताओं की स्तुति इसमें की गई है।		
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। श्रीवेद पुरुषाय नमः ।। उों इषेतोर्त्तोत्वा ।। उों इषेत्वोत्वोत्तेतिधायवस्थ देवोवः राविताघ्रार्थयत श्रेष्ठतमायकर्मणा		
अंत	:	मरुतोघस्य म्मरुतोघस्वहिक्षय पाद्यादिवोधिमहसः ससुगोपात भोज................		

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 561** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	मातृकाभिधान प्रकरणं (मातृका निघंटे)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१८६६ (1896) संवत्
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	12 चित्र ________
हाशिया	:	–
आकार	:	30 X 14 से०मी० लिखित 22 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9
विवरण	:	खुली हुई हस्तलिखित रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। दो तरह की लिखाई है।
विशेष विवरण	:	मातृकाभिधान नामक इस रचना में वीजप्रकरण नाम का प्रथम पटल की रचना लेखक द्वारा की गई है इसका अर्थ है कि मातृकाभिधान के और भी पटल हो सकते हैं। शिव (ईश्वर) पार्वती के संवाद में रचना का विकास हुआ है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथप्रणवसष्टेः विंदुपरात्माचिन्महर्त्ति र्विसर्गः शक्तिरूपिणी अंअःइत्थंहिधामागरातषोः सृष्टयेस्मृतः ।।१ ।।
अंत	:	इति मातृका निघंटे ईश्वर पार्वती संवादे मातृकाभिधानप्रकारणं वीजप्रकरण नाम प्रथमं पटलं ।। संवत् १८६६ ।। 888..........................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 562**	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह		
मूल्य	:	–		
लेखक	:	वररुचि		
टीकाकार	:	–		
शीर्षक	:	श्रुतिबोध सुबोधिनी टीका		
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–		
रचना के विषय का समय :				
रचनाकाल	:	–		
रचना–स्थल	:	–		
पृष्ठ	:	1–8	चित्र ________	
हाशिया	:	–		
आकार	:	से०मी०	लिखित	से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12–13		
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लेखक द्वारा किया गया है। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है।		
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में छन्दों के विभिन्न रूपों का उनकी परिभाषाओं सहित वर्णन किया गया है।		
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों अहंतत्नाम श्रयोयंछंदः शासुकथयिष्यामि किंभू अविस्तरंन विद्यते विस्तारो यस्मित्ततत्किं येन श्रतमात्रेण सताप्रस्तारादिनाविनैवछंद सामार्यानुष्टभादीनां ।।		
अंत	:	सग्धरा यद्यपिंछं दासि भूयां सिर्व्रते परमत्र प्रसि हान्येव क्वनिचिहुक्तनिभ्रन्यानिघवृतरत्नाकरादिभ्योऽसेया इंतिम्फ्रति बोध सुबोधिनी टीका समाप्त।।		

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 563** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : पातंजल योगशास्त्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६१७ (1917)

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–99 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 32 X 15 से०मी० लिखित 23 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : योगशास्त्र पर यह पूर्ण रचना है। अक्षरों का आकार बड़ा है। काली स्याही का प्रयोग हुआ है। अंत में रचनाकार ने समय भी दिया है।

विशेष विवरण : पतंजलि के योगशास्त्र पर लिखी गई यह रचना कैवल्य के चतुर्थ पाद पर आधारित है।

आरम्भ :

अंत : इति श्रीधरेश्वर विरचितायां राजमार्तंडा भिधानायां पातंजलयोगशास्त्र वृत्तौ कैवल्य पादश्चतुर्या ष ।। समाप्तः ।। श्रुभम् ।। संवत् १६१७ (1917)

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 564** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	हरिप्रेगमिश्र
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वाक्यवाद दीपिका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१६५३
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–33 चित्र ________
हाशिया	:	–
आकार	:	30 X 12 से०मी० लिखित 24 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10
विवरण	:	खुली हुई पूर्ण रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	व्याकरण के अंतर्गत वाक्य रचना पर प्रस्तुत कृति आधारित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः सुभिङंतवयो वाक्य मितिप्रमाणानुसारेण संवत् वयतेसतितिङं तदयतस्यामिलितिस्य प्रत्येकेवासंवत्वयता देवीका लक्षणते परस्परमव्याप्तिः ।।
अंत	:	श्रय काल पूर्वताभावकशुद्धचिज्ञान निरस्त विपरीत भवानीभूत श्रीमदुदयसिंह प्रभुपर्य्यजीवक हरियप्रेत मिश्रीनिर्मित वाक्यवाददीपिका समाप्ति मतमततिलतेय देवी दयालुवेन श्रुभस्तु संवत् १६५३ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 565** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्री होराचक्रं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1—10 चित्र ________
हाशिया	:	—
आकार	:	31 X 14 से०मी० लिखित 23 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियाः		8
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। बीच–बीच में ज्योतिष सम्बन्धी पंचांङ्ग भी बने हुए हैं। लिखाई साफ एवं सुंदर है।
विशेष विवरण	:	श्री होराचक्र नामक यह कृति ज्योतिष से संबंधित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। प्रणभ्य भारंती भक्ग गणेशं चरातानन‌म् ।। समाहृसान्य ग्रंर्थ भ्यो होराचक्रं विरच्यते ।।१।। अथ तिथयः ।।
अंत	:	वारशत्रु विनाशाय नक्षत्रं पापनाशनम् ।। तिथिरापुर्वलं प्रोझमेवं श्रत्वा फलं भवेत ।।८0 ।। इति श्री होराचक्रम समाप्तम् ।। श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 566**	भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	महष्याश्वलायन	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	सरस्वती स्तोत्रं	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		–	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–3	चित्र ________
हाशिया	:	–	
आकार	:	28 X 16 से०मी०	लिखित 20 X 11 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10	
विवरण	:	तीन पृष्ठों की कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग हुआ है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।	
विशेष विवरण	:	31 श्लोकों में सरस्वती स्तोत्र की रचना की गई है। यह रचना सरस्वती स्तुति से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः।। उों श्री सरस्तैु नमः ।। उों श्री रामाय नमः ।। तरुण सकल मिंउ विभूति शुभ्र काती ।।	
अंत	:	शुचिता शुयेत्य संध्यं सुवांछित फलायु ययाति शीघ्रं ।। ३१ ।। इति महष्याश्वलायन कृतं सरस्वती स्तोत्रं समाप्तं शुभंमस्तु ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 567**	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह		
मूल्य	:	—		
लेखक	:	श्री शंकराचार्य		
टीकाकार	:	—		
शीर्षक	:	विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रं		

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : —

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:			
रचना–स्थल	:	—		
पृष्ठ	:	1–71	चित्र ________	
हाशिया	:	—		
आकार	:	32 X 15 से०मी०	लिखित 23 X 9 से०मी०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10		
विवरण	:	71 पृष्ठों की खुली हुई पर पूर्ण रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट और पठनीय है।		
विशेष विवरण	:	श्रीवैश्य और युधिष्ठिर के संवाद द्वारा श्री विष्णु के सहस्त्र नामों की व्याख्या की गई है।		
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। श्रीरामचंद्राय नमः ।। उों नमः शिवाय श्री सरस्वत्यै नमः श्री गुरवे नमः सहस्त्रमूर्तेः पुरुषोतमस्य सहस्त्र नेत्रानन पाटवाहोः		
अंत	:	सहस्रनाम संवेधि व्याख्या सर्वसुखा वहा श्रुतिस्मृतिन्याय मूलारचिता हटिपद्योः इति श्री गोविंद भगवत्पाद शिष्य श्री शंकराचार्य कृतं सहस्त्र नाम विरणं पूर्णं समाप्तम् ।।		

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 568** संग्रह (क) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : दुर्गासप्तशती

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–125 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 23 X 12.5 से०मी० लिखित 16 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : खुली रचना । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों एवं पूर्णविरामों के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई स्पष्ट एवं मोटे आकार की है।

विशेष विवरण : मार्कण्डेय पुराण के आधार पर दुर्गासप्तशती का वर्णन है। मां की महिमा एवं कृत्यों का गायन किया है।

आरम्भ : अथ ध्यानम् ।। खड्गं चक्र गदेषुचाय परिद्यान् शूलंभुसुंडी शिरः ।। शंखं सदयंतीक रैसि नयनां सर्वातभूषावृतां ।।

अंत : इति मार्कण्डेयपुराणे सवावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमाहात्स्ये सुरथ वैश्यवश्रदातोना मत्रयो दशोध्यायः ।।१।। समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	: **PPS - 568** संग्रह (ख)	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	श्रीलयस्तवः (लय)	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	112–120	चित्र ________
हाशिया	:	–	
आकार	:	23 X 12.5 से०मी०	लिखित 16 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6	
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना ।	
विशेष विवरण	:	रचना में श्री की स्तुति की गई है।	
आरम्भ	:	उों त्रिपुर सुंदयै। नमः । श्री भैरवाय नमः ।। उों पेंद्रस्येव शरासन स्पदयतोमध्ये ललाट प्रभो शोल्की कांति मनुस्य गौरि वशिरस्या तन्वती ।।	
अंत	:	त्वद्ध त्रया मुखरी कृते नरचितं यस्मा । न्मया पिझवम् ।।२१।।इतिश्री लयस्तवः ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 568** संग्रह (ग) भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : कृष्णदत्त

टीकाकार : –

शीर्षक : इंद्राक्षी स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : १६२४

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 120–125 चित्र ________

हाशिया : –

आकार : 23 X 12.5 से०मी० लिखित 16 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना ।

विशेष विवरण : रचना में इंद्राक्षी देवी की स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों श्री इंद्राक्षी भगवत्यै नमः ।। उों अस्य श्री इंद्राक्षी देवता हंवीजं ।। भुवनेश्चरी शक्तिः ।। भवानी कीलकं गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं ।।

अंत : इंद्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेवन संशयः ।।१६।। इति श्री इंद्राक्षी स्तोत्रं समाप्तम् ।। संवत् १६२८ ।। कृहमदत्तेन लिपि कृतम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 569** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	वेदांत सूत्रवृत्तिः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित की नकल हस्तलिखित है।

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	58+30+49+17 चित्र ________
हाशिया	:	—
आकार	:	29 X 13 से०मी० लिखित 9.5 X 26 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15
विवरण	:	खुली हुई पर खंडित कृति । काली स्याही से लिखी गई है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने के लिए काली स्याही के अक्षरों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया है। रचना 22 पृष्ठ से उपलब्ध है जो पृष्ठ 58 तक प्रथम अध्याय समाप्त होता है। इसी प्रकार अन्य अध्याय 30,49,17 पृष्ठों के हैं।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत कृति में वेद सूत्रों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है। इसमें विभिन्न विषयों पर विचार मिलते हैं।
आरम्भ	:	सिन्यादे सूत्राण्य कृत्तिंशत एवं प्रथम पादे स्पष्ट ब्रह्मलिंगा निवाक्यानि सर्वज्ञ सर्वशक्ति जगद्त्पत्ति लपकारण ब्रह्म परतयानीतानिकानि ।
अंत	:	इति श्री ब्रह्मसूत्रवृत्तौ ब्रह्मामृत वर्षिण्यां चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थ पावतः ।। इति वेदांतसूत्रवृत्ति समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 570** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री रामगीता (उत्तरकांड)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	2–7 चित्र ________
हाशिया	:	दोनों ओर संतरी स्याही से हाशिया खींचा गया है।
आकार	:	12 X 20 से०मी० लिखित 9 X 17 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8
विवरण	:	खुली हुई खंडित कृति । पृष्ठ एक उपलब्ध नहीं है। लाल एवं काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है। कृति समाप्ति पश्चात् किसी अन्य लिखाई में नृसिंह स्तुति लिखी गई है।
विशेष विवरण	:	अध्यात्म रामायण का उत्तरकांड जिसमें श्री राम और महेश्वर (शिव) के संवाद के माध्यम से रामकथा पर प्रकाश डाला गया है।
आरम्भ	:	त्मास्यधिशोसिनिरामकृति स्वयं प्रतिपसेज्ञानदृशांम हापित्तेपादावुजम्पहितसगसंगिनां ।।४।। अहं प्रपन्नोस्मि पदावुजं प्रभोभवापवर्गतवयोतिभावितंपथा जसा ज्ञानम पारवारीधि सुखतरि व्यामिंतथानुसाधिमां ।।५ ।।
अंत	:	महचनेषुभक्ति ।।६२।। राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम इति श्री अध्यात्मरामायेणे नमा महेश्वर संवादेनुत्तर कांडे श्री रामगीतायां पंचम श्रगलक्षेतंकोटानं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 571**	भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	काशीनाथ	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	शीघ्रबोध	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	—	
पृष्ठ	:	1–13	चित्र ________
हाशिया	:		
आकार	:	27 X 14 से०मी०	लिखित 2 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11	
विवरण	:	खुली हुई पर पूर्ण रचना। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ–पृष्ठ पर विवाह लग्न कुंडली भी बनाई गई है।	
विशेष विवरण	:	लेखक काशीनाथ ने प्रस्तुत ज्योतिष संबंधी इस रचना में विवाह के विविध लग्न एवं विभिन्न मासों के मुहूर्तों का वर्णन किया है।	
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। अथ शीघ्रबोधशरंभः ।। उों भासयं तंज गङ्गा सानत्वा भास्वंतमव्ययं ।। क्रियेते काशीनाथेन शीघ्रबोधायासंग्रह ।।१।।	
अंत	:	इति श्री काशीनाथ कृतौ शीघ्रबोध विवाह प्रकरर्णप्रथमं समाप्तम् ।। श्रीरस्वत।। श्रुभमस्तु ।। श्री काशीनाथाय नमः ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 572** भाषा <u>पंजाबी लिपि देवनागरी</u>

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : रामायण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 7–96 चित्र ________

हाशिया :

आकार : 10 X 32 से०मी० लिखित 8 X 31 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 36

विवरण : अधूरी कृति । नीली एवं काली स्याही का प्रयोग। रामायण को काव्य रूप दिया गया है।

विशेष विवरण : अयोध्याकांड के अंतर्गत ऋषि विश्वामित्र के अयोध्या आगमन से रचना का आरंभ है जो भरत के चित्रकूट मिलन तक चलता है। रचना के आगे और पीछे के पृष्ठ नहीं हैं।

आरम्भ : है सी बनवासीआं दा कोई हाल ना
झली जावे चत्तो पहिर दी इह झाल ना
विश्वामितर ओथे तपा उग्घा सी
वेखिआ ने ओस ने इह चौड़ झुग्ग सी ।

अंत : राम जी अडोल मिट्ठे बोल बोलदे
वचनां दे पेचे हिआर नाल खोलदे
भरत बोलिआ एं राजनीत है
धरम दे घर पर होर रीत है
वचनां तों बचण दे रंग होर ने
धरम निबाहुण दे ढंग होर ने ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 573** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	सत्यव्रत ऋषि
शीर्षक	:	श्री भावार्थ दीपिक (अष्टम अध्याय)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–52 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली, संतरी, लाल स्याही का हाशिया
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		17
विवरण	:	खुली कृति । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए । लिखाई साफ एवं सुबोध है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत कृति में श्रीमद्भागवत के अष्टम अध्याय में मत्स्यावतार कथा का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों अथाष्टमेचतुर्विशत्पध्यार्यैमनुवर्णनं तत्सत्तैर्ऋषिदैवेद्वैर्मूर्तिभिश्च हरेः सह १ तत्तधर्माहिनिविद्याश्चतुर्वर्णाश्रितः शुभाः मन्वतरे हरेर्जन्मकर्माविव महीयसः।।
अंत	:	सत्यव्रतानांसत्यव्रतस्य ऋषीणां व्रजत्रिणोद्धनीतिवत्त लिंगसमवाया द्वह वचनंजिस्तमिनं मायामत्स्यय ६१ इति श्री भावार्थ दीपिकायामष्टमस्वंधेव चतुर्विशोध्यायः समाप्ताष्टमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	: **PPS - 574**	भाषा	संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	श्रीधर	
शीर्षक	:	श्री भावार्थ दीपिक (भागवत नवम् स्कन्ध)	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–50	चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली, संतरी, लाल स्याही से हाशिया	
आकार	:	33 X 19 से०मी०	लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12–18	
विवरण	:	ग्रंथ खुला है। काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। चारों ओर हाशिये भी लगाये हैं।	
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में श्रीमद्भागवत के नवम् अध्याय की विषय वस्तु का भावार्थ किया गया है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों गुणायं गुणतावा पै ज्ञाणते करुणानिधिं तमहं शरणं यामि परमानंद माधवं १	
अंत	:	दिश्य स्वधाम स्वे नैवडूपेणजगामेति ६७ इति श्री भावार्थ दीपिकायां नवमे चतुर्विशो ध्यायः समाप्तः नवमः ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 575** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भगवत महापुराणेदशम स्कंध पूर्वाद्ध (भावार्थ टीका)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–144 चित्र ________
हाशिया	:	काली, लाल एवं संतरी स्याही से चारों ओर हाशिया ।
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	खुली हुई कृति । लिखाई के लिए काली स्याही का प्रयोग । लिखाई सुबोध एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में श्रीकृष्ण द्वारा विभिन्न लीलाओं के बाद अक्रूर को गोकुल भेजने का प्रसंग है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति प्रजाभ्यः उों श्रीगणेशाय नमः उों नमो भगवते वासुदेवाय उों विश्व सर्गविसर्गादि नवलक्षण ललितं श्रीकृस्माख्यं परंधाम जगद्धाम नमामि तत् १
अंत	:	इति श्री भगवते महापुराणे दशम स्कंधे अक्रूर पुनरप्रेषणं नाम एकोनपंचा शतोमध्यायः ५६।। समाप्तोयं पूर्वार्धः।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 576** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : श्रीधर

शीर्षक : भागवत दशम स्कन्ध टीका सहित (भावार्थ दीपिका)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–133 चित्र ________

हाशिया : चारों ओर संतरी, काली तथा भूरी स्याही से हाशिये बनाये गये हैं।

आकार : 33 X 14 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10–13

विवरण : खुली हुई रचना । लिखने के लिए काली तथा हाशिये के लिए संतरी एवं भूरी स्याही का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ भागवत् का दशम स्कन्ध सम्पूर्ण है।

विशेष विवरण : भागवत् के दशम स्कन्ध की भावार्थ दीपिका में कृष्ण चरित का गायन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों ततः पंचाशप्त मेतजग संधभपाखि कारयित्वां तुधौ डगतन्निनाय निजं ततं कपटान्कपटैरे वहत्वादैत्पानम् त्रतः ।।

अंत : इस्तरेति दुर्लभ पुरुषार्थ त्वमाह ग्रामादिति ।५०५१। इति श्री भावार्थ दीपिकायां उतरार्ध नवशीतितमः समाप्तं दशमस्कंधे उत्तरार्धे संपूर्ण राम राम ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 577** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	श्रीधर
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (एकादश स्कंध)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–93 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर काली, लाल एवं संतरी स्याही के हाशिये ।
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में भगवान के विभिन्न अवतारों का वर्णन है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों नमः श्री परमहंसा स्वादितचरणकमल विअकरंदाय भक्त भक्त जनमानस निवासाय श्री रामाय नमः उों विजयंते परा नंद कृस्मया दरजंस्रजः याधृता मूर्घ्निजायंते महेंद्रादिमहास्रजः ?
अंत	:	इति श्री भगवते महापुराणेयकादश स्कंधे वैयासिक्यां परमहंस संहितायां अष्टादशसहस्रों श्री भगवदुद्धवंस संवादे मौस लो पाख्याने पर त्रिशोध्यायः समाप्तोयंयकादशः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 578** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	श्रीधर
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (द्वादश स्कंध)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1–41 चित्र ________
हाशिया	:	चारों ओर लाल, काली एवं संतरी स्याही का हाशिया ।
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		15
विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण आई	:	प्रस्तुत स्कंध में हरि महिमा का गायन हुआ है। अनेक कथाएं भी हरिभक्तों की हैं।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों जयंति श्रीपरानंद कृयामंगल सदृशः यानित्यमनुवंर्तते संपदो विगर्तोहशः १
अंत	:	नाम संकीर्तनंयस्य सर्वपापप्रणाशतं प्रणामो दुःखशमनः तंनमामिहरियरं २३ ।।: :।। इतिश्री भागवते महापुराणे अष्टादश सहस्राणि हिंसायां द्वादश स्कंधे सूतोतेत्रयोदशोध्यायः १३ समाप्तं भागवतनाम पुराणं ३ ।।शुभमस्तुः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 579**	भाषा <u>पंजाबी लिपि देवनागरी</u>
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	—	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	रामायण	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : अनुवाद पंजाबी भाषा में

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:		
रचना—स्थल	:	—	
पृष्ठ	:	1—443	चित्र ________
हाशिया	:	काली, लाल एवं संतरी स्याही से चारों ओर हाशिया ।	
आकार	:	8.5 X 7 से०मी०	लिखित 7.5 X 5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		20	
विवरण	:	प्रस्तुत जिल्द में रामायण का पंजाबी में अनुवाद किया गया है। भाषा पंजाबी है पर लिपि देवनागरी है। लिपिकार ने काली स्याही का प्रयोग किया है। जिल्द खुली हुई है व पन्ने बिखरे पड़े हैं।	
विशेष विवरण	:	रामायण महाकाव्य का पंजाबी भाषा में लिप्यंतरण किया गया है जो बालकाण्ड से आरम्भ होता है।	
आरम्भ	:	'बालकाण्ड' (अयुध्या विचराजा दसरथ राज करदा सी) बहुत चिरां दी गल्ल ए । सरजू दे कंढे कोसल देस वसदा सी । ओथों दे वासी भागां भरे ते सभनी दाईं सुखी सन ।	
अंत	:	अनन्त दा बवान गड़ गड़ करदा, लक्खां सूरजां नूं शरमांदा, भगवान् रामचन्द्र लई आइआ ते भरत ते शत्रुघ्न ते होर सज्जन सरबन्धी उस थां चलदे होरा जित्थे सूरजां चन्नां दे असंख लाटू जगमग करदे ने जित्थे देवते देवीआं दास दासीआं वसा के फिरदीआं ने, जित्थे परम आनन्द हर वेले लैहरां मारदा ऐ जित्थे जा के कोई मुड़ आउण दा नाउं नहीं लैंदा ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 580** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	लंबोदर
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	होम पद्धति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–24 चित्र : मशीनी चित्र पहले पृष्ठ पर
हाशिया	:	
आकार	:	23 X 12.5 से०मी० लिखित 19 X 9.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	प्रकाशित प्रति है। पहले पृष्ठ पर लाल स्याही का हाशिया बनाकर बीच में रचना का शीर्षक है और दूसरे पृष्ठ पर लाल रंग से छोटे–छोटे तीन चित्र बने हैं।
विशेष विवरण	:	लंबोदर द्वारा हवन पद्धति का वर्णन इस रचना में है। जिसे लंबोदरी होम पद्धति भी कहा गया है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। अथ होम पद्धति प्रारम्भः ।। सुस्नातः प्राङ्मुखोभूत्वा यजमानः कृताह्निकः ।।
अंत	:	सर्वन्कामानवाप्रोतिस्वर्गलोके महीयते ।।१।। इति लंबोदर विरचिता होमपद्धतिः समाप्ता ।। श्रीमद्गोपालकृष्णः प्रसन्नो भवतु ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 581** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	उदासीन साधु स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–34 चित्र : पहले पृष्ठ पर रंगदार चित्र
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हाशिया
आकार	:	23 X 13 से०मी० लिखित 18 X 9.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		13
विवरण	:	प्रकाशित कृति । खुले हुए पृष्ठ हैं। पहले तीस पृष्ठों के बाद फिर रचना की दूसरी प्रति शुरु हो जाती है जो फिर 1 से 34 तक चलती है। 34वाँ पृष्ठ कुछ फटा है जिससे प्रति खंडित हो जाती है।
विशेष विवरण	:	उदासीन साधु द्वारा स्तोत्र रचना की गई है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। गणेशं वागीशां शमलश मनेक्षौ हरिहरौ सुसिद्धौ श्रीगंगा शिरसि निहितां शंभुमुनिना ।। प्रयागं श्रीकाशीं सकलजन मुक्तो घृतमती नमामि श्रीव्यासं परमसुखदं नानक गुरुम ।।१ ।।
अंत	:	ब्रह्मानंदेन प्रीत्यर्थ साधूनां च जगत्पतेः............रामोदासीन शिष्य ब्रह्मानंद विरचिता मनोरमारत्योंदासीनस्तोत्र व्या................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 582** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	भट्टोजि दीक्षित
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	मनोरमापामुत्तरार्द्ध
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१८६८ जेठ कृ० ३,१८५८, १८६७
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	123, 102, 215 चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हाशिया
आकार	:	29 X 12 से०मी० लिखित 23.5 X 7.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9–11
विवरण	:	खुली हुई 13 पृष्ठ की रचना । पहला पृष्ठ पीले रंग का है इसके बाद पृष्ठ नं0 50 भी पीले रंग का है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। तीन भागों में पूर्व मध्य तथा अंत को लिया गया है।
विशेष विवरण	:	सिद्धान्त कौमुदी की व्याख्या की गई है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः घातोः पयपिघातोरै काचो हलादेरिति सूत्राद्धा तो रित्पनुवर्त्ततण्वतथापि आर्द्ध धातु के संज्ञाया आश्रित शब्द व्यापार तुलाभय पुतर्द्धातु ग्रहणं ।।
अंत	:	सिद्धान्त कौमुदी व्याख्या सपंप्रौठ मनोरमा भट्टोजि दीक्षितेन विरचिता प्रौट मनोरमायामुत्तरार्द्ध समाप्तम् सं0 १८६८ जेठ कृ0 ३

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 583** भाषा हिन्दी–संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : सिद्धान्त कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है।

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–158 चित्र :

हाशिया

आकार : 16.5 X 13.5 से०मी० लिखित 5 X 10 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : सिद्धान्त कौमुदी नामक यह रचना काली स्याही से लिखी गई है। रचना के पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। पहले कुछ पृष्ठों के हाशिये पर लेखक ने बारीक–बारीक लिखा है। रचना खुली हुई है।

विशेष विवरण : सिद्धान्त कौमुदी नामक इस रचना में लिपि के सिद्धान्तों की चर्चा की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः श्री शारिदा भगवत्यैनमः उों श्रौत्रांर्द्वतीचणै र्गुणपैर्महर्षि भिरहर्दिवं तोष्टयामाणोघ गुणोविभुर्विजतेतरां १

अंत : इति श्री भट्टोनि दीक्षित विरचिताघां सिद्धांत कौमुद्यामुतरार्धेकृदंत समाप्तम् ।।
श्रुभंसंवत् १६१ माघश्रुदिष्कारश्यांयरता द्वादश्यामंगलवार ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 584** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : श्रीशंकर भगवतः

शीर्षक : (ईशाप्रभृति भाष्य) ईशावास्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 12 चित्र :

हाशिया :

आकार : 34 X 18 से०मी० लिखित 26 X 12 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12–15–19

विवरण : खुला हुआ ग्रंथ । पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। पृष्ठ समाप्त होने पर सामग्री को पृष्ठ के किनारों पर भी लिखा है।

विशेष विवरण : ईश उपनिषद् का भाष्य एवं टिप्पण किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः येनात्मनापरेणेशाव्याप्तं विश्वमशेषतः सोहंदेहद्वयोः सातीवर्तितोदेहत वगुणैः १ ईशावास्य मित्यादि मंत्रान् व्याचिख्यासु र्भगवान्भाष्यकार स्तेषांकर्मशेषत्वशंकांतावद्यूदस्यतितथादिकर्मतडाः केचनमन्यते ईशावस्यमित्पादयोमंत्राः

अंत : ईशा प्रभृति भाष्यस्य शंकरस्य परात्मनः मंदोयकृतिसिद्धांर्थ पणीतंटिप्पणंस्फुट्म १८ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्यश्री गोबिंदपूज्यपाद शिष्य श्री शंकरभगवतः वाजसनेय संहितोपनिषद्ः भाष्ये श्री आनज्ञान कृतं टिप्पणं सम्पूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 585** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	भगवदानंद
शीर्षक	:	वृहदारण्यक उपनिषद् भाष्य टीका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–210 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	38 X 19 से०मी० लिखित 27 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		10–12
विवरण	:	खुली हुई किंतु पूर्ण कृति । कई पृष्ठ आपस में जुड़े हैं। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। कहीं–कहीं पृष्ठों के किनारे पर भी विषय वस्तु लिखी गई है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	वृहदारण्यक उपनिषद् की भाष्य टीका परिव्राजकाचार्य के शिष्य के शिष्य भगवदानंद ने संवाद शैली का प्रयोग करते हुए की है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः पूर्वस्मिन्नध्याये जल्पन्पायेन सच्चिदानंद ब्रह्मनिर्द्धं इदांनी वादत्पायेनत देव निर्द्धारयितु मध्यायंतरमवतारयति जनक इति तत्र ब्राह्मणद्वयस्पावांतर संवंध प्रति
अंत	:	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञान कृतायां वृहदारण्यक भाष्य टीकायां इति षष्टोध्यायः समाप्तः ६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 586**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	—	
टीकाकार	:	श्री गोविंद भगवतः	
शीर्षक	:	तैतरीय भाष्य टिप्पणम्	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय : १८६३ (1893)

रचनाकाल	:				
रचना–स्थल	:	—			
पृष्ठ	:	1–36	चित्र :		
हाशिया	:				
आकार	:	से०मी०	लिखित	से०मी०	

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः यत्प्रकाशसुखाभिर्भयत्मंत्रेण प्रकाशितं विवृतंब्राह्मणेतस्याम दृश्यं ब्रह्मम निर्भयम् १ यजुर्वेदशाखाभेदं तैतरीयकोपनिषदं व्याचिर व्यासर्भगवान् भाष्यकार स्तत्प्रतिपाद्यंब्रह्मजगजन्मादि कारणत्वेन तष्स्थ लक्षणेन मंदमतीन प्रतिसामान्ये नोय लक्षितं सप्तज्ञान दिनाच स्वरूप लक्षणेन..................

अंत : इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्गोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्री मच्छंकर भगवत्पूज्यपाद कमौतैतिरीयोपनिषद भाष्यं समाप्तिमगमत तैतिरीपक भाष्य टिप्पणम् समाप्तिमगमहिति हरये शिवाय नमो वयंस्मः समतः १८६३

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 587**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	मृत्युंजय लागूलपनिषत्	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–2	चित्र :
हाशिया	:	दोनों तरफ लाल स्याही का हाशिया	
आकार	:	23.5 X 12 से०मी०	लिखित 17 X 6 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7	
विवरण	:	दो पृष्ठों की रचना है। पृष्ठ भी जर्जर हो चुके हैं। लेखक ने लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है।	
विशेष विवरण	:	ईश्वर वन्दना पश्चात् मृत्यु सम्बन्धी मंत्रों पर प्रकाश डाला है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों हरये नमः ।। उोंवर वृषभायफेन कपाल । हूपायनमो नमः ।। उों पशुपतये नमः ।।	
अंत	:	विश्व रूप तृतीयेक्तिसद्यश्रैवनमो नमः ।। इति श्री मृत्युजय लांगूलपनिषत्समाप्तः ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 588** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	महाभारत (सभापर्व)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना—स्थल	:	—
पृष्ठ	:	2—67 चित्र :
हाशिया	:	—
आकार	:	34 X 16 से०मी० लिखित 25 X 10 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10—12
विवरण	:	खंडित प्रति । काली स्याही का प्रयोग । लिखाई साफ एवं पठनीय है। किसी पृष्ठ पर विषय पूरा करने हेतु पृष्ठों के किनारे भी प्रयोग कर लिए गये हैं।
विशेष विवरण	:	पढ़ने से महाभारत का सभापर्व लगता है जिसमें वैशंपायन ऋषि अन्य ऋषियों को पांडवों का चरित्र तथा युधिष्ठिर के धर्म की चर्चा कर रहे हैं।
आरम्भ	:	किमे कंदैवतं लोके देवइत्यर्थः सार्थेतलुप्प्रत्ययः तद्वित विद्यानात् लोकेलोकन हेत भूते समस्त विद्यास्थाने उक्त मिति प्रथमः प्रश्नः
अंत	:	सर्वा गमानामाचार इत्यनेनावांत रवाक्येन सर्व धर्माणा माचारयवाथार इति दर्शयति १३६—१३७

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 589**	भाषा : हिन्दी–संस्कृत
स्रोत	:		
मूल्य	:	–	
लेखक	:	हरसिंह साधु	
टीकाकार	:	देवी प्रसाद त्रीपा	
शीर्षक	:	श्री गुरु सिद्धान्त पारिजात	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	१६४३	
रचना–स्थल	:	बनारस, काशी	
पृष्ठ	:	1–68	चित्र :
हाशिया	:	काली स्याही से	
आकार	:	6 X 15 से०मी०	लिखित 4 X 12 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11	
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ है। 68 पृष्ठों की इस रचना के दो भाग हैं। यह दूसरा भाग है।	
विशेष विवरण	:	रचना में गुरु महिमा वर्णित है।	
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। उों गुरुभ्योनमोनमः ।। श्री रामादि स्वरूपेण भक्त भीति विभंजिने निर्गुणानंद शीलानां निज कैवल्य रूपिणे ।।१।।	
अंत	:	इति श्री मन्निर्मलाश्रमाश्रित श्री हर सिंह साधु निर्मिते श्री गुरु सिद्धांत पारिजात ग्रंथे पूर्वार्धे गुरु देवशाखानाम पञ्चमोविश्रमः ५ शुभंभूयात सम्वत् १६४३ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 590**	भाषा : हिन्दी–संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	श्री हरसिंह साधु	
टीकाकार	:	देवी प्रसाद त्रीपा	
शीर्षक	:	श्री गुरु सिद्धांत परिजात	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	१८४३ (1843)	
रचना–स्थल	:	बनारस, निर्मलाश्रम	
पृष्ठ	:	1–68	चित्र :
हाशिया	:	काली स्याही से	
आकार	:	6 X 15 से०मी०	लिखित 4 X 12 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11	
विवरण	:	श्री गुरु सिद्धान्त परिजात नामक ग्रंथ खुला हुआ है। लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ है। प्रथम पृष्ठ पर फूलदार काले रंग का हाशिया बना है।	
विशेष विवरण	:	रचना में गुरु वाक्य एवं गुरु महिमा का वर्णन है।	
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। उों गुरुभ्योनमो नमः ।। श्री रामादि स्वरूपेण भक्त भीति विभंजिने निर्गुणा नंदशीलानां निज कैवल्य रूपिणे ।।१।।	
अंत	:	इति श्री मन्निर्मलाश्रमाश्रित श्री हरसिंह साधु निर्मिते श्री गुरु सिद्धान्त पारिजात ग्रंथे पूर्वार्धे गुरुदेवशाखानाम पञ्चमोविश्रामः५ शुभंभूयात् संवत् १६४	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 591** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : वरदराज

टीकाकार : –

शीर्षक : मध्य सिद्धांत कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 108–139 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 33 X 12 से०मी० लिखित 28 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : खुली हुई रचना है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है। रचना के पृष्ठ पुराने हैं। महत्त्वपूर्ण शब्दों को दर्शाने के लिए संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में स्वर प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है।

आरम्भ : श्री रामोजयति ।। समर्थानांप्रथमाह्य ।। इदमधि क्रियते प्राग्ह्दिा इति यावत् ।। प्राग्दीव्यतोण् ।। तेनष्यतीत्पतः प्रागणयि क्रियते ।।

अंत : कृतिर्वरदराजस्य मध्य सिद्धांत कौमुदी ।। तस्याः संख्यातु विज्ञेयाखवाणकरवन्हिभिः ।।२।। इतिश्री चविटिकंटिवरदराज भट्ट कृत मध्य सिद्धांत कौमुदी समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 592** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	व्याकरण ग्रंथ
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	87–96 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	33 X 12 से०मी० लिखित 28 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10
विवरण	:	खुली किंतु अपूर्ण रचना आरंभ एवं अंत के पृष्ठ नहीं हैं। 87 से 96 तक पृष्ठों में रचना मिलती है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना व्याकरण के अंतर्गत समासों पर आधारित है और उपलब्ध पृष्ठों पर संप्रदान समास से लेकर कर्मधारय समास तक का वर्णन है।
आरम्भ	:	इत्येव ।। दानीयो विप्रः ।। क्रिय यायममि प्रैतिसोपिसंप्रदानं ।। पत्येनोते ।। परि क्रयणे संप्रदानमन्य तरस्यां ।। नियत कालंम्साखी करणंपरिक्रयणं ।।
अंत	:	न जोन कारस्य लोपः स्पादुत्तरपदे ।। अब्राह्मणः तस्मान्नुडचि ।। लुप्तनकारान्नञ उत्तरपद स्पाजोदेर्नुडा गमःस्पात् ।। अ..................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 593**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	—	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	देवी कवच	

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:		
रचना—स्थल	:	—	
पृष्ठ	:	1—159	चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर संतरी तथा काली स्याही से हाशिया	
आकार	:	13 X 9 से०मी०	लिखित 10 X 6 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6	
विवरण	:	जर्जर एवं खंडित रचना है। लाल एवं काली स्याही का प्रयोग किया गया है। आरम्भिक पृष्ठ काफी जर्जर हैं। रचना के अन्तिम पृष्ठ भी उपलब्ध नहीं हैं।	
विशेष विवरण	:	देवी महात्म्य विषय का वर्णन है।	
आरम्भ	:	उों नमो देव्यै । सदा सफल दायिन्नै नमः ।। उों अस्य श्री देवी कवचस्य ।। ब्रह्मऋषि ।। अनुष्टप छंदः	
अंत	:	जातोप्यल्प परिक्षिदंतिक्षतभुजा सामान्य मात्ते कुलेनिः शेषावनि चक्रवर्ती पदवीं लव्या प्रतापोन्नतः यद्विद्यायर वृंदवं ।।...............	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 594** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : विचार माल

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय : १८८६

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 2–28 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये ।

आकार : से०मी० लिखित से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : विचारमाल नामक यह कृति 28 पृष्ठों की है। पृष्ठ एक उपलब्ध नहीं है। काली एवं लाल स्याही के हाशिये खींचे गये हैं। रचना खंडित है।

विशेष विवरण : विचार माल नामक इस रचना का विषय ज्ञान साधन पर आधारित है।

आरम्भ : यो भेदलहे विनुस्वान । के हरिव पुकाई निर्षपरयो कूप अज्ञान ।८। प्रगट अवनि करुणा अरन वरतत ज्ञान विज्ञान वचनल हरितन पर सते अग्ण्फु होत सुजान ।।६।। दोहा ।।

अंत : इति विचार माल संपूर्ण । लिषतं ऋषि करमचंद यती पवनार्थ १ वसंतामल्ल गीत षला बत्री रस्क्त कल्याणम् संवत् १८८६ राज गरांवाम हितिबी पोथीस ।। यादृशं पुस्मकं हश्तता ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 595**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	नक्षत्र कष्टावली	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–8	चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये ।	
आकार	:	17 X 7 से०मी०	लिखित 13 X 6 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		7	
विवरण	:	खुली हुई पर पूर्ण रचना । काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया गया है।	
विशेष विवरण	:	नक्षत्र–ज्ञान से सम्बन्धित रचना है।	
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। कष्टावली लिषते ।। पार्वत्युवाच ।। देवदेव जगन्नाथ महेश्वर वृषध्वजत्ति पुरात क पापघ्नी नील कंठ नमोस्तुते।।	
अंत	:	इति श्री नक्षत्र कष्टावली संपूरणं सुभमस्तु श्री रामाय नमो नमः	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 596**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	जाति वाधकाः	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–18	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	17 X 7 से०मी०	लिखित 14 X 5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6	
विवरण	:	खुली हुई पर पूर्ण कृति । काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया गया है।	
विशेष विवरण जाति	:	जाति वाधक इस रचना में शंकर एवं सती के संवाद में सम जाति तथा भिन्न के जातकों का वर्णन है।	
आरम्भ	:	ओम् ।। व्यक्तभेद तुल्यत्व शंकराः जाति वायकाः अनवस्थिति रूपहान्यसंबंधाः जति वाधकाः अतएव उक्तकारकायां अर्थ शब्दः प्रयुक्त ।।	
अंत	:	यद् रूप पदो पादेया प्रसिद्धेः षएाामपि जाति वाधका नांमणि मंत्रादिन्यायेनैव जातिवाधकत्व सम्भवात् पनावान्समारम्भोव्यर्थपवा कारिमहादेवेन चनिस्सामा – – त्वादि घटितं ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 597** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : वासुदेव कवचं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये ।

आकार : 15 X 15 से०मी० लिखित 14 X 14 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 20

विवरण : एक पृष्ठ की रचना है। कुल 15 दोहे हैं जिनमें से दोहा नंः 6, 7, 8 नीली स्याही से लिखा गया है बाकी के लिए काली स्याही प्रयुक्त की गई है।

विशेष विवरण : कृष्ण के विभिन्न नामों का यश गायन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री १ स्वस्थितं पुण्डरीकाक्षंचिन्तयेत् पुरुषोत्तमं अनन्तादित्य सङ्काशं वासुदेव चतुर्भुजम् १

अंत : अशक्रुवन् भावयितुं वाक्य मे तत्सदाभ्यसेत यः पठेत्प्रात रुत्थाय भक्ति युक्तेन चेतसा कालमृत्युमति क्रम्य जीवत्येवन संशयः १५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 598** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (श्री भागवत पुराण, प्रथम स्कन्ध)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–58 चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर संतरी एवं काली स्याही से हाशिये ।
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		15–18
विवरण	:	खुली हुई हस्तलिखित रचना । लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण पंक्तियां दर्शाने के लिए ऊपर संतरी स्याही प्रयुक्त की गई है जबकि गलत एवं अनावश्यक शब्द मिटाने के लिए पीली स्याही प्रयोग की गई है। आवश्यकतानुसार बारीक आकार की लिखाई भी प्रयोग की गई है।
विशेष विवरण	:	श्रीमद्भागवत् पुराण के प्रथम स्कन्ध की कथा वर्णित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों नमो भगवते वासुदेवाय उों श्री गुरुर्जयति उों वागीशायस्य वदने लक्ष्मीर्यस्यचवक्षसि यस्यास्तेददपे संवित्तंनृसिंह महंभजे १
अंत	:	इति श्री भावार्थ दीपिकायां प्रथम स्कन्धेयकोनविशो ध्यायः १८ समाप्ता चेषा प्रथम स्कंध टीका श्रुभंलेखकस्य ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 599** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (श्रीभागवत पुराण – द्वितीय स्कन्ध)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–40 चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से हाशिया
आकार	:	35 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15–18
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	श्रीमद्भागवत् पुराण के द्वितीय स्कन्ध की कथा ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों द्वितीयेतु दशाभ्यायै श्री भागवत मादितः उदेश लक्षणेक्ति भयांसंक्षेपेणेवर्ण्यते तत्रत प्रथमेध्याये कीर्तन श्रवणादिभिस्य विष्टभंगवद् रूपेम नसोधारणोव्यते.................
अंत	:	इति श्री भागवते महापुराणे द्वितीय स्कंधे दशोमध्यायः समाप्तोयं द्वितीय स्कंधः ।। रामाय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 600** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (श्रीभागवत पुराण – चतुर्थ स्कन्ध)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–94 चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से हाशिया
आकार	:	33 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		15–18
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	श्रीमद्भागवत् पुराण के चतुर्थ स्कन्ध की कथा वर्णित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों अथैकत्रिंशताध्यायैर्विसर्ग स्तुर्यईर्यते विसर्गसीप्रवराधीनैर्व्रह्ममन्वादिभिकृतः तत्रतप्रथमेध्यायेमनुकन्यान्वयाथ्थक्
अंत	:	इति श्री भागवते चतुर्थ स्कंधे प्रचेत सोपाख्यानै नामैकत्रिंशोध्यायः समाप्तोयंचतुर्थः ।। समाप्तोयंचतुर्थस्कंधटीकाः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 601** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : भावार्थ दीपिका (श्रीभागवत पुराण) – पंचम स्कन्ध

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–80 चित्र :

हाशिया : चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से हाशिया

आकार : 35 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15–18

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : श्री भागवत् पुराण के पंचम अध्याय की कथा का वर्णन ।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों अथातः पंचम स्कन्ध व्याख्यानेक विशेषवान् प्रियव्रतान्वयो यत्रसप्रपंचः प्रपंव्यते ।

अंत : इति श्री भावार्थ दीपिकायां पंचम स्कंधे नरकानुवर्णनम्नाम षड्विशतितमः २६ पंचमस्कंधेसमाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 602** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भावार्थ दीपिका (श्रीभागवत पुराण) — षष्ठ स्कन्ध
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना—स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1—59 चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से हाशिया
आकार	:	35 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		13—18
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	श्री भागवत् पुराण के षष्ठ स्कन्ध की कथा ।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों पुण्यारण्ये नृसिंहैकनाय सिंहोविराजते यत्रादतःपलायंते महाकल्मषकंतराः १
अंत	:	इति श्री भागवतै महापुराणे ष्ज्ञष्ट स्कंधे पुसवनव्रत वर्णनं नामैकोनविशोध्यायः षष्टस्कंधः समाप्तः ।। इति श्री भावार्थ दीपिकायां षष्ट स्कंधैकोनविंशस्समाप्तः षष्टस्कंधः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -603** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : भावार्थ दीपिका (सप्तम स्कन्ध)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–66 चित्र :

हाशिया : चारों ओर काली तथा संतरी स्याही से हाशिया

आकार : 35 X 19 से०मी० लिखित 27 X 15 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13–18

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : श्री भागवत् पुराण के सप्तम् स्कन्ध की कथा ।

आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय उों स्वभक्त पतयातेन तद्विपक्ष विदारणं नृसिंहममतंवंदे परमानंद विग्रहं उतिःपंचदशाध्यायैः सप्तमेवर्ण्यतेधुना उतिःचवासना प्रोक्तातत्रत्कर्मानुसारिणी.............

अंत : इति श्री भागवते सप्तम स्कंधेप्रह्लादानुचरिते युधिष्टिरनारद संवादे पंचदशोध्यायः १५ समाप्तोयं भागवते सप्तमस्कंधेः ।। रामाय नमो नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 604**	भाषा : संस्कृत–हिन्दी
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	अश्वमेध वष्यान	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	182–206	चित्र :
हाशिया	:	दोनों तरफ लाल स्याही से रेखा खींची गई हैं।	
आकार	:	26 X 18 से०मी०	लिखित 20 X 12 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10	
विवरण	:	खुली हुई खंडित प्रति । पृष्ठ 182 से 206 तक के पृष्ठ उपलब्ध हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं। रचना का न आरंभ और न अंत उपलब्ध है।	
विशेष विवरण	:	अर्जुन तथा जैमिनी ऋषि के संवाद में अश्वमेध वर्णन भारथ पर्व में किया गया है।	
आरम्भ	:	चलत भयो आगे पुन वाजा । वांध्यो वहुर नी लघुजराजा । भयो युद्धसूरन वहु घायो । कोट जतन करि हय मुकतायो ।	
अंत	:	।। दो• ।। अरजन को दुष देउ गारन महिकर संग्राम ।। पांडव प्रीतिपछान कै आवहिगे घनस्या..........	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 605**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	—	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	उपसर्ग वगाः	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	—	
पृष्ठ	:	1–7	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	27 X 16 से०मी०	लिखित 22 X 11.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13	
विवरण	:	खुली हुई पर पूर्ण रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। शैली लेखक की व्यक्तिगत है।	
विशेष विवरण	:	ईश्वर वंदना के पश्चात् लेखक ने शब्द–रचना तथा वेद एवं दर्शन पर प्रकाश डाला है।	
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः सरस्वती शब्द जल प्रवाहानानाऽर्थ वीद्दीसरुचिराति भातिनि हनात चेताः कविकर्हमदक्षोयस्यां भवेन्मंद मर्तिन्र्तरेर्मप १	
अंत	:	इति महादेव महाचार्य विरचितं इत्युपसर्गावगाः संपूणं श्री गुवेनमः श्री मन्ननारायणाय नमः नारसमद्धि ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 606** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : शिव ब्रह्मानंद

शीर्षक : नानक चंद्रोदय

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १९३१ (1939)

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–200 चित्र : कृति के आरंभ में गुरु नानक देव का चित्र है जिसमें वे मरदाना तथा भाई बाला जी से संवाद कर रहे हैं।

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही से हाशिये

आकार : 33 X 16.5 से०मी० लिखित 25 X 12 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 15

विवरण : खुला हुआ पर प्रकाशित ग्रंथ नानक चंद्रोदय संवत् 1939 को जगदीश्वर शिलायंत्रालय से प्रकाशित हुआ है। पृष्ठ जीर्ण पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : गुरु नानक देव भाई मरदाना तथा भाई बाला जी से अपनी उदासियों के अंतर्गत उनके प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं।

आरम्भ : ऊँ श्री गणेशाय नमः ऊँ गणेशंवागीशाशमल शमनेक्षौहरिहरौसक्तसिन्हौ श्री गंगांशिरसि निहिला शंश्रुमुनिना प्रयागं श्रीकाशीसकल जन्मुक्तौ धृत मतीनमामिश्री व्यासं परम सुखदं नानक गुरुम् १

अंत : इति श्री मनमौक्तिकरामोदासीन शिव ब्रह्मानंद विरचितायां नानकचंद्रोदय व्याख्यायां गूढार्थ प्रकाशिकायामेकोनविंशःप्रस्तावः १

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 607** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	गोविंदानंद
शीर्षक	:	रत्न प्रभायां
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–390 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 18 से०मी० लिखित 27 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		14
विवरण	:	खुली हुई पूर्ण कृति । काली स्याही का प्रयोग लिखने हेतु किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थल एवं शब्द दर्शाने हेतु काली स्याही पर संतरी स्याही प्रयोग की है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	वेदानुसार इहलोक एवं परलोक का चित्रण है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः श्रीमने रामानुजाय नमः उों यमिहकारुर्णकंशरणं गतोयारि सहोदर आयमहत्पदे तमहुमा श्रुहरिं परमाश्रये जनै जांकमनेत सखा कृतिं १
अंत	:	इति श्रीमद् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गोविंदानंद भगवत्कृनौर्ण्रकमीमां सांख्या भाष्य रत्न प्रभायां द्वितीयाध्यायस्य तृतीयाः पादः ३ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 607** संग्रह (ख)	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	गोविंदानंद	
शीर्षक	:	रत्न प्रभायां	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	391–611	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	36 X 18 से०मी०	लिखित 27 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14	
विवरण	:	पूर्ववत्	
विशेष विवरण	:	शरीर मीमांसा से सम्बन्धित विषय पर चर्चा है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः हरिः ओम् पूर्वाधिकरणे कर्तुः विचार्यतदुपकरणा नामिंद्रियाणा मुन्यति साधयति तथाः भूतभोक्तृ विचारनं नरं भौतिक प्राण विचार इति	
अंत	:	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री महागोपाल सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्रीगोविंदानंद भगवत् कृतौ शारीरक मीमांसा व्याख्यां भाष्य रत्न प्रभांया चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थःपादः ४ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 608** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	गोविंदानंद
शीर्षक	:	शारीरिक मीमांसा (रत्न प्रभायां)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–18 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 18 से०मी० लिखित 27 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		14
विवरण	:	संग्रह की तीसरी रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। संग्रह के अंत में एक पृष्ठ है जिसमें छः पंक्तियां लिखी गई हैं। जो इस रचना से सम्बन्धित नहीं हैं।
विशेष विवरण	:	शारीरिक मीमांसा नामक इस रचना में शारीरिक विज्ञान का वर्णन है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों यंहि वैराग्य संयन्नास्त्र त्वमर्थ विर्वेकनः लभंते सायनैर्दातास्त सीता नायकं भजे तदंतर प्रतिय इति...............
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद् गोविदानंद भगवतः कृतौ शारीरक मीमांसा व्याख्यार्याभाष्य रत्न प्रभायां तृतीया ध्यायस्य प्रथमः पादः ।। नमः परमात्मने शुभम्।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 609** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : पंडित जनार्दन

शीर्षक : श्री रामतंत्र विधि पटल

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–131 चित्र :

हाशिया :

आकार : 4.5″ X 6.5" से०मी० लिखित 3″ X 5" से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14

विवरण : जिल्द की यह पहली रचना है। लिखने के लए काली स्याही का प्रयोग किया गया है तथा पूर्णविराम लाल स्याही से लगाये गये हैं। लिखाई स्पष्ट है। पृष्ठों की हालत भी ठीक है।

विशेष विवरण : श्री रामतंत्र विधि पटल नामक इस रचना में अगस्थ्य ऋषि द्वारा रामोपासना का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों रामानुजायनमः ।। उों पृशीत्व यातृता लोका देवित्वं विस्मुनापुरा ।।

अंत : इति श्री रामतंत्र विधि पटल पद्धति संपूर्णम् समाप्तम् शुभं ।। लिखित पडत् जनार्दन घंटागर वौस्निकि पास ।। वैरागीवास्नि ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 609** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	श्री रामकवचं
शीर्षक	:	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–10 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	4.5″ X 6.5" से०मी० लिखित 3″ X 5" से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		7
विवरण	:	जिल्द की दूसरी रचना है।
विशेष विवरण	:	श्री रामकवचं नामक इस रचना में मानव की रक्षा हेतु रामकवच की रचना की गई है।
आरम्भ	:	उों श्रीमते रामानुजाय नमः ।। उों अस्य श्री रामषडक्षरमंत्र राजस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीश्चद्दः ।।
अंत	:	हरि उों तत्सदिति श्री ब्रह्मयामले त्रैलोका मोहनंनाम्श्री रामकवचं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 610** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : श्री शंकर

शीर्षक : मुंडक भाष्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ 1–26 चित्र :

हाशिया :

आकार : 34 X 19 से०मी० लिखित 26 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : पुरानी पड़ चुकी एवं जुड़ी हुई कृति । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : मंडुक उपनिषद् का भाष्य श्री शंकर द्वारा किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः यदक्षरं परंब्रह्म विद्याराम्य मितीरितम् यस्मिनज्ञाते भवेहातं सर्वतर्त्स्यमसंशयम् ब्रह्ममोपनिषद् गर्भोपनिषदाद्याअथर्वणवेदस्य वस्य उपनिषदः

अंत : इति श्री गोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्यय परम हंस परिव्राजकस्य श्रीमद् शंकर भगवतः कृतावार्थर्वणोपषिद्विवरणं संपूर्एम् द्याया प्रकृतत्व संभवात्र सर्वत्रब्रह्मविद्यासंप्रदासनमितिसूचयन्नाह पतांब्रह्म विद्यां वदेतेति इति मंडक भाष्य टिप्पणं समाप्तम् ।। श्रुभम् ।। संख्यैर्कदशशत् १९००

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 611** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : श्री शंकरानंद

शीर्षक : कोषीतकी उपनिषद्

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १८१३ संवत् (1813 संवत्)

रचना–स्थल : –

पृष्ठ 1–49 चित्र :

हाशिया :

आकार : 34 X 21 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है। पूरा करने हेतु किनारों पर भी लिखा गया है।

विशेष विवरण : कोषीत उपनिषद् का भाष्य श्री शंकराचार्य द्वारा लिखा गया है।

आरम्भ : उों नमो ब्रह्मणे आनंद आत्मास्थिरजंगमानाम हम्पत्र चित्तस्नमहंप्रपद्य कौषीतकि ब्राह्मण आत्म विद्यांपदावलोकात्प्रकटीकरोति समयिगत में तन्घिपर्षणादीनां कर्मणां तैजसस्य द्रव्या स्पादर्शादेः

अंत : इति प्रतिज्ञायमंगलमाचरति तदुद्यमातं सत्यं मामवलुत देववक्ताम्भवतु आद रेण पुनप्पाह अवतमाम वतुवक्तारमिति पुनरप्पाशास्त्रे अपिभर्गः प्रसिद्विहे हेतु स्तेजोस्तुमपिमहः ३ शितसिद्धिहेतुस्तेजोस्तु इति श्री कैशीतकी समाप्ता ।। संवत् १८१३ ।। रामायनः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 612** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	नानक चंद ब्राह्मण कश्मीरी
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	अनुभूति प्रकाश
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१८९५ संवत् (1895 संवत्)
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	5–101 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 14 से०मी० लिखित 26 X 10 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11
विवरण	:	खुली हुई रचना । आरम्भ के चार पृष्ठ इसमें नहीं हैं। लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई स्पष्ट एवं साफ है।
विशेष विवरण	:	उपलब्ध रचना पृष्ठ पांच पर 16वें श्लोक से शुरु होती है। अनुभूति प्रकाश नामक इस रचना में विभिन्न देवताओं की स्तुति एवं अनुभूति की गई है।
आरम्भ	:	आकाशादिजगत्सर्वमन्टतंमाधिकततः नान्दतं ब्रह्मते नैजत्यत्पमित्य भिधीयते १६
अंत	:	इत्युनुभूति प्रकाशेदेवविर्घख्योनाम विंशो ध्यायः 20 इत्युनुभूति प्रकाशः समाप्तम् १८३0 श्रुभमस्तु अनुभूति प्रकाशः १0८ पेतरेयो १५0 तिन्निरीये ३३ छंदोपि ७७ मुडके १00 प्रश्रे कोषितव्यां मैत्रायण्यां १.२0 कटवल्पां श्वेताश्वेतरे १२0 हृदयारण्यके १२ तलवको १.00 नृसिंह पिन्यो १८८८ सर्वसंख्या २८0८प्तम् ।। संवत् १८९५ फाल्गुनवदी द्वादर्शासोमवर ।। लिखितं नानकचंद ब्राह्मण काश्मीरी मध्येप स्यािलेपठनार्थन्यौतीराम

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 613** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	गरुड़ पुराण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1–4 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 18 से०मी० लिखित 26 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		
विवरण	:	चार पृष्ठों की खंडित प्रति । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ खंडित एवं जर्जर है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में श्रीसूत जी तथा ऋषियों का संवाद है। ऋषियों के स्वर्ग चले जाने के पश्चात् गरुड़ ऋषियों से प्रश्न करता है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों नमः परमात्मने ।। धर्म दृढवद्धमूलो वेद स्कंध पुराणशाखाढ्वयः क्रतु कुमुमो मोक्षफलो मधुसूदन पादपो जयति ।।१।।
अंत	:	पतिता तत्प्रवाहेच क्रंदंति वहुपापिनः हाभ्रातः पुत्रतातेति प्रलपति मुहुर्मुहुः २१ ।।........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 614** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : स्वरूप आचार्य

टीकाकार :

शीर्षक : सारस्वती प्रक्रियायां

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६२० संवत् (1920 संवत्)

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–34 चित्र :

हाशिया : नहीं हैं

आकार : 14 X 30 से०मी० लिखित 9.5 X 23 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : कृति खुली हुई है। पृष्ठ पुराने एवं जर्जर हैं। लेखक ने काली स्याही का प्रयोग किया है। पहले पृष्ठ पर ऊपर कुछ पंक्तियां लिखकर उन्हें पीली स्याही से मिटाया गया है।

विशेष विवरण : चौंतीस पृष्ठों की इस कृति में सरस्वती पूजन पद्धति एवं स्तुति मंत्रों का वर्णन है। कुछ शब्द हाशियों में भी लिखे गये हैं।

आरम्भ : उों श्रीगणेशाय नमः उों प्रणभ्य परमात्मानं बालयीवद्धिसिडये सरस्वती मृजुकुर्वेप्रक्रियानांतिविस्रराम १

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजिकानुभूति स्वरूपाचार्य विरचितायां सारस्वती प्रक्रियायां पूर्वार्द्ध समाप्तम् ।। श्रुभम् ।। संवत् १६२० ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 615**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	भगवदा नंद	
टीकाकार	:		
शीर्षक	:	छांदोग्योपनिषद्	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	—	
पृष्ठ	:	1—29	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	19 X 38 से०मी०	लिखित 13.5 X 28 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		10—13 तक	
विवरण	:	पृष्ठ—पृष्ठ हुई यह कृति काली स्याही से लिखी गई है। अनावश्यक शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है और महत्त्वपूर्ण शब्दों को दर्शाने के लिए संतरी स्याही ऊपर लगाई गई है।	
विशेष विवरण	:	छांदोग्य उपनिषद् के चतुर्थ प्रपाटक की कथा इसमें कही गई है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः आदित्यस्य सूत्रावच्छेद भेद तात्रउपासनानंतरं सूत्रो पासनमुपत्यस्यते नत्वप्पात्मचिदैव तंचवायु प्राणयोः सूत्रात्म भूतयौरूपासंन पूर्वाधोपपि व्याख्यातं	
अंत	:	हंस परिव्राजकाचार्य श्री शुद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदा नंदज्ञानकृतायां छांदोग्योपनिषदा । षटीकायां चतुर्थः प्रपाटकः समाप्तः ष ।। श्रुभमस्तु ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 616** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : वृहदारण्य कोपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 18–44 चित्र :

हाशिया : नहीं है

आकार : 31 X 15 से०मी० लिखित 26 X 10.5 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : पृष्ठ–पृष्ठ हुई यह हस्तलिखित कृति अधूरी है। लेखक ने पीले पृष्ठों पर काली स्याही से लिखा है। लिखाई साफ–सुथरी है।

विशेष विवरण : अधूरी रचना वृहदारण्य उपनिषद् पर आधारित ब्राह्मण ग्रंथ है।

आरम्भ : ततोहभुज्पुलीह्यायनिरूपरण्म ।।२।। तृतीयं ब्राह्मणं ।।३३।। अथहैनमुषस्तश्चाक्रायणः

अंत : इति वृहदारण्य कोपनिषत्समाप्तः तत्सब्रह्मार्पमस्तु ।। श्री श्री श्री ब्रह्ममूर्त्तयेनमः गुरुःभ्यो नमः हष्भभ्योनमः ।। श्री गणेशायनमः ।। अत्र चोपनियच्छेद्दो ब्रह्मविद्यैकगोचरः तत्तैवचास्पऽभावादभिधार्थस्य तत्कुतः ।।१ उपापसर्गाः सामीप्येतत्प्रतीचिसमाप्यते त्रिविधिस्य सदर्थस्यनिश छोपिविशेषणं ।।२।। उपनीयेममात्मानं ब्रह्मापास्तघययक्षः निहंत्पविधांतुजं –

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 617** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	गंगाधर आचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	स्वराज्य सिद्धि व्याख्या
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–40 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 35 से०मी० लिखित 11.5 X 28 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		
विवरण	:	पृष्ठ–पृष्ठ खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग। महत्त्वपूर्ण अंशों को दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	स्वराज्य सिद्धि नामक इस रचना में स्वर्ग अपवर्ग के संदर्भ में उमा के कैवल्य की चर्चा है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशाय नमः योधते निजमापयैवभुवना कारं विकारोज्कितो यस्याङः करुणा कटाक्ष विभवौस्वर्गापवर्गा
अंत	:	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री रामचन्द्र सरस्वती पूज्यपाद शिष्येण श्री सर्वज्ञ सरस्वती पूज्यपाद प्रशिष्येण गंगाधर सरस्वत्पाख्य भिक्षुणा विरचितायां स्वाराज्य सिद्धि व्याख्यायां कैवल्य कल्पउमाख्यायां कैवल्य प्रकरणं सम्पूर्णम् ।। इति ग्रंथ समाप्तः श्रुभंम संवत् १८२१ मिती आषाढ प्रविष्टे ।।१५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 618** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	विज्ञानेश्वर भट्टारक
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	याज्ञवल्भ धर्मशास्त्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	46–185 चित्र :
हाशिया	:	नहीं
आकार	:	48 X 15 से०मी० लिखित 29 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10
विवरण	:	हस्तलिखित अधूरी कृति पृष्ठ 46 से मिलती है। लिखाई सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुति खण्डित रचना में याज्ञवल्लक्य के धर्म सम्बन्धी विचारों का वर्णन है।
आरम्भ	:	. . . .तोभवेत विनापित्राध नानस्मादाप्यः स्यात दृणं सत इति दर्शन ग्रहणं प्रत्ययोप लक्षण विनापित्रापितरि प्रेते ह्वरदेशंगतेबेति
अंत	:	इति श्रीमत्पद्मनाभ भट्टोपाध्यायात्मजस्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजक विज्ञानेश्वर भट्टारकस्य कृतौऋजुमिताक्षराख्यायो याज्ञवल्भ धर्मशास्त्रवितृत्तौ द्वितीयोध्यायः समाप्तः अस्मिन्नध्याये प्रकरणानुक्रमणिका काथ्येत आद्यव्यवहार मातृका प्रकरणम् १ मुक्तिलक्षणम् २ ऋणदानम् ३ निक्षेपप्रकरणम् ४ सातिलक्षणम् ५ लेख्यलक्षणम् ६ दिव्य सरूप लक्षणम् ७ दायविभागः ८ सीमाविवादः ६ स्वामीपालविवाद १0 अस्रामिविक्रयः ११ दत्ताप्रदानिक ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 619** भाषा : संस्कृत–हिन्दी मिश्रित
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	श्रीमद्भागवत महापुराण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है पर पुराण की नकल सरल भाषा में की है।

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	73–247 चित्र :
हाशिया	:	नहीं
आकार	:	31 X 16 से०मी० लिखित 25 X 11 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12–15
विवरण	:	खण्डित प्रति । सफेद तथा पीले पृष्ठों का प्रयोग किया गया है। प्रति पृष्ठ–पृष्ठ हुई है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	ग्रंथ का आरम्भ अर्थात् प्राप्त पृष्ठ 73 पर दशम स्कंध का एकादश अध्याय समाप्त हुआ है और द्वादश अध्याय शुरु है। इस दशम स्कंध में कृष्ण कथा का वर्णन है जो गोवर्धन धारण तक चलता है उसके पश्चात् के पृष्ठ भी नहीं हैं।
आरम्भ	:	श्लोक वत्चारणरतो विपिनेच गोप बालकपुनो कृत भूषः वेएु वाद नर तो वनमालि नंदलाल हृदये स्क्तमुकुटंः १ इति श्री भागवते दशम स्कंधे एकादशध्यायः ११
अंत	:	सव ब्रजगोपी नित प्रति मुदित है। इनहीं के श्रम रहित मंद ह्रासजुत ललित मुख कों निरषि त्रिविध ताप को नसाववि हैं हम कौं धिक जे हम श्रम सहित इनके मुख कों निरषत हैं २८

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 620**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	रामतीर्थ	
टीकाकार	:		
शीर्षक	:	मैत्र्युपनिषद्	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	१८२३ (1823)	
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–85	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	33 X 13 से०मी०	लिखित 27 X 8.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9–11	
विवरण	:	पृष्ठ–पृष्ठ हुई खुली कृति । लेखक ने लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।	
विशेष विवरण	:	मैत्र्युपनिषद् के अंतर्गत शरीर एवं आत्मा का वर्णन किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों को संतरी स्याही लगाकर प्रभावशाली बनाया गया है।	
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः प्रणभ्य रामं प्रणता भयप्रहं गुरुं स्तश्रालकस्मुरवां स्रहात्मनः मैत्रायणानां श्रुति मौलिमर्थतः प्रसाध्यविस्मौः परमे पहेःर्पये १	
अंत	:	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री रामतीर्थ विरचितायां मैत्र्युपनिषद्दीपिकायां सप्रमप्रपाठकः समाप्तः । संवत् १८२३ (1823) संख्या २६00	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 621** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	वृहदारण्यकोपनिषद् मिताक्षरा टीका
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	संवत् १६०६
रचनाकाल	:	संवत् १६०६
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	1–218 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	15 X 30 से०मी० लिखित 10 X 27 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10–12
विवरण	:	पूर्ण पर खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। लिखाई सुंदर है। महत्त्वपूर्ण पंक्तियां संतरी स्याही लगाकर रेखांकित की हैं।
विशेष विवरण	:	बृहद अरण्यक उपनिषद् के आठवें अध्याय के पंचम ब्राह्मण लिखा गया है। आरंभ में नृसिंह महिमा गाई है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः उों यो नंतो नंत शक्ति सजति जगदि दंपालय व्यंतरात्मा संविश्यांतेनिपीय महिमगतः सत्य चिन्मूर्तिरास्रे योनुग्रः सज्जनानां परमहित तमः पापि नामुग्र मूर्तिः सो स्माकं गंछितानि प्रदिशतु भगवानात्मदः श्री नृसिंहः १
अंत	:	इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री पुरुषोतमाश्रम पूज्यपाद शिष्य नित्यानंदाश्रम मुनि विरचितायां वृहदारणक व्याख्यायां मिताक्षराये अष्टमोध्यायः समाप्तः श्रुभमस्तु १... इति श्री वृहदारण्यक व्याख्यायांमिताक्षरायां अष्टमाध्यायस्यपंचमं ब्राह्मणं ।। राम जी संवत् १६०६

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 622** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	ब्रह्मानंद
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	अमृतलहरी पदयोजना टीका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–27 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 14 से०मी० लिखित 27 X 14 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9–12
विवरण	:	खुली हुई कृति । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शने हेतु संतरी स्याही ऊपर लगा दी गई है।
विशेष विवरण	:	अमृत लहरी नामक इस रचना में ईश्वर–भक्त का संवाद है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः नमस्तस्मै गएेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने यस्यागस्त्या येतनाम विघ्नसागर शोषणे १
अंत	:	इति श्री मन्मौक्तिकरामो दासीन शिष्य ब्रह्मानंद विरचिता विरचितामृतलहरी पद्योजना टीका समाप्ता उों ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 623** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	केशव (टीकाकार)
शीर्षक	:	नारायणीयोपनिषद्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	१८९0 (1890) संवत्
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–89 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 13 से०मी० लिखित 29 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	10
विवरण	:	हस्तलिखित खुली हुई कृति । लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने के लिए संतरी रंग से शब्दों को रेखांकित किया गया है और शब्दों को शुद्ध करने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	नारायणी उपनिषद् नामक इस रचना में सर्वप्रथम ईश्वर स्तुति पश्चात् नारायण के ऐश्वर्य का वर्णन है। अंत में रचना के समय के साथ किसी ने छेड़छाड़ करके आठ को नौ बनाया है और साथ में 14 अंक जोड़ा है दूसरी स्याही का प्रभाव इसमें स्पष्ट दिखाई देता है।
आरम्भ	:	श्री गणेशायमः वागीशाद्याः सुमनसंसर्वार्थानामपक्रमेयन्नत्वाकृत कृत्याःस्युस्नंनमामिगजाननं १ यस्ययनिश्वसिनं वेदायो वेदेभ्योखिलं जगत् निर्ममेतमहं वंदे विद्यातीर्थ महेश्वरं २
अंत	:	श्री मत्काशीशपुंर्यासकलवुधजना वासवृंदात्तिमंज्वां विधारण्यां घ्रिपघ्र प्रकृति मनुसरन्मेशवः शिष्यणां श्रीमन्नारायणीयोपनिषद मजुलांविंदुनागानुवाकाव्यापाचाख्या वांघ्रपाठमतइह संविदांरंजनाय संवत् १८१0

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 624** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	भट्टि काव्य टीका
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	—
पृष्ठ	:	अलग–अलग सर्गों की पृष्ठ संख्या अलग–अलग है। चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 13 से०मी० लिखित 29 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10
विवरण	:	भट्टी काव्य टीका नामक यह रचना अपूर्ण एवं खंडित है। काली स्याही का प्रयोग लेखक द्वारा किया गया है। रचना साफ लिखाई में है।
विशेष विवरण	:	भट्टिकाव्य की यह भरत टीका छः सर्गों के बाद भी चलती है। शंकर गौरी की प्रार्थना के बाद ईश्वर वंदना के बाद रचना आरंभ होती है तथा अधूरी रह जाती है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। भरत टीका ।। नत्वाशंकरमम्वष्ट गौरांग मल्लिकात्मजः ।। भट्टिटीकां प्रकुरुते भरतो मुग्धबोधिनी ।। विहिताः पाणिनी याद्यैः पठनीयादि वोधिकाः ।।
अंत	:	धर्म्मर्थ कामस्य पारीएामिति ।। षष्टी समासः त्रिवर्ग पारीएा भत्तां सुराणाम्मध्ये । सएवैकोविवेक दृश्वत्वं विवेक ईतामगात् ।। इणो २...............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 625** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री मच्छंकराचार्य

टीकाकार :

शीर्षक : अपरोक्षानुभूति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय : संवत्

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 2–34 चित्र :

हाशिया :

आकार : 33'' X 13.5 से०मी० लिखित **24 X 10** से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : खुली कृति की पहली रचना । लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ का आरम्भ नहीं मिलता। पृष्ठ दो उपलब्ध है वहां कथा पहले से आरम्भ हो चुकी है। पर रचना खंडित है।

विशेष विवरण : ईश्वरीय अनुभूति का मानव के संदर्भ में चित्रण किया गया है।

आरम्भ : ति तत्ततावदहंश देन देहत्तय विशिष्ट त्वेनाशु हो जीवः अस्यैवायकृष्टतात्
तंनमामिमायातत्कार्य शूत्पतेपितदाश्रयभूतत्वेन सर्वकारणं वेदांत प्रसिद्धभीश्वरं

अंत : इतिश्रीमच्छंकराचार्य विरचिता अपरोक्षानुभूति ।।सप्तम्।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 625** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	विद्यारण्य
टीकाकार	:	
शीर्षक	:	अपरोक्षानुभूतिदीपिका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		१६१४ (1914 संवत्)
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	34–35 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 13.5 से०मी० लिखित 24 X 10 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11
विवरण	:	दूसरी पूर्ण रचना।
विशेष विवरण	:	अपरोक्षानुभूति विषय पर विद्यारण्य ने दीपिका लिखी है।
आरम्भ	:	तियेषांमनः परिपक्वमलरागादिरति यावत् तेषामित्यथ्याहारः
अंत	:	इति श्री विद्यारण्य विरचिता अपरोक्षानुभूति दीपिका समाप्ताम् १६१४ (1914)

हस्तलिखित क्रमांक	: **PPS - 626**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	: प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	: —	
लेखक	: अमर सिंह	
टीकाकार	: लिंगानुशासन	
शीर्षक	: —	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	: —	
पृष्ठ	: 1–11	चित्र :
हाशिया	:	
आकार	: 33.5 X 15 से०मी०	लिखित 25.5 X 11 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः	11	
विवरण	: खुली हुई रचना। काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया गया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।	
विशेष विवरण	: नाम लिंगानुशासन एक कोश ग्रंथ है। अमर सिंह ने विभिन्न देवी देवताओं का वर्णन इसमें किया है।	
आरम्भ	: श्री गणेशाय नमः यस्यज्ञान दया सिंधो रंगा धस्यानघागुणाः सेव्यतामक्षयो धीराः सश्रियेचामृतायच १ समाहृत्यान्यतंत्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिंगानुशासनम् २	
अंत	: इत्यमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशासने स्वरादिः कांड प्रथमः सांगुएवसमर्थितः १ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 627** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	कालिदास
टीकाकार	:	गोपाल ब्राह्मण
शीर्षक	:	श्रुतबोध
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	कोटसाह
पृष्ठ	:	1–7 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 14 से०मी० लिखित 9.5 X 26 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण पंक्तियों पर संतरी रंग ऊपर लगाया गया है। पृष्ठ पीले पड़ चुके हैं पर सही हैं। अंत में छंदों का एक चार्ट बना रखा है।
विशेष विवरण	:	कालिदास कृत श्रुतबोध की यह प्राचीन रचना गोपाल ब्राह्मण द्वारा लिखी गई है। इसमें छंदों को महीनों के साथ जोड़कर दिनों का महत्त्व बताया है।
आरम्भ	:	ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः नत्वा गुरु पदं द्वद्वंवालानां सुखलहुयेक्रिराते वासुदेवेन श्रुतबोध प्रबोधिनी ।१।
अंत	:	इति श्री कालिदासकृतौ श्रुतबोध विधान छंदोग्रंथासमाप्त शुभमस्तु लिषतं गोपाल ।। रामगस्त्रिगुरु तिलक श्रनैरो भादि गुरुः पुनरादिकर्यः जो गुरुमध्य गतोरल मध्य संतिगुरुः कथितोत्य लेघर्स्तः ।।श्रीराम।। लिषतं गोपाल ब्राह्मण कोटसाह के स्थान मध्ये याद्रै पुस्तकं दृष्राता श्रुद्दवाममदोषनिदो श्री गुरु चरण कमलेम्यो ।।

हस्तलिखित क्रमांक	: **PPS - 628**		भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	महंत दामोदर दास	
टीकाकार	:		
शीर्षक	:	पंचदशी	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–181	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	33X 15 से०मी०	लिखित 25 X 9.5 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12	
विवरण	:	रचना खुली है पर सुरक्षित एवं पूर्ण है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठों पर एक तरफ लाल दवा या रंग का प्रयोग किया गया है।	
विशेष विवरण	:	दामोदरदास द्वारा रचित पंचदशी नामक इस रचना में ईश्वर स्तुति पश्चात् वेदान्त अनुसार ईश्वर एवं आत्मा का चित्रण किया गया है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय यनमः उों नत्वा श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनीश्वरो प्रत्यक्त त्वविवेकस्य क्रियते पर दीपिका १	
अंत	:	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्यमुनिवर्य किंकरेण श्री रामकृस्माख्य विरचिते ब्रह्मा नंदोनामपंचमोध्यायः ५ पंचदशी संपूर्णम् समाप्तम् श्रुभमभूयात् ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 629** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : रामवर्मन

शीर्षक : अध्यात्म रामायण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : अलग–अलग पृष्ठों की संख्या अलग–अलग है चित्र :

हाशिया : चारों ओर लाल, पीली, काली स्याही के हाशिये

आकार : 35 X 16 से०मी० लिखित 28 X 12 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9–12

विवरण : रचना खुली है पर पूर्ण है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : अध्यात्म रामायण नामक सात काण्डों की इस कृति की टीका राम वर्मन ने साथ–साथ की है जोकि पृष्ठ के ऊपर और नीचे छोटी–छोटी लिखाई में है। मूल विषय मोटे आकार में है। रचना में राम जन्म से रामराज्य ग्रहण तक सात कांड हैं।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामपरमात्मने नमः ।। उों विसेनवंश जलयौ पूर्णः शीतकरो परः ।।

अंत : इति श्री मत्सकल सजविपह हरण समर्थैत्यादि विरुदावली विराजमानस्य हिस्मतिवर्मएाः पुत्रस्य श्री राम वर्म्मणः कृतवाध्यत्म रामायणे उत्तरकाण्डे नवमः सर्गाः ६ समाप्तोयं उत्तकाण्डः सटीका अध्यात्म रामायणा रव्यः सप्तकाण्डात्मक समाप्तः ७ श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 630** संग्रह –क	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	मार्कण्डेय पुराण देवी महात्म्य	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–76	चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया	
आकार	:	23 X 12 से०मी०	लिखित 14 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8	
विवरण	:	खुली हुई हस्तलिखित रचना । लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना का प्रथम पृष्ठ काफी जर्जर हो चुका है।	
विशेष विवरण	:	मार्कण्डेय पुराण के अंतर्गत देवी महात्म्य का वर्णन है। दूसरे शब्दों में मार्कण्डेय ऋषि के द्वारा दुर्गा स्तुति की गई है।	
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। श्री मार्कंडेय उवाच यद् गुह्य परमं लोके सर्वरक्षा करं नृणां ।। यन्त कस्य चिदाख्यातंतन्मे व्रूहि पितामाह ।। १३१ ।। ब्रह्मो उवाच ।। अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकं ।। देव्यस्तु कवचं पुण्यं तच्छएष महमुने ।।	
अंत	:	इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वंतरे देवी माहात्म्ये सुरथवैष्ययेर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोध्यायः ।। १३ ।। ७00	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 630** संग्रह –ख भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	इंद्राक्षी स्त्रोत
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	76–77 चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	23 X 12 से०मी० लिखित 14 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना ।
विशेष विवरण	:	पुरंदर ऋषि द्वारा इंद्राक्षी देवी की स्तुति की गई है।
आरम्भ	:	उों अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र मंत्रस्य पुरंदर ऋषि इंद्राक्षी देवता अनष्टुप छंदः ।। लक्ष्मी वीजं भुवनेश्वरे शतिर्माहेश्वरी कीलकं ।।
अंत	:	इंद्रेण कथितं सम्यक् सत्यं सख्यंन संशयः ।। इति श्री इंद्राक्षी स्तोत्रं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 630** संग्रह –ग भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : लघ्वाचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : त्रिपुर सुंदरी स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय : १८५८

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 77–84 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया खींचा गया है।

आकार : 23 X 12 से०मी० लिखित 14 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : संग्रह की तीसरी अंतिम रचना । अंतिम पृष्ठ पर किसी अन्य व्यक्ति ने वैद्य सम्बन्धी कोई नुस्खा लिखा है।

विशेष विवरण : समस्त संग्रह देवी स्तुति से संबंधित हैं। इस तीसरी रचना में देवी को त्रिपुर सुंदरी मान कर उसकी स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों ऐंद्रस्य वशरासनस्य दधती मध्ये ललाटम प्रभां शौकली कांति मनुस्म गौरि वशिरस्यातन्वती सर्वतः ।।

अंत : इति श्री लघ्वाचार्य विरचितं त्रिपुर सुंदरी स्तोत्रं संपूर्णम् समाप्तं ।। शुभमस्तु भूयात् ।। संवत् १८५८ ।। फाल्गुन मासे शुक्ला पक्षे शुभतिथौ अपृम्यांवार वृहस्पत वासरान्वतां शुभमस्तु भूयात् ।। श्री ।। श्री रामचंद्राय नमः ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 631** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : नारायण उपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र :

हाशिया :

आकार : 21 X 11 से०मी० लिखित 16 X 6 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–8

विवरण : तीन पृष्ठों की खुली हुई रचना । पृष्ठ काफी जर्जर हो चुके हैं। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : प्रस्तुत रचना में अथर्ववेद की परम्परा के आधार पर नारायण स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ पुरुषो हवै नारायणाो कामयत प्रज्ञाः सृजेयेति नारायणात्प्राणो जायते मनः सर्वेंद्रियाणि चावं वापुर्ज्योतिरापः पृथ्वी

अंत : इति मध्यं दिनमादित्याभिमुखोयीयानः पंचमहापातको पपातकात्प्रमुच्यतेस सर्ववेद परायणं लभते नारायणोसायुज्य मामोति नारायणो चरण सायुज्यमा प्रोति ।। इति श्री अथर्वण वेद नारायणोपनिषद् समाप्तम् ।। श्रुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 632** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : इसष्ठा वक्रं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 20 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया

आकार : 24 X 12 से०मी० लिखित 17 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–10

विवरण : खुली हुई हस्तलिखित रचना । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ है पर कुछ शब्दों की बनावट लेखक की निजी है जो पठनीय कम है।

विशेष विवरण : अष्टावक्र नीति का वर्णन प्रस्तुत रचना में किया गया है।

आरम्भ : ।। श्री गणेशाय नमः ।। मुक्ति मिश्रसि चेतात विषयानू विषवत्पज । क्षमार्जव दया तोष सत्यं पीयूष वद्भज ।। १।। न पृथ्वी न जलं नाग्निर्न वायु द्यैनिवाजवान् । एषां साक्षिणमात्मानं । चिद्रूपंविधि मुक्तये ।।२।।

अंत : अष्ट कंचात्म विश्रांतौजीवन्मुक्तौ चत्रुर्दशषटअंख्या क्रमविज्ञाने यंथैकत्म्पमतः परं ५ विषत्पेक मितैषडैः श्रोकैरात्माग्रिमध्परवैः अवधूतानु भूतेश्च श्लोकासंख्या क्रमाअमी ६ इसष्ठा वक्रं समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 633**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	चंडी विधान–दुर्गा प्रयोगं	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :			
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:		
रचना–स्थल	:	–	
पृष्ठ	:	1–18	चित्र :
हाशिया	:		
आकार	:	23 X 12 से०मी०	लिखित 17 X 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		1–8	
विवरण	:	अट्ठारह पृष्ठों की खुली हुई परन्तु पूर्ण कृति । पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं। लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।	
विशेष विवरण	:	चण्डी की शक्ति एवं महात्म्य का वर्णन किया गया है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथ प्रसंगात्सप्रशति स्तोत्रांतर्गता नांकेषंचिन्मंत्राणां वक्ष्पमाएार्त प्रोक्त फलकात्य तुष्टानोच्यंते तत्रेत्पादि देशकालौ स्मृत्वाङमुकगोत्रोत्पत्रस्यामुक शर्मणो	
अंत	:	अथ कश्च महादैत्यो दुर्गा होमं परायणः कवचाहुति मंत्रेणमहशेतनि पातितः इति चंडी विधान समाप्तम् ।। दुर्गाप्रयोगंसंपूर्णम् ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 634** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शय्यादान संकल्प
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–4 चित्र :
हाशिया	:	
आकार	:	22 X 12 से०मी० लिखित 17 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		1–9
विवरण	:	चार पृष्ठों की अपूर्ण कृति । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना में पुस्तक दान का महत्त्व तथा शय्यादान के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः।। अथ पुस्तकदानं भविष्ये शास्त्रसद्भाव विदुषिक वाचके च प्रियं वदेवस्त्र युव मेन संवीपुस्तकं प्रतिपादयेत १
अंत	:	अथ शय्यादान संकल्पः तत्सतद्यकृतै तत्पुस्तक दानां गत्वेनल इमां शय्यांतूलगर्भिता स्तरणोत्तरच्छ दोपयानाछादन पट्ट शय्याबंधन चामर सुगंसधि द्रव्य नालि केर तांबूल पुष्पमाला खर्जूर्द्राक्षा तवातामल फलाधि पूरित वंशपात्रकं कतिका साजन नयानी ....

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 635**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	कवि शेषर ज्योतीश्वर	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	पंचसायकम्	

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	१६११
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–24 चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हलके हाशिये खींचे गये हैं।
आकार	:	23 X 10 से०मी० लिखित 20 X 7 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	चौबीस पृष्ठों की खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लिखने के लिए किया है और लाल स्याही से पूर्ण विराम डाले हैं। पहले पृष्ठ का एक कोना धुंधला पड़ चुका है जिसे पढ़ने में कठिनाई भी आ रही है और कुछ जगह से अक्षर ही उखड़ गये हैं। ग्रंथ के अंत में अध्याय सूची दी है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना नायिका भेद, गर्भधारण, प्रसव तथा औषधि वर्णन से संबंधित है।
आरम्भ	:	पादणोर्उनमइंदिरापतये ।।०।। रति परिमल सिंधु कामिनी केलिवंधु र्विहिततुवन मोदः साध्यमान प्रमोदः जयति मकरकेतुर्मोहनस्यै कहे तु विरचित वहसेवःकामिनिः कामदेवः ।। १ ।।
अंत	:	इति अनिकृाहएासमुवेशः । कमलाह्णदय सरोवरहंसः खंडित दुर्दमदानववंशः । शतमखलक्ष्मीरक्षण दक्षन्या तुतक्त्व विपक्षः ।।३६४।। इतिश्री कविशेषरज्योतीश्वर विरतपंचसायकं समाप्तं ।। श्रुतम स्त्क ।।सं १६११।। पंचमाश्रुदि १५ बुधवासरे नारयणेलिखत् ।।द।।द।।द।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 636**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	–	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	तर्कसंग्रह	

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	3–5 चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हलके हाशिये खीचे गये हैं।
आकार	:	21 X 11 से०मी० लिखित 13 X 7 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		4
विवरण	:	तीन पृष्ठों की अधूरी रचना । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण शब्द दर्शाने हेतु ऊपर संतरी रंग का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	शरीर तथा इन्द्रियों के विषय में कई तर्क किए गए हैं जिनमें उत्तर भी समाहित हैं।
आरम्भ	:	व्याचेति नित्यापरमाएारूपा अनित्याकर्य्यरूपा सापुन स्रिविधा शरीरेंद्रिय विषय भेदात् शरीरमस्मदादीनाम् इंद्रियंगंध ग्राहकम् ब्राएांनासाग्रवर्ति विषयोमृत्पाषादिः ६
अंत	:	अतीतादिव्यवहारेतुकालः सचैकोभिुनित्यश्च १५ प्राच्यादिव्यवहार हेतुर्दिक साचैका.......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 637** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	मुहूर्त चिन्तामणि (संक्रातिः निर्णयः)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–6 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	18 X 10 से०मी० लिखित 13 X 6 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		18
विवरण	:	कुल छः लघु पृष्ठों की रचना । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है और महत्त्वपूर्ण शब्दों पर संतरी स्याही काली के ऊपर लगाकर उन्हें दर्शाने का प्रयास किया गया है।
विशेष विवरण	:	वर्ष भर की बारह संक्रातियों के पुण्य मुहूर्तों पर चर्चा की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री गणपतेय नमः अथ मुहूर्तचिंतामणि मतेन पुण्यकालनिर्णयचक्रम तत्तमेष संक्रांतौ । संक्रांतिकालात् प्रागष्टौ परतश्र्चष्टौ घटिकाः पुण्याः दिवसे मेष संक्रातौ ।
अंत	:	मीन संक्रांतौ संक्रांतिकालाएनंतरषोडष घटिकाः १६पुण्यकालः ।१२।। इतिमतांनरे संक्रांति निर्णयः ।। उों ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 638** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	जन्माष्टमी कथा
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–10 चित्र :
हाशिया	:	चारों ओर लाल तथा काली स्याही से हाशिये
आकार	:	10 X 5 से०मी० लिखित 8 X 17 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8
विवरण	:	दस पृष्ठों की खुली हुई रचना। लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया है और पूर्ण विरामों के लिए लाल। लिखाई सुन्दर, साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	भविष्य पुराण से लिया गया प्रसंग है जिसमें नारद युधिष्ठिर के संवाद के माध्यम से जन्माष्टमी व्रत कथा का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ जन्माष्टमे कथा ।। उों युधिष्टिर उवाच भगवन्योगिनां श्रेष्ट ब्रह्म पुत्र महामुने ।। श्रुत्वानित्वत्प्रसादेन श्रतिशशास्त्रब्रतानिच ।।
अंत	:	इतिश्री भविष्येतपुराणे नारद युधिष्ठिर संवादे जन्मष्टमी व्रताकथा संपूर्णेम् ।। जन्माष्टमी जनमनोनयनाभिरामांतांपाप हांस पदिनंदितनंदगोपाम् ।। यो देव सर्वदयितांय जतीह तस्यां ।। पुत्रानवाप्प सुमुपैतिपदंचविष्णोः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 639** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री निरालंबोपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–5 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिये खींचे गये हैं।

आकार : 23 X 11 से०मी० लिखित 18 X 7 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : खुली हुई पत्रांक रचना । काली तथा लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना निरालंब उपनिषद में समस्त ज्ञानवर्धक प्रश्नों का उत्तर दिया गया है जैसे ब्रह्म क्या है ? ईश्वर क्या है ? प्रकृति क्या है ? तप क्या है ? आदि–आदि

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुभ्योनमः ॐनमः शिवाय गुरुवे सच्चिदानंद मूर्त्तये ।। निष्प्रपंचाय नूगंताय निरालंबाय तेजसे ।। १ ।।

अंत : इति श्री निरालंबोपनिषदंयोर्वितेस ब्रह्म भू त्वान पुनरावर्सलेइत्युयनिषदं निरालंबनाम अथवर्णस्य समाप्तं ।। श्रीरस्त्त कल्याणमस्तुश्भुनं भूयात ।। श्री परमात्मने नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 640** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : छज्जूराम

टीकाकार : –

शीर्षक : विष्णु पंजर स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–5 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से लाइनें खींची गई हैं।

आकार : 22 X 11 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : पाँच पृष्ठों की खुली हुई कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।

विशेष विवरण : विष्णु पंजर स्तोत्र नामक इस रचना में विष्णु की स्तुति की गई है।

आरम्भ : श्री गुरवे नमः ।। श्री गणेशाय नमः । अथ विष्णु पंजर स्तोत्रश्शरम्यते ।। अस्य श्री विष्णु पंजर स्तोत्र मंत्रस्य नारद ऋषिर नुष्टप छंदः

अंत : इति श्री ब्रह्मपुराणे ईन्द्रनारदे श्रीविष्णु पंजर स्तोत्र सम्पूर्णम् ।। हस्ताक्षराणि छज्जू राम शर्म्मणः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 641** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : भविष्योत्तर पुराणे गणेश स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 22 X 14 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : खुली हुई कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : कृति का विषय गणेश स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। युधिष्ठिर उवाच ।। श्री कृस्म जगतांनाथ कृपांकुरुदयानिधे।।

अंत : इति श्री भविष्योत्तर पुराणे गणेश स्तोत्र समाप्तम् ।। 0 ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 641** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : श्शनि स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 3–6 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 22 X 14 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय शनिदेव की स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों श्री दंडाय नमः शन्नोदेवीरिति मंत्र स्पदध्यंगाथर्वण ऋषिर्गायत्री छंद ।।

अंत : गोचरेजन्मलग्नेचदश्शास्वंतर्दश्शासुच ।। रक्षामि सततंतस्य पीडानान्य ग्रहस्पच ।। ग्रहस्पच ।।२१।। अनैनवविधानेन पीडामुक्तं जगद् भवेत् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 641** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : व्यास

टीकाकार : –

शीर्षक : मंगल स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 6–7 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 22 X 14 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : मंगल स्त्रोत की रचना व्यास ऋषि द्वारा की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अस्य श्री मंगल स्तोत्रस्य विरुपा ऋषिरनुपृप्छंदो भुवनेश्वरी शक्तिर्मगलो देवता ।। ऋणमुक्ति हेत वेजये वापादे विनियोगः ।। व्यास उवाच ।।

अंत : इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे व्यासयुधिष्ठिर संवादे व्यास कृतं मंगल स्त्रोतम् संपूर्ण ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 641** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रज्ञा विवर्द्धनं स्त्रोतम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 7–8 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 22 X 14 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : बुद्धि विकास हेतु स्त्रोत रचना की गई है। इसमें शिव पुत्र कार्तिक की स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। योगीश्वरो महासेनः कार्तिकेयोग्रिनंदनः ।। स्कंदः कुमार सेनानीः स्वामी शंकर संभवः ।। १ ।।

अंत : सप्त विंशति दिनैरेकं पुरश्च्चरणकं भवेततः ।। इति प्रज्ञा विवर्द्धनंस्तोत्रम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 641** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	बृहस्पति
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सरस्वती स्तोत्रम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	7–9 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	22 X 14 से०मी० लिखित 16 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	पूर्ववत् ।
विशेष विवरण	:	सरस्वती वंदना हेतु स्तोत्र रचना की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। बृहस्पतिस वाच ।। सरस्वस्नि नमस्यामि चेतनां हृदिसंस्यितां।।
अंत	:	इति स्कंदपुराणे बृहस्पति कृत सरस्वति स्तोत्रम् ।। संपूर्णम् ।। 8 ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 642** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	रघुनाथ
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री भगवान्नाम् माहात्म्यं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–29 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	26 X 13 से०मी० लिखित 20 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		1–12
विवरण	:	खुली हुई रचना । काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	प्रस्तुत रचना में भगवान् के नाम का महात्म्य वर्णित किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्रीमते रामानुजाय नमः उों यत् नामकीर्तनादेव सद्यः पापक्षयो भवेत तमहं संस्मरामी रांशिवं कृस्मं विमुक्तये १
अंत	:	इति श्री रघुनाथ यतिना विरचितं श्री भगवान्नाम माहात्म्यं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 643** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गंगाधर सरस्वती

टीकाकार : –

शीर्षक : कैवल्यउमाख्या

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–130 चित्र :

हाशिया : नहीं

आकार : 16 X 35 से०मी० लिखित 11.5X 28 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–12

विवरण : पृष्ठ–पृष्ठ हुई यह हस्तलिखित कृति बिना जिल्द के है। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : कैवल्य पर आधारित इस ग्रंथ में लेखक ने कैवल्य सिद्धि की चर्चा की है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों सरस्वत्यै नमः उों गुरुभ्योनमः तरुणतपन् वर्णकर्ण लीलावधूप भ्रम रनि वॅगुजाकर्णनो द्रत हर्ष अमरवर किरीटो ह्रहपादान्जमंतः स्फुरत दलित विन्भदंति वक्रंमहोनः १

अंत : इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मद्रामचंद्र सरस्वतीपूज्यपादशिष्येण गंगाधर सरस्वत्याख्यभिक्षुणा विरचितायामात्मैम्राज्य सिद्धि व्याख्यायां कैवल्यॅउमाख्यायामध्यारो पप्रकरणाख्यं पूर्वार्द्ध समाप्तम् श्रुभमस्तुसर्व ।। जगताम ।। रामचन्द्राय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 644** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : ज्योतिष सम्बन्धी

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–5 चित्र :

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया ।

आकार : 21 X 11 से०मी० लिखित 15 X 6 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–9

विवरण : अपूर्ण रचना । केवल मात्र पाँच पृष्ठ उपलब्ध हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : शुभ लग्न एवं राशि के विषय को रचना में वर्णित किया गया है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्रीगणेशाय् नम् उों पूंर्वप्रणभ्येश्वर पादपद्यंतो भवानी गणनायक चकरोभिरम्यं फलैन्हाय नंच भंवति तज्ञाविद्नतेन ।।१ ।।

अंत : कवूलपूर्वागदित ग्रहज्ञै छ0 ।। मित्रस्य गेहेयदि भूमिपुत्रोनि जेथवास्योच्गृहै कवूलददा ।। राज्यं विपुलं मानोना...............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 645** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रतिज्ञा सूत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :

रचना के विषय का समय : संवत् १६४0 शकाब्द १८0६ (मुद्रित काल)

रचनाकाल :

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1 चित्र :

हाशिया : मुद्रित।

आकार : 27 X 14 से०मी० लिखित 21 X 11 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–9

विवरण : एक पृष्ठ की रचना जो कि शिलायंत्र से मुद्रित हुई है।

विशेष विवरण : वेद के आधार पर प्रतिज्ञा मंत्र पर प्रकाश डाला गया है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। अथ प्रतिज्ञा मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधयं तस्मिञ्छुकले याजुषाम्माये..........

अंत : पदाद्यस्य संयुक्ताकारस्येषछीर्घता च श्वतीति ।। ३ ।। इति कात्यायन परिशिष्ट सूत्रं समाप्तम् ।। श्रीरस्तु ।।६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 646** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री शंकर भगवतः

टीकाकार : –

शीर्षक : छांदोग्य भाष्य टीका षष्टः प्रपाटकः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : –

रचनाकाल : –

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–44 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 38 X 19 से०मी० लिखित 29 X 13 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–15

विवरण : खुली हुई पर पूर्ण रचना । लिखाई साफ एवं पठनीय है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी स्याही लगाई गई है।

विशेष विवरण : श्री शंकर द्वारा छांदोग्य उपनिषद् के षष्ट प्रपाटक की भाष्य टीका की गई है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः वर्तिष्य माणाध्याय स्याती तेनसंदर्भेण संवंधंवक्तं प्रतीकं गृहीत्वातं प्रतीज्ञानीते श्वेतकेतरिति........

अंत : इति श्री गोविंद पूज्यपाद शिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकर भगवतः कृतौच्छांदोग्योपनिषद्विवरणेषष्टः समाप्तः।।६ ।।...............इत्यानंदज्ञान कृतायांछादोग्य भाष्य टीकायां षष्टः प्रपाटकः समाप्तः ।।६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 647** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : चाणक्य नीतिशशास्त्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : –

रचनाकाल : –

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–35, 47 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 24 X 13 से०मी० लिखित 16 X 8 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : चाणक्य नीति सम्बन्धी यह रचना अधूरी है। एक से पैंतीस पृष्ठों के बाद फिर नंः 47 उपलब्ध है। रचना अधूरी है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : चाणक्य की राजनीतिशशास्त्र सम्बन्धी इस रचना में छः अध्याय उपलब्ध हैं जिनमें राजनीति के तत्वों पर विचार किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों एकदंष्टंत्रि नयनं ज्वाला नल सम प्रभं गणाध्यक्षंगज मुखंनमस्यामि विनायकें १ प्रणभ्य षिरमाविस्मुंत्रैलोक्याधिपतिंप्रभुं नाना शास्त्रो हृतवक्ष्ये राजनीति समुच्चयं येनसमागधीतेन प्रज्ञाविस्नरतेन्टणां सत्यश्शौचरतानित्यं हिंसा क्रोध विवर्जिता ३

अंत : दोष करियिहंतव्योग्टहजानोपिभूषकः तपः प्रधानैर्हितकृन्मार्जारः प्रार्थ्यगृते गृहे ७६ वाजिनोय

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 648** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : अजब् पुरी संन्यासी

टीकाकार : –

शीर्षक : प्राणाग्निहोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : –

रचनाकाल : –

रचना–स्थल : –

पृष्ठ : 1–14 चित्र :

हाशिया : –

आकार : 23 X 12 से०मी० लिखित 27 X 7 से०मी०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : खुली हुई 14 पृष्ठों की रचना । काली तथा लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लाल स्याही का प्रयोग रचना के आरंभ तथा अंत में तथा पूर्णविरामों हेतु किया गया है। लिखाई साफ एवं सुंदर है।

विशेष विवरण : योग सम्बन्धी यह रचना लेखक के अनुसार प्राण वायु से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उँ नमः शिवाय : ।। स्कंद उवाच ।। उँ अल्प वित्तानरायेच अग्नि होत्रंन कुवते ।। तेषां प्राणग्निहोत्रंतु प्रसादं कुरुश्शूणभृत् ।। १ ।। शरीरेस्मिन्कत्यग्नयः ।। को यजमानः ।।

अंत : विमल ज्ञान सलिलै : स्यायाद्योहि दिने दिने ।। तत्पात्रंसर्वपात्राणंतारणं परमंस्मृतं ।। इति श्री शिवकुमार संवादे प्राणाग्निहोत्रंअजबू पुरीसन्नयसि पवनार्थेलिखितम् सम्पूर्णं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 649** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	व्याकरण परिभाषा
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	–
रचना के विषय का समय	:	–
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–4 चित्र :
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये
आकार	:	28 X 12 से०मी० लिखित 24 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9
विवरण	:	चार पृष्ठों की खुली हुई अपूर्ण रचना । लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है। आरम्भ में लिखाई साफ है जबकि चौथे पृष्ठ पर शब्दों के अनुपात तथा बनावट में कुछ अंतर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। व्याख्यानतो विशेष प्रन्तिर्न्नसंदेहादलक्षणम् ।। नहि कार्यं निमित्त न्वेनाः श्रीयते ।। अर्थव ग्रहणे नानर्थस्य ग्रहणम् ।। नवर्एग्रहणेषु ।। २ ।।
अंत	:	अंतरंगा नपिविधान्बहिरंगोलुग्बाधते ।। ३घ ।। अनि नस्मिनृग्रहणान्यर्थवताचानर्थ केनचतदंत विधि प्रयोजयंति ।। ३५ ।। विधिनियम संभवे विधि रेवज्यापायान् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 650** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	ब्रह्मसूत्र वृत्ति सहितम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है:	:	
रचना के विषय का समय:		–
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–44 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	38 X 19 से०मी० लिखित 29 X 13 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	1–15
विवरण	:	खुली हुई पर पूर्ण रचना । लिखाई साफ एवं पठनीय है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी स्याही लगाई गई है।
विशेष विवरण	:	श्री शंकर द्वारा छांदोग्य उपनिषद् के षष्ट प्रपाटक की भाष्य टीका की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः वर्तिष्य माणाध्याय स्याती तेनसंदर्भेण संवंधंवक्तं प्रतीकं गृहीत्वातं प्रतीज्ञानीते श्वेतकेतरिति........
अंत	:	इति श्री गोविंद पूज्यपाद शिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकर भगवतः कृतौच्छांदोग्योपनिषद्विवरणेषष्टः समाप्तः ।।६ ।।............... इत्यानंदज्ञान कृतायांछादोग्य भाष्य टीकायां षष्टः प्रपाटकः समाप्तः ।।६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 651** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	कलियुग भविष्यवाणी
क्या हस्तलिखित/नक्ल है:	:	
रचना के विषय का समय:		–
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–2 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	से०मी० लिखित 16 x 8 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	8
विवरण	:	दो पृष्ठों की रचना । काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	कलियुग की भविष्यवाणी से सम्बन्धित इस रचना में विभिन्न तीर्थों की स्थिति का वर्णन करते हुए कलियुग का प्रभाव बताया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः वालखिल्या ऊचुः प्तांस्तस्मै वरान्दत्व अंतराद्वानंययौहरिः तस्मात्सर्व प्रयत्नेन पूज्यो हरिहरावुभौ १
अंत	:	स्वल्पा युषः स्वल्पभाग्याना नारोगैश्च पीडिताः छित्राश्च दक्षिणे देशे वेदज्ञाः संभवंतिच आनी यतान् शाक कर्ता धर्म संस्थापयिष्यति १२ श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS – 652** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वैराग्य शतकम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है:	:	
रचना के विषय का समय:		–
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थल	:	–
पृष्ठ	:	1–11 चित्र :
हाशिया	:	–
आकार	:	23 X 12 से०मी० लिखित 19 X 9 से०मी०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	12
विवरण	:	रचना खुली है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई स्पष्ट है और ठीक–ठाक है।
विशेष विवरण	:	वैराग्य शतक नामक यह रचना विराग–भावना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री परमात्माने नमः अथ वैराग्य शतमारभ्यते ।। यांचिंत याम्पनुदिनं मयिसाविरक्तासाप्यन्य मिद्दति नरं सनरोन्य सक्तः ।। अस्मत्कृतेतुपरि तुष्यति काचिदन्याधिक्तांचसंचमदनं च इमांच मांच ।।१।।
अंत	:	शय्याभूमि तटी दिशोपिवसनं ज्ञानामृतंभोजनं एरोसंति कुटंवि नोमम सखेकस्माद् भयं योगिनः ।।१।। ब्रह्मांडमंडली मात्रं किंलोभायमनस्विनः ।। शफरी स्फुरि सेनाण्द्ये क्षब्ध राजासु जायसे ।।११।। इति अवधूतचर्या कथनंद शकंद शमम् ।।१०।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 653** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : अध्यात्म रामायण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ अलग–अलग कांडों की पृष्ठ संख्या अलग अलग है। चित्र ________

आकार : 29 X 16 स०म० लिखित 22 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : अध्यात्म रामायण नामक प्रस्तुत कृति खुली हुई है जो आरंभ से उत्तरकाण्ड के चतुर्थ अध्याय तक मिलती है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : राम जीवन सम्बन्धी राम कथा का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों नमः सरस्वत्यै उों नारायणं नमस्कृत्य नरंचैवनरोन्नमम् देवी सरस्वती व्यासंततो जय मुदीरयेत श्री सूत उवाच ।।

अंत : इति श्रीमद्ध्यात्मरामायपध आरामोपि सीता रहिता परात्मा विज्ञान हक
केवल आदिदेवः सत्यत्युभोगानाखिलान्विक्ता मुनिव्रतो भून्मुति से तितांघ्रः उत्तरकांडे चतुर्थोध्यायः च ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 654** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	रमल रत्न (ज्योतिष)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् 1943
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–184 चित्र ________
आकार	:	24 X 17 स०म० लिखित 13 X 20 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		16
विवरण	:	गत्ते की जिल्द में रमल रत्न नामक यह ग्रंथ पूर्ण है। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। ग्रंथ में बीच बीच में कुण्डिलियां जोकि राशि से सम्बन्धित हैं बनाई गई हैं।
विशेष विवरण	:	ग्रंथ का विषय ज्योतिष से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों नमः श्री गुरुवनमः वंदे तंगणनाथमार्ज वदनंद दारिद्रय् दावानइं सुडा दंड विर्धॅप मानस मंरसंसार सिधोस्तरि यंनत्वा सूरकोटया प्रभुवरं सिद्धि लभंते परां सिंह रारुणविग्रहं परिधतं दांतां बुधारा वृंज १
अंत	:	इति श्री रमल रत्न वार्तक सर्वोपरि विराजमान भूतभविष्य वर्तमान प्रश्रज्ञेय ग्रंथ सम्पूर्णम् ।।शुभम्।। संवत् १६४३ राधाकृस्म की जय रामाय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 655** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री मिश्र कुलपति

टीकाकार : –

शीर्षक : रस रहस्य

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् 1827

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 10–87 चित्र ________

आकार : 23 X 18 स०म० लिखित 18 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13

विवरण : रस–रहस्य नामक यह ग्रंथ अपूर्ण है। पृष्ठ 10 से उपलब्ध है। आरम्भ के दस पृष्ठ नहीं हैं। आगे पृष्ठ 40 से 51 तक के पृष्ठ कीड़े द्वारा आधे–आधे नष्ट कर दिए गए हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। बीच में पृष्ठ 51 पर जंत्र बनाये हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय रस से सम्बन्धित है जिसमें रस, रसांगों तथा विभिन्न रसों का वर्णन किया है।

आरम्भ : अर्थातर संक्रमित वाच्यध्वनिक दावै।। सोइथा।। यह समयौ पैहैनफटि कहै बैंन समुझाइ।। निजहिः तम्नमै समुझि कैं जीति परिनकेदाइ।।४।।

अंत : संवत् सत्रह सै बरष बीते सत्ताईस।। कातिग बदी एकादशी बार बरनीवॅानीस ।।२३२।। इति श्री मिश्र कुलपति बिरचिते रसरहस्ये अर्थालंकार निरूपतं नाम अष्टमो बृत्तांत।।८।। इति श्री ग्रंथ रसरहस्य समाप्ताः।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 656** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	ग्रह शांति कर्मना
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–10 चित्र ________
आकार	:	24 X 17 स०म० लिखित 18 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		19
विवरण		: पृष्ठों की खंडित रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई पठनीय है। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय मंत्रोच्चारण से सम्बन्धित है। ग्रह शाति के लिए मंत्र रचना की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः हस्तौपादौप्रक्षाल्य सनोप विशर्चिम्य समुखश्वेतिना श्री गणेशं प्रणभ्य उों विस्मु उों हरि उों नमः परमात्मने पुराण पुरुषोतमाय श्री विस्मवे श्री भगवतो राज्ञया प्रवृतमान............
अंत	:	त्रयवालत संख्याक यजुर्वेदीय मंत्रकरणक मंत्र जप कर्मतत्पूजन कर्मतदीय स्रोत्रपाठ कर्मतदशांश हवन तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन कर्म कंर्तु मनेन सफल वासों गुलीय कासन मूल्योपकल्पि............

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 657** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	सुमेधसौ ऋषिः
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	देव्यापरं सूक्तं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	–
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–5 चित्र ________
आकार	:	21 X 11 स०म० लिखित 16 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	10
विवरण	:	पाँच पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवी स्तोत्र से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अस्य श्री परमदेवी सूक्त माला मंत्रस्य मार्कडेय सुमेधासौ ऋषि गायत्र्यादि नाना विधानि छन्दासि त्रिशक्ति रूपिणी चंडिका देवता ऐं वीजं ही शक्तिः ल्कीं कीलकं मम चिंतत मनोरथ सिद्धार्थे जपे विनियोगः ।।
अंत	:	शतत्रयं जपेत जस्तु वर्ष त्रयमतप्रितः सपश्येत् चंडिकां साक्षात् वरदान कृतोद्यमां इदं रहस्यंय परमं गोपनीय प्रयत्नतः न वाच्यं कस्य चिद्देवि वियान मिव सुंदरि।। इति श्री रामेश्वर तत्रे भेरव भैरवी संवादे देव्यापरं सूक्तं समाप्तिम गात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 658**	भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	शुकदेव स्वामी	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	रंभा संवाद	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	—	
रचना के विषय का समय	:		
रचनाकाल	:	—	
रचना–स्थान	:		
पृष्ठ	:	1–4	चित्र ________
आकार	:	24 X 12 स०म० लिखित 16 X 8 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8	
विवरण	:	चार पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनाथ लाल तथा काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है।	
विशेष विवरण	:	शुकदेव तथा अप्सरा रंभा के संवाद में ईश महिमा तथा नायिका सौन्दर्य का वर्णन है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। शुक उवाच ।। अचिंत्य नूपोभगवान्नि रंजनो विश्वंभरो ज्योति मद्यःचिदात्मा नटपायनो येन हृदिक्षणां वावृथा गतं तस्य नरस्य जीवनं १	
अंत	:	श्रुक उवाच ।। नयत्र शोकोनं जरानमृत्यु भवत्यदुः स्वंवि विधान आपदा २३ इति श्री श्रुकदेव स्वामी विरचितं रंभा संवाद संपूर्णम् ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 659** भाषा : पुरानी हिन्दी–संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : योगी गोरखनाथ

टीकाकार : –

शीर्षक : शावदी मंत्र पटली

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–15 चित्र _________

आकार : 17 X 13 स०म० लिखित 14 X 108 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : शावदी मंत्र पटली नामक यह रचना पूर्ण है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। स्थान–स्थान पर लिखाई का अनुपात बदला भी है। अन्तिम पृष्ठ पर पैंसिल से भी कुछ लिखा है जो पठनीय नहीं है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मंत्र साधना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमोअमृतकामनी राजा प्रजा मोहिनी उर पत्तन्न मोहनी सर्वदुष्ट वसीकरणी उों अंवको स्वहा के ज २१ पठणा उों नमो वलवर्द्धिनी उक्ल वर्द्धिनि अयं अमृतौ घथीतिष्ट स्वहा १०८ रे । आहस्त।।बित्रा।।स्वा।म्हाम्त।।४४ अथ उवद पद्दा येंदी घूर्णा ।। हरे आउल १

अंत : एक सों अकास वंधो इकसो पताल बंधो अंवामह अंवाधोएन नई त्तने वांधकोनालि आवेतो हिंदूकों गौ मुसलमान को सूर इसकाना महजरायत हे जोजना तवसना आवै ताई सगातादेणा तर वारनं गोकरके सभ जना तरू जहो एक खोल उठे मंत्र मालाजना नरका।।.............ह्रीं ंश्री द्राद्रीक्लीञ्चं जंज वानारवे कामेश्वरि बानदेवते स्वाहा।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 660** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : पंडित चूड़ामणी दाक्षिणात्य

टीकाकार : —

शीर्षक : श्री रमलशास्त्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : —

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : 1928 संवत्

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–62 चित्र ________

आकार : 24 X 15 स०म० लिखित 19 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 20

विवरण : रमलशास्त्र से सम्बन्धित यह रचना जिल्द में बंधी है। पहले आठ पृष्ठ कोरे हैं। फिर अगले आठ पृष्ठों पर पृष्ठ और पंक्ति लिखकर अनुक्रमणिका के लिए लाइनें खींची हैं। अंत में भी कुछ पृष्ठ कोरे हैं। लिखने के लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ज्योतिष से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री परमात्मने नमः ।। सम्वत् १८२५ विक्रमादित्य में श्री पंडित चूड़ामणि दाक्षिणात्यने वडे परिश्रमे से अनेक ग्रंथ संस्कृत और पावनी भाषा केरमलशास्त्र के विषे में इक............

अंत : शुभ से बहुत व्यय और व्यर्थ का होना कहे अशुभ से सार्थ और स्वल्प व्यय का होना कहे । राम ।। सीतारामाभ्यां नमः ।। ।। इति श्री रमलशास्त्र कामधेनोर्महूर्त प्रकरणे तृतीयो विश्रामः शुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 661** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री महिम्नः स्तोत्र टीका

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–17 चित्र ________

आकार : 20 X 14 स०म० लिखित 15 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : सत्रह पृष्ठों की खुली हुई रचना। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : ब्रह्मा तथा अन्य देवी देवताओं की महिमा का गान किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। हे हरते तव महिम्नो महत्वस्य परं पारमत्पर्थ भवसानम विदुषोऽजानतः पुरषस्य स्तुतिर्यघसहशी अननुरूपा भूयात्रार्हि ब्रह्मादीनामपि गिरोवाचरु चपित्वद्विषयेऽवसन्नाः कुंठिताः अथेति पृछतिस महिम्नः........

अंत : रस्वतीउघी पत्रंगृहीत्वासर्वकालं लिखति तदपि तवगुणनांपारनयति ।।३२।। इति श्री महिम्नः स्तोत्रटीका समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 662** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	भगवदानंद ज्ञान
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वृहदारण्यक भाष्य टीका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–106 चित्र ________
आकार	:	37 X 19 स०म० लिखित 28 X 14 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		13–16
विवरण	:	एक सौ छः पृष्ठों की पत्रांक कृति । लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। कहीं–कहीं लेखक ने संतरी स्याही का प्रयोग काली स्याही के ऊपर किया है। अनावश्यक शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय अरण्यक ग्रंथों से सम्बन्धित है। वृहदारण्यक का भाष्य टीका किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः मधु कांडेत्वाष्ट्रकक्ष्यंचेति मधुद्वयं व्याख्यातं संप्रति कांडांतरारभं प्रति जानीते जनक इति ननुपूर्वस्मिन्नध्यायद्वये व्याख्यातमेवत त्वमुत्तरत्रापिवक्ष्यतेतधाव पुनरुक्रेरलं मुनिकांडेनेति तत्राह........
अंत	:	इति श्रीमत्यपरिव्राजक श्री श्रद्धानंद पूज्य पाद शिष्य भगवदानंद ज्ञानकृतायां वृहदारण्यक भाष्य टीकायां पचमोध्यायः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 663**	भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	भगवदानंद ज्ञान	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	छांदोग्य भाष्य टीका	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	—	
रचना–स्थान	:		
पृष्ठ	:	1–25	चित्र ________
आकार	:	38 X 19 स०म० लिखित 29 X 14 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		16	
विवरण	:	छांदोग्य उपनिषद् भाष्य टीका नामक यह रचना पूर्ण है। लिखाई स्पष्ट है। छुटे हुए वर्ण लेखक ने किनारों पर पंक्ति के सामने लिखे हैं।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों षष्टसप्तमयोरध्याययोः संवंधंवक्तुकामः षष्टेवृतं कीर्तयति परमार्थेति उत्तमाधिकारिणं प्रत्यवाधिततत्वबोधनं प्रधानं तत्पेरातीतोध्यायः	
अंत	:	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञानकृतायांछांदोग्य भाष्य टीकायां सप्तमः प्रपाटकः समाप्तः ७	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 664** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : विवेक चूड़ामणि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–26 चित्र ________

आकार : 24 X 14 स०म० लिखित 20 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : छब्बीस पृष्ठों का यह खुला हुआ पर पूर्ण ग्रंथ। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों एवं संख्या बताने हेतु काली के ऊपर केसरी स्याही लगाई गई है। छुटे हुए अक्षरों एवं पक्तियों को हाशिये के ऊपर लिखा है।

विशेष विवरण : रचना में विवेक बुद्धि के लक्षण एवं उसके स्वरूप का वर्णन किया है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः उों सर्ववेदांत सिद्धांत गोचरतम गोचरं गोविंदंपरमानंद सद्‌गुरु प्रणतोस्म्पहं १ जंतूनांनर जन्मदुर्लभमतः पुंस्त्वततोविप्रता तस्माद्वैदंकधर्ममार्ग परता विद्वत्वमस्मात्परं आत्मानात्म विवेचनं स्वनुभवो ब्रह्मात्मनासं स्थिति मुक्ति र्नोशजन्मकोटि सुकृतैः पुरापैर्विनालभ्यते २

अंत : परिभ्राम्यतां अत्यासन्नसुखावुधिसुख करं ब्रह्मा द्वयं दर्शयंत्येषा शंकरभारती विजयते निर्वाणसंदायिनी ६० इतिमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद्‌गोविंदभगवत् पूज्यपाद शिष्य श्री मच्छंकराचार्य कृतोविवेकचूड़ामणिः समाप्तः शुभमस्तु सर्वजगताम् संवत् १८६३ ।।छ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 665** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : स्वरूपाचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : सारस्वती प्रक्रिया

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६२०

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 8–36 चित्र ________

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 9 X 23स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : सारस्वती प्रक्रिया नामक यह ग्रंथ पृष्ठ आठ से उपलब्ध होकर अंत तक चलता है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : सारस्वती प्रक्रिया नामक इस कृति का विषय सरस्वती स्तुति से सम्बन्धित है। लेखक ने स्तुति के साथ–साथ शब्द रूप, धातु तथा वैयाकरणिक प्रयोगों शुद्धियों की ओर भी संकेत दिये हैं।

आरम्भ : दु॰अषदत् शद्लविषरणगत्यवसादनेशु अस्यं सीदादेषः सीदति ससादसेदतुः सेदिथ्ससस्य सद्यात सता सत्यस्यति असत्स्यत् असदत् इतिदृषादयः गमांछः गम्यमिपूषाछो भवत्यवादौ गलमृतौ गछति गछेत गछतु अगछत् जगाम गमोस्वरे

अंत : अवताद्वोहयग्रवः कमलाकर ईश्वरः सुरासुर नराकारमधुपापीतपत्कजः २ इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य मनुभूति स्वरूपाचार्य विरचित सरस्वती प्रक्रियासमाप्तम् ।।संवत् १६५०।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 666** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्रीमद् शंकर भगवत्

टीकाकार : –

शीर्षक : काठकोपनिषद् भाष्य टीका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–32 चित्र ________

आकार : 34 X 19 स०म० लिखित 26 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 15–17

विवरण : खुली हुई पूर्ण रचना। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग का प्रयोग काले अक्षरों पर किया है। अनावश्यक शब्दों को मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं किनारों पर भी कुछ वाक्य लिखे हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः धर्माधर्माद्यसंस्पृष्टकार्यकारणवर्तितं कालादिभिरविछत्तंब्रह्मयतत्रमाम्पहं १ यः साक्षात्कृत परमानंदोयावदधिकारं याम्पेपदेवर्तमानो कर्तृब्रह्मात्मतानुभवलतोभूतयातना निमितं दोषैरलिप्तस्वभाव आचार्योवर प्रदानेन परब्रह्मात्मैक्य विद्यामुयदिदेशयस्मैचोपदि देशताभ्यांनमस्कुर्वत्राचायं भक्ते...........

अंत : इति श्री गोविंद भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री मछंकरभगवत्कृतौ कठभाष्ये द्वितीयाध्याये तृतीयवली समाप्तासैवषष्टीवली। वंधःपवंविदित । इतिश्री काठकोपनिषद्भाष्यटीका समाप्ता ३ ।। समाप्तोय ग्रंथः ।। रामः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 667** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : श्री रामानंद सरस्वती

टीकाकार : —

शीर्षक : ब्रह्मसूत्रवृतौ ब्रह्मामृत वर्षिण्यां

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : —

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान :

पृष्ठ : 1—126 चित्र ________

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 24 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 16

हाशिया : आरम्भ के दो तथा अंतिम पृष्ठ पर काली तथा लाल स्याही से दोनों ओर हाशिया।

विवरण : पृष्ठ—पृष्ठ हुई पर पूर्ण रचना। सारे पृष्ठों के किनारे जहाँ तक कि कुछ लिखा हुआ भी कीड़े के द्वारा नष्ट कर दिया गया है जिससे रचना के खंडित होने का आभास होता है। अंत में ग्रंथ की अनुक्रमणिका भी लेखक ने दी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री राम चरण द्वंद्वमद्वंद्वानंद साधनं नमांमियदजो योगत्पार्पूणो पिसुरंवगतः संगतिः संशयः पूर्व पर पक्षौतयोः फलं भाष्यस्थाः १ श्रुतयः सर्वाःसूत्राण्यवशेषतः २

अंत : इतिश्री ब्रह्मसूत्रवृत्तौ ब्रह्ममामृतवर्षण्पांचतुर्थस्पाध्यायस्य चतुर्थपाह ।।४ इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मन्मुकुंद गोविंद श्री चरणशिक्षत श्री रामानंद सरस्वती कृतौ ब्रह्ममसूत्रवृतौ ब्रह्मामृतवर्षिण्यां चतुर्थाध्याया समाप्तः शुभमस्तु चतुर्थाध्यायेषुसर्वणि सूत्राणि ५०५

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 668** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नारायणेंद्र सरस्वति

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रश्नोपनिषद् भाष्य विवरणं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १८६६ संवत्

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–36 चित्र ________

आकार : 34 X 19 स०म० लिखित 26 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 17–18

विवरण : प्रश्नोपनिषद् नामक खुला हुआ पूर्ण ग्रंथ। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं आरम्भ के कुछ पृष्ठों में कीड़े द्वारा छेद कर दिए गए हैं। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है। महत्वपूर्ण अंशों पर संतरी स्याही काली के ऊपर लगाई गई है।

विशेष विवरण : उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथर्वणे ब्रह्मादेवानामित्पादि मंत्रैरेवात्मततस्य र्निणीतत्वा वंर्ब्रह्मणे नतदभियान पुनरुक्तमित्याशंक्यतस्यैवेहविस्तरेण प्राणोपासनादिसाय नसा हि पेना भियानात्रपोनरुक्तमिति वदन् ब्राह्मण मवतारयति मंत्रेति विस्तरेति मंत्रे.............

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्कैवल्येद्र शिष्य ज्ञानेंद्र गुरु चरणसेव नारायणेंद्र सरस्वति विरचितं प्रश्नोपनिषद्भाष्य विवरणं समाप्तम् १८६६ सं

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 669** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री धर्मराज दीक्षित

टीकाकार : –

शीर्षक : वेदान्त शिखामणि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 6–158 चित्र ________

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 9 X 213 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : वेदान्त शिखामणि नामक यह अपूर्ण कृति काली स्याही और सुन्दर सुलेख में रची गई है। महत्वपूर्ण स्थलों को दिखाने के लिए लेखक ने संतरी स्याही का प्रयोग काले अक्षरों पर किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदांत मीमांसा पर आधारित है।

आरम्भ : यथाद्रःयावताविनाचोदित करण सामंर्थ्य नास्नितावदनाम्नातमपि कल्पनीयं छिनद्यीत्पादीति विकृतिष्टिति अग्रयेजुश्टनिर्वयामीति व्रीहीणांमेयस्मुमनस्य मानइति मंत्रावुदाहन्पकि..........

अंत : गुरुकारुणालव्येनतारकं वंदेहवदनीयाना वंद्यावाचामयीश्वरी कामिता शेषकल्याणकलनाकल्प वल्लरी इति श्री मद्धर्मराजाध्वर्रादात्मज रामकृस्मायवरि विरचिते वेदांत शिखामणौ अष्टमः परिछेदः समाप्तश्चांय ग्रंथः संपूर्णः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 670** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भागवत पुराण हिन्दी भाष्य
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1—173 चित्र ________
आकार	:	32 X 18 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14—15
विवरण	:	अपूर्ण परन्तु खुला हुआ ग्रंथ। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठों के किनारे कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं। कुछ पृष्ठों की आवृत्ति भी मिलती है।
विशेष विवरण	:	भागवत पुराण से सम्बन्धित विषय
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः विश्वसर्ग विसर्गादिन व लक्षण लक्षित् श्री कृस्माख्यं परधाम जगद्धाम नमामतत १ दश मेदनमं लक्ष्यमाश्रिताश्रय विग्रहं क्रीड़ यदुकुलांभोद्यौपरानेद मुर्दीयते २
अंत	:	ननुन्टभिर्देवाः सेव्या इति प्रसिद्वंतत्राहदेवा इति स्वार्थाः स्वकार्य साधन पराःसाधवस्तु केवलं परानुग्रह पराः परमार्थत स्तुसाधयवदेवा इति तपव सेव्याइत्यर्थः तर्हिमृछिलादिमयाः किंदेवताद्योनैवेत्यतआहनहहीति ३० ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 671** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	श्री शंङ्कराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	हस्तामलक प्रश्नोत्तर
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		–
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–6 चित्र ________
आकार	:	33 X 27 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9–11
विवरण	:	छः पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। दो तीन तरह की लिखाई का प्रयोग हुआ है। कहीं–कहीं महत्वपूर्ण स्थल दर्शाने के लिए केसरी स्याही का प्रयोग काली पर किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेद ज्ञान पर आधारित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। भेदः पंचनिधः ।। जीवेश्वर भेदः ।।१।। जीप नीज्ञनी भेदः।।२।। जीव जगत भेदः ।।३।। जगत विषे घटपटादिकांदा भेद ।।४।। ईश्वर जगतदाभेद ।।५।।
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गोविंद भगवत्पूज्यपादशिष्य श्री शंङकराचार्य हस्तामल कस्य सार्द्धप्रछमोत्तरम् ।। उों श्री सीता रामाभ्यान्नमः ।। उों रामाः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 672** भाषा संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भेद खंडन
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–7 चित्र ________
आकार	:	33 X 27 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10
विवरण	:	सात पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई ठीक है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	१ उों श्री गणेशाय नमः उों श्री सीता रामाभ्यः नमः उों श्री हनुमते नमः उों श्री नृसिंह मूर्त्तये नमः 0 वनृे गणपति न्देवं सर्वय् विद्या निवारणं सरस्वती चिदानन्द गुरुञ्चैव विशेषतः २
अंत	:	स्वगत भेद कही दाहैयोण्क वस्तु विषे प्राप्त भया है भेदऔसे गौवियै श्रृंगयुछरचुरादिकांदा भेद है।। इति भेद खंडनं समाप्तं ।।=।।=।।=।।=

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 673** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : जगन्नाथ

टीकाकार : मिश्रभुदत्त

शीर्षक : गंगालहरी (टीका)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय : संवत् १६२८

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–15 चित्र ________

आकार : 33 X 18 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : पन्द्रह पृष्ठों की खुली कृति। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों के अक्षरों का अनुपात बड़ा है और सब सामान्य आकार में लिखा है। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गंगा के महत्त्व तथा स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः गंगा प्रणम्य वरदां बालबुद्धि सुसिद्वये जगन्नाथस्य लहरी व्याख्यानं प्रकरोम्यहं १ हे गंगे ते सुधा सौंदर्य अमृतवद सने सुदरं सलिलं नः अशिवं पापं शमयतु कथंभूत सकल वसुधायाः सर्व पृथिव्याः समृद्धं संपूर्णं सौभाग्यं शोभा रूपं पुनः लीलयात नितं उत्पादितं सकलं जगत् येनतस्य खंड परशोः शेवस्य......

अंत : इति गंगालहरी टीका समाप्तां संवत् १६२७ मासोन्नमे मासे श्रावण मासे शुक्लं पक्षे शुभतिथौ प्रतपदायां १ गुरु वाससरेमिंदपुस्तकं लिखतं मिश्र भूदत्त पठन्नीर्थ माया रामदास जी ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -674**	भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	श्रीमद् विश्वेश्वर	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	अष्टावक्र टीका	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	—	
रचना–स्थान	:	—	
पृष्ठ	:	1–53 चित्र --	
हाशिया	:	नहीं हैं	
आकार	:	35 X 16 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11–13	
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पीली स्याही का प्रयोग अशुद्धियों को शुद्ध करने के लिए किया गया है। पृष्ठों के किनारों पर भी विषय पूर्ति हेतु लिखा गया है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय अष्टावक्र ऋषि द्वारा प्रदत्त उपदेशों से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	उँ श्री गणेशायनमः ।। उों सच्चिदानंद हैतं सर्वाधिष्टानमुत्तमं नत्वाष्टावक्रसूक्तस्य दीपिका तन्यतेमया रह खलु ज्ञान विज्ञान संपन्नः परम कारुणिकोऽष्टावक्रमुनि......	
अंत	:	ध्ययिकैस्त्रिइति श्लोकैरित्यर्थः विद्यतेयेषुतते संख्या क्रमाईदशाः श्लोकाअमीकथिनाइत्पर्थः ६ शुभं भवतु इति अष्टावक्रः ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -675** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : अनुभूति स्वरूपाचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : सारस्वति प्रक्रिया

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–45 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 15 स०म० लिखित 23 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पैंतालीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है। पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेषाय नमः ।। अथारव्यातप्रक्रिया निरूप्यते ।। धातोः वक्ष्यमाणा प्रत्यप्याघातोसयःम्वादिः भूसत्ताया मित्यादिशर्व्देधातु संज्ञोभवति सचत्रिविधः आत्मनेय दीपरस्मैपधुभधयदी चेति आदिनुदातङ्तिः अनुदातेतोऊित्तश्च धातोण दिव्यात्मनेपदं भवति........

अंत : इतिश्री अनुभूतिस्वरूपाचार्येण विरचिता सारस्वति प्रक्रिया समाप्तम् शुभमस्क्त ।। रकारादीनिनामानिश्रृण्वतो मम पार्वति मनः प्रसंनातामेति राम नामाभिषंकया ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 676** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	वृहदारण्यक मूलम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		—
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१२६५ जैसा कि अंकित है
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–15 चित्र ________
आकार	:	30 X 14 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	पन्द्रह पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। काली स्याही पर संतरी स्याही का प्रयोग महत्त्वपूर्ण स्थलों पर किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय अरण्यक ग्रंथों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उेंनम ।। उषावाअश्वस्यमेध्पस्पशिरः सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणोव्यात्तमग्निर्वेश्वानरः संवत्सर आत्माश्च स्पमेध्यस्येद्यौः......
अंत	:	इति सहगवां सहस्म म बरूरोधदशदपादाकैस्पाः शृंगपोरावछाव भूवुः ।।१।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 677** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रवृत्ति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	श्रीसंवत् १९२
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–28 चित्र ________
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 22 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11–12
विवरण	:	खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं छूटे हुए शब्द पृष्ठ के किनारों पर लिखे हैं।
विशेष विवरण	:	रचना संवादात्मक शैली में है। आत्मा सम्बन्धी गूढ़ ज्ञान सगुण–निर्गुण उपासना की चर्चा की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री रामाय नमः पूर्वाध्यायांत्याधिक करणे मोक्षे विशेष नियमा भाव उक्तः से प्रतिमोक्षे हेतु ज्ञान साधनेषु श्रवणा......
अंत	:	सप्त अधिकरण निअंगानि पंचदश श्री राधाकृस्नाय नमः श्री संवत् १९२ वैशाष वदि द्वितीयां ग्रंथ सूत्रवृती समाप्तं ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -678** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	उदासीन आचार्य अमरदास
शीर्षक	:	गोविन्दाष्टक व्याख्या
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—22 चित्र --
हाशिया	:	नहीं हैं।
आकार	:	33 X 14 स०म० लिखित 28 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11—14
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गेणेषायनमः अज्बारिशत्रु प्रभवारित्तात्रं कर्णारित्तात्तारिसुतांक संस्थं गवीशगौरी शगवेंद्र पूज्यंनमामि वालेन्दुधरं द्विपास्पम् ।१। काकोदरो येन कृतो दरोयो मरुज्ज दूतो हरितातमित्रः रामाग्रजंतं सततंनमामो गोपात्म जास्योत्पलचारु भृंगम् २
अंत	:	इतिश्री मदुदासीन वर्य श्रीमदमरदासानुग्रहीते नाम रदास समाख्याधरेण विदुषा विरचिता गोविंदाष्टक स्तुति व्याख्या समाप्ताः ।। कुलार्पणमि । दमस्तु । समाप्तेयंगोविंदाष्टक व्याख्या

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 679** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : वृहदारण्यक अष्टम अध्याय

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : –

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–71 (29–39 तक पृष्ठ नहीं हैं) चित्र ________

आकार : 28 X 15 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12–13

विवरण : 71 पृष्ठों की खुली रचना। बीच में से 29 से 39 तक के पृष्ठ लुप्त हैं। लिखाई साफ एवं पठनीय है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों/अरण्यकों से सम्बन्धित है। वृह्दारण्यक के अष्टम अध्याय की टीका की गई है।

आरम्भ : उों श्री गुरुवे नमः उषावाअश्वस्यमेध्यस्यशिरः सूर्यश्चहर्वालः प्राणोव्यातमग्निर्वैश्वां नरः संवत्सर आत्मा अश्वस्य मध्य स्पधौः पृष्टमंतरिक्ष मुदरं पृथि अपार्श्वे अवांतर हिशः

अंत : ंउ इति श्री वृहदारण्यके अष्टमाध्याये परअमंब्राह्मणम् अष्टमोध्यायः समाप्तः १३० ग्रंथ संख्योक्तम् खण्ड संख्या ४३४ ब्राह्मण संख्य ४७ त्रयादेससाते १ चप्टथिवो नंषांते २

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 680** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : सभा प्रकाश

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–79 चित्र ________

आकार : 26 X 15 स०म० लिखित 18 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10–12

विवरण : सभा–प्रकाश नामक यह ग्रंथ अधूरा है। पृष्ठ 1 से 79 तक चलता है आगे के पृष्ठ नहीं हैं। अन्तिम पृष्ठों की तथा बीच–बीच में स्याही जगह–जगह से उखड़ गई है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय काव्यशास्त्र के अंतर्गत रस से सम्बन्धित है। रीतिकालीन रचना है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः अथ सभा प्रकास लिष्यते दोहा गौरि स्याम जोवयुधरैवरुत विचारैपक ज्यो विसर्गसोराषहै विजजनमन की टेक १

अंत : वचन का अलंकार संचित्र काव्य वरनेगें दोहा रचना जो कविरचने की काव्यलाहिनिरधारनी रसहूं प्रकट होता है काव्य...........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 681** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	मनसा राम पंडित काश्मीरिण
शीर्षक	:	अथर्ववदोपनिषद्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	संवत् १६७१
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–9 चित्र ________
आकार	:	24 X 11 स०म० लिखित 18 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	लाल एवं काली स्याही के प्रयोग से लिखी गई रचना। लाल स्याही का प्रयोग आरंभ और अंत में तथा पूर्णविरामों के लिए किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदों से अथर्ववेद के अंतर्गत अध्यात्म से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशायनमः ।। आथाथर्वशिरोपनिषल्लिख्यते ।। उों देवाहवैस्वर्ग लोकमायंस्त्रेरूइमष्टन्को भवानितिसो ब्रवीदहमेकः ।। प्रथम मासंवर्त्तमाना निच भविष्यामि ।।
अंत	:	इत्यथर्ववेदोपनिषत्सवधर्व शिरोपनिषत्संपूर्णम् ।। संवत् ।।१६७१।। भाद्रपद मासे वृस्माभ्यां मयामनसा राम पंडित काश्मीरिणा लिखितम् ।।राम।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 682** भाषा संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	महादेव
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	महाविद्या स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–6 चित्र ________
आकार	:	22 X 13 स०म० लिखित 16 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	छः पृष्ठों की पूर्ण रचना। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।लाल स्याही पूर्णविरामों के लिए प्रयुक्त की है। रचना के अंत में ज्वर विनाश हेतु एक यंत्र बनाया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुंदर है।
विशेष विवरण	:	मंत्र विद्या से ज्वर नाशक विधियों का वर्णन किया गया है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। पार्वत्युवाच महाविद्यांप्रवल्यामि महादेवेननिर्मितां ।। चिंत ताक्रंतनूपेण नृणामुदय नंदनी ।।१।।
अंत	:	इति श्री महादेव विरचिते महाविद्या स्तोत्रं संपूर्णम् ।। उों इदं यंत्रम वलोकिनेनज्वर नाशंयति ।। इदं द्विविल्लिख्य ।। एकम विलोकयति ।। द्वितीयंपिवेत ।। तत्रायं मंत्रो जपनीयं ।। उों नमो ज्वराय विरुद गणापभोम मूर्तये सर्वलोक भयं करायामुकस्यता पंहरहर इति मंत्रः ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 683** भाषा संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री रघुनाथ पण्डित

टीकाकार : लिपिकार पंडित राधे लछो

शीर्षक : डक ग्रंथ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–28 चित्र ________

आकार : 29 X 13 स०म० लिखित 23 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9–10

विवरण : अट्‌ठाईस पृष्ठों की रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : ज्योतिष । रचना का विषय ज्योतिष के अंतर्गत दिन एवं ऋतुओं का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों नमस्कृल्प महे शांती श्री वालां परमेश्वरी डक्केनभाषितां भानादेववाण्याव्रुवेधुना १

अंत : इतिश्री रघुनाथ पंडित विरचितोडक्कग्रंथः समाप्तः ० ० लिपिकृत राधेलछो पंडित पठनार्थम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -684** संग्रह (क) भाषा : देवनागरी

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह ने आत्माराम उदासी, जगराओं से प्राप्त की।

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग प्रकरण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–136 चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों ओ लाल रंग की तीन–तीन लकीरें

आकार : 30 X 21 स०म० लिखित 22 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : सजिल्द ग्रंथ। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गयाहै। लिखाई ठीक–ठीक है। यह रचना आत्माराम उदासी से जगराओं से प्राप्त हुई है।

विशेष विवरण : रचना का विषय दर्शन से जुड़ा रामकथा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : १ओं स्वस्त श्री गणेशाय नमः ।। अथि वैराग प्रकरण श्रवण ।। सिमृत भाशा लिषते।। सति चित्त अनंद रूप जु है आत्मा है। तिसको नमस्कार है।।

अंत : ताते इस मोछ उपाय का भली प्रकार अभ्यास करहु । इति श्री मोछ प्रकरण निरूपणों समापतं जाय सरगुरु ।। ।। ।। ४७।। इति श्री दुतीयं प्रकरणं समापतं।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -684** संग्रह (ख) भाषा : देवनागरी

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह ने आत्माराम उदासी, जगराओं से प्राप्त की।

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग प्रकरण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–309 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही की तीन–तीन लकीरें

आकार : 30 X 21 स०म० लिखित 22 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय दर्शन से सम्बन्धित है। रचना संवादात्मक शैली में है।

आरम्भ : उों शत्ति श्री गणेशाय नमः ।। अथ उत्पत्त प्रकरण लिषते ।। श्री वसिष्टोवाच ।। हे राम जी ब्रह्म वित्त यहु सर्वसवहुब्रंह्म सता के आसै पड़े फुरते हैं।।

अंत : अग्यानी करते हैं।। ग्यान दान नहीं करते ।। ।। इति श्री इसथिति प्रकरणो पूरण सो रूप वरननं नाम सरगह ।। ।। ।। ५६।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -684** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत–हिन्दी

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह ने आत्माराम उदासी, जगराओं से प्राप्त की ।

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग प्रकरण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 302– चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से

आकार : 30 X 21 स०म० लिखित 22 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : पूर्ववत्

आरम्भ : श्रीवसष्टोवास हे राम जी । यहि अैसे सिधांत पर उचित जो वस्तु है तिसकी गाथा ब्रिहसपत को जो पुत्र कच है तिस गाई थी। सो परम पावन रूप है।

अंत : इति श्री आरथे देवदूत उकत महांराज रामायणे सति श्रहश्र सहतायां बालकांड से डमोष उदया दो श्रुउप समप्रकरणे समापतं नाम सरगह ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -685**	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	माधव	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	सर्वदर्शन संग्रह	
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	संवत् १८	
रचना–स्थान	:	—	
पृष्ठ	:	1–111 चित्र --	
हाशिया	:	—	
आकार	:	35 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11	
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है और महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग शब्दों पर लगाया गया है। रचना का समय केवल संवत् अठारह लिखा है जो उचित प्रतीत नहीं होता।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शिव–स्तुति से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनमः उोंनित्यज्ञानाश्रयंवंदेनिश्रेयस निधिंशिवं येनैवजातंमद्यादितेनैवेदं ।। सकर्न्नक १ पारंगतंसंकल दर्शन सागराणामात्मेचितार्थ चरितार्थि तसर्वलोकं	
अंत	:	भवाम्पांनमोनमः शंकर पार्वतीभ्यां नमः शिवाभ्यांनवपौवनाभ्पा परस्पराश्लिष्टवपुर्धराम्यां नगेद्र कन्यावृषकेतनाभ्यां नमो नमः शंकरपार्वतीम्या ।। संवत् १८ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 686** भाषा संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नाना दीक्षित

टीकाकार : ठाकुरदास

शीर्षक : वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावली ठीका सिद्धान्त दीपिका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल :

रचना–स्थान :

पृष्ठ : 1–196 चित्र ________

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 26 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10–12

विवरण : खुली हुई रचना। लिखाई पठनीय एवं सुन्दर है। कहीं–कहीं पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों नमोनारायणाय उों नमः सरस्वतोरूपाय उों विश्वेशं दुरिजंजग हृदय कृते शारदां सूत्रकारं व्यासंचावार्य वर्यंत्रिभुवन विदितं शंकर भाष्यकारं

अंत : इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री प्रकाशानंद पूज्यपाद शिष्य श्री नानादीक्षित विरचिता वेदांत सिद्धान्त मुक्तावली टीका सिद्धान्त दीपिका समाप्तः यदि हृदय निवेगालनेखनी भांति भावाचयन चलन संगाछोत्र शवक्षावलं भात् लिखितं ठाकरदास पंडित जी ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 687** भाषा संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	रघुनाथ वर्मण
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	लौकिक न्याय संग्रह
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १८६६
रचना–स्थान	:	
पृष्ठ	:	1–114 चित्र ________
आकार	:	33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11
विवरण	:	खुली हुई रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई साफ एवं सुंदर है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय न्याय शास्त्र से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनमः यत्कीर्तिप्रभयासुश्रुक्ल भवने माया प्रभावैः प्रर्मोनीलाईर्जनिताप्रतीति रचलाधौः संवृताशोभते यच्छिष्पोडगणैः सनेगुरुरहोहां र्दाघकारा पहः श्री मदामदयालु रिंदुरमलोमोदय भूयात्सदा १
अंत	:	गुलाबराय वर्मात्मजेनोदासीनावस्येनश्रितचंद्र मौलिनाविमुक्त क्षेत्रस्ययनरचु। नाथवर्मणाविरचितौ लौकिक न्याय संग्रह समाप्तः ।। संवत् १८६६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -688** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शतिबुद्धिप्रत्यवसान

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–7 चित्र --

हाशिया :

आकार : 37 X 15 स०म० लिखित 24 x 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10–11

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पूर्णविराम एवं रचना के आरंभ के लिए लाल स्याही प्रयुक्त की है। विषय पूर्ति हेतु पृष्ठ के किनारे भी प्रयोग किए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय देव स्तुति एवं कर्मकांड एवं कारक सूत्र की व्याख्या से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः ।। गमनेइत्तिगत्तिः ।। वोधनमितिबुद्धिः ।। प्रत्यवसीयते इति प्रत्यवसानं ।। गतिश्रबुद्धिश्वप्रत्यय सानंच ।। तानिगति वुद्धे प्रत्यवसानानिअर्थाये यांते गतिवुद्धि प्रत्यवसानार्थाः ।।

अंत : भक्तेववा भक्तं देवंदर्षयते इत्याऽत्राःऽत्र्येतावस्थायं।। भक्तः।। कर्ताकर्मस्यात्कर्मऽभावय तेतृतीयास्यात् ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -689** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वार्तिक सार

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८८३

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–67 चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों तरफ लाल और काली लकीरें

आकार : 33 X 17 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14–16

विवरण : संग्रह की पहली रचना। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। सफेद तथा पीले पृष्ठ लगाये गये हैं। कहीं–कहीं पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय अरण्यक ग्रंथों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ¡१।। उों ।। श्री गणेशायनमः ¡उों।। वागीशाया स्सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।। यन्नत्वाकृतकृत्यास्सपुस्ननमामि गजाननम ¡१।। निज पद भक्त जनानानज लिखित षिरोलिपि ।

अंत : इति वार्तिक सारे मेय परीक्षा इत्युपोद्घातः समाप्तः ।।४।। x X X नैलभ्यते छीनतमोति दुःखी पात्र दया पाद आत्मदानात् ¡१।। इतिमेयपरीक्षा।।४।। इत्युपोद्घातः समाप्तः ।।१।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -689** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वार्तिक सार

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८८३ भादोसुदी

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–325 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल तथा काली स्याही के हाशिये

आकार : 33 X 17 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14–16

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय अरण्यक ग्रंथ से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नः ।। उत्कानुवादपूर्वकं प्रतिज्ञात मार्थ शिष्यावधानायवधानायस्मारयति वृहदीति ।१।। अरण्य इति वृहदाराण्यकश्शब्दनिर्वचनेन आरण्येति यनेनोपनिषदमधीत्यतदुक्तंत रंग वहिरंग........

अंत : प्रतिज्ञातार्थव्रजिशपन्न स्मीति तज्चकारविजहार प्रव्रजित वान् इत्यर्थः ।१।। इति वार्तिक सार संग्रह ष्षष्टोध्यायः समाप्तः ।।६।संमंत १८८३।।६। हरिउों तत्सत् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (क) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री विरराय मुनीश्वर

टीकाकार : –

शीर्षक : पंचभूत विवेक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–22 चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों तरफ लाल,पीली और नीले रंग से दुहरा हाशिया बनाया गया है तथा पहले पृष्ठ पर चारों ओर हाशिया है।

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : ग्रंथ की पहली रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रश्न उत्तर वाले स्थलों को संतरी स्याही से अंकित किया गया है। लिखाई साफ, स्पष्ट एवं पठनीय है। आरंभ तथा अंत के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पूरा ग्रंथ पृष्ठ नं0 23 से 364 पृष्ठ तक है जिसमें 15 रचनाएं संग्रहित हैं।

विशेष विवरण : रचना उदासीन सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। रचना का विषय पांच भूतों के ज्ञान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों श्री सत्गुरु प्रसाद अथ दूसरे विवेक का आरम्भ कर्ते हैं।। पंचभूत विवेक दूसरे विवेक का नाम है सत्यनूप अद्वितीय एक ब्रह्म जगत् का कारण है सो ब्रह्म मन वाणी ते परे है।

अंत : इति श्री विरण्य मुनीश्वर विरचितायां पन्चभूत विवेकः द्वितीया समाप्तः संपूर्णम् शुभंभूयात् ।। संवत् १६३६ आश्विन कृस्म एकादश्यालि नंदलालेन ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ख) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : लिपिकार–नंदलाल

शीर्षक : पंचकोश विवेक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–11 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल, पीली, नीली स्याही का हाशिया

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय मानव शरीर के भीतर पंचकोश से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों सतगुरु प्रसाद अथ पंचकोश विवेक नाम ग्रंथ का आरंभ कर्ते हैं। सो यह पंचदशी का तीसरा ग्रंथ है। किस वास्ते पंचकोश विवेक नाम ग्रंथ का आरंभ करते है।

अंत : इति श्री पंचकोश विवेकः समाप्तः श्रुभम् तीसरा ग्रंथ पंचदशी का समाप्तः सम्पूर्णम् लिपिः नंदलालेन

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ग) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : द्वैत विवेक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–11 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली, लाल,पीली और नीले रंग से दुहरा हाशिया

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : वर्णन–पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय आत्मा–परमात्मा के विवेक से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों सत्गुरु प्रसाद अथ चतुर्थ ग्रंथ द्वैतविवेक लिख्यते । अब चौथा जो विवेक है द्वैत विवेक नाम ग्रंथ तिसु का आरंभ कर्ते हैं।

अंत : इति श्री द्वैत विवेकः समाप्तः अर्थ चतुर्थ ग्रंथ पंचदशी का समाप्त होया संपूर्ण होया शुभम् सं १६३६ ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 690** संग्रह (घ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	लिपिकार नंद लालेन शर्मणः
शीर्षक	:	श्री महावाक्य विवेक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६३६
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–3 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर हाशिया
आकार	:	35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय मुमुक्ष के मोक्ष से सम्बन्धित ब्रह्म ज्ञान से जुड़ा है।
आरम्भ	:	ओं गणेशाय नमः ओं सत्गुरु प्रसाद अथ पंचम विवेक का आरम्भ कर्ते हैं जिस पंचम विवेक का नाम महावाक्य विवेक है तिस विषे प्रसिद्ध जो हैं चार महावाक्य तिन का अर्थ वर्णन करेंगे।
अंत	:	इति श्री महावाक्य विवेकः समाप्तः ।। पंचम विवेक संपूर्ण होया शुभमस्तु संवत् १६३६ आश्विन वदि कृस्मत्रयोदश्यां लिपि कृतं पंडित नंदलालेन शर्मणः ।। १ शुभम्भूयात् ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ङ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : लिपिकार–नंदलाल शर्मा

शीर्षक : चित्रदीपः

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–57 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर नीली, काली, पीली, लाल स्याही का हाशिया

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ववत् संग्रह की छठी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय ब्रह्म के अस्तित्व तथा संसार के अस्तित्व से सम्बन्धित है तथा सात द्वीपों में चित्रदीप का वर्णन किया है।

आरम्भ : उो श्री गणेशाय नमः ।। उों सतगुरु प्रसाद ।। दोहरा ।। श्रीमत् गंगाराम गुरुचरणकमल की भक्ति ।। जग को चित्र दिखाई के मेटदयी संशक्ति ।। अथ चित्र दीपदा आरंभ करते हैं। सो चित्रदीप पंचदशीदाछिंवा ग्रंथ है।

अंत : तात्पर्य यह चित्रदीपदे विचारणे करके जगत् मिथ्या प्रतीत होता है।। इति श्री चित्रदीपः समाप्तः: छिंवां ग्रंथ समाप्तः संपूर्ण होया है शुभम् ।। मार्गशिर शुक्ल पंचम्मां भृगुवासरे संवत् १६३६ लिपि कृत नंदलालेन शर्म्मणः ।। ⦿ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (च) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : तृप्तिदीप

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–71 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर हाशिया

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की सातवीं रचना

विशेष विवरण : रचना में दूसरे द्वीप तृप्ति दीप का वर्णन है। मूल विषय वृहदारण्यक ग्रंथ पर से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों सतगुरु प्रसाद श्री गणेशाय नमः ।। अथ तृप्तिदीप नाम जो दूसरा दीप है। आदि से पंचदशी दा सतवां ग्रंथ तिसका आरंभ कर्ते हैं। इस विषे वृहदारण्यक उपनिषद् की श्रुति का व्याख्यान करेंगे।

अंत : इस तृप्ति नाम ग्रंथ का जो सदा विचार करने वाले पुरुष हैं सो ब्रह्मानंद में मग्न होये होंये इस तृप्ति को प्राप्त होते हैं जैसे पिछे कथन करी है। इति श्री तृप्तिदीपः समाप्तः श्रुभंभूयात् इति श्री तृप्ति दीप पंचदशी दा सातवां ग्रंथ समाप्त हुआ संपूर्ण भया ।।७।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (छ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कूटस्थ दीप

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–14 चित्र --

हाशिया : पहले पृष्ठ पर चारों तथा अन्य पृष्ठों पर दोनों ओर हाशिया

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की आठवीं रचना।

विशेष विवरण : संवादात्मक शैली में लिखे गये इस ग्रंथ की विषय–वस्तु तीसरे द्वीप तथा मानव चित्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमः सत्गुरु प्रसाद।। अथ कूटस्थ दीपनाम जो ग्रंथ है तीसरा दीप आदि से पंचदशी का आठवां ग्रंथ तिसका आरंभ कर्ते हैं। जिज्ञासीआं नू मोक्ष का कारण ब्रह्म अर आत्मा दीपक तादा ज्ञान है।

अंत : जो पुरुष इस कूटस्थ दीप ग्रंथ दा निरंतर विचार कर्ता है सो निरंतर कूटस्थ रूपता करके प्रकाशता है अर्थ यह जो आपनूं सदा कूटस्थ रूप जानता है।। इति श्री कूटस्थ दीप पंचदशी दा आठवां जो ग्रंथ है सो समाप्त भया संपूर्णम् शुभं भूयात ।।८ ।। माघ शुक्ल एकादश्यां भृगुवासरे सं.१६३६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 690** संग्रह (ज) भाषा : हिन्दी – संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	नंद लाल
शीर्षक	:	ध्यान दीप
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६३६
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–35 चित्र --
हाशिया	:	पूर्ववत्
आकार	:	35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	पूर्ववत् । रचना संग्रह की नौवीं रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय चौथा दीप अर्थात् ध्यान से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों सत्गुरु प्रसाद । अथ ध्यान दीप नाम जो चौथा दीप है आदि से नावां ग्रंथ तिसदा आरम्भ कर्ते हैं श्रवण कीता आहै उपनिषदां जिस पुरुष ने उस पुरुष कों बुद्धि मंदता आदि किसी प्रतिबंध करके ब्रह्म दा अपरोक्ष ज्ञान जे करना होवे तौ तिस पुरुष ने ज्ञान नूं उत्पन्न करके मोक्ष दा कारण जो उपासना सो कीती चाहीये।।
अंत	:	इस ध्यान दीपनाम ग्रंथ नूं जो पुरुष भली प्रकार विचारता है सो संपूर्ण संशयां से रहित हुआ हुआ सदा ब्रह्म दे ध्यान नूं कर्ता है।। इति श्रीध्यान दीप पंचदशी दा नवमा जो ग्रंथ है सो समाप्त भया संपूर्ण भया ।।६।। संवत् १६३६ ।। फा.कृ.पं.भौ. लि. नंदलालेन शुभ भूयात ⊙

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (झ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : नाटक दीप

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–6 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : पूर्ववत् । रचना संग्रह की दसवीं रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय नाटक दीप से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों सत्गुरु प्रसाद ।। अथ पंजवां नाटकदीप आदि से पंचदशी का द्शवां ग्रंथ तिसदा आरंभ कर्ते हैं। मंद बुद्धि वाले जिज्ञासियां को यत्न से बिना निष्प्रपंच ब्रह्म दी आत्मनूपता दे ज्ञान वास्ते ब्रह्म वेति आने अध्यारोप अर अपवाद कल्पया है। इससे प्रथम परमात्मा विषे जगत दे अध्यारोप नूं कथन कर्ते हैं।

अंत : बुद्धि ने जो जो कल्पीता है अंतर अथवा बाहर वस्तु तिस तिस दा साक्षी रूपता करके तिस तिस वस्तु के अधीन परमात्मा नूं अंतर बाहर अनुभव कर। इति श्री नाटकदीपः समाप्तः संपूर्णम् ।। शुभम् १० हरिः उों तत्सत् रामाय नमः । कृस्माय नमः ।। परमात्मने नमः।। ब्रह्मणेनमः । विस्मवे नमः । हरये नमः ।।☉ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ञ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : ब्रह्मानंद

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–46 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ववत् । रचना संग्रह की ग्यारवीं रचना है।

विशेष विवरण : रचना का विषय योगी के ज्ञान से सम्बन्धित है ब्रह्मानंद प्राप्ति का मार्ग बताया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः।। श्री सत्गुरु प्रसाद ।। दोहा ।। श्री मत गंगाराम गुरु चरण कमल कों ध्याय ।। ब्रह्मानंद भाषा करों ब्रह्मानंद बुद्धि पाय ।।१।। अथ ब्रह्मानंद नाम ग्रंथ का आरंभ कर्ते हैं।। इस ब्रह्मानंद के पंच अध्याय हैं।। प्रथम अध्याय का नाम योगानंद है

अंत : प्रमाण कथन की तीयां अर स्मृतीयां भी प्रमाण कथन की तीयां अर अनुमान प्रमाण भी कथन कीता अर अर्थापति भी प्रमाण कथन कीती ।। इति श्री ब्रह्मनन्दे योगानन्दः समाप्तः ।। ११।। हरिः उों तत्सत् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 690** संग्रह (ट) भाषा : हिन्दी – संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	आत्मानंद
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६३६
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–22 चित्र --
हाशिया	:	पूर्ववत्
आकार	:	35 X 16 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	पूर्ववत् । संग्रह की बारहवीं रचना है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय जीव के आत्म आनन्द पर आधारित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नः ।। उों सत्गुरु प्रसाद ।। अथ आत्मानंद नाम दूसरे आनंद का आरंभ कर्ते हैं सो आदि से पंचदशी का बारवां ग्रंथ हैं। प्रथमाध्याय विषे विवेकी को योग करके निजानंद दे अनुभव का प्रकार वर्णन कीया मूढ़ जिज्ञासी को आत्मानंद नाम है जिसका
अंत	:	ब्रह्मानंद नाम ग्रंथ दे दूसरे अध्याय विषे आत्मानंद दा विवेक कीता है थोड़ी बुद्धि वाले जिज्ञासी को आत्म साक्षात्कार वासते इति श्री आत्मानंद नाम ग्रंथः समाप्तः १२

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ठ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : नंदलाल

शीर्षक : अद्वैतानंद

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–24 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 35 X 16 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की तेहरवीं रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय ब्रह्म एवं जीव के आनंद से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री सत्गुरु प्रसाद ।। अथ अद्वैतानंद नाम ग्रंथ दा आरंभ कर्ते हैं सो ब्रह्मानंद दा तीसरा अध्याय है आदि से पंचदशी दा तेरवां ग्रंथ है ।। शंका ।। प्रथम अध्याय विषे तुसां कहिआ सी आनंद तिन्न प्रकार का है ब्रह्मानंद १ अरविद्यानंद २ अरविषयानंद ३

अंत : ब्रह्मानंद नाम ग्रंथ विषे तीसरा अध्याय कथन किया तिस काम अद्वैतानंद जिस कारण ते इस विषे जगत् दी मिथ्यारूपता दे विचार करके अद्वैत ब्रह्म जानीता है। इति श्री अद्वैतानंद नाम त्रयोदशः ग्रंथः समाप्तः संपूर्णम् शुभम् लि० नन्दलालेन

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ङ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : विद्यानंद

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–9 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 35 X 16 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की चौदहवीं रचना ।

विशेष विवरण : रचना का विषय विद्या के आनंद से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों सतगुरु प्रसाद ।। अथ विद्यानंद नाम चौथे आनंद का आरंभ कर्ते हैं। सो आदि से पंचदशी दा चौदवां ग्रंथ है योग करके अर आत्म विवेक करके अर द्वैतदी मिथ्यारूपता दे विचार करके ब्रह्मानंद दे अनुभव करने वाले पुरुष को प्राप्त होता जो विद्यानंद है तिसका अब निरूपण कर्ते हैं।

अंत : ज्ञान ते प्राप्त भया जो सुख सो आश्चर्य रूप है आश्चर्य्य रूप है ब्रह्मानंद नाम ग्रंथ विषे चतुर्थाध्याय कथन कीआ तिसका नाम विद्यानंद है विद्यानंद दी उत्पत्ति पर्य्यन्त अभ्यास करणा।। इति श्री ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 690** संग्रह (ढ) भाषा : हिन्दी – संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : विद्याररराय मुनि

टीकाकार : –

शीर्षक : विषयानंद

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–7 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 35 X 19 स०म० लिखित 29 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : संग्रह की अन्तिम पन्द्रहवीं रचना। रचना के अंत के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सांसारिक विषयों से प्राप्त आनन्द से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री सतगुरु प्रसाद ।। अथ ब्रह्मानंद विषे विषयानंद नाम पंचवां ग्रंथ निरुपण कर्ते हैं सो पंचदशी का आदि से लेकरके पंचदशमा ग्रंथ है विषयानंद ब्रह्मानंद का अंश है।

अंत : ब्रह्मबोध तिस वर मिले पड़े जो कर विचार ।।८।। इति श्री विद्याररराय मुनिश्वरविरचिता पंचदशी समाप्ता ।। संपूर्णम् इतिश्री उदासी गंगारामजी के शिष्य उदासी आत्मस्वनूपवाती पंचदशी विरचिता समाप्ता १५ सम्वत् उन्नीसै उनताली १६३६ तत्सत्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 691** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : याज्ञवल्क्य मुनि

टीकाकार : श्री विज्ञानेश्वर भट्ट

शीर्षक : याज्ञवल्क्य धर्म्मशास्त्र विवृति नर्कस्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–176 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 15 स०म० लिखित 23 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : एक सौ छिहत्तर पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने के लिए काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय धर्मशास्त्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अभिषेकादिगुणयुक्तस्य राज्ञः प्रजापालनं परमोधर्मः तत्वदुष्ट निग्रहमं तरेणन संभवति दृष्ट परिज्ञान

अंत : १ भुक्तिलक्षणम् २ ऋणदान ३ निक्षेयप्रकरण ४ साक्षिलक्षणां ५ लोयलक्षणां
६ दिव्यस्वनूपकथनं ७ दायविभागः ८ सीमाविवादः ६ स्वाकूपाजकववादः
१० दूतस..........इति याज्ञवल्क्य मुनि शास्त्रगता विवृतिर्नकस्य विदिता विदुषः प्रमिताक्षरापि विपुलार्थवती परिषिंवति श्रवणयोरमृतं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 692** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : याज्ञवल्क्य मुनि

टीकाकार : विज्ञानेश्वर भट्ट

शीर्षक : याज्ञवल्क्यधर्म्मशास्त्र : प्रथम

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–106 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 15 स०म० लिखित 35 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : खुली हुई रचना। लिखाई साफ एवं सुंदर है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय धर्मशास्त्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः धर्माधर्म्मोतहिपाकासुयोपिक्लेशः पंचप्राणिनामायतंने यस्मिन्ने तैर्नोपरामृष्टई शोधस्तं वंदे विस्मुमौकार वाच्यं १

अंत : इतिश्रीमत्पन्गनाथ भट्टोपाध्यायात्मजस्य श्रीमत्परमहंस परिव्राजक विज्ञानेश्वरभट्टारकस्य कृतौकृतमिता क्षरायां याज्ञवल्काधर्म्मशास्त्रवृतौप्रथमो ।।१।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -693** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : रविदेव

शीर्षक : राक्षस काव्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–11 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27. 5 X 16 स०म० लिखित 21 x 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : ग्यारह पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मानव (राक्षस) जीवन पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः पंक्तिवक्तुहणांवंदेयंक्तिस्पंदन संभवं पंक्तिदिग्पशसंवंदेपंक्ति दिग्विजयप्रदं। कोपिस्रि पासा द्वै वियिनेस्समेत्पसिय माह कशिनिदिष्ट नामा पुरुष वनं काननं वहतरवन........

अंत : अथ पुरुषोगेहंसं प्रययौसंप्रयातइत्यार्थः इति रविदेवेन विरचितं सटीक राक्षस काव्यं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -694** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : भर्तृहरि

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग्यश्शतकम् (टीका)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १८८८

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–50 चित्र –

हाशिया :

आकार : 28 X 15 स०म० लिखित 19 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–13

विवरण : रचना अपूर्ण है। प्रथम पृष्ठ नहीं है। पृष्ठ बहुत पुराने पड़ चुके हैं। लिखाई साफ एवं सुंदर है। कहीं–कहीं विषयवस्तु पूरी करने हेतु पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वस्तु नैतिकता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : अथ तृष्भाधिकारमाह व्याख्या हेतृस्तेयापकर्म निरतेतृंमणिसोल्ला से अद्यापिन सतष्पसिनंसनंसनतष्टा भर्वासत् दोषानुद्देशयत हेतृस्नेअनेक दुग विषमं..........

अंत : इतिश्री मर्तरहस्य तृतीयस्य खंडस्य टीकायां वैराग्यश्शतकं नाम संपूर्णम् ।१।। संवत् १८८८

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -695** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	शंकराचार्य
शीर्षक	:	वाक्यसुधारनामशशास्त्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–10 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 14 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		10–11
विवरण	:	दस पृष्ठों की रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। रचना की लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। पीली का प्रयोग अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करने के लिए किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशायनमः ताबद्भगवान् शंकराचार्य्यः अविद्याविषयस्मुषितप्रवोधस्य जगतोग्रहाय वाक्यसुधानामशशास्त्र संग्रह
अंत	:	यतुय वाक्यसुधा मेतांविवृत्यविषदैः पदैः पुण्यं मयार्जितं किंचित्त द्वस्रणि समर्पितं ७ इति श्री शंकराचार्य विरचितं वाक्यसुधानाम प्रकरणम् समाप्तम् ।। . ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 696** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रामानन्द सरस्वती

टीकाकार : –

शीर्षक : सांख्य प्रवचन योगमणि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : १६२६

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–64 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 15 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : सुन्दर लिखाई में 64 पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है और अनावश्यक शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही प्रयुक्त की है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी रंग का प्रयोग किया है। अंत में बारीक शब्दों में।

विशेष विवरण : रचना का विषय योग सांख्य से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः वंदेक्लेशाय संसृष्टंपुराण पुरुषं हरि प्रकृत्पासीतयाजुष्ठंयोगेशंयोगदायिनम् १ पतंजलिं सूत्र कृतं प्रणम्य व्यासं मुनिं भाष्य कृतं च भक्त्या भाष्यानुगांयोगमणि प्रभाख्यां वृत्तिं विभास्यामि यथा मतीद्यां २

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गोविंदानंद भवत्पूज्यपाद शिष्य श्री रामानंद सरस्वतीकृतौ सांख्य प्रवचने योगमणि प्रभायां कैवल्यपादश्चतुर्थः समाप्तम् । संवत् १६२ श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 697** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	भगवदानंद गिरि
शीर्षक	:	गोडपादीय भाष्य टीका
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	72—143 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	35 X 15 स०म० लिखित 26 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		14
विवरण	:	इक्हत्तर पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना पृष्ठ 72 से आरम्भ होकर पृष्ठ 143 पर समाप्त होती है। लिखाई साफ एवं सुंदर है। किनारों का प्रयोग छूटे हुए शब्दों के लिए किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पूजा पद्धति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशायनमः तर्कावष्टंमेनेद्वैतवैतध्धुनिजूपणां परिसमाप्याद्वैतपारमार्थिकमपिर्तकतः संभावयितुंप्रकरणांतरंप्रारिपतरु पास्यो पासक भेद दृष्टिंतावदपवदति......
अंत	:	इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्रद्धानंदपूज्यपाद शिष्य भगवदानंद गिर कृत यां गोडपादीय भाष्य टीकायां चतुर्थप्रकरणं समाप्त् ।। रामायनमः श्रुभम् ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -698** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : भागवतमहापुराण दशमस्कंध

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 28–72 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 16 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11–14

विवरण : रचना अधूरी है। पृष्ठ अट्ठाईस से आरंभ होकर बहत्तर तक चलती है। न पहले के पृष्ठ उपलब्ध हैं और न ही बाद के। पृष्ठ भी जर्जर पड़ चुके हैं। अनावश्यक शब्द मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय श्री भागवत के दशम स्कंध के अंतर्गत कृष्ण कथा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री शुकदेव जू राजा परीक्षित सों कहत हें दूत ने वचन कहिकै भगवंत श्री हरिदेवजू मौन भर माता पिता के देषत अपनी माया करि तात काल ओरजे सोवा लक होइते भए ४६

अंत : जूथ विषें आपो वछन को दंभ रूप वछासुर को मारि करि सुनिरूप जे गोप है तिनकों दंभ रूप वकासुर कों मारत भये हर........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 699** भाषा संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : उपदेश ग्रंथ विवरणे विषयानंद

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 4–200 चित्र ________

आकार : 33 X 16 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13–15

विवरण : रचना के प्रथम तीन पृष्ठ न होने के कारण रचना अधूरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गृहस्थ धर्म के लिए उपदेश से सम्बन्धित है।

आरम्भ : भवत्वेवंसंवदोनित्पत्वंस्वप्रकाशत्वंचततःकिमित्पतश्राह इयमिति मंत्राय प्रयोगः इंयसंविदात्माभवितुमर्हति

अंत : इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थ विद्यारण्यमुनि किंकरेणश्रीरामकृस्नाख्य विदुषा विरचिते उपदेश ग्रंथ विवरणे विषयानंदः पंचदशोध्यायः समाप्त १५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -700** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 18–35 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : रचना अधूरी है। हाशिये से बाहर भी कहीं–कहीं पर लिखा गया है। कुछ पृष्ठ पीले वर्ण के भी हैं। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर शब्दों पर संतरी रंग लगाया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : रितिधत्वं शंकासन्तिपात परिभाषा विरोधात्ः ।। अचउपसर्गान्तः ७/४/४७।।अजन्ता दुप सर्गात्य रस्य दाइत्य स्पच्योः ......

अंत : तः कारमू मुखतोभूय मुखतो भूत्वा मुखतोभावम् ।।⊙ ।। इतिकृत्प्रक्रिया ।। ।। ।। रामकृस्नाभ्यामूनमः ।। रामकृस्ना भ्यामूनमः ।। रामकृस्नाभ्यामूनमः

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 701** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	देसी नुस्खे (आयुर्वेद)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—12 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16X 12 स०म० लिखित 12 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		14—16
विवरण	:	बारह पृष्ठों की रचना । पीले पृष्ठों का प्रयोग किया गया है। लिखावट का आकर कहीं छोटा तो कहीं बड़ा है। लिखाई कहीं साफ सुथरी तो कहीं ठीक है। कई औषधियों के निर्माण की विधि बताई है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	।।श्री।। अथ उपदंशकयत्न जंगी हृड ८ पैसा भर सुपेद कत्थ १ पैसा भर निला थोथा १ पैसा भर
अंत	:	अथातीसार गोली १ तोला माजु १ तोला मॉई तोले ४ बिल्व गीरी ३ मासे अफुयून ६ गोंद किकरदी 2 तोले आम की गठली ६ गेरीमाः गोली चने वरावर

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -702** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : चरणदास रणजीत

शीर्षक : श्री ज्ञान सरोदय

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १८६२ संवत्

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–29 चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों तरफ लाल रंग की दो–दो लकीरें हैं जो पृष्ठ 12 तक चलती हैं तत्पश्चात् काली स्याही के हाशिये दोनों ओर हैं।

आकार : 16 X 11 स०म० लिखित 11 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : उन्तीस पृष्ठों की संग्रह की पहली रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लाल स्याही का प्रयोग पूर्ण विरामों के लिए तथा रचना के आरम्भ के लिए किया है। लिखाई पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय समाज ज्ञान और व्यक्ति ज्ञान से सम्बन्धित है। रचना दोहा शैली में लिखी गई है।

आरम्भ : श्री गनेसाऐनमः श्री सतगुरुसहाए श्री पोथी ग्यान सरोदयलीष्यते होहा नमोनमो सषहे वज्ववरनन करौ आनंद तुम प्रसार सरमेकछुचरमदासवरनंता।।१।।

अंत : वचन सरोदएनाप्रै मुरलीसुत रनजीत स्कदेवगुरकी छाया साचुदायासोजान चरनदास रनजीत सकहे सरोदैजयानः इति श्री ग्यान सरोदय पोथी सपुर्ण समत १८६२ राम रामरा

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -702** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : महादेव दत्त कायस्थ

शीर्षक : श्री भैरवतंत्रे महाविद्यास्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–12 चित्र : अंत में दो स्टैंप चित्र हैं।

हाशिया :

आकार : 16 X 11 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6–7

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। ऐसा लगता है जैसे दो अलग–अलग लेखकों द्वारा रचित ग्रंथ को एक स्थान पर इकट्ठा कर दिया गया है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय भैरव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः।। श्री महाविद्यायैनमः ।। महाविद्या प्रवक्ष्यामि महादेवेन निर्म्मिताम् ।। चिंतितांयज्ञ नृपेण मनो हृदयनंदिनीम् ।।

अंत : इति श्री भैरव तंत्रे महाविद्यास्तोत्रं संपूर्णम् लीषा महादेवदत्त कायस्त शाकीनमौजेनआगाव प्रगारणोकशमनजीलाशारण तवेदि जी हेतूः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : शंकरदास मिश्र

शीर्षक : विवाह पद्धति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : साल १८६१

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–19 चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों तरफ लाल रंग की दो–दो लकीरें।

आकार : 321 X 12 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : अधूरी रचना है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना का पहला पृष्ठ नहीं है।

विशेष विवरण : रचना का विषय विवाह पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : विश्य ।। यजमान पाद्यमंजलि मादाप उों पाद्यं पाद्यं पाद्यः इत्यिन्येनोक्ते ।। उों पाद्यंशतैया ह्यतां मितिराताववर्दतू ।।

अंत : श्री राम कृस्म भज वारमवार चक्र शुदर्सन हय रषवार ।। लिषतं संकरदास मिश्र जी मिति फाल्गुन वदी १२ साल १८६१ राम ब्रह्म हरी वासुदेव श्री

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : लांव से सम्बन्धित

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : अंकित नहीं चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों तरफ दो–दो लाल लकीरें।

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय विवाह से सम्बन्धित।

आरम्भ : उों हर की पहल री लाउ संकर पार्वती ।। ब्रह्मा उचरे वेद चारे सतयुगी ।। ब्रह्मा उचरे वेदचारे चौक मोतीयन पूरिया।।

अंत : संतो धर्मके फल बहुत उपजे जगे लाहा लीजीये जानी तमानी बहुत वहे जैसे मानसर रवरा ।। वलवंत खेले लाउ चौथी कलु कालं कंन्या वरा ।। राम श्री राम हरी हरी ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : नक्षत्र ग्रह मुक्ति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : – चित्र --

हाशिया : रचना के दोनों ओर लाल रंग की दो–दो लाल लकीरें।

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8–10

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना। पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय ग्रह शान्ति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः ।। तत्र प्रथमे मंडले उों ऐकमुषेयज्ञे विह्मस्वातेतु श्श्लो श्वमिष्टान्नं व्यंजनाद्यंच धन ज्यान्य्ंचय ग्रहेमद धीनंच कर्तव्यं कन्य कैमियव्रवीत वरः ।।१।।

अंत : उों श्री गणेशाय नमः: युगेंदु सूर्य दिनमेक चंद्रो भौमोम्रने त्रेग्रहचांदी नूनंशिवा शुक्रे षरसेहुजीवे खरवा धियाध्विद्वि राहु इतिनक्षत्र शौरी १ ग्रहमुक्ति प्रमाणं

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : —

टीकाकार : —

शीर्षक : दुस्वप्नं नश्यते

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : अंकित नहीं चित्र --

हाशिया : दोनों तरफ लाल रंग की दो—दो लकीरें

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8—10

विवरण : संग्रह की चौथी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूर्य स्तुति एवं दुस्वप्न नाश के साथ सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः आदित्यं प्रथमं ।। द्वितियंतु दिवाकरः ।। तृतियं भास्करः प्राक्लं ।। चतुर्थेतु प्रभाकरः ।।१।। पंचमंतु सहस्त्राश्रु ।।

अंत : मद मुत्कषं हरंचैव सर्वकाम प्रवर्द्वते ५ पठेत्यातरे वद्नि भंक्ति युक्तेन चेतसा सोष्य मायुण्य मारोग्यं लभंते मोदोमेव चछ ६ उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक :

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : अंकित नहीं चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही की दो–दो लकीरें।

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : संग्रह की पांचवीं रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय ज्योतिष से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। अज वृठा मृगांगना, कुलीरा अखेवणिजै च दिवाकरादि तुंगा ।।

अंत : ५ कृत ४ रामाः ३ वृश्चिक सिंह रूप ? शरा ५ अग्नि ३ कन्या तुलभुज २ वेद ४ गुण ३ श्र ?

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -703** संग्रह (च) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवाष्टक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : अंकित नहीं है। चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही की दो–दो लकीरें

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 17 X912 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : संग्रह की छठी रचना

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः शिवाष्टक नमामी संमीशान निर्वाण संपवि भव्या पकं ब्रह्म वेक्षस्वनूपंनि ज्यंनिर्गुणं निर्विकल्यंनिरीह चिदासमा का सवांभ जह ।।

अंत : पूद्राष्क मिंद प्रोक्तं विप्रेन हरतोख्येय पठतिनरास भक्ताते खांद्राभु प्रचिदति १ ।। इति लूडदः ✸

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -704** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	केदारनाथ
शीर्षक	:	शिवपुराण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	संवत् १८३७ श्रावण वदी ११
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–276 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल लकीरों का हाशिया
आकार	:	9 X 7 स०म० लिखित 6 X 4 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	6
विवरण	:	रचना के प्रारम्भिक 16 पृष्ठ खाली हैं। पृष्ठ 276 के आगे तीन पृष्ठ खाली छोड़े गए हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशायनमः ।। श्री गुरुवे नमः ।। अथ कल्प केदार लिष्यते ।। श्री देंव्युवाच।।
अंत	:	इति श्री शिवपुराणे केदारकल्प शंभु कार्तिकेय संवादे र स्वर्ग गमनं महायं यं समाप्त ।। संवत १८३७ मिती श्रावण वदी ११ सुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -704** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : नन्दकेश्वर पुणोक्तं श्री कालाग्नि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–25 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही का हाशिया

आकार : 9 X 7 स०म० लिखित 6 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। पहली रचना के बाद दो पृष्ठ खाली हैं तत्पश्चात् रचना का आरंभ होता है। काली, लाल स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पुराण से सम्बन्धित।

आरम्भ : श्रीगणेशायनमः ।। उँविस्मु र्विस्मु र्विस्मु राचम्प वाक् वाक प्राण प्राण चक्षु चक्षु श्रोत्र श्रोत्र । नाभि हृदयं ।।

अंत : इतिश्री नंदकेश्वर पुणोक्तं श्री कालाग्नि रूशेययनिषद् सम्पूर्णम् ।। श्री श्री ।। उों हंसः सोहं परमात्मा चिन्मयः स्वनूप सच्चिदानंद ।।८।। उों हंसः सोहं परमात्माचिन्मयः सच्चिदानंद स्वनूपं सोहं ब्रह्म

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -705** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	वेद व्यास
शीर्षक	:	श्रीमद्भगवत गीता माला मंत्र
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—81 और आगे बिना अंकित पृष्ठ चित्र --
हाशिया	:	लाल पीली व काली लकीरें चारों तरफ हैं।
आकार	:	10 X 7 स०म० लिखित 6 X 3 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6
विवरण	:	रचना के 81 पृष्ठों तक क्रमांक दिए हैं जिसमें गीता के नवम् अध्याय का उल्लेख है। आगे पृष्ठों पर नम्बर अंकित नहीं है जबकि संपूर्ण 18 अध्याय गीता के हैं। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय गीता से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों नमे भगवते वासुदेवाय ।। उों श्रस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य ।। श्री भगवान्वेदव्यासऋषिः ।। श्री भगवान्वेदव्यास ऋषिः ।। अनुष्टपछंदः।।
अंत	:	इतिश्री भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृस्नार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगोनाभाष्टा दशोध्यायः ।।१८।। ।। श्री रामायनमः।।उों।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -705** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : महाभारत भीष्म पर्व

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : – चित्र --

हाशिया : लाल पीली व काली लकीरों का हाशिया चारों तरफ है।

आकार : 10 X 7 स०म० लिखित 6 X 3 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। रचना का अंत अपूर्ण है। रचना के लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री रामाय नमः ।। उों यस्य स्मरणमात्रणा जन्म संसार वंधनात् ।। विमुच्यते नमस्तस्मै विस्मवे प्रभविस्ववे ।।१।।

अंत : नरोमुक्तिभवाप्नोति चक्रपाणेर्वचोयथा। ब्रह्महत्यादिकंपापसर्वपापे विनश्यति ।।६३।। इतिश्री महाभारतेश

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -705** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : भीष्म स्तवराज

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–24 चित्रः रचना के अंत में एक चित्र है।

हाशिया : चारों ओर लाल, पीली एवं काली स्याही का हाशिया।

आकार : 10 X 7 स०म० लिखित 6 X 3 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना। रचना के अंत में धृतराष्ट्र तथा संजय का मंत्रणा करते हुए चित्र संलग्न है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री कृस्माय नमः ।। तन्मेनय उवाच ।। उों शरतल्येशयानस्तु भारतानां पितामहः ।। कथमुत्स्टवृवान्देहं कंचियोगदारयन् ।।१।। वैशंपायन उवाच ।।

अंत : इति श्री महाभारते शतसहस्यां संहितायां वैय्यासिक्यां भीष्म पर्वणि भीष्म स्तवराजः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -705** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : शांतिपर्व (महाभारत)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–14 चित्र : अंत में गजमोचन का चित्र

हाशिया : चारों ओर लाल, पीली एवं काली स्याही का प्रयोग

आकार : 10 X 7 स०म० लिखित 6 X 3 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : संग्रह की चौथी रचना। अंत में विष्णु द्वारा गज उद्धार का चित्र संलग्न।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत के शांतिपर्व से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों शतानीक उवाच ।। उों महातेना महाप्राज्ञ सर्वशास्त्र विशारदः ।। अक्षीण कर्मबंधस्तु पुरुषोद्विन सत्तम ।।१।।

अंत : इति श्री महाभारते शतसाहस्त्रां संहिता सावैय्या १ सिवद्यां शांतिपर्वणि अनुस्मृत्य संपूर्ण ।। ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -705** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	2–29 चित्र --
हाशिया	:	चारों ओर काली, पीली एवं लाल स्याही से हाशिया
आकार	:	10 X 7 स०म० लिखित 6 X 3 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6
विवरण	:	संग्रह की अन्तिम रचना। रचना खंडित है। पृष्ठ 2 से 29 तक चलती है। आगे के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	युधिष्ठिरः ।।५।। युधिष्ठिर उवाच ।। त्रितंतेपुरी काल नमस्ते विश्व भावन ।। नमस्तेस्तहृषीकेशमहापुरुष पूर्वज ।।६।।
अंत	:	धर्म्महटवद्वमूलो वेदस्कंदो पुराणशाखांय ।। क्रतुसुमोक्ष फलो मधुसूदन पादयांनयंति ।।५४।।नमोब्रह्म

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -706** संग्रह भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : उमानंद

शीर्षक : श्रीमद्भगवत्गीता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६२८

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–88 चित्र --

हाशिया :

आकार : 24 X 13 स०म० लिखित 17 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : अट्ठासी पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखावट सुन्दर एवं स्पष्ट है। पंडित कृष्णदयाल के पठनार्थ उमानंद ने इसे सरल भाषा में लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय भगवद् गीता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः ।। उों अस्य श्री भगवद्गीता मालामंत्रस्य ।। श्री भगवान्वेदव्यास ऋषिः ।। अनुष्ट छंदः ।। श्री कृस्मः परमात्मा देवता ।।

अंत : इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृस्मार्जुनसंवादे मोक्ष संन्यासयोगोनामाष्टदशो लिखितं उमानंदाने। स्वपठनार्थ पंडित कृस्न दयालोः ।। संवत् १६२८ ।। चैत्रश्रुदि ।। नवम्पां।। गुरुवासरे ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -707** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	श्री शंकर भगवतः
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	केनेषितपद्भाष्य
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–14 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	24 X 12 स०म० लिखित 19 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		अलग–अलग 13–16
विवरण	:	चौदह पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना के किनारे भी विषयवस्तु के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्तिश्री गणेशायनमः ।। केनेषितमित्याद्योय निषत्परब्रह्म विषयावक्तव्येतिनवमस्यारंभः प्रागेतस्मात्कर्माण्य शेषतः समापितानि
अंत	:	इत्याभिप्रायःहरिःउोम् इति श्री गोविंद भगवत्पूज्यपात शिष्यस्य परमहंस परिव्राजकस्य श्री शंकरभगवतः वृतौकेनेषित पद्भाष्यं समाप्तं शुभमस्तु

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -708** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	माध्वाचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	एकादशी निर्णय
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–6 चित्र --
हाशिया	:	रचना के दोनों ओर दो–दो लाल लकीरें
आकार	:	25 X 13 स०म० लिखित 17 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8–10
विवरण	:	सात पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्रत–उपवास संबंधित आचार से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों नमोगणेशाय अथैकादशी निर्णयः तत्रैकादश्युपवासो द्वेधा भोजन निषेधपरिपालनात्मको व्रतात्मकश्च आद्यपुत्र वद् गृहस्था दीनांकृस्म पक्षेपि अधिकारः
अंत	:	माधवाचार्यदि सर्व संमतस्तुषट्पंचाशद्घटि वेधपवेतिज्ञेयम् दशमी पंचदशाश्चटीभिरेकादशी दूषितेतितूपवासातिरिक्तब्रते।। इतिश्री एकादशीनिर्णयः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -709** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नागार्जुन सिद्ध

टीकाकार : –

शीर्षक : कक्षपुटे पुरुषवश्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 11 स०म० लिखित 24 x 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9–17

विवरण : 20 पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। प्रथम पृष्ठ बहुत स्पष्ट नहीं है क्योंकि उस पर स्याही गिर जाने से शब्द पठनीय नहीं हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय सिद्ध साधना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः अर्थनागर्जुनी कल्पोलिख्यते। उों शतः परमात्मय परवशी कालंलोतको ज्ञानवान ध्यानातीत अनादिनिम निचंश्व सकल्प संकाचकः

अंत : इति श्री नागार्जुन सिद्ध विरचिते कक्षपुटे पुरुषवश्य योनि संकोचनंनाम पंचमः पटलः अथ आकर्षणम् ओंकारै मंत्रयेत्पाशं क्रींकरिश्चोकुशेतया त्रिफणंवामगयाशेदक्षिणे

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -710** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : —

टीकाकार : —

शीर्षक : ककारादि वर्ण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 2—22 चित्र --

हाशिया :

आकार : 26 X 12 स०म० लिखित 18 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : पृष्ठ दो से रचना प्रारम्भ होती है। रचना का प्रथम पृष्ठ नहीं है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है 'क' वर्ण पर अधारित शब्द सर्जना पर प्रकाश डाला गया है।

आरम्भ : द्वितायै २६ उोंककार वर्ण मुकुटायै ३० उों ककारांवरभूषणायै ३१ उों ककायै ३२ उोंककवर्णरूपायै ३३ उों ककशब्दपरायणायै ३४

अंत : ६६ उों क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृं हृं हृं फट् स्वाहा मंत्र नूपिण्यै १००० इतिश्री ककारादि समाप्तं ।। शुभं ।। ※ ।। 0 ।। 0 ।। 0 = 0

हस्तलिखित क्रमांक :	**PPS -711** भाषा : संस्कृत
स्रोत :	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य :	–
लेखक :	वटुक नाथ
टीकाकार :	खुशहाल मिश्र
शीर्षक :	वटुक भैरव स्तोत्रम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :	
रचनाकाल :	–
रचना–स्थान :	–
पृष्ठ :	1–5 चित्र --
हाशिया :	
आकार :	24 X 13 स०म० लिखित 17 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:	9
विवरण :	पाँच पृष्ठों की खुली किंतु पूर्ण रचना। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर । महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने के लिए काली के ऊपर संतरी रंग का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण :	रचना का विषय तंत्र–मंत्र से सम्बन्धित है। भैरव प्रसन्नता हेतु मंत्र साधना की गई है।
आरम्भ :	उों श्रीगणेशायनमः उों श्री वटुक भैरवायनमः उोंमेरूपषे सुखासीनंदेवदेवजगद्गुरं शंकर परिपत्रह पार्वती परमेश्वरम् १
अंत :	इति साधारण ध्यानं उोंअस्य श्री आपदुद्वार वटुक भैरव स्तोत्र माला।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -712** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री राम सहस्त्रनामस्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–14 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर (दायें बायें) लाल रंग की लकीरें

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 13 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11–12

विवरण : रचना अधूरी है। काली और लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ है। रचना के पृष्ठ काफी जर्जर पड़ चुके हैं। पात्रों के नाम एवं पूर्णविरामों के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रामनाम स्तवन हेतु स्तोत्र रचना की गई है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः ।। उों देवम् देव महादेव भक्तानुग्रहकारक।। त्वतः श्क्तंमया पूर्वमंत्राणां शतकोटयः ।।१।।

अंत : श्री राम नाम ग्रहणात्पलायंतोदिशोदिशः ।।८२।। श्रीं श्रीं रांक्लीनमः स्वाहा राक्षरोमनुः जपे....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -713** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : पिण्डदान विधि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–64 चित्र --

हाशिया :

आकार : 11 X 18 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7–8

विवरण : दो से चौंसठ पृष्ठों की अपूर्ण रचना। पृष्ठ 30 और 31 जर्जर होकर खंडित हो गये हैं। पृष्ठों के पीछे स्याही का प्रभाव दिखाई देता है। अंत तक पहुंचते स्याही का रंग भी बदल गया है।

विशेष विवरण : रचना में पिण्डदान की विधि का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : शकलस्य नासिका द्वय कर्ण द्वय चक्षुईयनिर्क्षिप्त सुवर्ण शकलस्य प्रस्थ घृतेन समायुक्त स्यदेह शोधन विधिनास्ता पितस्य वर्हिष्म त्यांभूमौ दक्षिण शिरसः

अंत : उों अद्यामुक गोत्रस्य पितुर मुक प्रेतस्य सपिंडीकरण श्राद्धेऽमुक गोत्र वृद्ध प्रपिता महामुक शर्मप्पिंड स्थानेऽत्रावेनेनि............

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -714** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	विष्णु सहस्त्रनाम
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	2–39 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	14 X 10 स०म० लिखित 9 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		6
विवरण	:	रचना अधूरी है। प्रथम और अंत के पृष्ठ नहीं हैं। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। पूर्णविराम के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना संवादात्मक शैली में है। विष्णु स्तुति रचना का विषय है।
आरम्भ	:	त्वाधर्माणयशैषेण पावनानिचसर्वशः ।। युधिष्टरः शंतनवंपुनरेवाम्पभाषत् ।।३।। युधिष्टिर उवाच ।। किमेकंदैवतं लोके किंवाप्येकंपरायणं ।।
अंत	:	येनध्यातः श्रतोयेनयेनायं परितस्तवः ।। दतानिसर्वदातानि सुणसर्वे समर्चितः ।।५६।। इहलोकेप..........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -715** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : कृष्ण राम

टीकाकार : मैया राम

शीर्षक : विवाह पद्धति (चतुर्थी कर्म)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६२२ संवत्

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–40 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 12 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : उन्तालीस पृष्ठों की जिल्द सहित पूर्ण रचना। मंत्रों के लिए बड़े अनुपात में शब्दों का प्रयोग किया है जबकि व्याख्या हेतु छोटे शब्द दिए हैं। आरंभ तथा अंत में आठ–आठ खाली पृष्ठ हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय विवाह विधि से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः उों गणानांत्वा गणपति........

अंत : संवत् १६२२ लिपि कृतंमया रामेण जुग्रान्माः मध्य मासे राघवे सितप्रतिपदि बुधेया दृशं पुस्तताध्शं लिख्यतेमया मद्वि शुहि दृष्टा

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -716** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : नारायणीवलि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–9 चित्र --

हाशिया :

आकार : 21 X 13 स०म० लिखित 16 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 18

विवरण : रचना अधूरी है। काली स्याही प्रयोग लेखनार्थ किया है। रचना पृष्ठ आठ तक चलती है आगे के पृष्ठ नहीं हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय मंत्रोच्चार से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोम् । उों श्री गणेशायनमः ।। अथनारायणीवलि लिख्यते चत्राधिकारिणः इत्रिं शदुर्मरणे नमृताः

अंत : अद्यादेवाः उदिता सूर्यस्य निर हतः पिष्टतानिरवद्यालत............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -717** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : कीलक स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–25 चित्र : एक

हाशिया : लाल काली एवं पीली स्याही से हाशिया तथा किनारों पर बेलबूटे, फूल बनाए गए हैं।

आकार : 18 X 10 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : जिल्द में बंधे संग्रह की पहली रचना। काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है। रचना के आरम्भ में एक सुन्दर चित्र है जिसमें देवी माँ शेर पर विराजमान है आगे हनुमान भाग रहे हैं।

विशेष विवरण : दुर्गासप्तशती के अंतर्गत काली माता की अर्चना हेतु स्तोत्र रचना की गई है।

आरम्भ : उों नमो भगवते वासदेवाय ।। उों अस्य श्री देवी कवचस्य मार्कण्डेय ऋषिः अनुष्टप छंदः ।। श्री महामाया देवता। उों श्री महामाया प्रीत्यर्थे सकल सकल कामना सिध्यार्थे कवच पाठे विनियोगः ।।

अंत : तत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्य संपदः शत्रु हानिपुरो मोक्षः स्तूयते सात्विकैर्जनैः ।।१।। इति श्री कीलकं स्तोत्रं समाप्तं।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -717** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	मार्कण्डेय पुराण देवी माहात्म्य
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–165 चित्र --
हाशिया	:	लाल, पीली तथा काली स्याही से लकीरें खींची गई हैं।
आकार	:	18 X 10 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		5
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना। काली लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	दुर्गासप्तशती के अंतर्गत रचना का विषय मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत देवी महात्म्य से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री मार्कण्डेय उवाच।। उों सावर्णिः । सूर्यतनयोयो मनुः कथ्यतेष्टमः ।। निशामय तदुत्यन्नि विस्तराङ्दतोमम ।।१।।
अंत	:	इतिश्री मार्कंडेयपुराणेसावर्णिके मत्वंतरे देवीमहात्म्यसुरथ वैश्यवर प्रदानं नाम त्रयोदशो ध्यायः ।।१३।। :: ।। :: ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -717** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्री लघुस्तव
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—11 चित्र --
हाशिया	:	पूर्ववत्
आकार	:	18 X 10 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		5
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	देवी की प्रसन्नता हेतु लघु स्तोत्र रचना।
आरम्भ	:	उों नम स्रिपुरसुंदर्यै ।। उोंपेद्रस्येव शरासनस्पदधती मध्ये ललाट प्रभां।। शैल्की कांति मनुस्म गौरि वशिरस्यातनुती सर्वताः ।।
अंत	:	इतिश्री लघुस्तव समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -717** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पुरंदर ऋषि

टीकाकार : –

शीर्षक : इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–9 चित्र --

हाशिया : लाल, काली व पीली स्याही से हाशिया

आकार : 18 X 10 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण : रचना पृष्ठ एक से छः तक चलती है और समाप्ति पश्चात् तीन पृष्ठ खाली हैं। काली, लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : स्तोत्र रचना के अंतर्गत इंद्राक्षी स्तोत्र से सम्बन्धित।

आरम्भ : उों अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्र माला मंत्रस्य पुरंदर ऋषिः अनुष्टुप् छंद ।।

अंत : इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेवत्र संशयः ।।१६।। इति श्री इंद्राक्षी स्तोत्रं समाप्तम् ।।::

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -718** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	विशिष्ट प्रोक्ताशांति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—11 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	18 X 12 स०म० लिखित 12 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	संग्रह की पहली रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पूर्णविराम लाल स्याही से लगाये गये हैं। रचना के आरंभ में एक पृष्ठ लगा हुआ है जिस पर मंत्र लिखे हुए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पूजा विधि से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः।। स्वस्तिन इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्व वेदाःस्वस्तिन स्राक्ष्र्पोऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दघातुः ।।१।।
अंत	:	पिशाचवल ।। गंधर्ववल ।। राक्षसवल ।। सर्वेभ्यो ।। मंडलभ्यो नमः ।। इति श्री वशिष्टप्रोक्ता शांति समाप्तम् श्रुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -718** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : गोसावित्री (धेनुस्तोत्रम्)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–8 चित्र --

हाशिया : तीनों ओर लाल स्याही से लकीरें खींची गई हैं।

आकार : 18 X 12 स०म० लिखित 12 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–9

विवरण : लाल और काली स्याही का प्रयोग किया गया है। संग्रह की दूसरी रचना। पहली और दूसरी रचना की लिखाई भिन्न है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पूजा पद्धति से सम्बन्धित है। गोपूजा का वर्णन किया गया है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः अथ गो सावित्री लिखी उों ब्रह्मा विस्मुशिववगोसावित्री कथयाभ्यहं ब्रह्मणस्य ततो विस्मु गाऊ तस्यते तो फलं दीयते ब्रह्मणस्यर्हस्ते..........

अंत : अश अष्टा पिपंचास यक्ष सिध्यार्थ हेत वे ।। तेर्से।।र्भे।। इति गो सावीत्री......

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -718** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : शनिचक्रम्

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से

आकार : 18 X 12 स०म० लिखित 13 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना। रचना के अंत में लाल स्याही से शनि के स्केच बनाए गए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय शनिपूजा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्रीगणेशायमः उो चरं चलंस्यतंस्वाती पुनर्वसुश्रतित्रियं ।। कृरमु ग्रंभवा पूर्वो तृतीय भरणी तथा।।

अंत : कल्याण जायते सदा ।। इति शनिचक्रं ।। शनव्ररूदेनक्षत्रते लै के मनुष देताइीगिण

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -719** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	विसर्जन मंत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—5 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	20 X 11 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		5
विवरण	:	पँाच पृष्ठों की लघु रचना। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	रचना में गायत्री पूजा हेतु मंत्र रचना है।
आरम्भ	:	उों श्री गोपालाय नमो नमः उों अतिष्टं तिमहाभूतायेभूता भूमिपालकाः भूतानां चावरोर्ध न ब्रह्म कर्म समाचरेत १
अंत	:	उत्तरे सिखरे जाताभूभ्यं पर्वत वासनिं बक्रह्मणोभ्योअनुज्ञात्वागछदे विनमो स्तुते इति विसर्जन मंत्रः ।। 8 8 8 8 8 8 8 8 राम ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -720** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पुष्प दंताचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : शिव महिम्नास्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–12 चित्र --

हाशिया : संतरी और काली लकीरों से चारों ओर हाशिया

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 12 x 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : बारह पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है जबकि हाशिये और पूर्णविरामों के लिए संतरी स्याही का प्रयोग किया है। रचना के अंत में खाली पृष्ठ भी लगे हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमः शिवाय ।। महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्यसदृशीस्तुतिर्ब्रह्मा दीना।। मपितदवसत्रास्तयिगिरः ।। अथः वाच्यः सर्वःसमति परिणाम वयिग्टणन्ममाप्येशस्त्रोत्रेहरनिरवादः परिकरः ।। १।।

अंत : इतिश्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाख्य स्तोत्रं सम्पूर्णं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -721** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वैराग्यश्शतकम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–17 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 16 स०म० लिखित 19 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13–15

विवरण : रचना अधूरी है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। शब्दों का आकार का आकार कहीं छोटा है तो कहीं बड़ा। रचना का अंत नहीं मिलता है। पृष्ठ भी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय वैराग्य भाव से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः दिगेतितस्मैसांताय तेज से परब्रह्मणेनमः कथभताय तेजसे स्वानुभूत्ये कमानाय स्वकीपाय अनुभूतेः अनुभवात् एकंमानंयस्य सस्वानुभूत्ये

अंत : भूतर्नववल्कलैः अकरणक्रियतेतिकरणंन करणं ते करण क्रियारहितै ६१ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -722**	भाषा :	संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्रुतबोध

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–6 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	27 X 15 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8
विवरण	:	छः पृष्ठों की खुली हुई रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई ठीक–ठीक है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के अन्तर्गत छन्द से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशायनमः छंदसां लक्षणं येन श्रुतमात्रेण बुधते तकहंसंप्रवक्ष्या भिश्रुतबोधम् विस्तरं १
अंत	:	इतिश्रुतिबोधाख्यं समाप्तम् श्रुभम्

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -723** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	–
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	त्रिकाल संध्या
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	2–13 चित्र --
हाशिया	:	लाल, काली और पीली स्याही से चारों ओर हाशिया
आकार	:	15 X 10 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		5
विवरण	:	रचना का प्रथम पृष्ठ नहीं है। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पूर्ण विराम लाल स्याही से अंकित हैं। लिखाई मोटी एवं सुंदर तथा पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पूजा पद्धति एवं स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	तो पिवा ।। यःस्मरेत् पुंडरीकाक्षंस ।। वास्याभ्यंतराश्रुवि ।। उों विस्नुः ।। उों विस्मु ।।
अंत	:	विस्मु नासमनु ज्ञाता गच्छदे विद्यथासुखम् ।। इति विसर्जनम् ।। इतिश्री त्रिकालसंध्या संपूर्णणं श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -723** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : सूर्य गायत्री

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया : लाल, काली व पीली लकीरों से हाशिया

आकार : 15 X 10 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : सम्पूर्ण रचना है। संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूर्य स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमः सूर्याय ।। उों भासकराय विद्महे दिवाकरायधीमहि ।। तत्रः सूर्यः प्रचोदयात्।। उोंः भासकराय अगुष्टाभ्यां नमः ।।

अंत : नमः प्रत्यक्षदेवाय भासकराय नमो नमः ३ ।। इति श्री सूर्य गायत्री ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -723** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : –

टीकाकार : –

शीर्षक : सप्त सलोकी गीता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया : वही

आकार : 15X10 स०म० लिखित 11 X7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : सम्पूर्ण रचना है। लाल और काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुन्दर, मोटे अक्षरों में तथा स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गीता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री भगवानुवाच ।। उों मित्येकाक्षरं ब्रह्मव्याहरत्मामनुस्मरन् ।। यः प्रयातित्पजतदेहं सयति परमागतिम् ।।१।।

अंत : सों ह्वै सप्तमि सलोकैऽस्तुत पवन संशयः ।।८।। इति श्री सप्तसलोकी गीता संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -723** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्रीविष्णु दिव्य सहस्त्रनाम
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–52 चित्र --
हाशिया	:	पूर्ववत्
आकार	:	15 X 10 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	5
विवरण	:	सम्पूर्ण रचना है। लाल और काली स्याही का प्रयोग किया गया है। संग्रह की चौथी रचना।
विशेष विवरण	:	विष्णु स्तुति पर रचना का विषय आधारित है।
आरम्भ	:	उों नमोभगवते वासुदेवाय ।। उों यस्यस्मरणमात्रेण ।। जन्म संसार बंधनात् ।। विमुच्यते नमसतस्मै विश्वे प्रभविसवे ।।१।।
अंत	:	इतिश्री महाभारते शत सहस्र संहितायां वैय्यासिवग शांतिपर्वणिउत्तमानशासनेदान धर्मोत्तरेषु श्री विस्नुर्दिव्य सहस्त्रनाम संपूर्णे श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -723** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : स्वामी कविदत्तदास

शीर्षक : कमलनेत्र स्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–7 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 15 X 10 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : रचना पूर्ण है। संग्रह की पांचवीं रचना।

विशेष विवरण : रचना कृष्ण स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमो रामाय ।। उों श्री कमल नेत्र ।। कटि पीतांबर ।। अधर मुरली ।। गिरिधरम् ।। मुकुट कुंडल कर लकुटी या सावरे राधे वरम् ।।१।।

अंत : श्री गुरो रामानंद अवतार ।। स्वामी कविदतदास समापतम् ।।११।। इतिश्री कमलनेत्र स्तोत्रं संपूर्णम् शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -723** संग्रह (च) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : नागिन–कृष्ण संवाद

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–6 चित्र --

हाशिया : पूर्ववत्

आकार : 15 X 10 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : अधूरी रचना है। अंत के पृष्ठ नहीं हैं। संग्रह की अन्तिम रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय कृष्ण से सम्बन्धित है। नाग नथने का प्रसंग वर्णित है।

आरम्भ : उों श्री रामाय नमः ।। उों गिंद केमऊसूद जमना जमना जी उतरे प्रभु जायके ।। नाग नागनी दोनों बैठे श्री कृस्म जी पूछेय के ।।

अंत : सूरिसूर जन जोत स्वामी लंका मै रावण मारियौ।। द्रौपदा जी के लाज राखी सुधामा भगत उधारियौ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -724**	भाषा :	संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह		
मूल्य	:	–		
लेखक	:			
टीकाकार	:	–		
शीर्षक	:	संध्या प्रयोग तथा तर्पण		

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–11 चित्र --
हाशिया	:	संतरी और काली लकीरों का हाशिया
आकार	:	17. 5 X 9. 5 स०म० लिखित 11.5 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	ग्यारह पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है और पूर्णविरामों के लिए संतरी स्याही प्रयोग की है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय संध्या स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों नमः संध्याभगवत्यै।। अथ संध्या प्रयोगः ।। नामेबाहूकुशान्दक्षिणे पाणौ ।। स पवित्र कुशत्रंयधृता ।। सप्रणच गायत्र्या शिखावथा।।
अंत	:	तिलोदंकंस्वधा ।। उदकतर्पणं स्वधा।। हिमं ।।२।। राजतं ।। इतितर्पणम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS – 725** (संग्रह) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : श्रीधर स्वामी

शीर्षक : श्रीमद्भागवद (भावार्थ दीपिका)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : मघर सुदी ५ संवत् १६३0

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1– चित्र --

हाशिया :

आकार : 34.5 X 20 स०म० लिखित 26 X 12.5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11–16

विवरण : सम्पूर्ण तेरह स्कन्ध।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों जयंतिश्रीधरांतदकृपा मंगल सदृशः यानित्यमनुवंर्तते सम्पदो विगता दृशः

अंत : इति श्री भागवत महापुराणे भागवत भावार्थ दीपिकायां श्रीधर स्वामी विरचितायां द्वादश स्कंधे त्रयोदशोध्यायः १३ ।। मघर सुदी ५ संवत् १६३0

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -726** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	द्विरुक्त प्रक्रिया (मध्य सिद्धांत कौमुदी)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–38 चित्र --
हाशिया	:	नहीं हैं।
आकार	:	30 X 12 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	मध्य सिद्धांते कौमुदी के अंतर्गत पहली रचना द्विरुक्त प्रक्रिया है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली पर संतरी रंग लगाया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनमः समर्थानांप्रथमाद्वा ४/१/८२ इदमधिक्रियतेप्राग्दिशइतिर्यवत् प्राग्दीव्यतोऽण् ४/२/८३ तेनदीव्यतीव्यस्तः प्रागणधि क्रियते अश्वपत्यादिम्पश्च ४/१/८४
अंत	:	इति द्विरुक्त प्रक्रिया ।। श्री रामायनमः ।। श्रीकृस्नायनमः ।। राम

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -726** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : समासाश्रयविधयः (मध्यसिद्धांत कौमुदी)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–31 चित्र --

हाशिया : नहीं हैं।

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 20 X 8स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। रचना का पहला पृष्ठ पीले रंग का है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों में काली के ऊपर संतरी स्याही लगाई गई है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः उोंश्रीसरस्वत्यैनमः समासः पन्चधातत्रसमसनं समासः सचविशेष संज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः प्रथमः प्रायेणपूर्वपदार्थ प्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः प्रायेणेतर पदार्थ प्रधान वहुव्रीहि

अंत : प्रायश्चितः प्रायश्चित्तम् वनस्पतिरित्यादि आकृति गणेशायनमः ।। राम राम राम राम राम राम ।। इति समासाश्रयाविधयः ।। रामकृस्नाभ्याम् नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -726** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : श्री वरद्राज भट्ट

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 1—14 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : संग्रह की अंतिम रचना।

विशेष विवरण : रचना मध्य सिद्धांत कौमुदी व्याकरण से सम्बन्धित ग्रंथ है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः स्त्रियाम् ४/१/३ अधिकारोयम् समर्थानामिति पावत् अजाद्यतष्टाप् ४/१/४ अजादीनामकारात्तस्य चवाच्यत्स्त्रीत्व तत्र द्योत्येटाप्स्यात् अजा अजादिभि.......

अंत : कृति वरद राजस्य मध्यसिद्धान्त कौमुदी तस्यास्संख्यातु विज्ञेयाखवाण करवन्हिभिः २।।३२५०।। श्री वरदराज भट्टत्कृता मध्यसिद्धान्तकौमुदी समाप्ता ।।✿।। श्री संमत् १६३४।।छ राम ।। राम ।। राम ।। रामकृस्सनाभ्यांनमः।। राम।। कृस्न।।राम।।कृस्न राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम ।।१४।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -727** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : मैयाराम

शीर्षक : सूक्तावली धर्मशास्त्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३०

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–21 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर संतरी रंग की स्याही से हाशिया

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 14 x 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : रचना पूर्ण है। काली तथा संतरी स्याही का प्रयोग किया है। विराम के लिए संतरी स्याही का प्रयोग।

विशेष विवरण : रचना का विषय धर्म से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः ।। धर्मः सर्व सुखकरो हितकरो धर्मः बुधै श्विवंच्प्रते ।। धर्मेजैवसमाध्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।।१।।

अंत : इतिश्री सूक्तावली संपूर्ण धर्मशास्त्रकं श्रुभमस्तु लिखितंमयाराम स्वय निर्मित्तय संवत् ।।१६३०।। फालगुन् श्रुकलाष्टमी भूमिसुते ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -728** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : केशवानंद (उदासीन)

शीर्षक : अमरनाथ अष्टकं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६४७

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 11 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : काली और संतरी स्याही का प्रयोग। रचना संपूर्ण है। लिखाई साफ और सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव–महिमा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री अमरनाथाय नमः ।। चंद्रावतंस । विमलं विकलं विशुद्धं विश्वोद् भवष्यिति विनाशकरं वरंवै ।। गंगा तरंग विलसात्सितभाल भागं ।। काश्मीर देश वसतिं भदेवनाथम् ।।१।।

अंत : इतिश्रीमद्उदासीन परमहंस शिरोऽवतंस स्वामि गौरदास चरण मिलिन्द केशवानंद यति निर्मितम्अमरनाथाष्टकं समाप्तम् ।। ।। ।। संमत् १६४७

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -729** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	—
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	तर्पण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६१८
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—13 चित्र --
हाशिया	:	—
आकार	:	17 X 13 स०म० लिखित 13 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		18
विवरण	:	सम्पूर्ण रचना है।
विशेष विवरण :		
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथमंगल पूजा विधिः ।। कृतशौचाचारोब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय अपामार्जेणहंत धावनं कृत्वानद्याहौ गृहेवास्नात्वामौ नंधौतवस्त्रं परिधाय ।।
अंत	:	तेतृप्पंतुमयाहत्तंवस्त्र निष्पीऽनोद्कम् । इति तर्प्पणां समाप्तम् ।। शुभंभूयात् ।। संवत् १६१८ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -730** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : औंकार सहस्रनामावलि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १९६२

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : अंकित नहीं चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 12 स०म० लिखित 13 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : संपूर्ण रचना है। रचना के आरम्भिक पृष्ठ पर सुन्दर पत्तियों से सजावट की गई है मध्य में रचना का नाम व समय लिखा गया है। अंत में भी ऊँ का चित्र बनाया गया है। रचना के अन्तिम पृष्ठ में उर्दू में लिखा गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ओम् की स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्रीगणेशायनमः ऊँ मित्येतदक्षर मिदम् सर्वं तस्योपव्याख्यानभूतं भवद भविष्यदिति सर्व ऊँकारः एव इतिमानं ।।

अंत : ब्रह्मवित् ब्रह्मवभवभवति तस्मे नमो नमः इति ।। ऊँ कार सहस्त्र नामावलिः समाप्तः... ....स वासिनिः योगभ्यासरत श्रेष्ट ऊँकाराय नमोनमः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -731** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : नवग्रह जप विधि

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६२३

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–11 चित्र --

हाशिया :

आकार : 18 X 13 स०म० लिखित 13 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : रचना 11 पृष्ठों की है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पूजा पद्धति से सम्बन्धित है। नवग्रह पूजा विधि पर आधारित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशाय नमः अथ नवग्रह जप उों आकृहमे नरजसाइत्यङगुष्ठाभ्यान्नमः वर्तमानोनिवेशयन इति तर्जनीभ्यान्नमः अमृतंमर्त्यन्च इतिमध्यमाभ्यां नमः......

अंत : इति नवग्रह जपविधि संपूर्ण समाप्तम् शुभमस्तु सर्वजगतामित्तिशुभम् श्री उों संवत् १६२३ पौष शुदि मौमदिने तृतीयायां प्र० २६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -732** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रुद्रमल्ल

टीकाकार : –

शीर्षक : रुद्रयामले तंत्रे श्रीवाला त्रिपुरा नित्य पूजा पद्धति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३३

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–117 चित्र : एक (श्री कल्की अवतार से सम्बन्धित)

हाशिया : –

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 102 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : संग्रह की पहली रचना। आरंभ में कल्की अवतार से सम्बन्धित रंगीन चित्र है। पृष्ठ 91 पर एक यंत्र निर्मित किया है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पूजा पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः उोंनमः वाग्देवतायै उों व्राग्स्मे महूर्तेश्यायन तलाउत्थायकरचरणौ प्रक्षाल्य निजासने समुय विश्य निज शिरसिश्वेत वर्णः धोमुख....

अंत : वाला या पद्धतिंदेवि नित्यपूजा प्रकाशिकः गुह्यह्ह्यमो नित्यं गोपनीयं स्वयो निवत् शुभमस्तु सर्वसाधकानां संवत् १६३३

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -732** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : भार्गव ऋषि

टीकाकार : रुद्रमल्ल

शीर्षक : महाबाला कवच

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 12 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः। उों नमः त्रिपुरसुदर्य्यै उों अस्य श्री महाबाला कवच स्तोत्र मंत्रस्य भार्गवशंकार ऋषिः अनुष्टप छंदः

अंत : इतिश्री रुद्रयामले तंत्रे महात्रिपुरसुंदरी जगच्चिंतामणि नाम कवचं संपूर्णम् ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -732** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रुद्रमल्ल

टीकाकार : –

शीर्षक : त्रिपुर सुंदरी सहस्त्रनाम

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–36 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 12 स०म० लिखित 12 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय देवी स्तुति एवं देवी के विभिन्न नामों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः ।। उों श्री शंकरउवाच ।। निर्मरानंद संदोहः शक्तिभावेन जायते लावण्य सिंधुस्तत्रास्नि बालाय रसकन्दरा।।

अंत : इतिश्री रुद्रयामले तंत्रे नंदिकेश्वर संवादे त्रिपुर सुंदरी सहस्त्रनाम संपूर्णम् ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -733** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	चन्द्रभान काश्मीरी
टीकाकार	:	साधुराम उदासीन
शीर्षक	:	स्कन्दपुराण प्रणव पंचांङ्ग
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६१३
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–33 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 16 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	तैंतीस पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है और पूर्णविरामों हेतु लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। पहला और अन्तिम पृष्ठ छेदयुक्त और जर्जर हो चुका है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशायनमः।। सत्रांतेनैमिशरण्ये शौनकस्यमहीप सः ।। आसीमंमुनिशार्दूलं सूतं पौराणिकोन नमं ।।१।।
अंत	:	इतिश्री स्कंदपुराण प्रवण वकल्पे पंचमोध्यायः ।।५।। इतिश्री प्रणव पंचाग समाप्तं ।। लिखतं चंद्रभान काश्मीरी पटनारथं साधुराम उदासीनस्य संवत् ।।८।३ श्रावणवदि चतुर्दश्यां समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -734** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	परिभाषा प्रकरणम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—3 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	27 X 16 स०म० लिखित 22 x 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13
विवरण	:	रचना खुली हुई है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अनावश्यक शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः व्याख्यान तो विशेष प्रतिर्नहिसंदेहादल क्षणम्श्नहि कार्यनिमितत्वेनाश्रीपत्तेरकार्य्यमनुभवुन्तिप्रितत्वेनाश्रीयत्तेइदूत्तरेहराश्रयणि कार्य्यणिन प्रवर्त्तते ४
अंत	:	प्रकल्पवादभ्विषयंत्तदुपसर्गोचित विशत्ते १३७ इति परिभाषाप्रकरण संपूर्ण। ।। ३

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -735** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : मधुसूदन सरस्वती

शीर्षक : अद्वैतरत्नरक्षणम्

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–54 चित्र --

हाशिया :

आकार : 20 X 11 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेषायनमः वृदारण्यनिविष्टं विलुम्तिमानीरवार नारीभिः सत्यचिदानंदघनं ब्रह्म नराकारमंलवे...

अंत : इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितम् द्वैतरत्नरक्षणं समाप्तम् उों श्री शिवायनमः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -736** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : ऐतरेय उपनिषद् दीपिका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–80 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 18 स०म० लिखित 24 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13

विवरण : अस्सी पृष्ठों की खुली हुई रचना। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ऐतरे उपनिषद् से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः आत्मावाइत्पादिता केवलात्म विद्यारंभस्पावसरंवक्तुंवृतंकीर्तयति परिसमाप्तमिति तत्परिसमाप्तिः कथं कम्यत इत्पाशंक्य तत्फलोपसहांरादित्पाह सैषेति...

अंत : इति ऐतरेयोपनिषत्समाप्तम् ।। विद्यासंप्रदाय प्रवृत्ति प्रयुक्तः.......द्वितीयारण्यक परिसमात्यर्थश्च इतिश्री सप्तमाध्यायस्य दीपिका संपूर्ण श्लोक संख्या २५

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -737** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	गंगाधर
शीर्षक	:	सौन्दर्य लहरी
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–45 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	14 X 9 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6
विवरण	:	संग्रह की पहली रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। रचना आरम्भ से पहले पृष्ठ पर किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा रचना का लेखनकाल बताया गया है। रचना के अंत में भी दिन वार का वर्णन किया गया है। जगह–जगह पृष्ठ जुड़ जाने से स्याही भी उखड़ी हुई है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय नायिका–सौंदर्य वर्णन से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	१।। तनीयां संपासंतव चरण पंकेरुहभवं विरिंचः संचिन्वन्वि रचय तिलोकानविकलं ।। वहत्पेनंशौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसांहरःमुंक्षभ्यैनंभजति भमिंतोद्धलनविधि।।१।।
अंत	:	इतिश्री द्राविड विडविषय मंडनेना खंडकनि मंडलखंडन परेणश्री शंकराचार्येण विरचिता सौंदर्य लहरी समाप्ताः ।। गंगाधरेण लिखितंरामानन्देन....चैत्रेमासे कृस्न पक्षे षष्टस्यां बुधवासरे ।। विशाखायांचनक्षत्रेव्याद्यातेयो गदास्मटता ।।२।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -737** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : त्रिकाल सन्ध्या

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 46–61 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय संध्याकालीन पूजा पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः ।। वामेवत्हन्क्रशान्दक्षिणोपाणो सपवित्रंकुशत्रयंचधुता ।। स पणवगायन्र्याशिखांवद्धा।। ऐशान्या भिमुखआचम्प ।।

अंत : अक्षसूत्र धरादेवी पद्मा सनगताश्शुभा इति त्रिकाल संध्या समाप्ताः ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -737** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	पुष्प दंताचार्य
शीर्षक	:	शिवमहिम्न स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	2–18 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	14 X 9 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	6
विवरण	:	संग्रह की तीसरी रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवी–महिमा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	१ ।। अतीतः पंथानंतवचमहिमावाङ्मयनसयोरतद्यावृत्पायंचकितमभिधत्रेश्रुतिरपि।। सकस्य स्तोत्रमः कतिविद्यगुणः कस्य विषयः पदेतवाचीने पतति नमनः कस्य न वचः ।।२।।
अंत	:	इतिश्री पुष्पदंताचार्य विरचितं महिम्नाक्षं स्तोत्रं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -737** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवस्तुति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की चौथी रचना। पृष्ठ संख्या अंकित नहीं है। कलम व शैली बदली गई है। काली स्याही का प्रयोग किया गया है। आरंभ में एक मंत्र लिखा गया है फिर रचना का आरंभ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः उों श्री शिवायनमः आदि शंभुस्वरूपमुनिवर चंद्र सीश जटाहुरं रूंडमाल विशाल लोचिन वाहन व्रषभ ध्वजं नाग चर्म त्रिशूल मरू भस्म अंग विहंगमं।

अंत : त्रेफलदायकं पुर्व काशिभयेवासी प्राप्यते फलदायक अंविकेतट वैजनायक शैल शिखिर महेश्वर श्री ६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -738** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गौडपादाचार्य

टीकाकार : भगवदानंदगिरि

शीर्षक : गौडपदीय भाष्य टीका द्वितीय प्रकरण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–71 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : इक्हत्तर पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट एवं सुन्दर है। विषय की पूर्णता हेतु कुछ पृष्ठों के किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गौडपाद आचायर्य द्वारा रचित नाराण स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः परिपूर्ण परिज्ञानपरितृप्ति मिमतेसते विस्मवेजिस्मवेतस्मैकृस्नामभृतेनमः श्रद्धानंदपदांभोजद्वंद्व मद्वंद्वतास्पदं नमस्कुर्वेपुरस्कर्तुतत्वज्ञान महोदयं २

अंत : इति श्री श्रद्धानंदपूज्यपाद भगवदानंदगिरि विरचितायां गौडपादीयभाष्य टीकायां द्वितीयप्रकरणांवैतथ्याख्यं समाप्तम् ।। श्रीरामायनमः श्री कृस्मायनमः ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -739** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : समासाश्रय विषय

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 97–107 चित्र --

हाशिया :

आकार :

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : रचना अधूरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : नश्व।। अर्थाभावेअव्ययीभावेन सहायं विकत्यते ।। रक्षोहागमलघ्वसंदेहाः प्रयोजनमिति अद्रुताया संहितमितिचभाष्य वार्तिक प्रयोगात् ।।

अंत : प्रायश्चितम् ।। वनस्पतिरित्पाहि ।। आकृतियणोयम् ।। इतिसमासाश्रयविषयः ।। श्री।। श्री ।। श्री ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -740** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	तिङन्त (मध्यकौमुदी प्रक्रिया)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–18 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 24 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		10
विवरण	:	अट्ठारह पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग। पृष्ठों के किनारों पर भी बारीक लिखाई में कुछ लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वतंन्त्रः कर्त्ता १।४।५४ क्रिययांस्वातंअेण विवक्षितोर्थः कर्त्तास्यात् तत्प्रयोजकोहेतुश्च २।४।५५। कर्तुः प्रयोजको हेतु संज्ञा कर्तृ संज्ञश्चु हेतुमतिच ३।२।१६।
अंत	:	इतिश्री तिङन्त समाप्तम्।। इतिलकारार्थ प्रक्रियाः १० ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -741** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

मुद्रक : हरिप्रसाद भगीरथ द्वारा शिलायंत्र मुद्रित

शीर्षक : अनुवाक्सूत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६४१ शकाब्द ; १८०६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–39 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही का दुहरा हाशिया।

आकार : 28 X 14 स०म० लिखित 21 X 11स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : अड़तीस पृष्ठों का खुला हुआ ग्रंथ । पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। पहले तथा अन्तिम पृष्ठ पर शीर्षक के चारों ओर हाशिये एवं फूलदार किनारे बने हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय विभिन्न यज्ञों से एवं यज्ञ संस्कार विधि से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः ।। ऊँ अथानुवाकायनूवक्ष्यामिब्रह्मणनिर्मितानूपुरा ।। शिष्ययाणामुपदेशाययज्ञ संस्कार एवच । विप्राणांयज्ञ कालेषुजपहोमार्चनादिषु ।।१।।

अंत : इत्यनुक्रमणिकायांपंचमोऽध्यायः ।।५।।१२३।। श्रुभभवतु ।। श्लोक संख्या ।।६१५।।इदं पुस्तकं भगीरथात्मज हरिप्रसादेन मोहमय्या जगदीश्वर शिलायंत्रे मुद्रितम् ।। संवत् १६४१ शकाब्द १८०६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -742** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : कृदन्त

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—17, 33 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 23 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : रचना अधूरी एवं खंडित है। पृष्ठ 17 के बाद 33वाँ पृष्ठ उपलब्ध है और फिर आगे के पृष्ठ भी नहीं हैं। हर तीसरा पृष्ठ पीले रंग का है। छूटे हुए शब्द पृष्ठों के किनारे पर लिखे हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमःयातोः ३/१/६ आतृतीयाध्ययान्तंये प्रत्ययास्तेधातोः परेस्पुः कृदतिङ ३।१।६३१ इति कृत्सन्ता । वासरुपोऽस्तियाम् ३।१।६४

अंत : दान्तोवाधान्तोवानचदान्तवे निष्ठानत्रमूधान्तत्वेकरूषस्थ्तो ....अव्ययंपूर्व पदेऽनज्समासे क्रोल्पवादेशः तुक प्रकृत्य अनज्किम् अकृत्वाअव्ययपूर्वपदात्किम् परमकृत्वा । वाल्पकि ६।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -743** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कारक (विभक्तियार्थ प्रक्रिया)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–9 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 22 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : नौ पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु संतरी रंग काले अक्षरों पर लगाया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः प्रातिपदिकार्थ लिङ्गपरिणामवचनमात्रे प्रथम २/३/४६ नियतोपस्थितिकः प्रतिदिकार्थः मात्रशब्दस्य प्रत्येकं योगः प्रतिपदिकार्थ मात्रेलिङ्ग मात्राद्ययिवेन संख्या मात्रेचप्रथमास्यात्

अंत : अत्र कर्मप्रवचीनय युक्ते सप्तमी उपपरार्द्धे हरेर्गुणा परार्द्ध दाधिकाइत्यार्थः ऐश्वर्य्येतुस्व स्वामिभ्यांपर्य्यापेण सप्तमी अधिभुविरामः अधिरामभूः इति विभक्तयर्थ प्रक्रियाः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -744** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : मुदित नारायण

शीर्षक : समास चक्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६८२

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–14 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 25 X 18 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11–13

विवरण : चौदह पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठों के किनारों पर भी छूटे हुए शब्द लिखे हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः अथसमासचक्र लिख्यते ।। प्रयोगस्तिविधः कर्तरि प्रयोगः ।। कर्म्माणि प्रयोगः भावे प्रयोगःश्चेतिसचकर्तरि प्रयोग सकर्म्मका श्म्मकभे देनद्विविधः ।।

अंत : इति समास चक्रं संपूर्ण संवत् १६६२ फालगुण सुदित नारायण.....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -744** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : विजय रामाचार्य

शीर्षक : पाखंडच पेटिका

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६८२

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 25 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11–13

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्रीमद् विजय रामाचायरूं विरचितायां पाखंड चपेटीका लिख्यते विप्रवंचरि कार्तिविभुः स्वलीन्नयात् थावरी भर्त्य विखिलं सनातनःयः संजरी हर्ति कलांत विग्रहस्त सर्वभूता श्रयमान तोस्म्यहं ।।१।।

अंत : व्रह्मपुराणे दशमे ध्याये ।। तप्तमुद्रां ह्यत्यजाप हरिणानिर्मिता परामूदेवस्तु प्रमुद्रायश्चिहं कृत्वाविमूढधीइ हजजन्मन्यं त्यजः स्पात्प्रेःतश्चल भविष्यतीति।। अश्वलायन स्मृतौ।। षष्टाध्यायतंन द्विजस्यकदा चन द्विजजस्यतहि।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -745** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गौतममुनि

टीकाकार : अन्नंभट्ट पण्डित

शीर्षक : न्यायपंचाध्यायां

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 25 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : तीन पृष्ठों की लघु रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय तर्क–वितर्क एवं न्याय से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोंहयग्रीवायनमः ।। कमलाकमनः कामम्मामाकमारात्कणेतुजलजाक्षः कन्जजतज्जधृतंयत्पदकमलं मस्तके न मनसापि १

अंत : निरूपततत्व संबंधेनामन्च यद तथा च इदं निरूपिताश्रयीगंय/इति विहग्रह वाक्याद्बोयः......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -746** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	तर्क चूड़ामणि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–5 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 14 स०म० लिखित 23 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		17
विवरण	:	पाँच पृष्ठों की खुली हुई रचना। पृष्ठ काफी पुराने और जर्जर पड़ चुके हैं। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनः नैदाध भानुकिरिणेष्व वर्वरिपूरः सर्वोविभतियद्वोधावशात्प्रपंच मालाफणीवचनि मीलति यत्प्रबोधत्तहह्म नौमि सुखमद्धयात्म नूपा १
अंत	:	इयदेवमयापनिषत्सुपदंपरमंविदितंजततोस्त्यधिकं ।। इति पिप्पल भक्षइवाभ्य राम

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -747** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : श्री भाव प्रकाश (द्रव्य वर्ग)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 9—126 चित्र --

हाशिया : काली स्याही का हाशिया दोनों ओर है।

आकार : 24 X 8 स०म० लिखित 6 X 20 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : रचना अधूरी है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना पृष्ठ पाँच से उपलब्ध है जो अंत तक पृष्ठ 126 तक चलती है।

विशेष विवरण : रचना का विषय खान—पान सम्बन्धी विभिन्न पदार्थों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : सकासत्वगामयान् गुल्ममेह कफस्थौल्पभेदः श्रीपदपीनसान अथ पिप्पली मूखस्य नामानि ग्रंथ कंपिद्य ली मूलभूषणं चटिकाशिरः........

अंत : मधुता शर्करा रुचाकफ पित्त हरी गंरुः दर्घतीसारतृद्दाहरक्तहत्रुंवराहिमा यथायथैकनिर्माल्या मधुरत्यंत मधुरत्पंतथातथा स्नेहलाघवशौत्पानिसृरत्वं चतथातथा ।। इति श्री भाव प्रकाशेइक्षुवर्गः २३ समाप्तोयं द्रव्यवर्गः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -748** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : हरिहर नामावली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 3–43 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 7 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : रचना पूर्ण है। पृष्ठ तीन से शुरु होकर पृष्ठ तैतालीस पर समाप्त होती है। अनावश्यक शब्द मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ईश्वर के विभिन्न नामों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : देवंमहेश्वरं ध्यातोपरतमासीतंप्रसन्न सुख पंकजं सुरासुरशिरोन्नरंजितांघ्रियुगप्रभु.....

अंत : इतिश्री संकट पुरणे का शिखंडे हरिहर नामावली स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -749** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : देव वंदना नामावली

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–21 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 9 स०म० लिखित 10 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : रचना अपूर्ण है। पहला पृष्ठ नहीं है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है पृष्ठों के किनारे पर कई शब्दों के अर्थ लिखे हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय देववंदना हेतु भगवत् नामावली से सम्बन्धित।

आरम्भ : उों श्रीमतेनमः उों केशवायनमः उों पुरुषोत्तमायनमः उों सर्वायनमः उों शर्वायनमः उों शिवायनमः उों स्थाणवेनमः उों भूतादये नमः

अंत : उों जगदीशाय नमः उों रथांग पाणये नमः उों प्रक्षोभ्याय नमः उों सर्वप्रहरणायुधायनमः उों सर्वप्रहरणा प्रयाय नमः

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -750** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	गोरक्ष शतक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–13 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से लकीरें
आकार	:	22 X 11 स०म० लिखित 19 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		10
विवरण	:	तेरह पृष्ठों की खुली रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। आरंभ तथा अंत के पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय योग–दर्शन से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशयनमः ।। उों नम शिवाय।। श्री गुरुं परमानंद वंदे आनंद विग्रहं ।। यस्य सान्निध्य मात्रेणचिदानन्दायतेतनुः।।१।।
अंत	:	सत्यं तेन सुतर्प्पिताश्चपितरः स्वर्गचनिताः पुनः यस्यय ब्रह्म विचारेणक्षणामपि प्रान्नोतिधैर्य्यमनः ।।९६।। इति गोरक्ष शतक समाप्तम् ।।श्रुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : वेदव्यास

टीकाकार : –

शीर्षक : श्रीमद्भगवद्गीता

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–124 चित्र -- 2

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : दो पृष्ठों पर चार फूल बूटों से सज्जित किया गया है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों नमः सरस्वत्यै।। उों अस्यश्रीभगवद्गीता मालामंत्रस्य श्रीभगवान्वेदव्यास अषिरनुष्टुप् कंदः ।।

अंत : इतिश्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्म ।। विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृस्नार्जुन संवादे मोक्ष्पसंख्यासयोगोनामाष्टादशोध्यायः ।।१८।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : वेदव्यास

टीकाकार : –

शीर्षक :

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–30 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 47 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीमते रामानुजाचार्य नमः।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बंधनात् ।।

अंत : द्विकालमेककालंगकूरंसर्वगपोहति ।।५६।। दह्यंति रिपर्वस्तु स्यपौम्यः सर्वेसदा ग्रहाः।। विलीधंते चयः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -751** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	वेदव्यास
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	महाभारत
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–12 चित्र **--1**
हाशिया	:	लाल, पीली व काली लकीरों से हाशिया
आकार	:	14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पृष्ठ 12 पर रचना समाप्त है। आगे के दो पृष्ठों पर केवल लाल, पीली व काली लकीरों से खाली हाशिया है। आगे एक चित्र है।
विशेष विवरण	:	रचना महाभारत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री कृस्नायनमः ।। उों जनमेजय उवाच ।। उों
अंत	:	इतिश्री महाभारते शत साहंस्त्रप्रासंहितायां वैया । सिक्यां विस्नुर्धोत्तर अनुस्मृत्य समाप्तम् ।। उों

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : महाभारत (शांतिपर्व गजेंद्रमोक्ष)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–29 चित्र **--1**

हाशिया :

आकार : 20 X 11 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण :

विशेष विवरण : रचना महाभारत के शांतिपर्व गजेन्द्रमोक्ष से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री कृष्ण ।। उों शतानीकउवाच ।।

अंत : इतिश्री महाभारते शत साहस्रां संहितायां वैयासि क्यां शांतिपर्वणि गजेन्द्रमोक्षणोनाम संपूर्णम् ।। श्री रामायनमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गोपाल पटलं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–15 चित्र --

हाशिया : पीली, काली और संतरी लकीरों से हाशिया

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : लाल और काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों नमः सरस्वत्यै।। अथगोपालपटलं ख्यितं ।। उों श्री गोपीजनांते प्रवदेहल्लाभयाग्रिसुंदरी ।।

अंत : इतिश्री गोपालपटलं समाप्तम् ।। उोंनमः सरस्वत्यै।। उोंनमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (च) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गोपाल पद्धति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया : काली, लाल व पीली लकीरों से हाशिये

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ण रचना। लिखाई सुन्दर व स्पष्ट है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों राधायनमः ।। उों समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तन मंडले

अंत : इतिश्री गोपाल पद्धति समाप्तम् ।। श्री गोपालो जयति ।। उों श्रीतस्मो नारायण्यनमः।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (छ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गोपाल समोहन नाम कवचं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–9 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीगोपालायनमः ।। उों भगवंतसुस्वारसीतंदेवदेवंश्रियः पतिः

अंत : इतिश्री गोपालस्य संमोहनं नामकवचं संपूर्णम् ।। उों नमो भगवतेवासुदेवाय ।। उों नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ज) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गोपाल सहस्त्रनामस्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–23 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्री राधाकृस्नायनमः ।। उों कैृस्नासशिखरेरम्ये गौरी

अंत : इतिश्रीसंमतोहने नेत्रंपार्वतीहर संवादे।। श्री गोपाल सहस्रनामस्तोत्र त्रैलोक्य मोहनं नाम संपूर्णम् ।। उोंनमः सरस्व।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (झ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कृस्न मंत्र गोपाल स्तवराज स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 24–26 चित्र **--1**

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों नमो राधाकृस्नाय नमः उों अस्यश्री गौतम तंत्रस्य श्री नारदऋषि अनुष्टुपकंटः ।। श्रीकृस्नपरमात्मा देवता ।।

अंत : इतिश्री कृस्नमें तंत्रे श्री गोपाल स्तवराज सतोत्रं संपूर्णम् ।। श्री राम

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (त्र) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सनत्कुमार संहिता

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–19 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : रचना पृष्ठ एक से अट्ठारह तक लिखित है। पृष्ठ संख्या 19 खाली है केवल हाशिया बना हुआ है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीरामायनमः ।। उों अस्यश्रीरामचंद्र स्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमारक्षविर उष्टुप्कंटः श्री रामेदेवता सीता वीजंहनुमान् शक्तिः

अंत : इतिश्री सनत्कुमार संहितायां नारदोक्तं श्री राम स्तवराजस्तोत्रं समाप्तम् ।। उों नमः सरस्वत्यै ।। उों नमः सरस्वत्यै

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ट) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : पांडव गीता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 20–37 चित्र --1

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पृष्ठ एक पर चित्र अंकित है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीरामायनमः ।। उों पांडव उवाच ।। उों प्रह्लाद नारद पराशर पुंडरीक व्यासांवरीष शुक शौनक भीष्मकाद्याः ।।

अंत : इतिश्रीपांडव कृतायां पांडव गीता संपूर्णं समाप्तम् ।। ।। उों नमः सरस्वत्यै उों नमः सरस्वत्यै ।। उों नमः शिवायः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ठ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : चौबीस गायत्री

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–23 चित्र --

हाशिया :

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीराधाकृस्नायनमः ।। उों उत्तिष्टंतुमहाभूताये भूताभूमि पालकाः ।। भूतानामवरोधेन ब्रह्म कर्म समावरेत् ।।१।।

अंत : तत्सत् अद्य गायत्री जप विश्रवेसमर्थधेतू ।। शालनाम संख्या ।। इति चौबीस गायत्रीं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -751** संग्रह (ड) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : मंत्र मुक्तावली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–27 चित्र --

हाशिया : लाल, पीली व काली स्याही से चारों ओर हाशिया

आकार : 14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : श्रीराधाकृस्नाय नमः । अथ मंत्र मुक्तावली ।। आदित्यवारे मलेछ कबुद्धि च ।। १।। सोमवारे सर्वा सिद्धये ।।२।।

अंत : इतिश्री मंत्र मुक्तावली संपूर्णम् ।। श्री रामायनमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -751** संग्रह (ढ) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	चाणक्य नीतिशास्त्र
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—18 चित्र --
हाशिया	:	संतरी, काली व पीली स्याही से चारों ओर हाशिया
आकार	:	14 X 9 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	7
विवरण	:	
विशेष विवरण	:	
आरम्भ	:	उों नमः कृस्नायनमः ।। उों नीतिशास्त्रं प्रवक्ष्यामिचाणिक्येनतुभाषितं ।।
अंत	:	तेपुत्रायेपितुर्भक्ता सपि ।। तायस्तपोषकः ।। उन्मिंत्र यत्रविश्वासः

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -752** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	श्री मच्छकर भगवतः
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	छान्दोग्योपनिषद् भाष्य
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–29 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	37 X 19 स०म० लिखित 28 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15
विवरण	:	उन्नतीस पृष्ठों की पूर्ण कृति । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग हुआ है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग काले शब्दों पर लगाया गया है। अनावश्यक शब्दों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशायनमः उों पूर्वोत्तरप्रपाटकयोः संगतिंदर्शयति उों मित्पेतरित्पादिना सर्वथापिसामावयव विषयत्वैस्नो भाक्षर विषयत्वे चेत्पर्थ इतिशन्दोहेत्वर्थः .....
अंत	:	इतिश्री गोविंद भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री मच्छकर भगवतः कृतौ छांदोग्य विवरणो द्वितीय प्रपाटकः समाप्तः ।। २ शुभमस्तु ।। इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंद ज्ञानकृतायां छांदोग्योपनिषद्भाष्य टीकायां द्वितीय प्रपाटकः समाप्तः २ ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -753** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	भगवदानंदज्ञान
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	छान्दोग्योपनिषद् अष्टम प्रपाटकः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–48 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	37 X 19 स०म० लिखित 28 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनमः उों पूर्वस्मित्रय्याद्धयेनिर्विशेषमात्मतत्व मनवादित्रंसदानंदैकतानमावेदितंतया चोपनिषदारंभे चरितार्थे किम् वशिष्यते यदर्थम् अध्यायातर मित्याशंग्राह यय्योति कर्तुमिततद्धिगमा ।।
अंत	:	तद्स्मिन्नामउुपादि विरहिबह्मनिर्भयं नमस्यय्यंतसदोह सरसीरुह भानवे गुरवेपरम तौषयांतयंसपटीयसे ।। इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजक श्री श्रद्धानंद पूज्यपाद शिष्य भगवदानंदज्ञान कृतायां छांदोग्य भाष्य टीकायामष्टोध्यायः ८

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -754** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : मधुसूदन सरस्वती

टीकाकार : –

शीर्षक : सिद्धान्त बिन्दु

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६१४

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–29 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 22 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : उन्नतीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। कई छूटे शब्द और प्रयुक्त कई शब्दों के अर्थ पृष्ठों के किनारे पर दिए गए हैं। लिखाई सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोंश्रीमत्शंकराचार्यनमः उों श्री शंकराचार्यनवावतारं विश्वेश्वरे प्रणम्प वेदान्तशास्त्रश्रवणालसानांवोधाय कुर्वेक मपि प्रयत्नम् १

अंत : इतिश्री परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्र्र सरस्वती भगवत् पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तविंदुनाम ग्रंथः समाप्तः श्रुभम्भूयात् संवत् १६१४।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -755** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : कीलकं स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—15 चित्र --

हाशिया :

आकार : 24 X 12 स०म० लिखित 16 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : पन्द्रह पृष्ठों की खुली हुई रचना। पहला पृष्ठ स्पष्ट नहीं है बीच में एक चित्र था जो रंगहीन हो चुका है। पृष्ठ भी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : देवी स्तुति के अंतर्गत काली की स्तुति की गई है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः ।। मार्कंडेयउवाच ।। नारद उवाच ।। च ।। उों लोके सर्व रक्षा करनणाम् ।। यत्न कस्य विदा......खातंतनमो ब्रहिपितामह ।।१।। श्री ब्रह्मोवाच ।। अस्ति...

अंत : शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सात्विकैर्जनैः ।।१४।। उों इति श्री कीलकं स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -756** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : केन उपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–7 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 16 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : सात पृष्ठों की पूर्ण कृति । काली एवं लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखावट साफ एवं सुन्दर है। अन्तिम पृष्ठ कुछ फटा हुआ है।

विशेष विवरण : विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्रीगणेशायनमः ।। केनेषितोपनिषदंव्याकरिण्येपरूध्वनारभ्यांत लवकारणांशखायामात्मबोधिनीम् ।।१।। ब्रह्मणः प्रत्यक्षादिप्रमाशौर नवगम्यर्त्वत्तदस्तित्वस्यच प्रमाण सिद्धात्वाच्चित्रेणापि कर्मणाप्राणाधुपासनेन ब्रह्मज्ञानोत्यादन में तरेण ब्रह्मावान्पेः संपादयितुमश कात्वादशुच्दांतः करणस्य च ब्रह्मज्ञानोत्यादस्यासंभाविकत्वादतः....

अंत : इति पंचमः खंडः ।।५।। इति सामवेदेतलव कारशाखीक्त केनोपनिषत्समाप्ता ।। राम।। राम – – – – – आयतनंप्रचारो पवेशनादिस्थलं यः मुमुक्षः ब्रह्मविद्यार्थतप आदि संपादनोधतःवैप्रसिद्यंद्वोउत्य ।।७।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -757** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	एकादशीव्रतद्यापनं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–7 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	20 X 10 स०म० लिखित 16 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	रचना खंडित है। पृष्ठ सात तक चलती है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई ठीक ही है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पूजापद्धति से सम्बन्धित।
आरम्भ	:	उों श्रीगणेशायनमः उोंनमस्त्रंउकायै उों जयंतीमंगला काली भद्रकाली कृपलानी दुर्गोक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्व धानमोस्क्तते १
अंत	:	उों अघेतिकर्त्तव्यो भय एकादशी व्रतोधापनांगभूतकृतै तदुधापनसागत स्स्विर्थइमं सुवर्णमयी विष्णु मूर्ति सलक्ष्मी कंसोयकर..........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -758** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : पंचमुखि हनुमत्कवचं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर संतरी स्याही से तीन–तीन लकीरें

आकार : 27 X 11 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 16

विवरण : एक ही पृष्ठ की सम्पूर्ण रचना है।

विशेष विवरण : सुदर्शन संहिता के अंतर्गत पंचमुखि हनुमान कवच से सम्बन्धित रचना है।

आरम्भ : श्रीगणेशायनमः श्री हनुमतेनमः नेंअस्य श्री पंचमुखि हनुमत्कवचंस्तोत्र मंत्रस्य श्री रामचन्द्रइत्रऋषिः

अंत : इतिश्री सुदर्शन संहितायां रामचन्द्र सीता मनोहग्पंचमुखि हनुमत्कवचं संपूर्ण शुभमवस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -759** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नारदमुनि

टीकाकार : –

शीर्षक : अववर्णमाला

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया : संतरी रंग से दोनों ओर तीन–तीन लकीरों से हाशिया

आकार : 27 X 12 स०म० लिखित 22 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : काली और संतरी स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : नारदमुनि द्वारा रचित इस रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों श्री गुरवेनमः ।। उों पुरादेवासुरेयुद्धेनारदेनम महात्मना ।। जये पराजयेचैवप्रेतितंच शुभाश्रुभं ।।

अंत : नोंलकारेचार्थ संपत्तित्रुनाशे भविष्यति ।। समृद्धि भृंतावर्गस्द भवत्त सुखमेवच ।।५२ ।। इतिश्री नारदमुनिनाकृतावर्णमाला संपूर्ण समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -760** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वार्तिक

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 10 स०म० लिखित 28 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः।। सुप्तिङंतचयोवाकऽमिति प्रमाणानसारेण सवंतचयत्वेसति तिङंतचयत्वस्यमिलितस्य प्रत्येकं वासुवंतचयत्वादेर्वाक्य लक्षणत्वे परस्परमव्याप्तिः पदसमुहमित्यस्य गौरश्च

अंत : क्रियाचिनिर्मुक्त वाक्य स्वप्रमाण विरुद्वत्वेन वाक्य त्रैविभ्यमसंगत मित्या शंकयाह किंचेत्यादि क्रिया विविनिर्मुक्त वाक्य ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -761** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री गरुड़ पुराण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–49 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 14 स०म० लिखित 20 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : रचना अधूरी है। पृष्ठ दो से रचना आरंभ होती है लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ एवं सुंदर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है। प्रश्नोत्तर शैली में रचना लिखी गई है।

आरम्भ : धतः वनं विवेशगयांगंतुमुद्दतः वनं विशैर्वेगहनंनाग वृक्ष समन्वितं १२ नानामृगग्णाकीर्जनानाय क्षिणि नाटि तंवनम् ध्येय दाराजा मृंगदूरादयस्यत १३

अंत : इतिश्री गरुड़पुराणोसारोहारे षोडशोध्यायः १६ समाप्तिसगाङ्गरुड़ः समाप्ता।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -762** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सप्तम प्रकाश
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–66 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के दो–दो हाशिये।
आकार	:	32 X 17 स०म० लिखित 27 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14
विवरण	:	पूर्ण रचना परंतु पृष्ठ बहुत जर्जर हैं। काली स्याही का प्रयोग टंकण हेतु किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वृत्ति ज्ञान से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्रीगणेशायनमः ।। श्री रामोजयति ।। अथ सप्तम प्रकाशः प्रारंभः ।। ग्रंथ के आरंभ में वृत्ति किसकूं कहै है या वचन तैं वृत्ति के लक्षण और भेद का प्रष्ण है वृत्ति का कारण कौन है
अंत	:	इतिश्री मन्निश्चलदास सज्ज्ञाका साधुविरचिते वृत्ति भेद निरूपण प्रसङ्गप्राप्तसतूख्यात्यादि निराकरणागता ख्याति निराकरण प्रयोजक स्वतः प्रभात्वनिरूपणंनाम सप्तमः प्रकाश।। श्री रामचंद्र जी की पदारविदीं अर्पण किया है।। श्री सांवसदाशिवप्रसन् ।। श्रीकृष्णजी की प्रसन्न् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -763** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : वाल्मीकि

टीकाकार : –

शीर्षक : कुंदरकांड (रामायण)

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–133 चित्र -- 1

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये

आकार : 33 X 17 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : सुंदर कांड नामक इस पूर्ण रचना के आरंभ में रावण की अशोक वाटिका का चित्र संलग्न है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय हनुमान औदात्य एवं रामचरित से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः ।। श्री सरस्वत्यैनमः । श्री गुरुभ्योनमः ।। श्री रामचंद्राय नमः । ततो रावण नीतायाः सीतायः शत्रुकर्षणः ।। इयेष पदमन्वेष्टुं चारणाचरिते पथि ।।१।।

अंत : इत्यार्षेश्रमद्राभायणेवाल्मीकीये आदि काव्य सुंदरकांडेचतुर्विंशत्सहस्त्रिकायां संहितायामष्टषष्टितमः सर्गः ।।६८।। ।। ।। इतिसुंदरकांड संपूर्णमस्क्त भे रस्क्त

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -764** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	योनितन्त्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	2–18 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 12 स०म० लिखित 12 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14
विवरण	:	अधूरी रचना है। पृष्ठ दो से आरंभ होती है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पूजा पद्धति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	घतेचतत् ४ मंत्रपीठयंत्रपीठंयोनिपीठंचपार्वति योनिपीठंप्रधानानितवस्त्रे हात्प्रकाश्यते ५ हरिहराधाश्चये देवाः सृष्टिस्थित्यंतकारकाः सर्वेवैयोनिसंभूताः ऋणुधनगनंदिनि ६
अंत	:	इतिश्रीयोनितंत्रे अष्टमः पटल ट ।। शुभ ।। शिवउवाच ।। म टीका १ पालका २ वैश्या ३ राजकी ४ नायकी ५ मागता मालका ६ रस्यकन्याच ७ कुभ कारस्यव्कन्य का कन्य काष्टमिंद प्रोक्ताकुलाषु कुमथस्टए राज्य वैश्याग्राम वेश्यादेवर्वेस्यतथैवच

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -765** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : भतृहरि शतक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–22 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 14 स०म० लिखित 17 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : अधूरी । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण वाक्यों पर संतरी रंग लगाया गया है। रचना पृष्ठ 22 तक मिलती है। आगे के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय नीति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः दिक्कालाद्यनवछित्रानंत विज्ञान मूर्तये स्वानुमूल्यै कमानायनमः शांतायतेजसे १

अंत : पातालात्र समुद्वतो वनवलिर्मृत्पुर्त्रनीतिः क्षयंनोन्मृष्ट शशलांछन्स्य मलिने

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -765** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : रघुनाथ चरित

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–8 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 14 स०म० लिखित 17 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय रामचरित से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः कोपंविषादकुलनांवित्ततंचहर्षताल्पेन कारणवशेनवहंतिसंतः सर्गेण संदृतिज वेन विना जगत्यां भूतानिभूपन महांति विकारवंति १ श्त्वाव ।

अंत : शमममृत महार्ष मार्यय गुप्तं परम वलंव्यापरंपदंप्रयानाः रघुतनययथामहानुभावाः क्रममनुपालयसिधयेतमेव ७ ।। 0 ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -766** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	संध्यामंत्र व्याख्या
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–7 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	23 X 12 स०म० लिखित 16 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		1–12
विवरण	:	सात पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु संतरी रंग लगाया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय मंत्रोच्चारण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशायनमः अथसंध्यामंत्र व्याख्याः उोंऋतंचसग्रंचाभीद्वात्तयसोध्यजायत ततोराअजायत ततः समुद्रोऽर्णवः समुद्रादर्णवादधिरांवत्सरोः जायत.......
अंत	:	ध्याने नेति शेषः परोरजसे रजसः परम भूतायश्रुद्धसत्वस्वरूपायेतियावत् इति संध्यामंत्र व्याख्या श्रुभम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -767** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री आचार्य स्वामी

टीकाकार : –

शीर्षक : लक्ष्मी नारायण हृदयम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–22 चित्र --

हाशिया :

आकार : 19 X 11 स०म० लिखित 13 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण : रचना खंडित है। प्रथम पृष्ठ साथ नहीं है। रचना पृष्ठ दो से आरंभ होती है। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय लक्ष्मी स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : कनिष्टिकाभ्यां नमः ।। विस्मु नारायणायेति करतल करष्टभ्यां नमः ।। पवंहृदयादिन्यासः ।। अथ ध्यानम् ।। उघदादित्य संकाशंपीतवासंचतुर्भुजं शंखचक्रगदापद्म पाणिंध्यायेलृक्ष्मी पतिंहरिं ।।

अंत : इतिश्री अर्थवण रहस्ये उत्तरभागे श्री आचार्यस्वामि कृतं लक्ष्मीनारायण हृदयं संपूर्णम्।। श्रुभमस्त सर्व जगताम् ।। ५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -768** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पाणिनि

टीकाकार : –

शीर्षक : पाणिनीय परिभाषा

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 12 स०म० लिखित 22 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है जबकि पूर्णविरामों के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ओंश्रीगणेशायनमः ।। ओंस्वस्ति श्री गुरूगण पांवा पद पंकजेभ्योनमः ।। व्याख्यान तो विशेषप्रति पतिर्नहि संदेहा द लक्षणं ।।१।।

अंत : समासकृताद्वितेषुसंर्वयाभिधानंभाव प्रत्ययेनात्पत्ररूढ़ाभिन्न रूपा व्यभिचरित संबंधेभ्यः ।।३१। इति पाणिनीय परिभाषा ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -769** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : मनुभूतिश्वर आचार्य

टीकाकार : —

शीर्षक : सारस्वति प्रक्रिया

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—8 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 22 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : रचना अपूर्ण है। पृष्ठ एक से आठ तक चलती है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग काले शब्दों पर लगाया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सरस्वती वंदना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उोंश्रीहेरंवायनमः प्रणम्यपरमात्प्रातं वालधी वृद्धि सिद्धिये । सारस्वतीमंजु कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तरां १ अस्मिन् श्लोके अष्टौपदा निसंति अह

अंत : सत्रपधासंज्ञको प्रवति जपधीयते पूर्वत इत्युपद्या अंत्याद्विर्णमात्राजात्त्यूयवौ वर्ण स्वराः सवर्ण जपधा संज्ञकोप्रवति

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -770** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	स्कन्दपुराणान्तर्गत तमाकुनिर्णय
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–9 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 X 14 स०म० लिखित 21 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		8
विवरण	:	नौ पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथ स्कंद पुराण तरगतं तमाकु निर्णयं लिख्यते भ्रातः कस्तै तमाकुः सद्उदिगमनंते कुतोंभोतियेर्यत् कस्यत्वं द्वंद्व धारीनहित ववदितं श्री कलैरेवराज्ञः. ....
अंत	:	र्विस्मुलोकम वाप्पसा इत्येतत्कथितं राजन् विष्णु भक्ताय तेनपः यथोक्तव्रतमाहात्म्यं वृतं मृत्यय विनाशनं सोमा प्रभाव व्याजेन व्रत वैधव्य भंजनं युधि.......

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -771** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : लघु सिद्धान्त कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–27 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 14 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : सत्रह पृष्ठों की अधूरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ओंश्री गणेशायनमः ओंगुरुभ्योनमः ओंनत्वासरस्वतीं देवीं शुद्धांगुण्यांकरोम्यहम् पाणिनीय प्रवेशायलघुसिद्धांत कौमुदीम्

अंत : शेषइतिस्पष्टार्थं अनदी संज्ञोद्रस्वौया विदुतौत्तदंत सखिवर्जच्चि संज्ञस्यात् आङोनास्त्रि

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -772** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : रत्न हरि

शीर्षक : श्रीराम रहस्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–77 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 14 स०म० लिखित 21 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : सम्पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग। रचना के पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों रामानुजायनमः अथ श्री राम रहस्य उत्तरार्द्ध प्रारंभः दोहा वंदि जनकन्टपनंयदि नीग्बिुधवंद्य पद द्वंद्व तास सजसश्रानंद निधि वरनौ द्वंदनिकंद १

अंत : इतिश्री रामरहस्ये रत्नहरि विरचिते श्री स्कंदपुराणाख्यान श्री सत्योपाख्यान प्रबधेपकोनाषीतितमोध्यायः ७६ शुभमस्त सर्वजगतां ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -773** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री जगन्नाथ

टीकाकार : –

शीर्षक : पीयूष लहरी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –संवत् १६१६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–11 चित्र --

हाशिया :

आकार : 24 X 13 स०म० लिखित 17 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : ग्यारह पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है और अशुद्धियां ठीक करने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय नित्य नैतिकता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायायाः किमपितन्महैस्चर्य्यलीलाजनित जगतः.......

अंत : इतिश्रीजगन्नाथ विरचिता पीयूष लहरि संपूर्ण समाप्ता ।। श्रुभमस्त सर्वजगताम् ।।संवत् १६१६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -774** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शालाकर्म पद्धति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–26 चित्र --

हाशिया :

आकार : 21 X 12 स०म० लिखित 15 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : सम्पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्त्वपूर्णस्थल दर्शाने हेतु संतरी स्याही का प्रयोग काली के ऊपर किया है। रचना के अंत में एक जन्त्र है और बाद में शाला कर्म हेतु पूरी सामग्री का भी वर्णन है।

विशेष विवरण : रचना का विषय कर्मकांड से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः ततः शालाकर्म्मारभेतान् ब्राह्मणन्शक्तयायिकारान् उद्द्युखानुपवेश्य वस्तादिभिः परितोष्य उों पुष्याहं

अंत : इति ललाटे कश्यपस्य आयुषं ग्रीवायां यदेवेषु आयुधं दक्षिण वाङमूले तत्रोः अस्तु आयुषं इतिह्रदि इति शालाकर्मपद्धतिः शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -775** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	गोरक्ष शतकम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–11 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये।
आकार	:	26 X 12 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		
विवरण	:	सम्पूर्ण रचना। काली और लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय योग पद्धति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशायनमः ।। श्री गुरुपरमानंद वंदे आनंद विग्रहं ।। यस्यसन्तिधिमात्रेण चिदानंदायते ततुंः ।।१।।
अंत	:	योगशशास्त्रंय पठेत्तित्पंकिमत्पैः शास्त्रविस्तरैः।। यत्सवयचादिनाथस्य निर्गतंवदनांवुजात् ।।६६।। इतिश्री गोरक्ष शतकं समाप्तं ।। शुभमस्तु ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -776** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्रीरामनारायण

टीकाकार : –

शीर्षक : गुरुचन्द्रोदय कौमुदी

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६४१ संवत्

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–83 चित्र --

हाशिया : दोनों तरफ काली स्याही से दो दो लाइने

आकार : 27 X 15 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : पूर्ण रचना। पहले और अंतिम पृष्ठ पर काली स्याही के फूलों वाले हाशिये बनाये हुए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय गुरु–स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ऊँ श्री श्रीगणेश सरस्वती गुरुद्विजहरितत्वविद्भक्ति मभ्द्योनमः श्रीश्गवद्रूपनिखिल चराचर प्रपचायनमः

अंत : इतिश्री चंद्रभागाख्य विष्णुससख्यापन्न श्री रामनारायण विरचितं गुरु चंद्रोदय कौमुदी श्रासितार्थानुवर्णनंव्याख्यानं संपूर्णम्×××× व्यमित्थमीहृावहेवयम् ६ संवत् १६४१ पौषमासः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -777** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गृहस्थाश्रम नित्यनैमित्ति धर्म

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–57 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 11 स०म० लिखित 22 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : सत्तावन पृष्ठों की खुली हुई रचना। कीड़े के द्वारा जर्ज की गई रचना है। रचना के सारे पृष्ठों के किनारे कीड़े द्वारा खा लिए गए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय नित्य–नियमों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोंश्रीगणेशायनमः अथ गृहस्थाश्रमाणांनित्यनैमित्तिका धर्माःउक्ताः आभेयकादिगुण युक्तस्य गृहस्थस्य विशेषगुणधर्माश्च प्रदर्शिताः

अंत : वयाप्रसिद्धावसा मांसस्त्रंदः नाभिः प्रसिद्वाअवहननंपुरप्रुसः स्नीदाआयुर्वेद प्रसिद्धोतौवमांस पिंडाकारौसत्व्यकुक्षिग.......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -778** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	रामद्याल ब्राह्मण
टीकाकार	:	पठनार्थ साहब सिंह
शीर्षक	:	मार्कण्डेय पुराण (दुर्गासप्तशती)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	सुवत् १८४५
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	58–63 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	12 X 17 स०म० लिखित 8 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11
विवरण	:	अधूरी रचना। आरंभ के पृष्ठ नहीं हैं। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित दुर्गासप्तशती पर आधारित है।
आरम्भ	:	करालमत्यु ग्रमश्शेषा सुरसूदनं ।। त्रिश्शूल यातु नाभीति र्भद्रकालीनमोस्तते ।।२६। हिनस्ति दैत्य तेजासिस्वनेनापूर्य्याजगत्।।
अंत	:	पुस्तक लिषी रामद्याल ब्राह्मण मुस्तावाद का।। साहबसिंह ब्राह्मण पठ्नार्थ ।१३।। श्रुभमस्तु मंगल ददात् ।।१३।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -778** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शिवमहिम्न स्तोत्रम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–2 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये।
आकार	:	17 X 12 स०म० लिखित 12 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	अधूरी रचना। रचना दो पृष्ठों से आगे भी चलती है पर पृष्ठ उपलब्ध नहीं हैं। पृष्ठ काफी जर्जर पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शिव महिमा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशायनमः महिम्नः पारंते परम विशोयद्यसीस्तुतीर्वह्मादीनामपितदवसन्नासत्ययिगिरः ।। अथावाच्या सर्वःस्वमति परिणामवधि रगिणनाम माप्ये सस्त्रोत्रेहुरिनिरपवादः परिकरः ।।
अंत	:	अभव्यानामस्मिन वरदमणयाम रमणी विहंतुव्याक्रोशीविदध्रतहे कैजड़धीय ।।४।।४।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -779** संग्रह (क) भाषा : हिन्दी

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : चंदूलाल

टीकाकार : –

शीर्षक : रुक्मणि मंगल

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 3–7 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 9 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : अधूरी रचना। आरंभ के दो पृष्ठ नहीं हैं। लिखाई ठीक–ठीक है।

विशेष विवरण : रचना का विषय कृष्ण–रुक्मिणी विवाह से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ईआन ।। १२ इंद्रकोप व्रज पर हुए, बरसत हैं अतिसार ।। सभी ब्रज की रक्षा करी, गोवर्धन कर धार ।।

अंत : चंदूलाल कवि दास ने रच्यो मंगलाचार । दास जान किरपा करो, नंदसुत कृस्न मुरार ।।४२।। इति श्री रुक्मणी साखोच्चार संपूर्ण शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -779** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत–हिन्दी

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : चंदूलाल

टीकाकार : –

शीर्षक : चार लाम

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 7–10 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 9 स०म० लिखित 11 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : पूर्ववत् । संग्रह की दूसरी रचना। रचना के अंत में मथुरा के राजा का वर्णन छोटे अक्षरों में किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय विवाह पद्धति के अंतर्गत फेरों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : अथ चार लामा लिख्यते।। छंद।। सतयुग पहली लाम वरणी देव शिव गौरा सती।। धन धन्ननप अवतार ररविकुल भयो दक्ष प्रजापती ।।

अंत : ये है चार लामा कथन चंदुलाल का।। वलवंत रहे ले लाम चौथी दओ कन्या वालको ।।४।। इत श्री चाल लामा संपूर्ण।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -780** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	श्रीभट्टोजिदीक्षित
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सिद्धान्त कौमुदी पूर्वार्द्ध
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–171 चित्र --
हाशिया	:	पहले पृष्ठ पर चारों ओर तथा अन्य पृष्ठों पर दोनों ओर काली स्याही का हाशिया।
आकार	:	37 X 15 स०म० लिखित 29 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	एक सौ इक्कहत्तर पृष्ठों की खुली हुई रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी स्याही लगा दी गई है। लिखाई सुंदर एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्रीगणेशायनमः श्री हनुमतेरामानुजायनमः पाणिनयेनमः ।। मुनित्रयन्नमस्कृत्यतदुक्ती परिभाव्यच वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते १
अंत	:	इतिद्विरुक्त प्रक्रिया ।। इतिश्रीभट्टोजिदीक्षित विरचितायां सिद्धान्तकौमुद्यांपूर्व्वार्द्ध समाप्तम् ।। श्री कासी विश्वेश्वरायनमः श्री हनुमते रामानुजायनमो नमः ।। : ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -780** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सिद्धान्त कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–56 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही से हाशिया

आकार : 37 X 15 स०म० लिखित 29 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : अधूरी रचना। पृष्ठ 56 के आगे के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। संग्रह की दूसरी रचना है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्रीगणेशायनमः श्रीत्राईन्तीचणैर्ग्गुण्यैर्म्महर्षिभिरहद्दिवं ।
तोष्टय्यमानोप्यगुणोविभुर्व्विजयतेतण्म् १ पूर्वार्द्धेकथिता स्तुर्य्य पन्चमाध्याय वर्त्तिन ।।

अंत : भ्रजसजेरेफस्योपधायाश्चस्थानेस्मागमोवास्यादार्दच्धातुके ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -781** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : श्रीमिश्र मोहनदास

शीर्षक : हनुमान नाटक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १८१६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–153 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 16 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14

विवरण : सम्पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ एवं सुन्दर है। आरंभ के पृष्ठ कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय राम कथा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोंश्रीगणेशायनमः ।। श्रीगुरुभ्योनमः ।। हृदयेपत्प्रेरणयासमुद्यतोहंविमूढतरबुहिः तत्पदकमलं वंदे गोकुल नाथस्य वेदौदः ।।१।।

अंत : पतद्ग्रथार्थोक्तिश्रमैकविज्ञः पतिश्रीयोरामःतुष्टानियपदभक्तिं दिशतदयावानरूकरः स्वल्पं ६२ इतिचतुदेशोंकः हनुमांननाटक टीकायां रामंविजयो नाम चतुर्दशोंकः १५ रामायन० संवत् १८१६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -782** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : महावीर मिश्र

शीर्षक : सत्यनारायण

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६४३

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–12 चित्र : अन्तिम पृष्ठ पर सूत जी तथा ऋषियों का चित्र।

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये।

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : बारह पृष्ठों की टंकित कृति । टंकण में काली स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रथम पृष्ठ पर टंकण का पता तथा रचना के मिलने का पता दिया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय स्कंद पुराण के सत्यनारायण कथा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः अथसत्यनारायणपूजनादि विधिःव्रती रवि संक्रांति दिनै पौर्णमास्यामेकादश्यांयस्मिन्कस्मिनश्रुभ दिनेवासायंकाले स्नानं कृत्वा पूजास्थानमागत्यासने उपविश्याचम्प पवित्रं धारणं कृत्वा मंडल स्थापित गणपत्यादि गौरी..........

अंत : पौषमासे शुक्ल अद्य दिवस नक्षत्रे उत्ताषारो भूत्वासर्वेषामीप्सित प्ररूपी सनातनः १५ यद्दंपत्तमाः सत्यंनश्यंन्ति पापा।। इति श्री स्कंदपुराणेरेवाथाया सप्तोऽध्यायः ७ ।। पक्षे द्वितीयां यां चंद्रवासरेडनाम संवत् १६४३ शुभं ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -783** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पंडित निश्चलदास

टीकाकार : –

शीर्षक : वृत्ति प्रभाकर

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १८४७

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–42 चित्र --

हाशिया : काली स्याही से हाशिया

आकार : 32 X 16 स०म० लिखित 27 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14

विवरण : 42 पृष्ठों की टंकित प्रति। दोनों ओर काली स्याही का हाशिया है। काली स्याही का प्रयोग टंकणार्थ किया गया है। रचना के पृष्ठ बड़े जर्जर हो चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामो जयति ।। अथ अष्टम प्रकाशः प्रारंभ्यते ।। सप्तम प्रकाश मैं वृत्ति का स्वरूप कह्या वृत्ति का प्रयोजन कहनै कूं अष्टम प्रकाश का आरंभ है अज्ञान की निवृत्ति मुख्य प्रयोजन वृत्ति का है।

अंत : है बडज्ञानांमृत की षानी ।।१।। अज्ञान तरु अति देत उषारी ।। महाप्रलय को है मनुष्यारी ।। अविद्या उदर विदारत अैसे ।। केहरिनष फारत गज जैसे ।। १०।।दोहा।। अष्टादस प्रथान मैं।। जौ न अर्थ है सार ।। श्रीमत निश्चलदास जू ।। भाषाभन्योमझार ।।११।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -784** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : जनार्दन भट्ट

टीकाकार : —

शीर्षक : शम्भुतत्वानुसंधानवृतिः

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : कश्मीर (शारदापीठ)

पृष्ठ : 1—33 चित्र --

हाशिया :

आकार :

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10—11

विवरण : सम्पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः ।। उों श्रीविश्वेश्वरोजय तेतराम् ।। उोंशिवाकोटि सूर्यप्रभाचंद्र चूड़ावराभीत्ति चक्रासिहस्तात्रिनेत्रा

अंत : इतिश्री शरदापीठ कश्मीरस्य सारंस्वता त्रिवंशकलावंतस मज्जीवनराम भट्ट सुत गंगा धरात्मजशम्भुनाथ भट्ट कृता शम्भुतत्वानुसंधानवृत्तिः ।। श्रावणवदि पंचभ्यांबुधे जनार्देनभट्टेन लिखिता ।।१।। शुभ मस्तु लेखक पाठकयोः ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -785** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पाणिनी

टीकाकार : भट्टोजिदीक्षित

शीर्षक : पाणिनी लिङ्गानुशासनसूत्रवृत्तिः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६१६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 58–225 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही का हाशिया

आकार : 37 X 15 स०म० लिखित 29 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : अपूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। आरम्भिक 56 पृष्ठ नहीं हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : त्वादन्त्यादचः परः स्थानषष्टी निर्द्देशाद्रोपधयोन्रिवृत्तिः । वभर्ज्जावभर्ज्जतुः । वभर्ज्जिथावभष्टी वभर्ज्जोरम भावे। वभ्रज्जावभुज्जतुः

अंत : करणाधिकारणयोर्ल्युट् ।। सर्व्वादीनिसर्व्वा नामानि ।। स्पष्टार्थेयन्त्रिसूत्री ।। इति श्री भट्टोजिदीक्षितविरचितायां पाणिनीयलिङ्गानुशासन सूत्रवृत्तिः समाप्ता।। ।। ।। कुंजगलिके फाटकके पद्दुम ओर रामचरन के दुकार पर मिलेगि ।। सम्वत् १६१६ मि. अगहनब ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -786** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अर्जुन गीता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–16 चित्र --

हाशिया :

आकार :

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ण रचना। काली और लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। कीड़े द्वारा पृष्ठ खंडित है।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्री गुरवेनमः ।। अर्जुन उवाच ।।दया धर्मविहीनस्य कलौकलौ पुरशानिवर्त्तते।।

अंत : इतिश्री कृस्मार्जुन संवादे अर्जुन गीता समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -786** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवराम स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 17–19 चित्र --

हाशिया :

आकार :

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण :

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः ।। उों शिवहरेशिव राम सखे प्रभो।। त्रिविध ताप निवार्ण हे विभो ।।

अंत : इतिश्री महामान्दंसरस्वति विरचितं शिवराम स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -787** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक :

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–143 चित्र --

हाशिया :

आकार :

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10–11

विवरण : पूर्ण रचना।

विशेष विवरण :

आरम्भ : उों श्रीगणेषायनमः परिपूर्ण परिज्ञान परितृप्तिमतेसते विस्मवेजिस्मवेतस्मैकृस्म नाममृतेतम् श्रद्धानंद

अंत : इतिश्रीमत्यपरमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमत्श्रद्धानंदपूज्यपाद शिष्य भगवतानंद गिरितायां गौडपादीयभाश्य टीकायां चतुर्थ प्रकरण ।।४।। संपूर्णम् समाप्तम् ।। संवत् ।१६४।। शुभमस्तु।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -788** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नंददास

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री पंचाध्याई

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १७६१

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 50–61 चित्र --

हाशिया : दोने ओर संतरी रंग की स्याही से दो–दो लकीरें।

आकार : 11 X 9 स०म० लिखित 9 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : अधूरी रचना। काली और संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है। आरम्भ के 49 पृष्ठ नहीं हैं।

विशेष विवरण : रचना कृष्ण–लीला से सम्बन्धित है।

आरम्भ : अमश्रतसुरजितअतिन ई।। रस बनि कै छक छबीली अद्‌भुत गान कर तभई ।।

अंत : इत श्री पंचाध्याई स्वामी नंददा कृत संपूर्ण समाप्तं मुलिषतं आयाम क्र संवत् १७६१ मिती मघर व दिनर शुक्रवासरे शुभम सुश्री । दाहरा।।......बालक गाधक डरांहिं ।। बलीतग्यनर सुष लहैं। ।। देष आपणीं छांहि ।।२।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -788** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : नंददास

टीकाकार : –

शीर्षक : मानमंजरी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–62 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर संतरी रंग की दो–दो लकीरों का हाशिया

आकार : 11 X 9 स०म० लिखित 9 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : लाल और संतरी स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। संग्रह की पहली रचना के बाद और दूसरी के पहले दो खाली पृष्ठ तथा एक काली स्याही से लिखा हुआ पृष्ठ जुड़ा है जिसमें राग रागिनीयों के विषय में लिखा है।

विशेष विवरण : रचना नायिका भेद से सम्बन्धित है। अंत में कवि ने विभिन्न प्रकार के पुष्पों, लौंग, इलायची तथा अन्य वस्तुओं के नाम गिनवाए हैं।

आरम्भ : स्वस्ति श्री गणेशायनमः ।। अथ मानमंजरी लिष्यते ।। तं नमामि पदपद्म गुरु कृ कवल दल नैन ।। जग कारण ककणर्कव गोकल जिनकौ गैंन ।।१।।

अंत : अथ माला के नाम ।। माल श्रकस जु गुनवती ।। यह जु नाम की दाम ।। जो नरु कंठ करहै सुनरु ।। ह्वै है कविन को धाम ।।२६१।। इति मानमंजरी समाप्तं संपूर्ण श्रत्रंभूयातु ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -788** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	नंदलाल
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	पदराग
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–66 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर संतरी स्याही से
आकार	:	11 X 9 स०म० लिखित 9 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9
विवरण	:	संग्रह की अन्तिम पूर्ण रचना। रचना के पहले एक खाली पृष्ठ के बाद एक लिखा हुआ पृष्ठ व एक लिखे पृष्ठ के बाद एक खाली पृष्ठ लगा है। अंत में भी पृष्ठ 66 रचना से अलग लिखा गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय कृष्ण स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	स्वस्त श्री गणशायनमः अथं पदराग त्रैरो ।। मेरै मनजीवन घननंदजी को ललना।। देषौं तब आनंद बिनु देषमाइकलन ।।इति टेके।।
अंत	:	कंस निकंदन जग बंदन नंद नंदन दीन दिआल ।।८।। हरजी हरमोंहन सोंहन भक्त जन न प्रतिपाल ।।१०।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -789** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : महित्तनाथ

शीर्षक : मेघ सन्देश व्याख्या

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 33–57 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही से दो–दो लाइनें खींची हैं।

आकार : 29 X 12 स०म० लिखित 25 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : चौबीस पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुंदर है। रचना 33 पृष्ठ से उपलब्ध है जो अंत तक चलती है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत समास से सम्बन्धित है।

आरम्भ : विद्युत्वन्तमिति । यत्तालकायां ललितारम्या वनिताः स्त्रियोयेषुते सहचित्तै वर्त्तन्तइति सचित्राः । आलेख्याश्चर्ययोचित्रत्रमित्यामरः । तेन सहेति तुल्ययोग इति बहुव्रीहिः ।

अंत : सर्वत्र व्याप्यते विद्वान् नायकेच्छानु रूपिणी मिति सारस्वतालङ्कारे दर्शनात् काव्यान्ते नायकेच्छानुरूपोऽयमाशीर्वादः प्रयुक्त इत्यनुसन्धेय इति ११८।। इति श्री महोपध्यायकोलाचलमहित्तनाथ सूरि विरचितायां मेघ सन्देश व्याख्यायां सन्जीवन्या मुत्तरमेघः समाप्तः ।। शुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -790** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : वरदराज

टीकाकार : —

शीर्षक : लघु सिद्धान्त कौमुदी

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३२

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 18–59 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : खुली हुई अपूर्ण कृति । रचना पृष्ठ 18 से उपलब्ध है। पहले 17 पृष्ठ नहीं हैं। पृष्ठों के किनारों पर भी कहीं–कहीं किसी के द्वारा कुछ लिखा गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : पुसर्वासु च विभक्ति षु । वचनेषु च सर्वेषुयन्न व्येतितदव्ययम् । वष्टि भागुरिरहत्तीपमवाप्योरूप सर्गयोः । आपन्चैवहलनाना यथा वाचानिशा दिशा अवगाहः।

अंत : शास्त्रान्तरे प्रविष्टानांशवालानान्चोपकारिका ।। कृतावरदराजेनलघुसिद्धान्त कौमुदी १।। इतिश्री वरदराज कृता लघुसिद्धान्त कौमुदी समाप्ता ।। मीः भादौ व०१५ सं० १६३२ चंद्रवार श्रुभम ।। श्री जानकी वहत्तभोविजयते ।।२।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -791** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	गुरुमुख सिंह
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	गणेश चतुर्थी व्रत कथा
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	संवत् १६४६
रचना–स्थान	:	अमृतसर बाजार माई सेवां
पृष्ठ	:	1–6 चित्र : आवरण पृष्ठ पर पार्वती, शिव तथा खंडित सिर वाले गणेश का चित्र है।
हाशिया	:	केवल पहले पृष्ठ पर काली स्याही से चारों ओर हाशिया।
आकार	:	14 X 10 स०म० लिखित 10 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	12
विवरण	:	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय मत्स्य पुराण में वर्णित गणेश चतुर्थी व्रत कथा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। सूत उवाच शिव शंभू नमस्कृत्य उमा देवी सरस्वती गणाधिपत्य नमस्कृत्यः सर्वदेव जगत गुरुं १
अंत	:	इति श्री मत्स्यपुराणे गणेशचतुर्थी कथा समाप्तम् ।। शुभम् ।।संवत् १६४६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -792** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : जयकृघ्म

टीकाकार : –

शीर्षक : सिद्धान्त कौमुदी वैदिक खण्ड

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :श्रावणवदी ५ संवत् १६२०

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –काशीपुरी

पृष्ठ : 1–21 चित्र --

हाशिया : दोनों तरफ काली स्याही के हाशिये तथा बेलबूटे पहले पृष्ठ पर।

आकार : 36 X 15 स०म० लिखित 30 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : 21 पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने के लिए काली के ऊपर संतरी रंग लगाया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : छंद सीत्यादि ।। ।। पुनर्वसुशब्दे नोद्भूतावयवस्य ज्योतिः समुदायस्याभिधानाद्वयोर्द्विचने प्राप्ते एकवचनं विधीयतेत दाह ।।..................................... .ऊँ ।। श्री गणेशायनमः ।। छन्द सिपुनर्ववस्वोरे कवचनम् १/२/६१/ द्वयोरेकवचनं वास्यात् पुनर्वसुर् नक्षत्रम् पुनर्वसूवा लोकेतुद्विवचनमेव ।।१ ।।✷.

अंत : इतिश्री मन्मौनिकुल तिलकायमान श्री गोवर्द्धन भट्टात्मज जयकृघ्मकृता सिद्धांत कौमुदी वैदिक खण्ड सुबोविधनी व्याख्या समाप्तिमगमत् ।।✷......संवत् १६२० मी. श्रावणवदीऽ अधिक श्रावणश्रुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -793** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : छांदोझाः

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 15 स०म० लिखित 27 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 12

विवरण : बीस पृष्ठों की अधूरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : चरू पसिद्धेः उष्णि हेति छंदोझाः देवविशेति देवानां प्रजा प्रंयोगेपि यदाज्येवृादयः प्रथम जाता दो तदाऽदंतत्वादेवाप् पदाज्येष्टस्य स्रीति पुंयोग विवक्षात्......

अंत : भुवेनमस्कृत्य स्वयं भुवमनुकूलयितुमित्यर्थः पुनः पंचमी माह कापूलोपे कर्मव्याधारेच पंचमी क्विंतस्य गम्य मानार्थ त्वाद प्रयोगे कर्म आधारेच पंचमी स्यात्.......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -794** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	समासश्चान्वये नामान्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–18 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 15 स०म० लिखित 27 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	अट्ठारह पृष्ठों की अधूरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः समासश्चान्वये नाम्नाम् नाम्नीच नामानिच नामानि तेषां नाम्नां यद्यप्यविभक्ति नामेति संकेतितं तथा प्यत्र नाम्नामिति विभक्त्यंता नामेव ग्रहणं समास प्रत्ययरोरलुकक्कदित्यादि ज्ञानकात्
अंत	:	सप्तम्या अलुक योनिज चरमतिषु श्रश्रयोनिः अप्तन्जम! अश्तुचरः अफामतिः हसांतददंचाच्चसप्तम्याअलक् संज्ञायाम् सरसि...........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -795** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	कारकाणि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–21 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 15 स०म० लिखित 29 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	इक्कीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। रचना के पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	आदि स्वरस्य वृद्धिः षोडइति उत्वम! अत्रजव्स्यायिनमाः इति द्रस्यणः उरषाण्मातुरः द्वयोर्मात्रोर पत्यं ह्वै मातुरः पत्यं सामातुरः भद्र मातुर पत्यं भाद्रमातुरः
अंत	:	इति निपात योगात् प्रथमा उक्तंच यस्मिन् अर्थे विधीयंते लकाराम्र द्विताःकृताः समासोवा भवेद्यत्र सउक्तः प्रथमाततः इति कारकाणि।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -796** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : कल्याणमल्ल

टीकाकार : –

शीर्षक : अनंगरंगे संभोग

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–17 चित्र --

हाशिया :

आकार : 26 X 16 स०म० लिखित 23 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 19

विवरण : सत्रह पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई पूरी तरह स्पष्ट नहीं है। रचना के अंत में भी प्रतियोगिता संबंधी पंक्तियां किसी अन्य के द्वारा लिखी गई हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय काम से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः श्रुति ललित विलासं विऊवतोचे निवासं समर कृत निवासं संवराख्यं प्रणाशं रति नयन विरामं संमतं चाभिरामं पूस भविजित वाम शर्मद नौमि कामं १

अंत : इति श्री मन्त्वाडनवललोदा वंशावतंश विनोदाय श्री मरुदाजषिमहाकवि कल्याण मल्ल विरचिते नंगनंगे संभोग निरुप्यांनाम दशमः सीलिः १० पन्तने पटपालाख्ये लिखितं पुस्तकंत्विदं स्वाणु दत्तेन मिश्रेण स्थाण्विश्वर वासिना १ शुभं भवतु सर्वेषां मंगलं चतथैवच १ श्री श्री श्री

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -797** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रतिभा उपनिषद्

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६७४

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 21 X 17 स०म० लिखित 16 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ भी काफी पुराना पड़ चुका है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः ।। अथ सामवेदस्य सहस्त्रो पनिषन्मध्ये प्रतिमोपनिषल्लिख्यते ।। अथातो वाशिष्ट स्वयंभुव मुपरिपृच्छति पृच्छामित्वां भगवन्तं देव प्रतिमा तामनुब्रूहि इति ।।

अंत : सर्वान् दिव्यँाँक्षकान प्राप्नोति ब्रह्मत्वं चगत्वा अमृत त्वंच गच्छति ।। इति सामवेदे सहस्रोपनिषिन्मध्ये प्रतमोपनिषत्समाप्तम् ।। शुभम् ।। सं १६७४ चैत्र शु २ रवि ।। हस्ताक्षरणि जयरामस्येति ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -797** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : कपिलमुनि

टीकाकार : विशुद्धानंद

शीर्षक : कपिल गीता व्याख्या

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६६६

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–57 चित्र --

हाशिया :

आकार : 21 X 17 स०म० लिखित 16 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 15

विवरण : सत्तावन पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई में काफी अंतर है । कहीं शब्दों का आकार छोटा है तो कहीं बड़ा। कहीं साफ व कहीं ठीक–ठीक है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पद्मपुराण के अन्तर्गत गीता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः ।। ॐ अथ अथ अथ जापमानं प्रसूतं ज्ञानैर्यो विभार्ति इति श्रुतिः ।। सिद्धानां कपिलो मुनि रिति गीता स्मृतिः योऽस्माकमादि विद्वान् कपिल इति ।।

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य तारकं ब्रह्मानन्द सरस्वती पण्डित स्वामी शिष्य श्री विशुद्धानंद सरस्वती विरचित कपिल गीता व्याख्या में तात्पर्य व्याख्या समाप्तः । सम्वत् ।। १६६६ पौष मासे शुक्ल पक्षे दशभ्यांम शुक्रवासरे ।। शुभम् श्लोक संख्या १२२५ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -798** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शतराज्य भोग
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–51 चित्र --
हाशिया	:	नहीं हैं।
आकार	:	27 X 19 स०म० लिखित 21 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15
विवरण	:	पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया गया है। बीच–बीच में कुण्डलियां बनाकर विषय को स्पष्ट किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शुक्र और भृगु के संवाद पर आधारित योगादि से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ज्ञानिनां चहितार्थापकविपृष्टं भृगुदितम् यस्य ज्ञान प्रभावेन ज्ञायते च शुभाशुभं १
अंत	:	इति श्री योगसीरे शुक्र भृगु संवादे कुमुदाधष्टोत्तर शतराज्यवोगो समापृम् संवत् १६३८ माघ शुक्ल प्रतिपदायां शनिवासरे शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -799** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : घनिष्ठा पंचकशांति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–15 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये

आकार : 25 X 11 स०म० लिखित 18 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। अंत में रचना प्राप्ति स्थान के विषय में भी बताया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ग्रह शांति के अंतर्गत पंचक शांति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। ।। अथ पन्चक शान्तिः ।। तत्रधनिष्ठोत्तरार्द्धमारभ्य रेवत्यं तनक्षत्रेपूत्कांत जीवितस्यावष्यक दाहकरणे पंचकुशशमयान् पुत्तलकान्विधाय प्रेतवाह प्रेतशशवप्रेतपप्रेत भूमिप प्रेतहर्तृनामश्यिथाक्रमंतानभि मंत्र्य प्रेतशिरः स्थाने प्रथमं ।।

अंत : असौस्वर्गायलोकाय स्वाहा ।।२२।। इतिसर्वहितायां पन्चत्रिंशोऽध्यायः ।।३५।। समप्तिमगमत् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -800** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	श्री रामदत्त
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	उपनयन कर्म पद्धति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—19 चित्रः प्रथम पृष्ठ पर गणेश जी का चित्र है।
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही का हाशिया।
आकार	:	25 X 11 स०म० लिखित 18 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	पूर्ण रचना। लिखाई सुन्दर है। रचना के अंत में सामग्री का विवेचन भी किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय षोडष संस्कार के अंतर्गत उपनयन संस्कार से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। अथोपनयनम् ।। ।। तत्र शुद्धसमयेरवि गुरुचंद्रतारा दिशु द्वौजन्मतो गर्भाष्टमेंऽब्देवानुकूल्ये ष्षोडष संवत्सराभ्यंतरे ब्रह्मवर्चसकामस्यपंचमेप्युदमयन.......
अंत	:	इतिश्री महामत्तक महासामंताधिपति श्री रामदत्त विरचिता वाजसनेयिनामुपनयनकर्म पद्धति समाप्ता।। अथ सामग्री ।। रोली १२ मोली ७ केसर १५.........इति सामग्री समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -801** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	देवकीनन्दन
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	पात्तिकपार्वण श्राद्ध प्रयोगः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	सुमेरुपुर निवासी
पृष्ठ	:	1–10 चित्र : प्रथम पृष्ठ पर गणेश जी का चित्र है।
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये हैं।
आकार	:	25 X 11 स०म० लिखित 18 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	दस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लिखाई सुन्दर है। प्रथम पृष्ठ पर फूलों वाला बार्डर काली स्याही से बना है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय श्राद्ध की विधि से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	।।श्री गणेशाय नमः ।। ।। अथापात्रिकपार्वण श्राद्ध प्रयोगः ।। अपरात्हेस्नातः शुक्लद्विवासाः शुचिराचम्यवस्त्रादि नावेष्टितं श्राद्धदेशमागच्छेत ततः प्राङ्मुख उपविष्य सिद्धान्नसंवत्वेसिद्ध मिति पाचिकां पृष्टवा,
अंत	:	अपसव्यं यमोसियम दूतोसिवायसोसि महाबला ।। अहोरात्रकृतं पापं बलिं श्क्षतु वायसः ।।६।। श्वानबलिः ।। श्वानमार्ज्जारकीटादिवलिश्क्षेश्योदीयताम् ।। ममक्षेयाम चारोग्यं रक्ष रक्ष कुलं मम १

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -802** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री सूर्य कवचं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : अंकित नहीं हैं। चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 18 स०म० लिखित 29 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 24

विवरण : अपूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूर्य स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : देवता अनुष्टुप छंदः घृर्णरितिवीजं भानु रिति शक्तिः ममसकलब्याधि निवाराणार्थे जपे विनियोगः श्री पार्वत्युवाच देवासुरै.........

अंत : परिवेष्टित ध्यानेन पठेतिन्पु सदाभार्मुग्रः श्री सूर्यकवचं मुदा पृर्ष्पितुशिवोदेलला......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -802** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	वाल्मीकि
शीर्षक	:	गंगाष्टक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	संख्या अंकित नही। चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 18 स०म० लिखित 29 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		24
विवरण	:	दो पृष्ठों की अधूरी अपूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। पृष्ठ जर्जर हो चुके हैं और खंडित भी हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय गंगा की उपासना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	....वली स्वर्गारोहरण वैजयति भवती भागीरथी प्रार्थणे १ त्वत्तीर वसत स्तदंबुपिवत स्तवहीचिणु प्रेंखत त्वन्नाम स्मरत स्वृदर्पित दृशःश्पान्मे शरीरे व्ययः २
अंत	:	प्रक्षाल्य गात्र कलि कल्मष पंकमाशु मोक्ष लभेत पतितनैव पुनर्भवाध्बबौ ⊙ इति श्री वाल्मीकिना विरचितं गंगाष्टकं संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -802** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सावरी मंत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : पृष्ठ संख्या अंकित नहीं चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 18 स०म० लिखित 29 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 24

विवरण : अपूर्ण रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय यंत्र–मंत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : सावरी मंत्र ।। उों काली नाग मुख मै वशे भैरोवशे कृपाल हनुमान माथेवशेराषो पिंड समाल राजा प्रजावशकर लीयो मारो दृष्ट पलाल नवनाथ चौरौ सिद्ध वामन वीर हनुमान...........

अंत : इदं तुमत्कुत्तगोप्यंनित्यं ग्रहेशु संपदा.............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -803** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	माधवानंद
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	प्रश्नावली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है :– हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :– १८३३ संवत्

रचनाकाल	:–	—
रचना–स्थान	:–	—
पृष्ठ	:	1–10 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	12 X 6 स०म० लिखित 10 X 4 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां–		12
विवरण	:	दस पृष्ठों की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त शब्दों को मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय गुरु–शिष्य के जीवन रहस्य सम्बन्धी प्रश्नावली से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों सच्चिदानंद मार्त्मनय द्वया खंडमच्युतं ध्यात्वा प्रश्नावली सम्यक् क्रियते मोक्ष सिद्धये १ तत्रकान्यनुवंधानि १ का
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकार्य श्री मुनि माधर्वनंदंस्य शिष्यो उत्तरभारत विरचिता पुस्माक्लीमाप्तम् शुभमस्तु लिखितं राधाकृष्मेन संवतं १८३३ वैशाष कृर्स्मषृभ्यां चन्द्ररादि सहितायां पठनार्थ लिखितम् ।। राम जी कृष्म जी

हस्तलिखित क्रमांक :– **PPS -804 (क)** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सरस्वती स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 15 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–10

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय देवी–देवताओं / सरस्वती की स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीस्वस्ति श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्वेतपद्मासनादेर्वी श्वेत पुष्पोपशोमिता।। श्वेतांवर धराचित्याश्वेत गंधानुलेपना १

अंत : यादेवी स्तूयते नित्यं ब्रह्मेंइसुरकिंनरैः ।। सैवममास्त जिह्वाग्रेपद्यहस्ता ❁ सरस्वती ।।४।। इति श्री सरस्वती स्तोत्र संपूर्णं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -804** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गणेश द्वादशनाम

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 11 X 6 स०म० लिखित 8 X 4 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां:

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गणेश स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः सुमुख मतेकदंताव कपिलो गज कर्णकः ।। लंवोरेंश्ववविदकटो विधुनांषो विनायकः ।।

अंत : संग्रामे संकटे चैव विघ्न स्तस्पन जायते ।। इति श्री गणेशा द्वादश नाम संपूर्णं श्री शिवाय नमः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -805** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री सुखाष्टक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	10½ X 6 स०म० लिखित 7½ X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	11
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त अक्षरों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सुखपूर्ण जीवन पद्धति एवं निर्वाण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्त श्री गणेशाय नमः ।। भेदाभेदौ सप्दिगल तौ पुण्यपापे विशीर्णे माया मोहौ क्षमधिगतौव नष्ट संदेह वृत्तै शब्दातीतं त्रिगुण रहंतं प्रापतत्वाबवोध....................
अंत	:	शांतिनिर्वाणदी पंते जोरू पंनिग्म सदनं व्यास पुत्राष्टकंग्यः शता काले पवति मन सायांति निर्वाण मार्गै । इति श्री सुखाष्टक सम्पूर्णं।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 806** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पंडित निधान

टीकाकार : –

शीर्षक : जीवन मुक्ति विवेकः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : १६११ संवत्

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–108 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 14 स०म० लिखित 26 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : एक सौ आठ पृष्ठों की पूर्ण रचना। लिखाई साफ–सुथरी स्पष्ट व पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय जीवन पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः उों सच्चिदानंदाय नमः उों यस्यनिश्चसितं वेदामायथायोखिलं जगत् निर्म्ममेतमहं वंदे विद्यातीर्थ महेश्वरम् १

अंत : शुक्लपक्ष भाद्रपद मासांशनिश्चर वसरां तिथौ तृतीयां इति श्री जीवन्मुक्ति विवेकः पाठः संपूर्ण समाप्तम् ।। शुभम्स्तु सर्वजगतां ।। लिखितं पांडित्नधान ।। संवत् १६११।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -807** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : छांदोग्योपनिषद् (पंचम प्रपाठकः)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–23 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 12 स०म० लिखित 26 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–11

विवरण : तेइस पृष्ठों की पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखाई स्पष्ट एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीगणेशायनमः सामवेदाय उेमित्येत दक्षरमुद्गीथमुपासीतोमिति ह्युग्दायति तस्योप व्याख्याभ मेषांभूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपोरसोयामोषधयोरसर्उषधीनां पुरुषों रसः ....

अंत : श्लोकोय थेहक्षूधिताबालामतारं पर्टपुआसत एवं सर्वाणि भूतान्यग्नि होत्रमुपासते इत्यग्निहोत्रमु पासतइति २४ छांदोग्योपनिषदि पंचमः प्रपाठकः ५

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -808** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : श्रीधर स्वामी

शीर्षक : गीता टीका सुबोधिनी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–187 चित्र : प्रथम पृष्ठ पर रंगदार चित्र

हाशिया : केवल प्रथम पृष्ठ पर कलायुक्त फूलों वाला हाशिया

आकार : 34 X 14 स०म० लिखित 24 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–10

विवरण : 187 पृष्ठों की खुली रचना। पहले पृष्ठ पर रंगदार लाल काली पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। प्रथम पृष्ठ पर बीच में चित्र हैं। लिखावट साफ–सुथरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय गीता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों शेषाशेष मुखाव्याख्या चातुर्थत्वेक वक्रतः ।। दधानमद्भुतं वंदेपरमानंद माधवं १

अंत : इति श्री भगवद्गीता टीकायां स्ववोधित्यां पंडित भट्ट श्रीधर स्वामि कृतौमोक्ष योगोनामाष्टादशोध्यायः १८

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -809** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : रामकृष्माख्य

शीर्षक : तात्पर्यबोधनी नामकंचित्त दीप व्याख्यानं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 1—76 चित्र --

हाशिया : दोनों तरफ काली स्याही से हाशिया

आकार : 36 X 15 स०म० लिखित 28 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13—15

विवरण : रचना अधूरी है। रचना का अंत नहीं है। लिखाई ठीक ही है। पृष्ठों के किनारों पर भी लिखा गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय धर्म व्याख्या से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गुरवे नमः नत्वा श्री भारती तीर्थ विधारण्यमुनीश्वरौ प्रत्यक्तत्व विवेकस्य क्रियते पददीपका १

अंत : कुल जायतेत्याशंक्याह कूटस्येक्ति आत्मा लोक प्रसिद्धो भोक्ताऽविवेकतः स्वस्य कूटस्था विवेक ज्ञाना भोवेनकूटस्थ निषंसत्पत्वमात्मन्यध्यस्य तत् द्वारा स्वनिष्ट भोतृस्थापि सत्यतांमत्वभोग कदाचितपिनांहानुनिद्दति २००

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -810** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्रीमद्‌मुकुंद गोविंद

टीकाकार : –

शीर्षक : ब्रह्म सूत्रवृत्ति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–57 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 22 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : सत्तावन पृष्ठों की पूर्ण रचना। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों को संतरी स्याही से रेखांकित किया है। रचना दो अध्यायों की है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः प्रतिदेशाधिकरणे प्रधानवदश वृत्वं परमाण्वादीनामयीत्पुक्तं संपतिप्रधानस्य वैदिक शवृवत्वा भावेपि स्मृति उ्यशवृवत्वमाशंक्य परिहरति स्मृत्यनव काश दोष प्रसंग इति चेत्रान्य स्मृत्यनवकाशदोख प्रसंगात् प्रथमाध्याये

अंत : इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमन्मुकुंदगोविंद श्री चरणशिक्षत श्री रामकिंकरवर्य कृतौ ब्रह्मसूत्रवृत्तौ ब्रह्ममामृतवर्षिण्या द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः द्वितीयाध्यायश्च्च समाप्तः २ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -811** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सर्वज्ञात्म मुनि

टीकाकार : सहजराम पंडित

शीर्षक : शरीर प्रकरण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–233 चित्र --

हाशिया :

आकार : 34 X 18 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13–15

विवरण : दो सौ तैंतीस पृष्ठों की रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। पृष्ठों के किनारों पर भी लिखा गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शरीर संरचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः यस्यादिविश्व मुदेतियेन विवियंसंजीव्य तेलीयते पत्रां तेगगने चनाइक्महामापिन्य संगेऽद्वये सत्यज्ञान सुखात्मकऽखिल मनोऽवस्तानु भूत्यात्मनि श्रीरामे रमतांम तोमम् सदाहे मांवुजेहंसवत १

अंत : इति श्रीकृस्मतीर्थ शिष्य रामतीर्थ कृतायां संक्षेप शरीर टीकायामत्वपार्थ प्रकाशिकायां समन्वयाभियः प्रमोध्यायः १ ।। शुभम् सर्वजगताम् ।। संवत् १८६४ ।। लिखितं सहजराम पंडित का.लि.अमरमय्ये ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -812** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्वलायान महर्षि

टीकाकार : –

शीर्षक : सरस्वती स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 15 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–10

विवरण : दो पृष्ठों की पूर्ण रचना। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सरस्वती उपासना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः तरुणम कलमिंदुं विमती शुभकांतीकुच मरणमि तांगिसन्नषस्मासशैद्व निजवर कमलाङ लेखनीपुस्तक श्रीः सकल विभाव सिद्धि धातु रामेनतानः १

अंत : इत्या स्वलायन कृतं निजगाददेव्यो स्तोत्र समस्त फल भाग निदानयतत्पठति द्विवजवरः शुचिताश्रुपेत्य संहपंसुवांछित फलाफलान्युपयातिशीघुं ३१ इतिमहर्षि श्वलायान कृतं सरस्वती स्तोत्रं समाप्तं शुभमस्तु। श्रीकृस्नं ।। श्री राम जी श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -813** भाषा : पंजाबी लिपि–देवनागरी

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : रामायण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 64—118 चित्र --

हाशिया :

आकार : 20 X 16 स०म० लिखित 19 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 22

विवरण : अपूर्ण रचना। देवनागरी लिपि में तथा पंजाबी भाषा में रामायण का अनुवाद किया गया है। लेखनार्थ काली एवं नीली स्याही का प्रयोग किया गया है। एक सौ अट्ठारह के बाद भी कथा चलती है जो अनुपलब्ध है। अंतिम पृष्ठों पर पंजाबी में पतनीटाप की सैर का वर्णन किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय रामायण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : राम जी माता ते भ्रा नूं मुड़ मुड़ समझांदे ने उन्हां नूं देख देख राम कुझ पलां चू दी मूरत बने खलोते रहे। उन्हां दे नैनां विच्चों प्रेम दी झड़ी लग्गी होई सी।

अंत : हाय मेरे पिता ने तैनूं पछानिआ नहीं। सर्पनी नूं अपसरा समझ बैठा। अंगारे नूं फुल्ल जान के वरन लिआ। डैणे, लिआ ई धर्मीआं दे चानन मुनारे मेरे पिता नूं। कुशल्या मां तैनू छोटी भैण न जानसी। राम कुशल्या थों बद्ध तैनूं थापदा सी।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -814** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सायण आचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : भृगुब्रह्मी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 66–100 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये कुछ पृष्ठों पर हैं।

आकार : 33 X 18 स०म० लिखित 27 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 19

विवरण : पृष्ठ 66 से 100 तक अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही पर संतरी स्याही का प्रयोग किया है। रचना के पहले 65 पृष्ठ नहीं हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।

आरम्भ : णशकिः । प्राणोजलपानेय्यायमानो लोकेदृश्यते। तथाधृततैलादितै जसद्रव्यसे वयाकंठ शुद्धिकृत्वा वाचंयोषयंतो गायका उपलभ्यंते।

अंत : ओंकारश्वाथशब्दश्वद्वावेतौ ब्रह्मणः पुणा कंठंभित्वातुनिर्यातौ तस्मान्मां गलिकावुभौ ।। ३ ओं।।३।। अथ औं ।। ३।। अथ ओं ।।३।। अथ ओं तत्सत! ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -815** भाषा : हिन्दी–संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अश्वमेध पर्व (महाभारत)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 8–757 चित्र --

हाशिया : कुछ पृष्ठों पर हाशिये लाल स्याही से हैं।

आकार : 27 X 17 स०म० लिखित 22 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : खंडित प्रति। लेखनार्थ काली, लाल स्याही का प्रयोग। रचना जर्जर है। बहुत से पृष्ठ गायब हैं। पृष्ठ संख्या आठ से आरंभ होती है। तीन सै वाली सीरीज पूरी नहीं है। कुछ पृष्ठों में हाशिये भी हैं। पूर्ण विराम तथा दोहा आदि लाल स्याही से अंकित हैं। कुछ पृष्ठों के बाद केवल काली स्याही प्रयुक्त की है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है। अश्वमेध पर्व को सरल भाषा में लिखा गया है।

आरम्भ : हाथ।। वृतअश्वपति हीये दृढधारहु ।। जीत मदन हय कृत अनुसारहु सावधान है विधि सुन लीजै।। यह कारज को गहसन कीजै।। अश्व भोग वरषइ कुसे बहु ।।

अंत : कीयोगरिष्ट आपते श्रीपति ताको तुम उर धारत नित प्रति ६६ दो० ऐसे दास करत सकल पुनि आरामषशाल जहां गदाह विकुंड थ.................

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -816** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : भट्टाचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : व्याकरण खंडन ग्रंथ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 10 स०म० लिखित 27 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–8

विवरण : तीन पृष्ठों की खुली रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों रामचंद यह द्वंद्वनत्वा व्याकृति खंडनं कुमलान्वय चंद्रेण महाचारेणि तन्यते ।१।

अंत : इति श्री महोपाध्याय कुटलान्वय चन्द्र श्री वास्यति भट्टाचार्य विरचितो व्याकरण खंडन ग्रंथ समाप्तः लिख्यंत फुम्मणरामेण ए शुभम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -817** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : ज्ञानकांड

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–10 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 18 स०म० लिखित 28 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–10

विवरण : संग्रह की पहली रचना। दस पृष्ठों की इस रचना में लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सोलह संस्कारों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशायनमः वागीशाघाः सुमनसः सर्वार्थानामु पक्रमे पंनत्वाकृत कृत्याः स्यु स्त्रंनमामिगजाननं १ यस्यनिश्वसिंत वेदापोवेदेभ्यो खिसंजगत् निर्ममेतमहं वंदे विधा तीर्थ महेश्वरं १

अंत : अग्न्याधेयेमानिहोत्रंदर्श पूर्णमासौ चातुर्यास्यान्याग्रयणेष्टिर्निरूढष्पुवधेः सौत्रामेणी इति।। अम्निदेगमोऽन्याग्निष्टामेउरूथ षोडशी वा जयेयो रात्रोत्योर्याम इति ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -818** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सायण आचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : वदार्थ प्रकाश

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–42 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 18 स०म० लिखित 28 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 1–18

विवरण : बयालीस पृष्ठों की खुली हुई रचना। रचना का आरंभ जिस पृष्ठ से किया गया है उस पर नः एक अंकित है उसी पृष्ठ की पिछली साइड पृ0 42 अंकित है और रचना का अंत उस पर अंकित है। शायद ऐसा गलती से हुआ है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से संबंधित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः यस्यनिश्वसितं वेदायो वेदेभ्योखिसं जगत् ।। निर्ममेत महं वंदे विद्या तीर्थ महेश्वरं ।।१।। साधनं ब्रह्म विधायाः साहित्या भीरितंस्फुटं ।।

अंत : इति श्री सायणाचार्य विरचिते माधव वेदार्थ प्रकाशे पजुरारापके स्गंहित्यामुपनिषदि द्वादशोनुवाकः १२ समाप्तः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -819** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	हरिसिंह साधु
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री गुरु सिद्धांत पारिजात
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–78 चित्रः पहले पृष्ठ पर गुरु नानक देव, भाई मरदाना तथा भाई बाला जी का चित्र है।
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही का हाशिया है।
आकार	:	36 X 15 स०म० लिखित 30 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		पूर्ण रचना। रचना साफ एवं स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय दस गुरुओं से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। गणेशं रमेशञ्चन त्वाति भक्त्या प्रसिद्धञ्जगत्याङ्गुरम्ब्रह्म रूपम् ।। शिवं साम्ब रूपङ्गिुरोः पारिजातं निबन्धङ्करोमि ।।१।।
अंत	:	इति श्रीमन्निर्मलाश्रमाश्रित हरसिंह साधुनिर्मिते श्री गुरु सिद्धांत पारिजात ग्रंथे उत्तरार्धे दशम गुरु शाखानाम पंचदशो विश्रामः ।।१५।। ग्रंथकारस्य शिष्योवैरामधा।। रीति नामकः।। गुरुसिद्धांत नामायंतदुद्योगे नमुद्रितः १ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 820** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–55 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हाशिये
आकार	:	32 X 16 स०म० लिखित 27 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		15
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही प्रयोग की है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण एवं अध्यात्म से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। प्रतोष्ट्टय जगन्नाथ सदानंदेन सन्मुदा सिद्धांत चन्द्रिका वृत्ति क्रियते कृत् प्रकाशिका १ कृत्कर्त्तारिउत्सर्गतः कर्तरीति बोध्यमतृ..................
अंत	:	इति श्री रामाश्रम विरचितायां सिद्धान्त चंद्रिकायामुत्तरार्द्ध समाप्तं ।। द्विः साधनं लोकादन्यव्याकरणातफ ज्ञातव्या यथा मात च पिता................चंद्रिका वृत्तिकृदंते कृतवा नृजुम ।।१।। ।। इति श्री सिद्धांत चंद्रिका या व्याख्यासुबोधिकी समाख्याना सदनीच समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -821** भाषा : हिन्दी–संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री सिद्धांत चन्द्रिका सुबोधिनी ख्यात प्रकरणं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–78 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर हाशिये काली स्याही से पहले एवं अंतिम पृष्ठ काली स्याही से हाशिये फूलदार बनाए गये हैं।
आकार	:	32 X 16 स०म० लिखित 27 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		15
विवरण	:	जर्जर हुई, पर पूर्ण रचना। बीच में कई पृष्ठ किनारों से फट गये हैं। पृष्ठ बहुत पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	सिद्धांत चंद्रिकाख्यात वृत्तिश्वक्रियते राम् १ धातोः अधिकारोयंप्राङ् नमोयइत्यत्तः............ तऊरी करोतिश्शुल्की भवति सहा..........यास्यादित्यादौऊर्यादिच्च्यंत................
अंत	:	इतिश्री सिद्धान्तचन्द्रिका व्याख्यां सदानन्द्या व्याख्या यामारव्यातकांडं समाप्तम् शुभम् ।।६६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -822** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : रामचन्द्र स्तवराज स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–13 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 13 स०म० लिखित 11 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग। पृष्ठ 13 के बाद भी रचना चलती है जो अनुपलब्ध है।

विशेष विवरण : रचना का विषय राम महिमा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्रीमते रामानुजाय नमः ।। ॅउ अस्य श्री राम चइस्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमार कुषिरनुष्टुप् छंदः ।। श्री रामोदेवता सीतावीजं हनुमान नूम्मिश्रीराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।।

अंत : भव जल निधि मग्नं रक्षमा मार्तबंधो १८ ।। रामरत्न महं बंदे चित्रकूट पतिंहरिकौत्राल्या श्रुक्ति संभूतं जानकी कंवभूषणं.................

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -823** भाषा : हिन्दी– संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : वृत्ति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—23 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये

आकार : 32 X 16 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 14

विवरण : खंडित प्रति। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय शब्द ज्ञान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः ।। श्री रामो जयति ।। अथ तृतीय प्रकाशः आरंभः ।। शाब्दी प्रभाकै करण कूं शब्द प्रमाण कहैं हैं शाब्दी प्रभा दो प्रकार की है। अेक व्यावहारिक है दूसरी पारमार्थिक है।

अंत : संस्कार सहित अत्यवर्ण का अनुभव ही पद का अनुभव कहिये है तासैं पदार्थ की स्मृति होवै है तासैं शब्दबोध होवै है यह न्याय का मत है औमीमांसा कै मत मैं वर्ण नित्य हैं यातैं वर्ण का समूदाय रूप वेद...........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -824** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	देवीदास
शीर्षक	:	वृहद नारदीय पुराण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	१८७२ संवत्
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	3–190 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		10–11
विवरण	:	एक सौ नब्बे पृष्ठों का ग्रंथ। रचना खंडित है क्योंकि पहले दो पृष्ठ साथ नहीं हैं। तीसरे पृष्ठ से उपलब्ध है। पृष्ठ बहुत पुराने पड़ चुके हैं। लिखाई ठीक ही है। पढ़ना कठिन लगता है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	यस्मिंश्रयलयमेष्यति ३१ केनविरूमुः प्रसन्नः स्यात् सकथं पूज तेनरैः कथंवर्णाश्रमाचारः चातिर्थ पूजनं कथं ३२
अंत	:	षध्यि योजन पर्पतं राहु केतू व्यवस्थितौ वैशाखं मासे कृहम पक्षे दशभ्यां गुरुवासरे लिप्तं देवीदास भागी ब्रह्ममण वर्पा मधुमणदा पांधा तस्य लिप्तं पुराणं शुभदायकं संवत् १८७२ मंगलं लेखक नांच पाठका नांच मंगलं मंगल सर्वश्रे तणो सर्वमंगलदायकंउों नमो भगवते वासुदेवाय उों नारायणय नमः उों गोविंदाय नमः उों श्री कृष्णाय नमः शुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -825** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : ज्ञानात्म भगवतः

टीकाकार : –

शीर्षक : श्वेताश्वेत उपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–49 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 21 स०म० लिखित 27 X 14 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है। अनावश्यक को मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त शब्द किनारों पर लिखे गये हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों अवच्छेदत्र यातीतेनिम्मलज्ञान मूर्त्तये मनोगिरांविदूराय दक्षिणामूर्त्तयेनमः१ निगमान्त प्रदीपाय निस्संग सुखसंविदे संसारतायनोदाय विद्याश्रीयतये नमः २

अंत : देवता गुरु विषयानिरूपायिका भक्ति कर्त्तव्येत्यभिप्रायः द्विर्वचनमध्याय परिसमामि द्योतनार्थ मादरार्थेच २३ इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचाश्रीमन्तानोत्तम पूज्यपाद शिष्यस्य श्रीमद्विज्ञानात्म भगवतः कृतौश्वेताश्वतरोप निवरणे षष्टोध्यायः रामयनमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS- 826** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : दीक्षित रामदास

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रबोध चन्द्रोदय नाटक व्याख्या

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–111 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 18 स०म० लिखित स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12–13

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना के काफी पृष्ठ जुड़े हुए हैं। लिखाई साफ–सुथरी एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय नाटक रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः उों रामं विनायकं वंदे सदानंद गुणाकरं संसार ताप संहार कारणं विघ्न वारणं १ अथ कमप्यंते वासिनं बहुशोध्यापित वेदांत सिद्धांतमपि तत्राव वोयरा............

अंत : इतिश्रीमद् भद्र विनायकात्म दीक्षित रामदास विरचिते प्रकाशाख्य प्रबोध चंद्रोदय नाटक व्याख्याने जीवन्मुक्ति निरूपणं नाम षष्टोंकः ६ संवत्सरै वैक्रमेऽस्मित शरनागगजक्उमिते वैशाख ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -827** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	राय मुकुट राम
शीर्षक	:	अमरकोश प्रथम काण्ड
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचना मुद्रण काल	:	१६४१ संवत्
रचना–स्थान	:	दिल्ली
पृष्ठ	:	1–32 चित्र --
हाशिया	:	चारों ओर काली स्याही के हाशिये
आकार	:	25 X 16 स०म० लिखित 21 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	17
विवरण	:	पूर्ण मुद्रित रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेद से सम्बन्धित हैं
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः यस्य ज्ञान दया सिंधोरगा धस्यानधागुणाः ।। सेव्यतामं क्षयोधीराः सश्च्यि चामृतायच ।।१।। समाहृत्यान्य तंत्राणि संदिप्तिः प्रति संस्कृतैः ।। संपूर्ण मुच्यते वर्गै नाम लिंगानुशासनम् ।। २।।
अंत	:	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने।। स्वर्गादिकाण्डः प्रथमः संगण्व समर्थितः ।। शुभस्तु । श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। इति श्री अमरकोश प्रथम काण्डः समाप्तम् संवत् १६४१ शु0

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -828** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	स्वरूपाचार्य
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सरस्वती प्रक्रिया
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–41 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 15 स०म० लिखित 22 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही लगाई गई है। पृष्ठों के ऊपर नीचे भी लिखा गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सरस्वती स्तुति एवं व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः अथाख्यात प्रक्रिया निनूघते यातोः वक्ष्यमाणाः प्रत्ययाः धातोर्ज्ञेयाः स्वादिः भूमतायामित्यादिशवृीधातु संज्ञो भवति सचत्रि विद्यः आत्मनेपदी........ ......
अंत	:	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचयार्य श्रीमदनभूतिस्वरूपाचार्य विरचिता सारस्वती प्रक्तिया समाप्ता शुभंमस्तु सं ।। ।। ।। ।। ।। राम रामः १ १ १ १ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -829** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : मिश्रदेवी दास

शीर्षक : नाशकेतो पाख्यान (महाभारत)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १७६0 कार्तिक मास ११ शुक्रवार

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–40 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 16 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्ति ग [1]2 ।। नमः अ. ना के उ च श्री रु न रा गंगातीरे सुखासीनः कृत्वा स्नानं मलंकृतः प्रददातिततोदानं द्विजेभ्यजनमेजयः १ प्रायश्चितबि शुद्वार्थेक्षी क्षाद्वाद.....

अंत : इति श्री महाभारते नाश के तोपा व्यापने जन्मानिर्णनो नामष्य दाशोध्याय १८ शुभ संवत्सरे संवत् १७२0 मसोत्मत्मसे हमध्मपक्षे किर्तिक मासे तिथौ ११ वार श्रुक्रवार लिषतं र्भगामिश्र देवीदास के सिष्य संगुरु रांमध्ये श्री राम राम राम राम राम राम राम

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -830**	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	शंकराचार्य	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	वेदांत हस्तामलः सटीक	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	—	
रचना—स्थान	:	—	
पृष्ठ	:	1—20 चित्र --	
हाशिया	:	दोनों ओर काली लाल स्याही से हाशिये	
आकार	:	28 X 13 स०म० लिखित 21 X 9 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13	
विवरण	:	पूर्ण रचना। काली लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखावट सुंदर है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	श्री राम जी सति ।। श्री गणेशाय नमः ।। शतमख पूजित पादंशतयथ मन सोय्य गोचराकारं ।। विकसित जलरुद्धने प्रभुमाछाकमा श्रये शंभुइ हभगवान शंकराचार्य उत्तमाधिकारणां वेदांत प्रस्थानं त्रयं विर्मायतदवलोकने..........................	
अंत	:	तथा वद्धीनांचचलत्वात्तेवापि चंचलत्व मौपाधिकंन पारिमार्थिक मिहवुद्धियुं विस्मोः व्यापन शीलस्य इत्यर्थः ।।१४।। इतिश्रीमत्शंकराचार्य विरचितो वेदांत हस्तामलः सटीक समाप्तः ।।शुभस्तु।।६।। छ ।। छ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -831** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री भट्ट अम्बिकादत्त ब्यास

टीकाकार : –

शीर्षक : सामवतम् (नाटकम्)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना प्रकाशन का समय : १८८८

रचनाकाल : –

रचना लिखने का स्थान : काशी

रचना मुद्रण का स्थान : पाटलिपुत्र (बांकीपूर)

पृष्ठ : 1–139 चित्र --

हाशिया : चारों ओर काले रंग से फूलदार

आकार : 24 X 15 स०म० लिखित 20 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 26

विवरण : पूर्ण मुद्रित रचना। संस्कृत नाटक से जुड़ी रचना। संस्कृत के अन्य नाटकों की सूची भी दी गई है। अंत में शब्दार्थ सूची तथा शुद्धिपत्रम् भी दिया गया है।

विशेष विवरण : वेदों से विषय को नाटक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आरम्भ : अथ सामवंत नाम नाटकं प्रारंभ्यते नान्दी सलज्जै र्निर्वस्त्रं भयशिथिलि तैर्नागविभवं भवं दृष्टा चंद्राङ्कि कलजटं किन्च चकितैः ।। कटाक्षै रूभीलभधुपजलजात द्युति हरै।। भवान्याः सन्तुष्टो वितरतु सुखं काममथनः ।।१।।

अंत : विप्राः – प्रभवतु वाच्छितपूर्ति, मूर्तिस्फूर्तिर्हरेश्व हृदयेऽस्तु लक्ष्मीश्वस्य कृपयालक्ष्मीर्भूयाद भवङ्भवने ।।२०।।

सार. – (सप्रणाममाशिषो गृहाति)

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -832** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	पराशर ऋषि
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	पराशरीय धर्मशास्त्र (स्मृति)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१८६४ संवत् श्रावण मास एकादशी
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–27 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 16 स०म० लिखित 22 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही लगाई गई है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पराशर ऋषि की स्मृति से सम्बन्धित। कर्मकांड से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। ऋषयो हिमशैलाग्रे देवदारु वनाश्रमे ।। व्यास में काग्रमासी नमृषिंए कृतिधार्मिकं ।। १।। मानुष्याणां हितार्थाय धंर्मवद कलौयुगे ।।
अंत	:	इति श्री पाराशरीये धर्मशास्त्रे समुद्र स्नानादि महापातक नाम द्वादशोध्यायः ।।१२।।0।।संवत्।। १८६४।। श्रावण शुदि एकादश्यांति भृगुवासरे ।। शुभंभूयात ।। मंगल लेखक स्यामि पठनस्यामि मंगलं ।। मंगल सर्वलोकानां भूमि भूपति मंगल ।। 0 ।। 0 ।। 0 ।। राम राम राम ।। 0 ।। 0 ।। 0 ।। 0 ।। राम राम राम राम

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -833** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : काशीनाथभिधान

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–8 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 12 स०म० लिखित 24X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13

विवरण : आठ पृष्ठों की अपूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु संतरी रंग का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणपतये नमः तमोगुण विनाशिनी सकल काल मुद्योतिनी धराताल विहारिणी जड समाज विधोषणी कलानिधि सहायिनी लस दलोल सौदामिनी महंतर विलविनी भवतु कायिका दंविनी १

अंत : तस्या द्वितीयंद्र ऐश्वर्य कर्तृत्वादि कमाराय कृचिन्मिथ्या त्व कथ नमपि नश्वर लारिकामादाय तब्यहि एको नरेन्द्रः क्षितिपाल कोयमेको वर्नर क्षति गाश्व गोपः........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -834** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री राममंत्र पद्धति पटल विधि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–7 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	25 X 12 स०म० लिखित 21 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ–सुंदर एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय राम स्तुति से संबंधित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों श्री मंत रामानुजाय नमः ।। उों पृथ्वीत्वयाधृता लोका देवित्र्व विहनुनाच धारय मो देवि पवित्रं चासनं कुरु ।।१।। इत्यासन
अंत	:	अमुक क्षेत्रे अथमुक तीर्थे श्री सीताराम प्रीत्यर्थे स्नान महं करिष्ये इति संकल्पः इति श्री राममंत्र पद्धति पटल विधिः संपुंर्णसमाप्ता रामः रामः रामः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -835** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री मार्कण्डेय पुराण सावर्णिके मन्वंतर

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–56 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये

आकार : 18 X 12 स०म० लिखित 12 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : खंडित रचना। काली–लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थलों और पूर्ण विराम हेतु लाल स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठ 56 के बाद भी कथा चलती है जो अनुपलब्ध है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पुराण पर आधारित चंडी स्तोत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ।।ई०।। श्री गणेशाय नमः ।। उँ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।। दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाही स्वधानमोरुक्ते ।।१।। सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधके शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमो स्तुते ।।२।।

अंत : सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्वश्शक्ति समन्विते भयेभ्यास्त्राहिनो देवी दुर्ग्गेदेविनमोस्क्ते ।।२४।। एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन त्रयभूषितं पातुनः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोस्तुते ।।२५।। ज्वाला.................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -836** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सिद्धान्त चन्द्रिका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–3 चित्र --
हाशिया	:	पहले पृष्ठ के बाहर काली स्याही से चित्र बनाया गया है।
आकार	:	33 X 16 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	तीन पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग । लिखावट साफ–सुथरी एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों नमस्कृत्य महेशा नंमतं वुध्वापतंजलेः वाणिप्रणीत सूत्राणां कुर्वे सिद्धांत चंद्रिकां १
अंत	:	पदांते स्थिता नामया दीनाय कार वकारयो र्लोपशूवा भवतित आगतांतयागताः पटइह पटविह हेसरयिति हेसखेइ.............

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -837** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	माघ काव्य व्याख्या
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—2 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 12 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13
विवरण	:	दो पृष्ठों की रचना। पहले पृष्ठ का आरंभ का पृष्ठ खंडित है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय संस्कृत ग्रंथ की टीका से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्या नमः ।। इंदीवर दल श्याममिदिरा नंदकदलं वंदारुजन मंदारं व देहं पुहु नंदन नर धरणी तल................
अंत	:	पतव्य धोधाम विसारि सर्वतः किमेतदित्याकुलना धुसरण धर्मेश्शाधिक्य वर्णना व्यतिरेकः तऽक्रं काव्य प्रकाशं उपमाना द्यदन्यस्य व्यतिरेकः सरावरा इति राम राम ।। राम राम ।। राम राम ।। राम राम राम राम राम राम राम

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -838** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : लघु सिद्धांत कौमुदी हलन्त शब्दः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–10, 18 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 14 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : अपूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठ 1 से 10 तक लगातार हैं फिर पृष्ठ 18 और अंतिम पृष्ठ पर पृष्ठ संख्या अंकित नहीं है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : लकौ इत्यादौइत्य सिद्धत्वा दातुमेंत्वमै सत्वंनच यंवानौयज्वानः नसंयोगाद्व मातात् ६/१/१२ वमांत संयोगदनोकारस्य लोपोन यंवभ्यां ब्रह्मणः ब्रह्मणा.........

अंत : बहुश्रेयसीनाम् डेराम्नद्याम्नीभ्यः १/३।।१२६। नद्यंता छाबंतान्नीशब्दाच्चपरस्पडे रामस्यात् । अचिश्नधातु भुवांयोरियङवडौ ६।१।।७७

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -839**	भाषा :	संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	सदानंद
टीकाकार	:	टहलदास धुनी
शीर्षक	:	वेदांत सार टीका
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १८६६ (1869)
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–44 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हाशिये बनाये गए हैं।
आकार	:	27 X 13 स०म० लिखित 22 x 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		14–16
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है। पृष्ठों के किनारों पर भी छूटे हुए शब्द लिखे हैं। अंतिम पृष्ठ पर भी मंत्र लिखे गये हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है। रचना में शिव स्तुति की गई है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों सकल ब्रह्म विद्या संप्रदाय व्रवर्तकाचार्य भयो नामः सत्यं ज्ञान मनंतं परिपूर्ण नंद विग्रहं रामं प्रत्पंचममृतं................
अंत	:	श्री साबपाद पंकजार्दपणमस्तु शिवशिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव महादेवाय नमः संवत् १८६६ श्री वेदांत सार सटिपणं टहलदासि निरमल पथा धुनीति निविदेनमन लिखितं श्री चेतराम शिष्येण लेपनीकृतं शुभमस्तु ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -840** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : पाणिनी

टीकाकार : –

शीर्षक : मध्य सिद्धांत कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–10, 12–32 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 13 स०म० लिखित 23 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9–10

विवरण : खंडित रचना जो पृष्ठ बत्तीस तक चलती है बीच में से पृष्ठ ग्यारह भी गायब है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली पर संतरी रंग लगाया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। नत्वावरदराज श्री गरुन्भट्टोत्रि दीक्षर्तत ।।१।। करोति पाणिनीया मांमध्य सिद्धान्त कौमुदी ।।१।।

अंत : अथ विहित विशेषणान्नेह अत्पुच्चै सौ अव्ययसंज्ञायां यदाषित दंत विधिरस्ति तथा पिनगौणे र्अप्ग्रहणं व्यर्थ अष्ययस्या लिगत्वा....................

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -841**	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:		
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	श्री भगवद्गीता सूपनिषय	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	—	
रचना–स्थान	:	—	
पृष्ठ	:	2—146	चित्र --
हाशिया	:		
आकार	:	14 X 10 स०म० लिखित 9 X 7 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		7	
विवरण	:	खंडित रचना। पहला पृष्ठ नहीं है । द्वितीय पृष्ठ पठनीय नहीं है तथा फटा हुआ है। अंतिम पृष्ठ भी आधा फटा है। लेखनार्थ काली–लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय भगवद्गीता से सम्बन्धित है। संवादात्मक शैली में कृष्ण–अर्जुन का संवाद है।	
आरम्भ	:	सर्वगतः स्थाणर लोयंमना.....इत्यनाभि काभ्यां नमः ।। पश्य मे.........र्थानूपाणि शतशोध सहस्र ष्शद्ति कलिष्टिकाभ्यां नमः ।।	
अंत	:	यत्र योगेश्वरः कृस्मोय त्रयर्योधनर्धरः तत्त श्री र्विजयोभूति फ्ररा....तिर्य तिर्ममाः ७८ इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्ब्रह्मदि.मयायोग शास्त्रे श्री.................	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -842** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	वेदोक्त शिवार्च्चन पद्धति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—23 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	23 X 13 स०म० लिखित 16 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		5
विवरण	:	तेईस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ सुदर एवं पठनीय है। लाल स्याही का प्रयोग पूर्णविरामों एवं महत्वपूर्ण स्थलों पर किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित कर्मकाण्डों पर आधारित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ वेदोक्त शिवार्च्चन पद्धतिः तत्र प्रथममात्मविन्यासः ।। याते रुद्र शिवा तनू रघोरा पाप काशिनी।। तयानस्त न्वाशन्तमया गिरिरान्ताभिचा कशी हि ।।१।। शिखायां।।
अंत	:	यत्र यत्र स्थितोदेवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।। यो गुरुः सर्वदेवानांय कारंतं नमाम्पहं ।।६।। इदंषडक्षर स्तोत्रं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -843** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	रत्न हरि
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्री रामरहस्य पूर्वार्ध
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—114 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 23 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		11
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली पर संतरी रंग लगाया है। रचना के सारे किनारे कीड़े द्वारा जर्जर कर दिए गए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय राम स्तुति से एवं राम कथा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्रीमते रामाय नमः श्री गुरुचरण कमलेम्यो नमः दोहा श्री गरुवेदी वंसवर वंदौ हिय परिध्यान जासु कृपा लवलेस तेलहों सकल श्रुति ग्यान १ अंगदादिनवनूप प्रभु पूरन परमानंद प्रणवौं पद पंकज परम पापनि कंद २
अंत	:	इति श्री राम रहस्ये रत्न हरि विरचिते सूत सौनक संवादे अष्टचत्वारिंषोध्यायः ४८ इति श्री रामरहस्य पूर्वार्ध समाप्तिः ।। शुभमस्तु सर्वजगतां ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -844** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—2 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	20 X 24 स०म० लिखित 10 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना पर अपूर्ण। काली स्याही का प्रयोग हुआ है। किनारे पर लाल स्याही के हाशिये बनाए गए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय लक्ष्मी स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः अस्य श्री सिद्ध लक्ष्मी स्तोत्र मंत्रस्य हिरण्य गर्भ ऋषिः श्री सिद्ध लक्ष्मी देवता अनुष्टुप् छंदः ओंबीजं हीं शक्तिः श्रींकीलकं मम समस्त क्लेश पीड़ा दारिद्रनि................
अंत	:	सिद्ध लक्ष्मीर्मोक्ष लक्ष्मी राद्य लक्ष्मीर्नमोस्त्तते सर्वमंगलमोगल्ये शिवे सर्वार्थ साधके प्रथमे चांबि के गौरी द्वितीयं वैष्ण...............

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -845** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	कृष्णाष्टकम्
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	26 X 15 स०म० लिखित 21 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	एक पृष्ठ 18 श्लोकों की रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काले के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय कृष्ण स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः भजेब्रजै कमंडलं समस्त पाप खंडनं स्वभक्त चितरंजनं सदैव नंदनंदनं १ सुपिछ गुछमस्तकं सुना दवेण हस्तकं अनंग रंग सागरं नमामि कृस्मना गरे २
अंत	:	प्रशस्त काष्टक कद्वयं पठेत प्रात रुस्थितं सएव नंदनं सुभक्त भाव संस्थिते १७ इतिश्री शंकराचार्य विरचितं कृत कृष्णाष्टक द्वयं संपूर्णं ।।७

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -846** भाषा : संस्कृत–हिन्दी
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	गायत्री स्वरूपाख्यानम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	माघ १५ संवत् १६५६
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	37 X 15 स०म० लिखित 32 X 14 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		34
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। मुद्रण अच्छा है। पृष्ठ पुराना पड़ चुका है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	अकारं चाप्पु कांरच मकारंच प्रजापतिः वेदत्रयान्निरद्रुहदूर्भुवः स्वरितीत्तिचत्रिभ्य एवतु देवेभ्यः पादम्पादंम दूद्रुहत् तदित्पृचास्याः सावित्र्याः परमेष्टी प्रजापतिः.......
अंत	:	तःनायंत्रितस्त्रिंवेदींच सर्वाशी सर्वशी सर्वविक्रयी ।। मनु योगि याज्ञ.एतद्यर्च्चा विसंयुक्ता कालेन क्रियया स्तया विप्र क्षत्रिय विटर्यानिर्गर्हणां याति साधुषु ।।

दुनीचंद शर्म्मा माघ प्र. १५ सं0 १६५६

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -847**	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:	श्रीमद् गोविन्ददास	
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	विचारमाला तथा बालबोधिनी	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	–	
रचना–स्थान	:	–	
पृष्ठ	:	1–123 चित्र --	
हाशिया	:		
आकार	:	24 X 17 स०म० लिखित 19 X 13 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		1–26	
विवरण	:	विचारमाला नामक यह कृति साफ एवं सुन्दर लिखाई है। कृति टंकित है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदों एवं उपनिषदों से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	श्रीस्मावि हरिप्रसादस्य जीवनचरितम् प्रारीप्सिताविघ्नसिद्धये शिष्टाचार परिपाटया मंङ्गलाचरणङ्करोतिसिंहासने समासीनं ध्यायन्तं ईशमव्ययम् ।। वनखण्डीतिनामानं वन्दे योगेश्वरं परम् ।।१।।	
अंत	:	यः प्रतिमोपनिषदमधीते सः सर्वेभ्योऽधोभ्योमुक्तो भवति सर्वान् दिव्यांल्लोकान प्राप्नोति ब्रह्मत्वं च गत्वा अमृतत्वं च गच्छति । इति श्री सामवेदसहस्रोपनिषन्मध्ये प्रतिमोनिषत समाप्ता–शुभम्भूयात ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -848** भाषा : पंजाबी लिपि देवनागरी

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : दास भूपाल

टीकाकार : –

शीर्षक : शिहरफी

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 11–15 तक चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 13 स०म० लिखित 11 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : पांच पृष्ठों की खुली एवं अपूर्ण रचना। काली और लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। भाषा पंजाबी है पर लिपि देवनागरी है। रचना के पृष्ठ भी काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय प्रेम प्रसंग पर आधारित है जिसमें वियोग वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथि शिरफी लिक्षते ।। बैतिन सीहति ।। अलफ अकल गई तेरी भुली यनी बेईमान होके फेर हसदी हैं। जेढे कौल पियारे हे नाल कीते उोनां कौलां कोलो दगिन सही हैं।।

अंत : जेडे लोक तैनूं फाही अउदेनी तेरे सिदिक पांउदे भंग मुईये । कहे दास भूपाल की वस तेरे तैनूं मारि..............

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -849** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्रीमद्अध्यात्म रामायण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	हर कांड की अलग–अलग पृष्ठ संख्या चित्र --
हाशिया	:	कांड के आरंभ में रंगदार हाशिया और सभी पृष्ठों में काले रंग के हाशिये बने हैं। महत्त्वपूर्ण घटनाओं के चित्र भी बने हैं।
आकार	:	32 X 16 स०म० लिखित 26 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		1–13
विवरण	:	अध्यात्म रामायण नामक यह कृति आरंभ से अंत तक सात कांडों में है। हर कांड की अपनी पृष्ठ संख्या है। उत्तर कांड के अंतिम पृष्ठ पूरे हैं पर फटे हुए हैं, जिन्हें जोड़कर पड़ना संभव नहीं है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय राम कथा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। श्रीरामचंद्रायनमः ।। बिसेनवंशजलधौपूर्णः शीतकरोपरः प्रजाल्हाद करोविष्णुंभूषणा कौस्तुभोपरः ।।१।।
अंत	:	श्लोकानांतु शतद्वयेन सहितान्युक्तानिचत्वारि वैसाहस्राणि समाप्तितः श्रुतिश्शतेषूक्तानि तत्त्वार्थतः ।।२ ।। समाप्तमिदमुत्तरकांडं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	: **PPS -850**	भाषा :	संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : स्वयं कबोधाख्या मनस्कः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4, 8, 10, 12 चित्र --

हाशिया :

आकार : 20 X 12 स०म० लिखित 12 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : बारह पृष्ठों की खंडित प्रति। एक से चार पृष्ठ लगातार हैं फिर पृष्ठ आठ, दस व बारह पृष्ठ उपलब्ध हैं बाकी के पृष्ठ गायब हैं। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। लिखाई साफ–सुथरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषद् ज्ञान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ओं श्री गणेशाय नमः ओं प्रणभ्य परमानंद वामदेवः कृतांजलिः जीववत्मुक्ति प्रदोपायं कथय स्वेति पृद्धति १ ईश्वर उवाच परं ज्ञज्ञन महं..............

अंत : इति श्री ईश्वर वामदेव संवादे ईश्वर प्रोक्तः स्वयं बोधाख्या मनस्कः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -851** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वेदांत संज्ञा प्रकरणं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 12 स०म० लिखित 20 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग । लिखाई ठीक है। अनावश्यक शब्द मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः श्री मदुरोः पाद युगंनत्वातस्य प्रसादतः वेदान्तसंज्ञाः प्रत्येकं निनूप्यंतेयथामति १ अध्यारोपाथवादाभ्यां निष्प्रपंचंप्रपंच्यत इति वृद्ध वचनम.............

अंत : तथाचसर्व प्रयंचरहितं ब्रह्माहमस्मीति प्रत्यग भिन्न ब्रह्म ज्ञानाम्मुविर्तारति सिद्धं इतिवेदांत संज्ञा प्रकरणांसूपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -852** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : नृसिंह सरस्वती

शीर्षक : वेदांत टीका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : १६१६ संवत् (1919)

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–69 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : पूर्ण रचना । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अनावश्यक शब्द मिटाने हेतु पीले रंग का प्रयोग किया है। छूटे हुए शब्द पृष्ठों के किनारों पर लिखे हैं। लिखाई साफ है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः कृष्नानंदं गुरुनत्वा परमानंद मद्वयं वदये वेदांत सारस्य टीकांनाम्रा सुबोधिनी १ जगतिहरवल कश्चिद महापुरुषो नित्पाध्य यनविटप यीत सकलवेदराश्शीनांचिन्मात्रश्रय तेन तदूपादू पाइयानंद विषयानांद्यनिर्वचनीय............

अंत : इतिपरमहंस परिब्राजकाचार्य श्री कृष्नानंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य नृसिंह सरस्वती विरचिता वेदांतसारटीका समाप्ता ।। शुभमस्तु लेखक पाटकानाम ।। ।। संवत् १६१६ ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -853** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : गंगाधर सरस्वती

शीर्षक : स्वाराज्य सिद्धि व्याख्या

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–98 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 16 स०म० लिखित 28 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है। पंक्ति में छूटे शब्द/वर्ण पृष्ठों के किनारों पर लिखे हैं। अनावश्यक शब्द मिटाने हेतु पीली तथा महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने हेतु संतरी रंग का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है जिसमें राज्य सिद्धि का वर्णन है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः वरम भय मुदारं पुस्तकं चाक्षहारं मणि वलय मनो ज्ञेः पाणि पद्मैर्दधानासि तव सन ललामाकुंद मुक्ताभिरामा वसतु शीश्शनि भस्यावाचिवाग्देव तानः १

अंत : इति श्रीमद् परमहंस सपरिव्राजकाचायर्य श्री रामचंदसरस्वती पूज्यपाद शिष्य गंगाधर सरस्वत्याख्य भिक्षुणाविरचितायां स्वाराज्य सिद्धि व्याख्यायां कैवल्य कल्परुमाख्यायाम पवाद प्रकरणं समामौयं द्वितीयध्यायः १ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -854** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्री पद्मपुराण (उत्तराखंड)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	१६२५ संवत्
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–20 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 17 स०म० लिखित 28 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		13
विवरण	:	उन्नीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग। महत्त्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही लगाई गई है। कृति में उन्नीस पृष्ठ के बजाय अन्तिम पृष्ठ को 20 अंकित किया गया है। शायद गलती से ऐसा हुआ है क्योंकि रचना पूर्ण है। कहीं भी कथा में रुकावट नहीं है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराण के अंतर्गत भागवत् महात्म्य से संबंधित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। यंश्व्रजंतमनुपेतमुपेत कृत्यं द्वैपायनो विरह कातर आजुहाव पुत्रेतितन्मय तयातरवोऽभिनेदुस्तं सर्वभूत ह्वदयं मुनिमानतो अस्मि १
अंत	:	इति श्री पद्ममपुराणे उत्तर खंडे श्रीभागवत माहात्म्यनिनूपणां नाम षष्टोध्याय = ६ श्रुभमस्न सर्वजगतां संवत् १६२५ फालउने श्रुक्लेपक्षे श्रुभतिथोदशम्पारं विवासरान्वितायां लिपीकृतमिद् पुस्तकम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -855** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : प्रकाशानंद

शीर्षक : वेदांत सिद्धांत मुक्तावली

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–199 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 1–12

विवरण : एक सौ निन्यानवें पृष्ठों की पूर्ण रचना। लिखाई साफ एवं सुंदर। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। महत्त्वपूर्ण स्थल दर्शाने हेतु शब्दों के ऊपर संतरी रंग लगाया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से संबंधित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः उों नमो नारायणाय उों नमः सरस्वती उपाय.............

अंत : इति श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य श्री प्रकाशनंद पूज्यपाद शिष्य श्री नानादीक्षित विरचिता वेदांत सिद्धान्त मुक्तावली टीका सिद्धांत दीपिकायदि हृदयनिवेगा लेखनीभ्रांति भावात्रयन चलनसंगाछोत्र शवृावलंभात लिखितम कृत बुरपायन्मया पुस्तके स्मिन् करकृतम परामक्षंतु मंहेतसंप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -856** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : गर्ग संहिता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १८६७

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : हर खंड की अपनी पत्रांक संख्या चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : अपूर्ण एवं खुली हुई रचना। रचना के 25 खंड हैं। प्रत्येक खंड की अपनी पृष्ठ संख्या है और किसी भी खंड के पृष्ठ पूरे नहीं हैं। पृष्ठ जर्जर भी हुए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय कृष्णलीला से सम्बन्धित कृष्ण चरित है।

आरम्भ : प्रतापवान् श्रीकृस्नभक्तः शंतात्मावभूवनिरहं कृतिः १अंबरा दाग तंदृष्टा नारदं मुनि सतमं संपूज्य चारानेस्थाप्प कृतांजलिर भाषत् ११

अंत : इति श्रीमद् गर्गाचार्य्य संहितायां श्री मथुराखंडे श्री नारद बहुलाश्व संवादे श्रीमथुरा माहात्म्यंनाम पंचबिशोध्यायः २५ समाप्तोयं मथुराखंडः अतःपरद्वारकाखडा भविष्यति ।। श्री कृस्माय नमः संवत् १८६७

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -857** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गणरत्न महोदधि

टीकाकार : श्री वर्धमान

शीर्षस :

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–251 चित्र --

हाशिया :

आकार : 23 X 14 स०म० लिखित 18 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : टंकित कृति । आठ अध्याय हैं। अंत में 68 पृष्ठों की अनुक्रमणिका है। आरंभ में एक पृष्ठ का रचना प्रस्ताव है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : सुखनैव ग्रहीष्यन्ति गणरत्नानि यां श्रिताः । वृत्ति सारभ्यते स्वीयगणरत्नमहोदध शास्त्रारम्भे समीहित सिद्धयेऽभिमत देवतायां ।१। ग्रंथकृत नमस्कार माह । वाग्देवतायाः क्रमरेणवस्ते जयन्ति येषां मिषमात्रतोऽपि सर्वार्थदर्शी (२) मुकुरेण तुल्यः प्रकर्षमेति प्रतिभाविलासः

अंत : सप्तन वत्यधिकेष्वेकादशसु शतेष्वतौतेषु वर्षाणां विक्रमतो गणरत्न महोदधिर्विहितः ।।२।। इति श्री वर्धमान विरचितः स्वीयवृत्ति संहितो गणरत्नम महोदधिः समाप्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -858** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	अवधूताष्टकं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	27 X 14 स०म० लिखित 22 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		1—12
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। पृष्ठ बहुत जर्जर हुआ है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवस्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री कृष्णाय नमः नयोगीनवा मोक्षकां क्षीन वीरोनधीरोन वासिद्धकें । इन सैवोनशक्रोनवावैघ्नवो वावधूता सदानंदकंदो महेशः १
अंत	:	इति श्री अवधूताष्टकं संपूर्णं श्री कृष्णाय नमो नमः ।। ६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -859 (क)** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	कालिका कवचं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	संवत् १६५५
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1.9 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	18 X 10 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	नौ पृष्ठों की संग्रह की पहली रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ–सुथरी एवं पठनीय है। पुस्तक के आरंभ में लिखा है कि यह ग्रंथ फुम्मण राम के पठनार्थ लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय कालि देवी की स्तुति से सम्बन्धित है। रचना मंत्रों में है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः क्रीं क्रीं क्रीं हुँ हुँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ दक्षिणे कालिके क्रीँ क्रीँ क्रीँ ह्रीँ ह्रीँ स्वहा इति द्वाविंशाक्षरी ।। अस्य श्री दक्षण कालिका भगवती मंत्र राजस्य श्री भैरव ऋषि उहिमक् छंदः श्री दक्षण कालिका भगवती देवता ह्रीँ वीजं हूँ शक्तिः
अंत	:	शत्रु सनाश करे देवी सर्वसभ्य तू प्रदे श्रुभे सर्वे र्देमैस्क्त ते देवी कालिके त्वां नमाम्यहम् ।।११।। इति श्री कालिका कल्पे शत्रुनास करं कालिका कवचं सम्पूर्णम् लेखक पाठ कयो श्रुभमस्तु १ लभंभूयात् सं १६५५

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 859 (ख)** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री हनुमत महामंत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६५५

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 9–10 चित्र

हाशिया :

आकार : 18 X 10 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ववत् । फुम्मणराम के पठनार्थ ग्रंथ की रचना हुई है।

विशेष विवरण : रचना का विषय हनुमान स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री रामानुजाय नमः हफ्रें ख्फ्रे ह्यौं ५ अस्य श्री हनुमत महामंत्रस्य रामचंद्र ऋषिः गायत्री छन्दः श्री हनुमान देवता ह्यौं वीजं ह्यप्रें शक्तिः मम सर्वा भीषृसि ह्यै जवे विनियोगः............

अंत : कुन्दरं सुग्रीवादि समस्त वानर गणैः संसेव्य पादाबुजं नादेनैवसमस्त राक्षस गणासंत्रासयं तं प्रभूं श्री मद रामपदांवुज स्मृतिरतं ध्यायामिवातात्मजं ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -860** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	याज्ञवल्क्य शिक्षा
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		संवत् १६४० (1940) शकाब्द श १८०६ भाद्रवदमास
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–17 चित्र
हाशिया	:	पहले तथा अन्तिम पृष्ठ पर काले फूलदार हाशिये तथा बीच में काली स्याही से दोनों ओर हाशिये।
आकार	:	28 X 14 स०म० लिखित 22X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9
विवरण	:	सत्रह पृष्ठों की मुद्रित पूर्ण रचना। रचना का आरंभ तथा अंत साफ–साफ फूलदार हाशिये से हुआ है। पृष्ठ थोड़े पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय ऋषि याज्ञवल्क्य की शिक्षा नीति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। अथास्यै स्वर्य लक्षणं व्याख्या स्यामः ।। उदात्त श्वानुदात्तश्चस्वरितश्चतधैवच ।। लक्षणं वर्णयिष्यामि दैवतंस्थान मेवच
अंत	:	हाइति ।। अआआ त्रयाः कंठयाः ।। ऋवर्गेति त्परेसादा वनु स्वादोद्विमात्रकः । संयोगे परभूतेषु ह्रस्व एवोच्य तेबुधैः ।। इति श्री याज्ञवल्क्य शिक्षा समाप्ता ।।६।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -861** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शंखस्मृति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३१ (1931) टंकित वर्ष

रचना–स्थान : जम्बू शहर

पृष्ठ : 1–17 चित्र

हाशिया : पहला तथा अन्तिम पृष्ठ फूलदार है।

आकार : 25 X 16 स०म० लिखित 19 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 12

विवरण : सत्रह पृष्ठों की पूर्ण रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय स्मृति ग्रंथ से सम्बन्धित ऋषि शंख की शिक्षा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। स्वयंभुवे नमस्कृत्य सृष्टि संहार कारिणे चातुर्वर्ण्य हितार्थाय शंख शास्त्रम् कल्पयत् १ यजनं याजनं दानं तथैवाध्यापन क्रिया प्रति ग्रहं वाध्ययनं विप्रकर्माणि निर्हिशेता ।।२।।

अंत : इति श्रीशांख अष्टदशोऽध्यायः १८ समाप्तम् ।। सम्पूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। श्ररिस्तु ।। शुभंभूयात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -862** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	नासिकेत
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—30 चित्र
हाशिया	:	ग्रंथ के दोनों ओर काली स्याही से बारीक फूलदार हाशिये
आकार	:	25 X 16 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		12
विवरण	:	तीस पृष्ठों का टंकित ग्रंथ। टंकण साफ एवं स्पष्ट है। संवादात्मक शैली में लिखे इस ग्रंथ के आवरण पृष्ठ में लाल और हरी स्याही का फूलदार हाशिया बनाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों के अंतर्गत विष्णु पुराण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ऊँ श्री गणेशाय नमः नारायण नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदी रयेत ।।१।। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदी रयेत ।।१।। सूत उवाच गंगातीरे सुखासीनः कृत्वा स्नानमलंकृतः ।। प्रददै स तदा दानं द्विजेभ्यो जनमेजयः ।।२।।
अंत	:	नासिकेतस्य महात्म्यं येशृण्वंति पठति च । सर्वपाप विनिर्मुक्ताः विष्णोः परं पदम् ।।७१।। इदं श्रुत्वा पुराणंचे त्कुर्याद्वै विप्रपूजनं प्रेतो मोक्षमवाप्नोति संततौ तु शुभं भवेत ।।७२। इति श्रीनासिकेतोपाख्याने त्रयोदशोध्यायः ।। शुभंभूयात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक :	**PPS -863** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत :	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य :	—
लेखक :	
टीकाकार :	भजनलाल
शीर्षक :	शय्यादान विधिः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :	
रचनाकाल :	पौष शुक्ला ७ सं १६५६
रचना–स्थान :	—
पृष्ठ :	1–11 चित्र
हाशिया :	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये
आकार :	19 X 12 स०म० लिखित 16 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः	10
विवरण :	ग्यारह पृष्ठों की पूर्ण टंकित रचना। अन्तिम पृष्ठ की अन्तिम पंक्ति में अक्षरों का आकार कुछ लघु है। टंकन स्पष्ट एवं पठनीय है। रचना का टंकन अमृतसर से हुआ है। अन्तिम पृष्ठ पर सामग्री तथा शय्याशिरों की प्रासंगिकता बताई है।
विशेष विवरण :	ऊँ श्री गणेशाय नमः ।। अथ शय्यादान विधिः ।। सपत्नी को यजमान आचम्य प्राणायाम कृत्वा स्वस्ति वाचनानंतरं प्रतिज्ञां कुर्य्यात गणपत्यादीन्पूजपित्वा य्यादिक दद्यात् ।। तत्रक्रमः ।।
आरम्भ :	इति मंत्र द्वयेन लक्ष्मी नारायणौ विसृजय उों यातुदेव गुणा सर्वेपूजामादाय माम के यजमानहि तार्थाय पुनरागन नायच इति गणपत्यादि विसर्जनं उों मयाद्यस्मिन दिने देव यद्यत्कर्म कृत विभो सर्वभवतु संपूर्णत्वत्प्रसादाद्रमापतं १ प्रमादादिति पठेत इति।।
अंत :	इति मंत्र द्वयेन लक्ष्मी नारायणौ विसृजय उों यातुदेव गुणा सर्वेपूजामादाय मामके यजमानहि तार्थाय पुनरागननायच इति गणपत्यादि विसर्जनं उों मययाद्यस्मिन दिने देव यद्यत्कर्म कृत विभो सर्वभवतु संपूर्णत्वप्रसादाद्रमापतं १ प्रमादादिति पठेत इति ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -864** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

संपादक : श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

शीर्षक : श्री संस्कृत साहित्य सम्मेलनस्य

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : हरिद्वार

पृष्ठ : 1–40 चित्र

हाशिया :

आकार : 24 X 16 स०म० लिखित 19 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 28

विवरण : टंकित पूर्ण प्रति । संस्कृत साहित्य सम्मेलन प्रथम वर्ष का विवरण है। अंत में पृष्ठ 33 से 40 तक सूची दी गई है तथा अंत में सम्मेलन की निबंधावली का परिचय दिया गया है।

विशेष विवरण : प्रति में सम्मेलन की कार्यवाही तथा सम्मेलन संरचना का विवरण है।

आरम्भ : श्रीः । भूमिका । पेष्ठा महाभागाः महीयान् खलु महिमा कालस्य । याखल्वियम स्माकं संस्कृता वागासीदा पारावार मासादित प्रसरा सर्वासां वाचामग्रेसरा प्रवरा...........

अंत : अधिकर्णं मर्पणीया सुचिरं विचारणीया । हृदये निवेशनीया सुरभारती कथेयम ।३५।।

।।इति।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -865** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : प्रो. ब्रिजलाल शास्त्री

टीकाकार : –

शीर्षक : सन्ध्या–संगीत

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : जालन्धर

पृष्ठ : 1–16 चित्र

हाशिया :

आकार : 17 X 11 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 16

विवरण : मुद्रित पूर्ण रचना। मुद्रण हेतु काली स्याही का प्रयोग किया गया है। सन्ध्या संगीत में प्रथम पद भगवत् संध्या से सम्बन्धित है फिर आचमन मंत्र तथा अंत में नमस्कार मंत्र है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ईश स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : *ओइम* सन्ध्या

जगत दा है आद अन्त वेद दा विधाता

आद अन्त नांह भाई बन्ध पिता माता

संख नाम रूप नाम रूप बाझ जाता

धर्मराज धर्म अर्थ काम मोक्ष दाता।।

अंत : नमस्कार ।।

कल्याण स्वरूप धर्म दे सार ।

नमस्कार ।।

जग दे हितकारी सुख दातार ।

नमस्कार ।।

हे भुक्ति मुक्ति दे भण्डार।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 866** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : चाणक्य मुनि

टीकाकार : भगवानदास

शीर्षक : राजनीतौ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६२८

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–44 चित्र

हाशिया :

आकार : स०म० लिखित

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 22

विवरण : पूर्ण टंकित रचना। टंकन स्पष्ट एवं पठनीय है। मूल चाणक्य द्वारा लिखित सुखानंद नाथ मुनि इसके लिपिकार हैं और भगवानदास अहसनी ने टंकन किय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय चाणक्य के राजनीति सम्बन्धी उपदेश से सम्बन्धित है।

आरम्भ : तत्सत् श्री गणेशाय नमः ।। अथ राजनीति शास्त्रे भाषो दोहा टीकया युक्तं चाणक्यम् ।। आगरायां श्री घीसाराम कनहियालालयो संस्कृत पत्रै मुद्रितम् ।। मूल श्लोकः ।। प्रणभ्य शंकरदेवं । ब्रह्माणं च जगदगुरुं विष्णु प्रणभ्य शिरसा । वक्ष्येशास्त्र समुच्चयम् ।

अंत : राजनीति चाणक्य को अष्टमवृद्धऽध्याय रच्यौ विचक्षण विष्णु गिरि दोहा बन्धवनाय ।।८।। इति राजनीति शास्त्न वृद्चाणक्ये अष्टमो अध्यायः ८ ।। जेठ शुदि १० संवत् १६२८

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -867** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	पुष्पदन्त
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	महिम्न (महिम्न) स्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	१८३७ शकाब्दः
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–63 चित्र : रचना के पहले पृष्ठ पर शिव–पार्वती एवं गणेश का चित्र छपा है।
हाशिया	:	
आकार	:	18 X 10 स०म० लिखित 14 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		25
विवरण	:	शिव महिमा से सम्बन्धित पुष्पदत्त की रचना की मधुसूदन सरस्वती ने संस्कृत में व्याख्या की है।
विशेष विवरण	:	शिव वंदना एवं शिव महिमा का गान किया गया है।
आरम्भ	:	मधुसूदन सरस्वती कृत शिव विष्वर्थक व्याख्या सहितम् ।

ऊँ नमः शिवाय ।
विश्वेश्वरं गुरुनत्वा महिम्नास्तुतेय्यम् ।
पूर्वाचार्यकृत व्याख्या संग्रहः क्रियते मया ।।१।।

अंत : कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।४३।।
इति श्रीपुष्पदन्त विरचितं शिवमहिम्न स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 868** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कोमला मंत्रणे

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र

हाशिया :

आकार : 20 X 11 स०म० लिखित 15 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : तीन पृष्ठों की पूर्ण रचना। पृष्ठों का रंग लाल है उन पर काली एवं पीली स्याही से लिखा है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।।चादिर्निपातः वपुनर्थे समुच्चयादिषुवा विकल्पार्थि उपमानार्थेव ।। हअह ।। इति द्वौ खेदार्थो पापूर्णा र्थोच ।। अ ह ह ।। इत्ययि खेदंआश्चर्येव ।। ए व ।।

अंत : अ व अवधारणे निर निराकर्णे डरदुर दूष्टार्थे सहष्टार्थे उत्तवितकें अभि सन्मुवार्थे उप समीपार्थे अंतर पधोर्थे विविगत्पर्थे विशेषार्थे आविर प्रगटीकरणे ।। ऽऽऽऽऽ।।ऽऽऽऽ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 869** भाषा : संस्कृत–देवनागरी

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	बाबूराम सुकुल
शीर्षक	:	श्री देव्याः कवच
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		संवत् १८३३
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—2, 7,18, 84—69, 71, 82 चित्र : आरम्भ तथा अंत में और एक पृष्ठ के बीच में माता के चित्र हैं साथ में मंदिर की तस्वीर है।
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये
आकार	:	20 X 10 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		6
विवरण	:	अपूर्ण रचना। बीच में से पृष्ठ गायब हैं। देवी स्तुति से सम्बन्धित इस रचना के अलग—अलग संख्या के चौदह—पन्द्रह पृष्ठ उपलब्ध हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ऊँ श्री गणेशाय नमः ऊँ नमश्चण्डिकायै मार्कण्डेय उवाच ऊँ यदगुत्यंपरमं लोके सर्व रक्षाकरन्नृणाम् । यन्नकस्य चिदाख्यातन्तन्मेब्रूहि पितामह १ ब्रह्मोवाच
अंत	:	लिखा वावूराम सुकुल छापने वाला मान् जिसै लेना होय उसै ढंढि राजगणेश के पास दाऊअग्निहोत्री के दुकान में दुर्गा की पुस्तक मिलैगी ।। श्री संवत् १८३३ शाके १७६८ मि १७६८ मिण माघशुक्ल छे शनिवासरे ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -870** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : वेदान्त परिभाषा

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 2—62 चित्र

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 21 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 16

विवरण : अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी रंग का प्रयोग किया है। रचना के पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदान्त से सम्बन्धित है।

आरम्भ : थिव्यादौ प्रत्यक्षेण र्का त्वसि द्वावरपंतीदि्येतद्रसिद्धे मार्गरसिद्धो हेतुरिति वाच्यं तत्तापि पृथिवीत्वहिनाकार्यत्व कल्पनातु नचा प्रयोज कंत्वला हविनु गृहीतेन प्रत्यक्षेण घटादौ...

अंत : कथमेता वताछितत्ति अनुर्मष्टिी क्रिया पदाध्या हार सिद्धिरिति वाच्यं करणत्वेनचोदि तेष्यु मंत्रेयु कल्पनीयस्य प्रयोजनास्यक्रियानिर्वर्ततोर्ययस्यैव कल्पत्वे नार्थ प्रर्कशन स्पवेतत्कल्पनात् तस्यचक्रियापदाध्या हारं विनानुयपत्ते : ....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 871** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : मध्य कौमुदी

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 3–85 चित्र

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही के हाशिये

आकार : 30 X 12 स०म० लिखित 26 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : पच्चासी पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठों के किनारे पर भी लिखा है। पृष्ठ काफी पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : स्पइति जाते संयोगांतस्य लोपः संयोगांतंपत्पदं तस्य लोपः स्यात् अलोंत्पस्य षष्ठी निर्दिष्टोंत्य स्यादेशः स्यात् इतिप्राप्ते यणः प्रतिषेधो वाच्यः सुध्मुपास्यः मध्तरिंः धात्रंनृःनाकृित...........

अंत : भागवर्जे लक्षणादावभिरुक्त संज्ञःस्यात् ।। हरिम भिवर्तते ।। भक्तो हरिमभि ।। देवंदेमभिसिंचति ।। अभागेकिं ।। यदत्रमाभिष्पात्तद्दीयतां ।। अधि परि अनर्थत्तौ ।। उक्त संज्ञौस्तः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 872 (क)** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : ब्रह्मानंद

शीर्षक : आत्मबोध दीपिकाख्या टीका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १३६३८ शक.१८0३

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : प्रयाग

पृष्ठ : 1–25 चित्रः पहले पृष्ठ पर काले रंग का चित्र

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही का दुहरा हाशिया

आकार : 25 X 16 स०म० लिखित 18 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10–14

विवरण : पच्चीस पृष्ठों की टंकित रचना। आवरण पृष्ठ पर फूलदार हाशिये की बीच रचना का आरंभ है और पृष्ठ के दूसरी ओर काले रंग का चित्र है जिसमें स्वामी ब्रह्मानंद स्वामी तथा शंकराचार्य के चित्र हैं। प्रस्तुत ग्रंथ की तीन प्रतियां हैं तीनों पूर्ण हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय आत्म तत्व से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ऊँ श्री गणेशाय नमः ।। सदाशुद्धोबुद्ध सकलमपि माया मयमिदं विसृज्य स्वाशक्तया प्रथयतिय एनच्चितिमयम् ।। कथंचिज्ज्ञातश्वेद् भवति विलयं मोह रचितं नमामस्तं नित्य समर सघनात्मान ममलम् ।।

अंत : दीपिकेयं मया कारि तुष्यतां माधवाऽनया।।५।। इति श्रीमन्मौक्तिक रामोदासीन शिष्य ब्रह्मानंद विरचिताऽऽत्मबोधस्य दीपिकाख्या टीका समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS - 872 (ख)** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	आत्म पंचक स्तोत्रं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६३८ शके १८0३
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 (पृ0 नं0 26) चित्र
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही से हाशिया
आकार	:	25 X 16 स०म० लिखित 18 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		कुल 10 पंक्तियों की रचना।
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना। टंकण में काली स्याही का प्रयोग हुआ है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय आत्म उद्धार के लिए स्तोत्र से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। ।। नाहंदेहोनें द्रियाण्यं तरंगं नाहंकारः प्राणव गोनिबुद्धिः ।। दारापत्य क्षेत्र वित्तादि दूरः साक्षी नित्यः प्रत्यगात्मा शिवोऽहम् ।। १ ।।
अंत	:	नाहं जातो जन्म मृत्यूकुतो मेनाहंप्राणः क्षुत्पिपासे कुतोमे ।। नाहंचित्त शोक मोहौकुतो मेनाहं कर्ताबंध मोक्षोकुतो में ।।६।। इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं आत्म पंचक स्तोत्रं संपूर्णम् ।।६ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -872 (ग)** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : निर्वाण अष्टक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३८ शके १८0३

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : नौ पंक्तियों की रचना चित्र

हाशिया : वही

आकार : 25 X 16 स०म० लिखित 18 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः नौ पंक्तियों की रचना

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय मोक्ष हेतु स्तोत्रों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : परायणाः इति वेद प्रमाणादि देवित्वांश रणंव्रजेत ७१ तव प्रतिज्ञा मद भक्तान नश्य तीत्पपि क्वचित् संचिंत्य संचिंत्य प्राणन्संधार याम्यहम् ७२

अंत : उों तत्सत् इत्यथर्वणर हस्येउतर भागै श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 873** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	लक्ष्मी हृदय स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	26–33 चित्र
हाशिया	:	–
आकार	:	19 X 13 स०म० लिखित 15 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	अपूर्ण रचना जो पृष्ठ छब्बीस से उपलब्ध है, पृष्ठ तैंतीस तक चलती है। रचना का आरंभ तो नहीं मिलता पर अंत है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय लक्ष्मी पूजा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	परायणाः इति वेद प्रमाणादि रेवित्वांश रणंव्रजेत ७१ तव प्रतिज्ञा मद भक्तान नश्य तीत्पपि क्वचित् संचिंत्य संचित्य प्राणान्संधार याम्यहम् ७२
अंत	:	उों तत्सत् इत्यर्थर्वणहर हस्येउतर भागै श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 874 (क)** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	सुंदर देव
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	हठसंकेत चंद्रिका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	2–49 चित्र
हाशिया	:	
आकार	:	20 X 12 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14
विवरण	:	उन्चास पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया गया है। रचना का पहला पृष्ठ साथ न होने के कारण रचना अधूरी है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय योग से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	यांत्पुग्ररोधेःत्र मति श्रमंप्रागभ्यांस दादगेयमिनांश मंते गुरुपदेशासंभलज शास्त्रं संकेतकः प्राणनि रोययदतः ज्ञानात्पतत्व जित तितूतिः सरा जयोगंह हठकर्मणौति ५
अंत	:	चितं वशेयस्य समाधिरपे तस्यो पदिशेननुय स्थचित्तं वशेस्तियस्यापि समाधि सिद्धौ सम्यक् क्रिया योग इहोपरिष्टः ७ इति सुंदरदेव विरचितायां हठसंकेत चंद्रिकायां हठांगोपकार विवेचनं ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 874** (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : मुद्राः तज्ञ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 49—50 चित्र

हाशिया :

आकार : 20 X 12 स०म० लिखित 14 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : पूर्ववत् । रचना अधूरी है। पृ0 50 के बाद भी चलती है पर आगे के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय योग से सम्बन्धित है।

आरम्भ : अथ मुद्राः तक्षवणंत मुद्रास्त मृद्रणा प्रोक्त्का यद्वा पारनियोजिताः तद् वापरस्तस्य....

अंत : तितेंद्रि योनिश्शुलवित्तवृत्या प्राणावरोधे.............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -875** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कालिका पुराणे नैवेद्य कथतं ।।

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1,4 चित्र

हाशिया :

आकार : 24 X 13 स०म० लिखित 17 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : दो पृष्ठों की अपूर्ण रचना। रचना का आरंभ और अंत उपलब्ध है पर बीच के दो पृष्ठ अनुपलब्ध हैं। लिखाई साफ एवं सुंदर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है। देवी स्तुति को आधार माना है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। रंभोवाच ।। वसंत काले कु सुभाकुला कुले वतांतदे पुष्प रसांत रांतरे ।। स्तनां तरयः पुरुषोन सचतेम तांतरे तस्य नरस्य जीवितं ।।१ ।।

अंत : वैस्भवी प्रियं कामाख्यायास्तथा देव्यास्ति पुराया विशेषतः प्रदक्षिण नमस्कारौ र्साप्रतं श्रृणुर्तयुर्वा इति श्री कालिका पुराणे नैवेद्य कथनं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -894** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रामाश्रमाचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : वाणी प्रणीत सूत्राणंा (सिद्धान्त चन्द्रिका)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 37 X 15 स०म० लिखित 34 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 37

विवरण : एक दीर्घ पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त शब्दों को मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ग्रंथ उच्चारण शिष्टाचार से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोम् । ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मंगल माचरणीयमिति शिष्टाचारः तत्र मंगलंत्रिविधम् आशीर्वादात्मकं नमस्कारासत्मकं वस्तु निर्देशात्मकंच अत्र ग्रन्थ कर्त्ता रामाश्रमाचार्यः । ग्रन्थादौ नमस्कारात्मकं मङ्गल शिष्यशिक्षायै ....

अंत : इति शेषः अत्र कमल वनोद्घाटन रूप फलस्य कत्तृ भूत मयूषागामितेत्वे पिकुर्वते इत्यात्मते पदंजातं तथैव पिहापि वोध्यम् ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -895** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वचनेन वृत्ते
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 15 स०म० लिखित 32 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		34
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। लाल स्याही का प्रयोग विराम एवं अंत लेखन के लिए किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उच्चारण विद्या से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु ।। भ्वादिरित सूत्रस्यकोर्थः । उच्यते क्रियावाचीभ्वादिर्धातुसज्ज्ञः स्यादित्यर्थ : ननुयानि सूत्रे पात्तानिता निवृत्तौ प्वल्वेव प्रतीयन्ते इति वचनेन वृत्ते सूत्रानुसारत्वात्सूत्रे क्रिया वाचीत्या..........
अंत	:	प्रथमस्य तिपः समास प्रत्यययो रितिलोपेतु तदर्थस्या नववोधाच्च कर्त्तद्वयादिवोधाकांक्षायां पचत इत्यादि रूपस्यैवन्याप्यत्वात् अतएव भवादि ग्रहणं व्यर्थ मितिचेत्त देदमेव न्याय्यए् ।। राम ।। सीतारामभ्यां नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -896** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	अर्थः प्रयोजनं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		27
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किनारे पर लिखकर फिर पीली स्याही से मिटाया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय अर्थ ग्रहण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ओम् । तस्यैतुम् क्रियायै अर्थः प्रयोजनं यस्या कस्याश्चित् क्रियाया सातदर्था तस्यां यद्वा सैवतु मंत क्रिया अर्थः प्रयोजनं यस्याः सातदर्था तस्यां पूर्णता वाचि पुसामर्थ्ये.....
अंत	:	इत्यर्थः वर्प वृष्टिस्नस्य प्रमाणं वर्ष प्रमाणं तस्मिन् पूरेणम्ऊ लोपश्च्वाग वांपद गोष्य दंगोष्य दस्य पूरणं गोष्पद् प्रम्यावत वर्षेण गोष्य पदं पूर्यते तावत् वृष्टो देवा । इत्यर्थः ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -897** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्र विपरीत उच्चारणं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 12 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		26
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत उच्चारण कला पर आधारित है।
आरम्भ	:	ननु आमावित्यस्मिन्सूत्रे विपरीतो उच्चारणं किमर्थम् उच्यते आमावित्यत्र विपरीतोच्चारणं योग विभागसिद्यर्धम् तथाहि अमावित्पत्र अअमौ इति योग विभागः कर्त्तव्यः लोपः अतः
अंत	:	अदन्तयोर्यु मदस्म दोरेत्वं हसान्तयोर्पत्वं च भवति टाङि ओसपरतः एवं च युष्मा अस्या युष्पिअस्यि युष्पोः अस्योरिति रूपाणि सिद्विरयान्ति ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -898** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अविभिक्त नामेति सूत्रेण (कृत्त द्वित समासा)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 14 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लिखाई पठनीय है, सुन्दर है। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ हुआ है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत समास के साथ सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु कृत्त द्वित समासा श्रेति वार्तिकं न कर्त्तव्यम् नाम संज्ञातु अविभक्ति नामेति सूत्रेण सिद्येत् अतः कृत्त द्वित समासे श्चेचति व्यर्थम् उच्यते

अंत : अवयवानां विभक्तयं तत्वेपि समदायस्य विभक्त्यं तत्वाभावात् यस्माद्विभक्तिर्विधीयते तद्विभक्त्यंतम् साचावयवभ्यो विधीयतेन समुदापात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -899** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सूत्त कर्त्तव्यं सुवचम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 15 स०म० लिखित 24 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 25

विवरण : लगभग 55 सेंटीमीटर पृष्ठ में लिखकर उसे दुहरा किया गया है जिससे रचना के दो पृष्ठ लगते हैं। लेखनाथ काली स्याही का प्रयोग । पृष्ठ के किनारे पर भी लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूत्त कर्त्तव्य बोध से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अम्रासो रस्येत्यस्मिन् सूत्रे अस्येति ग्रहणं किमर्थम् षष्टी निर्द्दिष्ट स्यादेशस्त्र दंतस्य ज्ञेय इतिपरिभाषया अंत्यस्य लोपः स्पात्त द्वानार्थमस्येति ग्रहणम्............

अंत : अथ च देवस्यव्यत्राति प्रसंगः स्यादितिमैवम् ङस्ख्येति विशेष सूत्रेण तद्वायान्नाति प्रसंगः अथवा इकार सहित सकारस्या भन्नाति प्रसंगः इतिचेत्तदे दवेमवसुवचम् ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -900** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : संकलनेन

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 14 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 26

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग। पृष्ठ के अंत में शायद रचना से सम्बन्धित संकेताक्षर दिए गए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय विभक्ति संकलन से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोम् ।। नव वाणाब्धि ४५६ संख्या निकादि द्वित्व विभाषया । गवाक्श छस्य रूपाणि ध्येयानीत्य पिपशिद्रतैः ।। १ ।। तथाहि ।। सौ नवानांहसेऽर्हस इत्यनेनान्त्यस्य द्वित्वेऽष्टादश ।

अंत : एवं सप्तसु विभक्तिषु संकलनाद् गवाक्शछस्य रूपाणि एकोन षष्टयुत्तर चतुःशतानि जायन्ते ।। ४५६ ।।

सि १८ उौ ७ जसछ ।। श्रम १८ उौ ७ शस ६ ।। टा ७ भ्याम् ४८ भिस २४ ।। ङि ७ भ्याम् ४८ . . . . . . आम् १४ ।। ङि ७ उो सो १४ सु पू ४२ ।। संकलनेन ।। ४५६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -901** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : दीपोः शतुरित्यत सूत्रे

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 14 स०म० लिखित 24 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 25

विवरण : एक पृष्ठ की रचना । लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्वपूर्ण शब्दों पर संतरी रंग लगाया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूत्र निर्माण पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननुवादीपोः शतुरित्यस्मिन् सूत्रे वाआतईयोः शतुरिति पदईश्वईपचई पौतयोः ईयारित्पत्र अन्तर्वर्त्तनी विभक्ति माश्रत्य कार्य्याणि

अंत : उच्यते आरम्भ सामर्थ्या निन्त्य त्वलब्धेऽपिवादीपोः शतुरितसूत्रेअ दीपोरादीपोरित्ति पदछेद संदेह निरासार्थ नित्य ग्रेहणम् ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -902** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	शौसाविति सूत्रेण नियमः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 15 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		25
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थानों पर शब्दों के ऊपर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सूत्र निर्माण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु इनां शौसाविति सूत्रेण नियमा क्रियते इन्नादि नामु पधा पायदि दीर्घः स्पात्रहि शौसाववेति तथा. . . . .
अंत	:	तत्च ज्ञापयति वसुग्रहणेन क्कसोराषि ग्रहणं भवति अतो वसोर्वउरित्यस्मिन् सूत्रे वसुक्कसोः सामन्य ग्रहणम् तेनसे दुष इत्यत्र वसोर्वउरिति सूत्रेण क्कसोर्व कारस्योत्वं भवे देव ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -903** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	एकार्थी भाव लक्षण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 15 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		26
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लिखाई सुन्दर एवं पठनीय है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग महत्वपूर्ण स्थलों पर शब्दों के ऊपर संतरी रंग लगाया है। अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु राज्ञः पुरुष इत्यत्र संबंधस्यो भय निष्ट त्वादेक स्मात्षष्टी एकस्मात्तोन श्रूयताम विशेषणा त्वष्टी भवति नतु विशेष्यात्
अंत	:	परस्पर संबंधः सव्ययेक्षा लक्षणः विशिष्टै कार्थ रूपः संबंधः एकार्थी भाव लक्षणः तत्रैकार्थी भाव लक्षणे एव समासः नान्यत्र ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -904** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रं पष्टं पतं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		29
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। छूटे हुए शब्द पंक्ति के बाहर चिन्ह देकर लिखे हैं। रचना की लिखाई पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों धातोः पंचभ्यन्तमिद् सूत्रं षष्टयंतं वाकस्मिन्य पंचम्यंतं कस्मिन् पपक्षे षष्टं पतम् प्रत्यय विधौ पंचम्यंतम् अडद्वित्वादि विधो षष्टं पतम् ।
अंत	:	अन्यथा अडद्वित्वयो र्दोषोदुर्वारः स्यात् सतिहि औरी करोत अश्रुल्की भवत् इत्याद्यनिष्टमाय द्येतेतिभावः ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -905** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रे धातु ग्रहणं
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 14 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		29
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। अनावश्यक मिटाने हेतु पीली तथा महत्वपूर्ण दर्शाने हेतु संतरी रंग का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु धातोर्नामिन इत्यस्मिन सूत्रे धातुग्रहणंत कर्त्तव्यं तदभावेनामिन इत्येव सूत्रं स्यात् तस्य चनाभ्यं तस्य वृद्धिर्जिर्णतीत्यर्थ करणेन सर्वत्रैव निर्वाहो भविष्यति पुनः
अंत	:	मासेत्पत्र अस्ते रनपि भूरित्यस्ते भूंभावः कथंन स्यात् उच्यते क्रस्मूपर इत्यत्रथ्थग्ग्रहणादस्तेर्भूभावोन अन्यथाहि कृ भूपर इत्येदोच्येत ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -906** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सूत्र वार्तिक भाष्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 12 स०म० लिखित 26 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 27

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। पृष्ठ के किनारे पर भी बारीक अक्षरों में लिखा हुआ हैं ।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उोम् वैयाकरणा नांमते त्रीणि प्रमाणाति संति सूत्र वार्त्तिक भाष्याणिः व्याक्रियंते व्युत्पाद्यंते शछाः साध्यंतेयस्मिन् तमद् व्याकरणम्•

अंत : यत्र पूर्वाध वस्थापरित्यागेना वस्यांतर प्राप्तिः क्रियते तद् विकार्य्यम्• क्रियाकोच्यते• करोत्पर्थ भूताउत्पाद नापर पर्यायाउत्पच्पनुकूल व्याख्या यपारसं तानरूपाभावना क्रियोच्यते• ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -907** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	मर्युदास
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	विभक्ति नामेति सूत्र (विभक्ति सूत्र)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 13 स०म० लिखित 30 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		33
विवरण	:	दीर्घाकार एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुंदर तथा पठनीय है। अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ननअविभक्ति नामेतिसूत्र विषयेम दीपः प्रश्नः पानिसूत्रोपात्रानिता निवृत्तो लेव प्रतीयन्ते इति वचनेन वृत्तेः सूत्रानसारित्वात् सूत्रे विभक्ति रहित मित्पादीपदानि. . . . . .
अंत	:	नामेक वर्णनामर्थ त्वादन्ये पिवर्णा अर्थवन्त इत्युनपलब्धि वाधितमेतत् किंचकूपोयूप इत्यन्वय व्यतिरे काम्यां ककारय कारयोरर्थवत्वादन्येपि वर्णनामनर्थ क्यमभ्युपगतंस्यात् ।। राम ।। ४४४ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -908** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सन्धि प्रकरणम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 13 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 27

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। अतिरिक्त शब्दों को मिटाने हेतु पीली तथा महत्वपूर्ण स्थल दर्शाने हेतु संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है। अंत पीली एवं काली स्याही के आशिये से किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय योग से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु नामिनोर इत्पत्तनामि ग्रहणेन कार्य्यम् अवर्णल्लोपशा दिविपानेन तस्यै वपरि शेषालाभः स्पादतो नामि ग्रहणं व्यर्थम् उच्यते नामि ग्रहणं योग विभागार्थम् तर्थहि नामिनः इति योग विभागं कृत्वा आदवेलोपशू..............

अंत : अथ चात्रस्मटोऽभावो द्वंद्वे सर्वादिनो सर्वकार्य्य नेतिज्ञापनार्थः तेनवर्णाश्रमे तराणिमित्यादि सिद्दउ् ।। इति सन्धिप्रकणाम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -909** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रं कर्त्तव्यम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	29 X 13 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		27
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लिखाई साफ—कुंदर एवं संस्कृतनिष्ठ व्याकरण युक्त है। पीली एवं लाल स्याही का प्रयोग क्रमशः अतिरिक्त मिटाने एवं महत्वपूर्ण शब्द दर्शाने हेतु किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ओम् ननु कःकरोतीत्पत्र कुपोलकलपौवेत्यस्य वैकल्पिकत्वात् सययपक्षैसत्वंकुतोन उच्यते शेषाः कार्य्ये इति निर्द्देशेनेलक ल पाभ्यां मुक्तेप क्षेस त्वं प्रकृत्यभावस्पज्ञापनात्सत्वंन......
अंत	:	इत्यस्य पृपंतत्पच्च भोसो विसर्गस्या वणात्यरस्य विसर्गस्य लोपशृ इत्यर्थस्य सुलभतात् एवं चखरेयतम्वेत्यस्या द्विरुवित श्वेति महल्ला घवमिति चेत्तदेदमेवन्याय्यम् ।। ॐ गोपालाय नमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -910** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : परिभाषया विसर्गस्य

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 13 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 27

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के सूत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु तोर्लिलइत्पत्तलित इति सूत्र कर्णयम् स्तोश्चुभिः श्चुरित्यतोऽनु वृत्तैवस्तोरित्यस्य लाभः स्याद तस्त्रोर्ग्रहणंव्यर्थक् सकार निवृत्पर्थ मितिनचवाच्यम् लकारयरस्य सकारस्याभावात्.............

अंत : ननु विसर्जनीयस्यस इत्पतलाचवार्थ विसर्गस्यस इत्येवसूत्रं कर्त्तव्यम् उच्यते पर्याय शच्दानंदलाच वतानाश्रीयते इति परिभाषया विर्गस्य इतिनोक्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -911** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : आदि सिद्धिम् ।।

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 13 स०म० लिखित 26 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 27

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई पठनीय एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय भक्ति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु ययाअवेजबा इत्पत्र अवेजबा इतिसूत्रं करणीयम् स्वराणां पूर्व विययोवाघकाह सानां तुत्तरविधयो दाघकाश्चस्यु: उच्यते तयागताः......

अंत : ननु नशात्नषीत्पत्रन जद्वयो पादानं किमर्थम् उच्यते अत्तनजद्वयो पादानंष्टुतस्यानि त्यत्वज्ञापनार्थम् नतेन लिद्म् इत्यादिसिद्वम् ।।

उों नमः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -912** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	चेत्तदास
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सन्ध्यर्थ निपात (सन्ध्यभावः)
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	20 X 14 स०म० लिखित 17 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लिखावट साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय संध्या बंदन से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु अनदः अदःअ भवत् अदो भवत् एवं अतिरः तिरः अभवत्तिरोऽभवत् इत्यादौच्यन्तस्या व्ययत्वेन निपातत्वात् उोदन्तोनिपातश्च इत पनेन सन्ध्य भावः कथंन.................
अंत	:	निधानं दृश्यते इत्पत्रापि निपातस्या यशन्दस्य लक्षणेनोदन्तत्वात्सन्ध्य भावोनेति चेत्तदास द्योग्रमित्पत्र सन्ध्यर्थ निपात ग्रणं गृहाण

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -913** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वार्तिक अवर्ण
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	19 X 12 स०म० लिखित 13 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। पहले मोटे अक्षरों में लिखा है। अन्तिम चार पंक्तियां बारीक अक्षरों में हैं। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	कृति का विषय सूत्र रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों ननु वत्सतरार्णसित्यस्य कथं सिद्धिरिति पूर्व पक्षः उच्यते तावत् वत्सतरा ऋणमितिरियते प्रवत्सतरकम्व लवसनार्णदशभ्यः ऋणे इति वर्त्तिकेन अवर्ण ऋवर्णयो स्थाने..........
अंत	:	अथा च शसेचपस्यद्विर्वेतिवार्त्तिकेनत कारस्यथा देश विकल्पाद षृचत्वरिंशद्भपाणि ज्मयंते तद्रूपाणिमाहः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -914** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : समासे कृते

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 29 X 14 स०म० लिखित 27 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 29

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। पृष्ठ के किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है। अतिरिक्त शब्दों के मिटाने हेतु पीली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों ननु भद्हद इत्पत्त स्वरात्पराद्वकारत्परस्परेफस्याय पिद्वित्वंस्यात् उच्यते माटर कौडिपत्यायेन तद्वानादेफस्पद्वितंन यथाब्राह्मणा भोज्यंतां माष्टर कौडिन्यौ परिवेविष्टामित्पत्रवाक्यो कब्राह्मण भोजने निमित्त भूतयो र्माष्टटकौडिन्योर्भोजनं वाध्यते. ....

अंत : परिभाषयाप्रत्ययस्य ग्रहणात् यद्वा समासे कृते समुदायस्यै वार्थक त्वेन पूर्वोत्तर पदयो रनथकत्वन्न सन्धिनिषेधः

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -915** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	उोंकार विवेचन
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	24 X 15 स०म० लिखित 21 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		22
विवरण	:	पूर्ण रचना। साफ–सुथरी लिखावट। महत्वपूर्ण शब्दों पर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय उोंकार महत्व पर आधारित है।
आरम्भ	:	ननु ककारः एव कारः उोङ्कार इत्पादौहस समुदायस्य वर्णत्वा भावात् वर्णात्कार इत्यनेन कार प्रत्ययः कथम् यद्वावर्णात्कार इत्यनेन वर्ण मात्रात्कार प्रत्ययो भवति........
अंत	:	इति वतिर्त्त का भावेअ कोकरणंनसिध्येत् करोते पुनरुक्ति दोषादिति चेन्न अकार करणमित्यत्त कतेरुच्चोर्थ त्वेनरुक्ति दोषोनस्यात् उच्यते इदमेवसवचम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -916** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : श्रीमद्शंकराचार्य

टीकाकार : —

शीर्षक : देवाधिदेव स्तोत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये

आकार : 15 X 12 स०म० लिखित 12 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ है पर पृष्ठ दो—तीन स्थानों से फटा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय देव उपासना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः श्री रामय नमो नमः ।। नो ।। नमो देव देवं नमो गरुड गामी ।। नमो आदी नाथ नमो अंत्र जामी ।। १।। नमो शंख चक्र गदा पद्मधारी।। नमो मछ कछ वाराह रूप धारी ।।

अंत : नमो देव देवा वैकुंठवासी ।। इति श्री मरत्संकरा चार्य विर्चितं देवाधि देव स्तोत्र संपूर्ण ।। उों नमो उलटवेदन् सिंध नमः उों नृसिंह स्थले नृसिंह आकाशे नृसिंह पताले..........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -917** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रेण करणीयं
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 14.5 स०म० लिखित 29 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		32
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठ के किनारों पर भी लिखा है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय विभिन्न सूत्रों के निर्माण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु भवाभत्यत्र वकारे परेण्सोरा इति सूत्रेण भकारोत्त वर्त्तिनोऽकारस्यात्व कथंनस्यात् उच्यते प्रत्यया प्रत्यययोर्मध्येप्रत्ययस्ये ग्रहणमि भषया प्रत्यय स्पैव ग्रहणादात्वंन
अंत	:	सं प्रसारणं कितीत्पत्त कित्स्या नेङितीति पठनेन संप्रसारणस्य सत्वात् अतएवणादिः किदिति सूत्त व्यर्थम् उच्यते अपित्तादिर्ङि दिति सूत्रेणण दिनांङि च त्वेसति चक्रतुरित्या दौङित्यदुरि तिणकारः स्यात् तन्नि वृत्त्यर्थणादिः किदिति सूत्र मानश्य कंकरणीयम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -918** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वर्तमान त्वम्

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 13 स०म० लिखित 19 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : तेरह पंक्तियों की पूर्ण रचना। लिखावट खूबसूरत है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वर्तमान के महत्व से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों ननु वर्त्तमान त्वच नाम किं उच्यते प्रारव्या परिसमाप्तत्वं वर्त्तमानत्वम् ननु भूरस्तीत्यादौ प्रारव्या परि समाप्तत्वद्य भावात्............

अंत : उच्यते पर्वतानां स्वतो भूताद्य भादे पिल त्रयवर्त्तिनां राज्ञां भूतादि भेदभिन्नपालना दिक्रियाभेदात् भूतादि व्यवहारोस्ति ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -919** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	त्रिधा मूर्ति वाचक
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 25 स०म० लिखित 10 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		20
विवरण	:	पूर्ण रचना। लिखाई पठनीय एवं सुन्दर है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही पर संतरी रंग लगाया है। पृष्ठ नीचे से थोड़ा फटा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय ओंकार व्याख्या से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ओं श्री गणेशाय नमः ओंमित्य व्ययं ब्रह्माङ्गीकार समाधिषु ओं नाम सच्चिदानंद रूपाय ब्रह्मणे नमः यद्वाअवत्ति रक्षतीति ओम्
अंत	:	ईशः गणानामीशो गणेशः श्रीभ्यां युक्तो गणेशः श्री गशः तस्मै श्री गशाय नमनं नमः ।। १ ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -920** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रेण इकारस्य लोपः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 X 14 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		27
विवरण	:	पूर्ण रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली स्याही से लिखे शब्दों पर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सूत्रों के अंतर्गत विभिन्न सूत्रों की रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों ननु दद्यानय इत्यस्य कथं सिद्धिरिति पूर्व पक्षः उच्यते नाव दधि आनय इति स्थिति द्रयं स्वरे इति सूत्रेण इकास्य स्थानेय कारा देशा विधीयते तदनंतरं हसे.........
अंत	:	ननु हसे हस इत्यत्त संयोगांतस्य लोप इति सूत्रेण हकारस्य लोपः कथंन उच्यते सभिन्नस्य रान्नेति निषेयात्र कारात्परस्यहकारस्य लोपेन स्यात् ।। ।। राम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -921** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रं कर्तव्यम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 X 14 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		26
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखाई साफ सुथरी एवं सुंदर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय विभिन्न भक्ति सूत्रों के प्रभाव से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु विप्र कीर्णानामे कत्त राशी करणं समाहारार्थः सचग्रामाणांन संभवतद भावे दश ग्रामीति कथम् उच्यते एक क्रियायां समन्वयात्...........
अंत	:	र्विसर्ग दकारौ कुतोन उच्यते तांत सांतयोह सावस्त्यर्थे ऽपदांता वाच्येत्य नेना पदांत त्व द्विसर्गदकारौ नस्तः

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -922** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रेणाधि लोपेग्राम
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 X 14 स०म० लिखित 25 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		26
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ के किनारे पर भी सामग्री अधिक होने के कारण लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सूत्र लोप से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु नुडाम इत्यत्त उद्देशस्य वचनं पूर्ण विधेयस्य ततः परमित्युक्तत्वान्नुटः पूर्वोच्चारर्ण कुतः उच्यते नुटः पूर्वोच्चारणं प्राथम्यार्थम्................
अंत	:	ननु ग्रामणि कुलेत्पादौ एकदेशविकृत मनन्यवदिति उच्यते नपुंसकात्स्यमोलुगिति सूत्रेण धिलोपे ग्रामीणीति रूप सिद्धिः ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -923** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : जन्म पत्रिका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : – १८३१ संवत्

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 16 स०म० लिखित 22 X 17 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : लघु पर पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। रचना के दूसरे पृष्ठ पर कोई नुस्खा लिखा गया है और जन्म पत्रिका के आधार पर राशि चित्रण भी किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय जन्म पत्री निर्माण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ।।उों श्री गणेशाय नमः ।। जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धिनीकुल संपदां पदवी पूर्वपुरायानं लिख्यते जन्म पत्रिका ।।१।। संवत् १८३१ मासो त्तये मासे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे गुरुवारे तत्तद्वादशीचत्यः ५२/६/श्लेषा नक्षत्रं चत्यः ५१ । प.४८

अंत : शंकुस्अंगुलमादाय छाया राम समचितः चतुषप्टी हरे रभसं शेषां केचपला स्मृता ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -924** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : सुखबोध

टीकाकार : –

शीर्षक : तर्क संग्रह

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 13 स०म० लिखित 24 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 26

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग । पृष्ठ के पीछे भी कुछ पंक्तियां हैं जो रचना का हिस्सा तो नहीं हैं उनमें स्तुति है।

विशेष विवरण : रचना का विषय तर्क पद्धति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीमते रामानुजाय नमः । उों श्री श्री गणेश सरस्वती गुरुद्विज हरि तत्व विद्भक्ति मद्भयो नमः भगवद् रूप निखिल चराचर प्रपंचाय नमः श्री हरिं भगवदूपान् गुरु.............

अंत : तत्र कला नामित्यधिकारिक धनं सुखवोधा येति प्रयोझन निर्देशः तर्का सम्पगद हरंतेऽस्मि त्तित्यनेन तर्का विचारणे च राःस सप्त पदार्थ विषयाः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 925** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : रामाश्रमाचार्य्यः

टीकाकार : –

शीर्षक : मङ्गलंत्रिविधम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 20 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 30

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखन हेतु काली स्याही का प्रयोग किया है और पूर्णविरामों के लिए लाल स्याही प्रयुक्त की है। लिखाई साफ एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ग्रंथ लेखन विधि से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों । ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थांनेत च मङ्गल माचरणीययिमत्ति शिष्टाचारः ।। तत्त मङ्गयंत्रिवियम् । आशीर्वादात्मकं नमस्कारात्मकं वस्नु निर्द्देशात्मकं च अत ग्रंथ कर्ता रामाश्रमा चार्य्य ग्रन्थादौनमस्कारात्मकं मङ्गलं शिष्य शिक्षायै निवध्नाति नमस्कृत्येत्पादिना ।।

अंत : कमल वनोद्घाटनं कुर्वते येमयूषाइति शेषः श्रत्तक ।। मलवनोद्घाटनरूप फलस्य कर्त्तृभूत मयूषा गामित्वे ।। मिकुर्वते इत्यात्मने पदं जातं तथैव मिहापिवोध्यम् ।। राम।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -926** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री ब्रह्मसूत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–82 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 22 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषद्–विचारधारा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों पूर्वस्मिन्या देतीवोपकरण भूत भौतिकानि ब्रह्मणों जायंत इत्युक्तं तदुप जी व्यत दुपन्ति स्यतीस्य संसार प्रकारं वैराग्यार्थ नित्रूययितं देहांत रारं............

अंत : इति श्री ब्रह्मसूत्र वृत्तौब्रह्मामृत वर्षिण्यांत्प्ती यस्या ध्यायस्चतुर्थः पादः अधयाश्रव समाप्तः ३ ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -927** भाषा : हिन्दी–संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री विश्वनाथ पंचानन

टीकाकार : ठाकुर सिंहस्य

शीर्षक : कारिका वली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६३८ श्रा.शु.११

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 10 (पृष्ठ अंकित नहीं हैं) चित्र --

हाशिया :

आकार : 26 X 17 स०म० लिखित 18 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 17–18

विवरण : एक सौ अठसठ दोहों की पूर्ण रचना। लिखावट साफ एवं पठनीय है। कहीं–कहीं पानी पड़ने से स्याही फैल गई है। पृष्ठ पुराने भी पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय जीवन नीति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ऊँ श्रीः कारिका वली

नूतन जलधर रुचये गोपबघूटी दुकूल चौराय ।। तस्मै कृष्णाय नमः संसार मही रुहस्य वी जाय ।।१।।

अंत : तदैवै पदमित्यादौ साजातीयेपि दर्शनात् ।। तस्माद नित्या एवेनिवर्णाः सर्बेमतं हिनः ।।१६८।। इति श्री विश्वनाथ पंचानन कृता कारिकावली समाप्ता ।। हस्ताक्षराणी ठाकुर सिंहस्या सं. १६६८ श्रा.शु. ११ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -928** भाषा : हिन्दी–संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गुरु नानक वि

टीकाकार : चंद्रभान पंडित काश्मीरी

शीर्षक : जपुजी का टीका

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८६६ ज्येष्ठ सुदी एकादशी

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–103 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11–13

विवरण : पूर्ण टीका । जपुजी की टीका एवं व्याख्या कश्मीरी पंडित द्वारा की गई है। लिखावट सुन्दर है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय जपु जी से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों श्री सरस्वत्यै नमः उों कृष्म चरण कंज श्री स्वाश्रये क्षिप्प मांहिसा ध्यातारं कुरुते नित्यं निमग्नम् पितत्यदे १

अंत : इति श्री सर्वेश्वर श्री कृस्म मूर्ति श्री गुरु नानक तृतीय स्थान...............शुभमस्तु सर्वजगतुा संवत! १८६६ ज्येष्ठ सुधी एकादशी समाप्त होयी टीका जपजी दी लिखितं चंद्रभान् पंडित कश्मीरी लिखाई भावाबोध सत्तूप ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -929** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : दत्तात्रेय शर्मणा

टीकाकार : —

शीर्षक :

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८८५ कार्तिक वदि ११

रचनाकाल : —

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 14 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 12 स०म० लिखित 28 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : चौदह पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर लाल रंग लगाया हुआ है। रचना खुली हुई है। एक पृष्ठ पर जंत्र भी बना है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मंत्र रचना एवं स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री कृष्माय यनमः केलाश शिखराानं देवदेवं महेश्वरं दत्तात्रेयं परिपृछशकरं लोकशंकरं १ कृतांजै पुटो भूत्वापछते भक्ति वत्सल भक्तानां च हितार्थय कल्पतंत्र....

अंत : इतिश्री दत्तात्रेय तंत्रे ईश्वरे दत्तात्रेय संवाद सिंह व्याघ्रादि निवारणं द्वबंशतिमः पटलः समाप्तः २२ समाप्तमिंद तंत्रंश्रुभमस्तु श्री रामचन्द्र श्री रामचंद श्री कृहम श्री राम

लिखितं मधुसूदन शर्मणा ब्राह्मणेन संवत् १८८५ मिति कार्तिक वदि ११

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -930** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	पद्म पुराण उत्तर खंड
क्या हस्तलिखित / नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–51 चित्र : पहले पृष्ठ पर शिव पार्वती का बैल पर आसीन रंगदार चित्र
हाशिया	:	चारों ओर संतरी तथा काली स्याही के हाशिये
आकार	:	14 X 9 स०म० लिखित 10 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	6
विवरण	:	इक्यावन पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है। रचना संवादात्मक है। शिव–पार्वती, कृष्ण–ऋषि मार्कण्डेय के संवाद हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय पुराणों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ओं नमः शिवाय ।। ओं श्री वेदव्यास उवाच ।। औं एकदामुनयः सर्वेद्वारिका इष्टमागताः ।। वसुदेवं वसौत्कदाः कृस्म दर्शन लालसाः ।। १ ।।
अंत	:	इति श्री पदृमपुराणों इत खंडेव कारक संहिताया कृष्ण मार्कडेय संवादो वेद साराख्य परम दिव्य सहस्र नाम स्तोत्रं सम्पूर्णं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (संग्रह–क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : बीजमंत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पंच पृष्ठों की रचना। जिल्द की पहली रचना। लिखाई ठीक है। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं। महत्वपूर्ण स्थलों पर काले के ऊपर संतरी रंग लगाया हुआ है। संग्रह में कुल तेरह रचनाएं हैं। अलग–अलग विषयों और अलग–अलग रचनाकारों के द्वारा लिखई गई हैं। लिखाई भी अलग–अलग है। दूसरी रचना अपूर्ण है क्योंकि उसके पृष्ठ फटे हुए हैं और जुड़े हुए हैं तथा पहला पृष्ठ नहीं है। किसी रचना की लिखावट सुन्दर एवं किसी की ठीक ही है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ तिनके गपद महामंत्रस्य नारायण तंसि नैंतिनेति श्रुति छंदः सर्व विश्वेश्वर हरितोयं देवता सर्व प्रत्यय साक्षिण इति बीचमंत्र आवाहन

अंत : सिहासनोहं शिवोहं भैरवोहं विष्श्श्मु सूस्योहं आत्मा परिपर्णेहं इति सिंहासनयो गवद महामंत्र सपूर्ण श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कर्म विपाक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १८८८ (१८८८) ज्येष्ठ वदी रामनवमी

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 5 (पृष्ठ रचना पर अंकित नहीं हैं) चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : अपूर्ण रचना

विशेष विवरण : रचना का विषय

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। पूर्वज– – – – (नोट : आगे रचना जुड़ी है)

अंत : इति श्री कृष्मार्य संवादे कर्म विपाक संपूर्ण ।। अथ संवत् १८८८ ।। ज्येष्ठ वदी अष्टमी शुक्रवार संपुरणं राम राम राम शिवं श्रुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री पुष्पदंत्त गंधर्वराज

टीकाकार : बावा नारायण गिर

शीर्षक : महिम्नाख्यं स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८७८

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–21 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये खींचे हुए हैं।

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग। पहला पद अधूरा है। क्योंकि बीच से पृष्ठ नहीं है।

विशेष विवरण : रचना का स्तोत्र पूजा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : षयः पदेत्वर्वाचीने पतति नमनः कस्यन वचः ।।2।। मधुस्फीतावाचः परम मृतं निर्मित वत रहव ब्रह्म निवक्तवा गपिसुद्‌गुरो र्विस्मय पदं ।। ममत्वे तांवाणी गुण कथ.....

अंत : भवति भूतयतिर्महेश ।। ४०।। इति श्री पुष्पदंत गंधर्वराज विरचितं महिम्नाख्यं स्तोत्रं संपूर्णं।। शुभं शक संवत ।१८७८।। समै चैत्र मासे श्रुक्लपक्षे श्रुर्भतथो प्रत्पहायं इदं पुस्तकं लिख रामधन पठनार्थ वावा नारायण गिरश्रुभं मंगलं दहात् ।। राम श्री राम श्री राम श्री राम ।। श्री राम शिवायन्म गौरी संकरायम । श्रुभे ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (घ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	शंकराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	श्री दक्षिण मूर्ति स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	2–26 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		7
विवरण	:	संग्रह की चौथी पूर्ण रचना
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्तोत्र से संबंधित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय ।। उों नमः शंकराय नमः ।। श्वंदर्पण दृश्यमानन गरां तुल्ययनि जांतर्गतं परय आत्म निमाययावहिटि वोहतं
अंत	:	इति श्री शंकराचार्य विरचित श्री दक्षिणा मूर्ति स्तोत्र ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (ङ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : विज्ञाननौ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 26–29 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही के हाशिये

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : पूर्ण

विशेष विवरण : रचना का विषय स्तोत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ।।१।। उों नमः ।। श्री गणेशाय नमः ।। तपो जग्य दानादि भिशुइवुद्विर्विरक्तोन् पादपदे तुछ– – – – – –

अंत : समासक्तचित्तो भवेविस्मुर त्रैव वेद प्रमाणात् ।।६।। इति श्रीमत्शंकराचायरू विरचितं विज्ञानमौ समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (च) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कोपीन मंचक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 29–31 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिये

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय स्तोत्र से संबंधित है।

आरम्भ : उों नमः ।। वेदांत वाक्येषु सदा रमंतो भिक्षान्न मात्रेण चतुष्टि मंतः अस्येकवंट करुणै कवंतः कौपीन वंतरव भाग्यवंतः ।।१।।

अंत : परिभ्रमंतः कौपीनवंत खलु भाग्यवंत ।।५।। इति कोपीन मंचक संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (छ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	श्री महामानद्र सरस्वती
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	शिवराम स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	31—34 चित्र --
हाशिया	:	लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना स्तोत्र से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविध तापनि वारण हे विभो अजजने.........
अंत	:	इति श्री महामानंद सरस्वती विरचितं शिव राम स्तोत्र समाप्तं शिव शिव शिव हरे शिव हरे शिव हरे ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -931** (ज)	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	—	
लेखक	:	श्रह स्मिू	
टीकाकार	:	—	
शीर्षक	:	वापीह विहमो	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	—	
रचना–स्थान	:	—	
पृष्ठ	:	34–38 चित्र --	
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया	
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7	
विवरण	:	संग्रह की आठवीं रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग हुआ है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्तोत्र से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। कस्त्वं शिशोकस्य कुतो सिगंताकिं नामतेत्वं कुत आगतो सिएतद्व दत्वं ममसुप्रसिद्धमत्युतये................	
अंत	:	इति श्री हस्ताम विरचितं सम्पूर्ण ।। मनश्वरैलक्षुराहे विमुक्तः स्वयं यामनश्वरादे र्मश्चक्षुरादि मनश्वरक्षुरादेरगम्य स्वरूपः सनित्योप ।।	

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (झ) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	नारायणाय परिष्णत्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	38—41 --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही से
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	संग्रह के अंतर्गत तीन पृष्ठों की पूर्ण रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय नारायण स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः ।। अथ पुरुषोहवै नारायणोऽकामयत प्रज्ञाः सृजेयेति नारायणत्प्राणोज्जझते मनः सर्वेङियाणि च स्वंवायुर्ज्योतिराथः........
अंत	:	त्वंच गछत्यम्त त्वं च गछतीति उों मित्ये इति पश्न्नारायण पत्युपरिखात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (ञ) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	नारायणोपनिषद्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	41—43 --
हाशिया	:	दोनों तरफ लाल स्याही के हाशिये
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों तदग्रेव्याहरेन्तमैः उोमित्येकाक्षरं नम इति ईक्षरे नारायणायेति पंचाक्षराणि एतद्वै नारायणस्या पृाक्षंट पदंयोह वैनारायणस्या.....................................
अंत	:	नारायणे सासुज्य मा.ोति नारायणा सामुज्य मात्रौग्नि । इत्यथर्व वेदे नारायणो पनियत् संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931** (ट) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	श्री शंकराचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	ब्रह्मनामावली स्रोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	44–48 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्रोत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	शुभं मंगलं ददात् ।। श्री शिवो जयति सहच्छवण मात्रेण ब्रह्म मानंयतो भवेत ब्रह्मनामावली माला सर्वेषां मुक्ति सिद्धये १
अंत	:	इति श्री मच्छकराचार्य विरचित ब्रह्मनामावली स्रोत संपूर्णः नमः रामयनमः ।। शुं

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -931**(ठ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : गोसांई बलधेगिर

टीकाकार : –

शीर्षक : महाभारत शत सहस्र संहिता

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : संवत् १८८८ (1888)

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 26 (रचना पर पृष्ठ अंकित नहीं है।) चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिये

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : संग्रह की दूसरी अन्तिम रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुन्दर एवं पठनीय है। यह रचना गोसाईं बलधेगिर ने गिरधारी लाल के पठनार्थ लिखी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत के शांतिपर्व से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बंधनात् ।। विमुच्यतेन नमसतस्मै विस्मवे प्रभ विस्मवे ।।१ ।।

अंत : ब्रह्ममा हत्यादि कं सापा सर्व पापं विनश्यति ।। ६३ ।। इति श्री महाभारते शत सहस्र संहितायां शांति पर्वणि..........श्क्रवाशरायणतां संवत् ।। १८८८ ।। श्रुभींमस्तु ।।.......श्रुभं मंगलं ददात् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 931** (ड) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : विनाशं हरिपीडे स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 10 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ–सुथरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय स्तोत्र रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों स्तोष्ये भक्तया विस्मु मनादिं जगदादिंरूस्मि न्रेतत्संस्टति चक्रं भ्रमतीत्थं यस्मिनृदेष्टेनश्यति...........

अंत : इति श्री मच्छंकराचार्य विरचितं छरिमी स्तोत्रं समाप्त् श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -932** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कृष्णकथा

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–38 चित्र --

हाशिया :

आकार : 15 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : अपूर्ण रचना जो पृष्ठ दो से आरंभ होती है और पृष्ठ अड़तीस तक चलती है। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। कई शब्द स्याही उड़ जाने से पठनीय नहीं। रचना पृष्ठ 38 के बाद भी चलती है जो कि अनुपलब्ध है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ....उवाच ।। श्वक्त्वाय धर्माण्य शेषेणपावनिनि सर्वशः ।। युधिष्ठिरः शांनृनतं पुनरेवाभ्य भाषतः ।। युयधिष्ठिर उवाच ।।

अंत : यत्र संपूजते हरिः ।। उपपां तंवि जानीय गोबिदा रहिता गमं ।। ५५।। स ..... पुयत्फलं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -933** संग्रह–क भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्री भगवद्गीता

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : नकल है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–131 चित्र --
हाशिया	:	नहीं हैं
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 11 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6
विवरण	:	संग्रह की पहली पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	श्री कृष्ण के साथ सम्बन्धित है। कृष्ण–अर्जुन का संवाद दूसरी ओर संजय धृतराष्ट्र के सम्मुख गीता वर्णन कर रहा है। इसके अठारह अध्याय हैं।
आरम्भ	:	उों नमो नारायणाय ।। उों अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य ।। श्री भगवान्वेद व्यास ऋषिः ।। अनुष्टुप छंदः ।। श्री कृस्मः परमात्मा देवता श्शोच्यान नुशोचस्तं प्रज्ञावादांश्च भाषसे इति वीजम् ।।
अंत	:	इति श्री भगवद् गीता सुपनिषत् ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जन संवादे मौक्ष संन्यास योगोनामाष्टदशोध्यायः ।। १८ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -933** संग्रह–ख भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री विस्नोनाम सहस्रं (शांति पर्व)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नकल है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–33 चित्र --

हाशिया : नहीं हैं

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना।

विशेष विवरण : महाभारत के शांति पर्व के अंतर्गत उत्तम शासन का वर्णन करने के साथ–साथ विष्णु के सहस्र नामों की महिमा का गान किया है।

आरम्भ : उों नमो नारायणाय ।। उों यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसारबिंदनम् ।। विमुच्यते नमः स्तस्मै विस्नुवे प्रभवि नमः समस्तभूतानाभादि भूताय भूत ।।

अंत : व्रह्महत्यादिकं पापं सर्वपापं विनश्यति ।। १..६घ इति श्री महाभारते शतसहस्रां संहितायां । वैयासिक्यो शाांतिपर्वणि उतमानुशासनेदानधर्मोतुरे श्री विस्मोनाम सहस्रं समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -933** संग्रह–ग भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : स्तवराजः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : नकल है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–21 चित्र --

हाशिया : नहीं हैं

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 6

विवरण : संग्रह की तीसरी पूर्ण रचना।

विशेष विवरण : शरशैय्या पर लेटे हुए भीष्म पितामह कृष्ण की स्तुति कर रहे हैं। रचना का विषय महाभारत के साथ सम्बन्धित है।

आरम्भ : ओं नमः परमहंसाय ।। जनमेजय उवाच ।। ओं शर तल्ये शयानुस्तुभरनो पितामहः ।। कथमुत्सृष्टवां देहं कंचिद्यो गमधारत् ।। वैशंपायन उवाच ।।

अंत : स्तवराजः समाप्तोयं विस्मोरदत कर्मणः ।। गांगेयेन पुरागीत्तोमहा पातक नाशनात् ।।२७।। इति भीष्मस्तवग ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -933** संग्रह–घ भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	अनुस्मृति (शांति पर्व–महाभारत)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–12 चित्र --
हाशिया	:	नहीं हैं
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 11 X 5 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		6
विवरण	:	संग्रह की चौथी रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत के शांति पर्व से सम्बन्धित है। संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।
आरम्भ	:	उों नमो नारायणाय ।। उों शतानीक उवाच ।। महामहाप्राज्ञसंशास्त्र विशारद ।। अक्षीणकमं बंधस्त पुरुषो द्विजसत्लमः ।। मरणेयं जपे जाप्यं पंच भावमान स्मरेत ।।
अंत	:	इति श्री महाभारते शतसाहस्यां संहितायां शांति पर्वणि विस्मु धर्मोत्तरेषु अनुस्मृति संमपूर्ण समाप्तम् ।। शुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -933** संग्रह–ङ भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : गजेन्द्र मोक्षणं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है :

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—18 चित्र --

हाशिया : नहीं हैं

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 5 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 6

विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना। रचना का अन्तिम पृष्ठ नहीं है पर बाद में एक पृष्ठ पर काली स्याही से इंद्राक्षी स्तोत्र मंत्र लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत के अंतर्गत गजेन्द्र मोक्ष से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय ।। उों शतानीक उवाच ।। मयाहि देवदेस्य विस्मोरमित तेजसाः ।। श्रातासंभूतयः सर्वागदतस्तव वसुव्रत ।।

अंत : सर्व देव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति ।।६0।। गीता सहस्रनामैव स्तवराजोरमनुस्मृतिः । गजेन्द्र मोक्षणं.........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -934** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : आत्मबोध

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया :

आकार : 24 X 14 स०म० लिखित 16 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : 20 पृष्टों की पूर्ण रचना। पृष्ठ पुराने पडऋ चुके हैं। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः शतमुखपूजित पादं शतपथ मनसोप्प गोचराकारं विकसित जल रुद्र नेत्र मुमावामांकश्रये शंभुं १ इह भगवान शंकराचार्य.........

अंत : तस्मादात्मतीर्थे स्नात स्पनकिंचिदव शिष्यत इति भादः ६७ इति श्री मच्छकराचार्य कृत आत्मबोध प्रकरणं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -935** (संग्रह–क) भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	कश्यप
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वामन स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1–3 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 14 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		8
विवरण	:	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्तोत्र (पुराण) से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। उों कश्ययप उवाच नमो नमस्तेऽखिल कारणाय नमो नमस्ते ऽखिल पालकाय नमो नमस्ते नर नायकायं नम दैत्य विनाशकाय १
अंत	:	धनारोग्यान्न संतान तस्य नित्योत्सवो भवेत १ इति श्री पद्मपुण्णे कार्तिक महात्म्ये कश्ययप कृत वामन स्तोत्रं सपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवापराध क्षमापन स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–4 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 14 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : संग्रह की दूसरी रचना। पहली रचना के बाद भोजनायौ पंचशून्य दोष निवारण हेतु यज्ञ सम्बन्धित पृष्ठ लगा है उसके बाद फिर दूसरी रचना आरंभ होती है। लिखाई ठीक ही है। पृष्ठ चार पर तीन अंक लिखा है जबकि नं0 तीन खाली है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिवस्तोत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों भोजनादौ पंचश्शून्य दोषनि वारणार्थ पंचय ज्ञानहं करिये दर्मैसमूद्रा उदके नाम्युक्षः शांडलि गोत्राय पावक नाम्नै वैश्वान राय आवहियें......... उों अथ शिवा पराध क्षमापन स्तोत्रम् ।। उों आदौकर्म पसंगात फलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितंमां...

अंत : इति श्रीमत् शंकराचार्य विरचितं शिवा पराधक्षमापन स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री परमहंस परिव्राजकार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री शिवभुजंग प्रयात स्तोत्रं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8–13

विवरण : संग्रह की तीसरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठों पर पानी पड़ा लगता है जिससे स्याही बिखरी है। पहले पृष्ठ पर आठ पंक्तियां हैं दूसरे पर नौ फिर दस तथा अन्तिम पर तेरह पंक्तियां हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव उपासना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों अथ शिव भुजंगप्रयात स्तोत्रम् ।। गलवान गंडं मिलदंभग खंडं चलचाक शुंडे जगत्राणशौंडम् ।।.

अंत : अकंठे कलंकादनगे भुजगादपाणो कपालाद भालाऽनलाक्षात् अमौलौ शशांकाद वामे कलत्रा देहं देवमन्ये नमन्ये नमन्ये ।। इति श्रीमत्परहंस परिव्राजकाचार्य विरचितं श्री शिवभुजंग प्रयात स्त्रोतं सपूर्णम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (घ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री नृसिंह कवचं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 x 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 8

विवरण : रचना पूर्ण है। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया है। लिखावट साफ एवंसुन्दर है। आरंभ और अंत तथा पूर्णविरामों के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना नृसिंह स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्रीमते रामानुजाय नमः ।। उों अनेक मंत्रके टीनां नृसिंहनाम उच्चरेत् ।। अन्योविधिर्नरक्षायां वियरोग निवारणं ।।१।। उों अस्य श्री लक्ष्मी–नृसिंह मंत्रकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः ।।

अंत : चूर्णय चक्रेण गदाय वज्रेणा भस्मीकुरु कुरु श्री श्री फ्रीं द्रीं क्षीं क्षीं नृसिंहाय नमो नमः ।। इति श्री नृसिंह कवचं संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ङ) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	नीलकंठ आचार्य
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शिवाष्टक स्तोत्रं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	4–6 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7–8
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों आदि शंभु स्वनूप मुनिवरचंद्र शीष जटाधरं ।। रुंडमाल विशाल लोचन वाहनं वृषभ ध्वजं ।।........
अंत	:	श्री नीलकंठहि माल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरं ।।६।। इति श्री नीलकंठाचायरू विरचित शिवाष्टकं सम्पूर्ण ।।शुभं।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(च) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : द्वादश ज्योति लिंग स्तोत्रम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः

विवरण : इस रचना में केवल काली स्याही का प्रयोग हुआ है तथा लिखाई भी अलग है।

विशेष विवरण : रचना का विषय स्तोत्र स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों द्वादश ज्योति लिंग स्तोत्रम उों सौराष्ट्रे देशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चंद्रकलावतंसम् ।। भक्ति प्रदानाथ कृपा वतीर्णतं सोमनाथं शरण प्रपद्ये ।।१ ।।

अंत : स्तोत्रं पठित्वामनुजोऽति भत्रया फलं तदालोक्य निजं भजेच्च ।।१३।। इति श्री द्वादश लिंग ज्योति स्तोत्रम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (छ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : पुष्पांजली

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–8 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ, स्पष्ट एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय देव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथ पुष्पांजली लिषते ।। उों भगवती भगवत्पद पंकजं ।। भ्रमर भूत सुरासुर सेवितं ।। सुजन मान सहंस पटिअकृतं ।। कमलयात लया निभृतं भजे ।।१।।

अंत : परमपारमयासतिषेव्यते परिजतोरिजनोपिचतं भजेत ।।२८।। इति श्री पुष्पाजंली समाप्ता ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ज) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : महामृत्युंजय कवच

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—5 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना शिव स्तुति से सम्बन्धित

आरम्भ : उों नमः शिवाय ।। श्री भैरव उवाच ।। उों शृणष्ठ परमेशानि कवचं मन्मुखोदितं ।। महामृत्युंजयस्यास्पन देवं परमाद्भुतृ ।।.....

अंत : गोप्पं सिद्धि प्रदंगुरय । गोपनघं स्वयोनिवत् उों स्वः भुगेभूः उों जंसः हौं उों महामृत्युजयः ।। इति श्री महामृत्युंजय कवचं संपूर्णं।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(झ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : श्री दशवदन

टीकाकार : —

शीर्षक : शिव तांडव

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 1–5 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव कृत्यों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। नमः शिवाय ।। जटाकटाह संभ्रम मन्निलिंप निर्कंरीविलोल वीचिवल्लरी विराजमान मूर्द्धनि ।।

अंत : जनावधूत जल्पना विमुक्तवाम लोचना विवाह काल कधनी शिवेति मंत्रभूषणं ।। जगजयाय जायताम् ।। १५।। इति श्री दशवदन कृतं शिव ताडवं सम्पूर्णं।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(ञ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकरस्य चरित कथामृत

टीकाकार : –

शीर्षक :

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–3 पृष्ठ पर संख्या नहीं है। चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : रचना पूर्ण पर किसी दूसरे की लिखावट में है। लेखनार्थ केवल काली स्याही का प्रयोग । शब्द जुड़े होने के कारण पढ़ना कठिन भी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव संहिता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नागेंद्र हाराय त्रिलोचनाय भस्माबरागाय महेश्वरीय देवाधिदेव देवाय गंबराय तस्मै मकारानि नमः शिवार्य १ मातंगचर्माबट भूथणाय........

अंत : शंकरस्य चरिता कथामृतं चंद्रशेषक गुणानुवर्णितं नीलकंठ तव पादसेवनं संभवंतु मम जन्म जान्मनिः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(ट) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भीष्मस्तवराज
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—20 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	बीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गयाहै। लिखाई सुंदर एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत पर आधारित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। जनमेजय उवाच ।। उों शरतल्ये शयानस्तु भारतानां पितामहा कथमुत्रृष्टवान् देहं किंचियोग मुदारयत ।। वैशंपायन उवाच ।।
अंत	:	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैयासिक्या शांतिपर्वणि भीष्मपितामह प्रौक्तं भीष्म स्तवराज समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ठ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : अनुस्मृति (शान्तिपर्व)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—11 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। शतानीक उवाच ।। उों महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्‌ विशारद अक्षीण कर्म वंधुस्तु पुरुषों जसत्रम् ।।१।।

अंत : केशवास्य कथं पुण्यं ध्यायतै वैस्मवोतथा।।७५।। इति श्री महाभारते शतसहस्र संहिताय वैयासिकया शांतिपर्वणि अनुस्मृति संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (ड) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	गजेंद्रमोक्षणं नाम
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–27 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। शतनीक उवाच ।। उों मयाहि देवदेवस्य विस्मोरमित तेजसः ।। श्कत्वा संभूतयः सर्वागदत स्तवसुव्रत ।।१।।
अंत	:	गजेंद्र मोक्षणं पंचरत्नानि भारत ।।६१।। इति श्री भारते शत साहस्रय संहितायां वैयासिक्यां शांतिपर्वणि गजेंद्र मोक्षणं नाम सम्पूर्णम् ।। श्रुभं ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(ढ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : मोक्षं प्रयाति शिवशंकर

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : दूसरी लिखावट में केवल काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमः शिवाय प्रभु प्राणनाथ विभुं विश्वनाथ जगन्नाथ सदानंद गाथं भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनांथं शिव शंकर शंभु मीशानमीडे१

अंत : राम प्रमेयं सदानंद गेहं प्ररबह्म वह्ममादिभि वधूम शिस्रवयः प्रभात........मित्र कलत्रं विचित्रं से मासाद्य मोक्षं प्रयाति शिवं शंकरं 0 इति ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(ण) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री वेदोक्त शिवार्चन पद्धतिः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–20 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 7

विवरण : पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। उों याते रुद्र शिवात नूर द्योरा पापकाशिनी ।। तयानस्तु न्वा शन्त मघा गिरि शत्राभिचाक शीद्वि ।। इति शिखायां ।।१।।

अंत : उों भगवन्महोदवा क्षमस्वेतित्त विसर्जनम् ।। इति श्री वेदोक्त शिवार्चन पद्धति संपूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935** (त) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : परम शिवसहस्रनामं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—32 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 8

विवरण : पूर्ववत् ।

विशेष विवरण : रचना का विषय पद्म पुराण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। श्री व्यास उवाच ।। एकदा मुनयः सर्वे द्वारिकादृष्ट मागताः ।। वासुदेवं चरोत्कंठा कृस्मदर्शन लालसः ।।

अंत : पिशाचस्य विनाशाय जप्रव्यमिदमुझमं ।। नाम्नां सहस्रं नानेन समंकिंचित विद्यते ।। ७६।। इति श्री पद्मपुराणे उझरखंडे विलकेश्वर श्री कृस्म मार्कंडेय संवादे परम शिव सहस्र नामं सम्पूर्णम् ।। श्रुभं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(थ) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री व्यास

टीकाकार : –

शीर्षक : विश्वानाथाष्टक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : पूर्ण रचना। किसी अन्य लिखावट में लेखनार्थ केवल काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट ठीक है।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत के अंतर्गत शिव से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों अथ विश्वनाथाष्टकप्रारम्भः उों गंगा तरंग रमणीय जटाकलापं गौरी निरंतर विभूषित वामभागं ।। नारायण प्रियम नंगमदापहारं ।। वाराणसी पुरपति भज विश्वनाथम् १।।

अंत : व्यासाष्टक मिदं पुण्ययः पठे शिवसन्निधौ ।। शिव लोक भवाप्रोति शिवेन सहमोदते ।।१०।। इति व्यास कृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -935**(द) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शिवनामांवल्पष्टक प्रारंभ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 16 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : संग्रह की अन्तिम अपूर्ण रचना। रचना आगे भी चलती है पर पृष्ठ साथ नहीं हैं। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों शिवनामावल्पष्टक प्रारम्भः ।। हे चंद्र चूड़ मदनांतक श्रूतपाणे स्थाने गिरिश गिरिजे शमहेशंभो।।

अंत : श्री मत्महेश्वर कृपा मपेहे दयाला हे व्योम केश...............................

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -936** (क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : स्तोत्र रचना

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1–110 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया

आकार : 15 X 8 स०म० लिखित 12 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : रचना का पूर्वाद्ध पूर्ण रचना 110 पृष्ठों की है। लोनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। कहीं पर केवल काली स्याही प्रयुक्त की है। पृष्ठ बहुत पुराने पड़ चुके हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय देव स्तुति से सम्बन्धित है। इस रचना में लगभग अट्ठाईस स्तोत्र हैं जो विभिन्न विधियों तथा देवी–देवताओं से सम्बन्धित हैं।

आरम्भ : ।।६0।। लक्ष्मीर्महस्तुल्य सती प्रवृद्ध काली लोविरतोशृतो जरारूजा जन्महता रह तापा श्र्फणे राम गिरौ र गिरौ १।।

अंत : अग्निवौरतर्यनास्ति ।। र्नुद्री श्रीघंटा कर व्ये नमोस्तुते स्वाहा ४ ।। इति श्रीर्नुघंटा करणा स्तोत्र समाप्तम् ।। श्री श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -936** (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	औषदांनो मंत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—5 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर लाल स्याही से हाशिये
आकार	:	15 X 8 स०म० लिखित 12 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	संग्रह की दूसरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना के हाशिये भी कहीं कहीं लेखनार्थ प्रयोग किए गए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय आयुर्वेद से सम्बन्धित है। कई नुस्खे बताए गऐ हैं। विभिन्न रोगों के लिए मंत्र एवं दवाई के प्रयोग पर बल दिया है।
आरम्भ	:	सश्री पिपल मूल लौंग ।।र्दप।। हरिद्वार निंबपत्त३ मिरच ४ नागरमोथे ५ बायविडंग ६ सं व ७ सोयाच्चिता ६ हरडै १0 पाव ११ पित्त पापडा १३ वावची ४ चव ५ ए औषदानो मंत्र पढै एक एक औषधनौ उैक्षा क्षी क्षं स्वाहा ए मंत्र साथ फेखारी ....
अंत	:	जाइ ६१ विसूची रोग अजा दुग्ध अथवा घृत झझजा वैमिचीं जाइ अपर सर्वरोग जाइ ।। इति प्रभाव तो वही गुण ं।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -936** (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री भौवी साजन स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर काली स्याही से हाशिया

आकार : 15 X 8 स०म० लिखित 12 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13

विवरण : संग्रह की अन्तिम रचना । लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। रचना का आरंभ मोटे अक्षरों से है और बाद में अक्षरों का साईज बारीक कर दिया गया है। अंत में पांच पृष्ठ खाली हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय स्तोत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : समकरण स्वामि जगतनामी आदिकर्ता पुणहरं स्फट इंएलंफनिद्ववदत सकल अघहट जिनकां । प्रभा ज्ञानसागर गुनहि अपार आदिनाथ......

अंत : गुनकद कही नीन दशनिथ भम कोफज नगर फगुव सभ नहीं करजौर कै मुनमै घविनै चद् सरणास बजिने स्वरे सव २५ इति श्री भोवीसाजन स्तोत्रं संपूर्ण ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -937** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : श्रीविस्मोर्नाम सहस्रं (विष्णु सहस्रनाम)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १६२८

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—46 चित्र --

हाशिया : दोनों ओर लाल—काली स्याही के हाशिये।

आकार : 13 X 8 स०म० लिखित 10 X 6 स०म०

पंक्तियां : 6

विवरण : छियालीस पृष्ठों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। बीच—बीच में लाल स्याही पूर्ण विरामों तथा अन्य के लिए प्रयुक्त किए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है। विष्णु पूजा की विधि एवं सहस्र नामों की चर्चा की गई है।

आरम्भ : उँ श्री गणेशाय नमः ।। उों यस्यस्मरण मात्रेण जन्म संसार वंधनात् विमुच्यतेनमः स्तस्मे विस्मेव प्रभु विस्मवे ।।१।। वैशंपायनुवाचं ।।

अंत : सर्वपाद विनिर्मुक्तो विरमुलोकं सगछति १६४ इति श्री महाभारतेशतसहस्र संहितायां उतमानुशासने शांतिपर्वणि दानधर्मोतरे श्री विघ्मोर्नाम सहस्रं संपूर्णम् शुभं भूयात् मीतिछि भाद्रपद कृष्णा १ संवत् १६२८ का

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -938** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	श्रीमद्भगवद्गीता
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—177 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	17 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		5
विवरण	:	संग्रह की पहली रचना। काली—लाल स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लिखावट साफ एवं सुन्दर है। संग्रह में चार रचनाएं हैं प्रत्येक के बाद खाली पृष्ठ है फिर नई रचना का आरंभ है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय श्रीमद् भागवत गीता से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय यनमः ।। उों नमो भगवते वासुदेवाय उों अस्यश्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य श्री भगवान्वेदव्यास ऋषिः ।। अनुष्टप छंदः ।।
अंत	:	तत्रश्री विजयोभूतिर्फ्रवानीर्तिमतिमर्म ७८३ ।। श्री भगवद्गीत सूपनिषद् ब्रह्मविद्यायां योगशास्रे श्री कृष्मार्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगानाम अष्टदशोध्यायः ।।१८श्रुभम् ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -938** (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : गांगेयेनपुरागीतो (भीमस्तुति)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—29 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 5

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों जनमेजय उवाच शरतल्येशयानस्तु भरतानां पितामह। कथमुत्सृष्टवान् देहं किं वियोगधायत् ।।१।। वैशंपायनुउवाच

अंत : लाघसुरकुल निहंता प्रीयतां वासुदेवः ।।२६।। स्वतराजः समाप्तोयं विस्मोराद्भूत कर्मणाः ।। गांगेयेन पुरागीतो महापातक नाशनः ।।२७।। इति श्री महाभारते

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -938**(ग) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	अनुस्मृति

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—17 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	17 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		5
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। उों शतानीकोदा उों महातेतो महाप्राज्ञ सर्वशासु विशारद ।।
अंत	:	इति श्री महाभारत शत साहस्रयां संहितायां शांति पर्वनि विस्मुधर्मोतरे अनुस्मृतिः संपूर्णम् ।। ७६

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -938 (घ)** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	गजेन्द्र मोक्ष
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1—39 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	17 X 10 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		5
विवरण	:	पूर्ववत्
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महाभारत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों शतानी कऊ उों मयाहि देव देवेश विस्मोरमित तेजस.....
अंत	:	गीता सहस्रनामै वस्तवराजोस्यनुस्तुति गजेन्द्रमोक्षणं चैवपंचररूत्नानि भारत ।।५६।। इतिम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 985** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अस्मिन् सूत्रे

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 29 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 32

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है।

विशेष विवरण : सूत्रात्मक रचना। रचना का विषय विभिन्न रोगों के लक्षणों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अभ्शसोरस्येन्यस्मिन्सूत्रे अस्येति ग्रहणं किमर्थम् षष्टी निर्कृष्टस्पादेस्न दंत स्पज्ञेय इति परिभाषया अंत्यस्य लोपः स्पात्तद्वाधानार्थम् स्वेतिग्रहणम् ।

अंत : स्पादिति मैवम् ङस्स्येति विरोच सूत्रेण तद्वायान्नाति प्रसंगः अथवा इकारस हितसकारस हितसकारस्य भावान्नाति प्रसंगः इतिचेत्तदे दमेव ।। सुवचम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 986** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : दवदत्तो भवति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 14 स०म० लिखित 31 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 31

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय काल ज्ञान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। देवदत्तो भवति देवदत्तेन भूयते देवदतौ भवतः देवदत्ताभ्यां भूवते देवदत्ता भवंति देवदत्तैर्भूयतेत्वं भवसि त्वया भूयेत युवां भवथः युवाभ्यां ।

अंत : स्वामिभ्यां वयमतु भूयामहेस्वामिनः अस्माननु वथः युवाभ्यां वममनु भूपामहे युवमस्माननु भवथ युस्माभिर्वमनु भूयामहे ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 987** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कर्म्मा कर्म कारण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 14स०म० लिखित 26x 9स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 21

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लिखाई साफ एवं सुन्दर है। पूर्णविराम हेतु लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : कृति का विषय शास्त्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय यनमः ।। ।। गतिवुद्धि प्रत्यवसानार्थ शन्द कर्म्माकर्म काएगमएो कर्त्ता सएगौ ।। गत्या द्यर्थानां शद्दकर्मा कर्म काएं चाएैयः ....

अंत : अभिवादि दृशोरात्मने प देवेति चाच्यं ।। अभिवादयते दशर्यते देवंभक्तेन भक्तंवा ।। राम ।। 888।। फलव्यापारयो समानाधिकरण वाचक त्वं सकर्मकत्वम् ।। फलव्यापारयो र्व्यधिकरण वाचत्वं सकर्मत्वम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 988** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	भ्वादिरित सूत्रेण

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 15 स०म० लिखित 25 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		24
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली एवं लाल स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई सुन्दर है। पृष्ठ काफी जर्जर हो रहा है। महत्वपूर्ण स्थल लाल स्याही से लिखे गये हैं।
विशेष विवरण	:	काल सम्बन्धी एवं गुण सम्बन्धी सूत्र रचना पर विषय केन्द्रित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। तावदुभूशब्दोहि वर्त्तते तस्य सत्तारूपार्थ क्रिया वाचक त्वाद्भ्वादिरिति सूत्रेण धातु सज्ज्ञा क्रियते धातुश्व द्विविधः ।।
अंत	:	उों अविति सूत्रेणावादे शेसति स्वर हीनं परेण संयोज्यमित्येनेन स्वरहीनस्य परेणा संयोजते वकृते भवतीति सिद्धम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 989** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : हेतौ पंचमी

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 23 X 13 स०म० लिखित 20 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 25

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय योग से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अभविध्व मित्पत्रसि लोपे कूथं गुणाः इति सत्यं अघङीत्पत्रन जपर्यु दासो गृह्यते प्राधान्यंतु विधेर्धत्र प्रतिषेधे प्रधानता प्रर्युदासस्य विज्ञेयो यत्रोत्तर पदेन न ञ १

अंत : काक दधिन्यायं नह सग्रहणं वर्ण मात्रोप लक्षक मित्यर्थः समान उत्सर्कः विशेषोपवादः अपवाद विषयंपरित्यज्य उत्सर्गः प्रवर्तते ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 990** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : दक्षिणामुखाः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 31

विवरण : एक पृष्ठ एवं पैंतीस श्लोकों की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई सुन्दर एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मानव नीति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : पात्र मध्ये यदा पात्रं कर मध्ये यदा धृतं ।। अंगुली दंत धरणं च मदिरा तुल्य भक्षणम् ।१। भोजनं ताम्र पात्रस्य मंगुल्पादंत धावनम् क्षीरेण लवण संमिश्रं संद्यो गोमांस भक्षणं ।।२।।

अंत : आयुर्दः प्राङमखो दीपोयनदः स्यादु दङम्खः प्रत्यङ मुखस्र सखदोहा निदो दक्षिणा मुखः ३५ ।।8888।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 991** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	भ्वादि गणः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 13 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		31
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय विभिन्न नियमों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु पिप्पेइत्पत्र परनित्यांतरं गाप वादानामुत्तरोत्तरं वलीय इति पत्वादौपीभावेन द्वित्व वाधात् सकृङ्नतौवि प्रतिषेये द्वाधितं तद्वाधितमेव इति परिभाषया जागरकत्वात्पुनः कथं द्वित्वम् ....
अंत	:	ऋवर्ण स्पैवसिस्मोरनिटोः परतो न गुणः ऋभिन्नस्य तुस्पादितिनयमः तेनचेषीषृश्र चैष्टेत्या दौ भवत्येव ।। ।। इति भ्वादि गणः ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 992** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्रीमंग चरणं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 15 स०म० लिखित 24 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 20

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ सुथरी एवं सामान्य से बड़े आकार के अक्षरों से युक्त है। महत्वपूर्ण स्थलों पर शब्दों पर संतरी रंग लगाया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ईश्वर स्तुति महिमा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमः परमात्मने श्री पुराण पुरषोत्तमाय ।।१।। लरीरसएरं लमज्ञकृत्सम लीं वैप लीरेत्तमम् देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत ।।२।।

अंत : तत्रैव गंगा यमुना च तत्र गोदावरी सिंध सरस्वती च सर्वाणितीर्थानि वसंति तत्र यत्राच्फतोदार कथा प्रसंगः १२ ।0।।इति श्री मंग चरणं समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 993** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	दीर्घौच्चारणं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 13 स०म० लिखित 28 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		31
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग । महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु अतोम् इत्य़ अतः अम! इति पच्छेदं कृत्वा अकारान्तान्नाम्नः परयोः स्यमोरम् भवत्यधौ इत्यरूर्थो वृत्तिकारैः त्रिपते अत्रोच्यतेऽस्माभिः अतोम् इत्यत्र अतःम् इतिपद्च्छेदः कर्त्तव्यः□
अंत	:	उच्यते अत्र स्वर ग्रहणं त्वागम जस्य नस्य लोपशनेति ज्ञापनांर्थ तेन भवानित्पादौन स्यलोपशन् ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 994** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : स्वर ग्रहणंत्वा

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 31

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग । मिटाने के लिए पीले एवं महत्वपूर्ण दिखाने के लिए संतरी रंग का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शब्द प्रयोग की स्थिति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अतिगंग इत्यत्र एकदेश विकृतस्यान न्यत्वादाय इति सूत्रेणसे र्लोपः स्यादितिचेदुच्यते आपइत्पत्रआ आविति प्रश्लेषः कार्यः

अंत : उच्यते अत्र स्वर ग्रहणंत्वागम जस्य तस्य लोपशनेति ज्ञायनांर्थतेन भवानित्यः यौन लोपशन। ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 995** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	उद्देशस्य वचनं
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 13 स०म० लिखित 30 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		33
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। अतिरिक्त शब्द मिटाने हेतु पीली तथा महत्वपूर्ण शब्द दर्शाने हेतु संतरी रंग का प्रयोग किया है। लिखाई स्पष्ट है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय धातु रचना एवं उच्चारण कला से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु नुडाम इत्यत्र उद्देशस्य वचनं पूर्व विधेयस्य ततः परमित्युक्तत्वान्नुटः पूर्वोच्चारणं कुतः उच्यते नटः पूर्वोच्चारणं प्राथम्यार्थम्.............
अंत	:	ननु ग्रामणि कुलेत्पादौ एकदेश विकृतमनन्य वदितिन्यायेयनधातुत्वे सतिकथं लोपः उच्यते नपुंसकात्समोलु गतिसूत्रेण धिलोपो ग्रामणिति रूपसिद्धिः ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 996** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रे द्वंद्वे अल्पस्वर प्रधाने
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 15 स०म० लिखित 29 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		31
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट है। छूटने वाले शब्द किनारों पर लिखे गये है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्वर प्रयोग (व्याकरण) से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों ननु आदनुदात्तङित इत्यस्मिन्त्सूत्रे द्वंद्वेऽल्प स्वर प्रधाने कारो कारांतानां पूर्व निपॉइत्यनेनङस्य पूर्व निपातः कुतोनस्यात् उच्यतेङस्यस्वर रहितत्वेनाल्प स्वरत्वाभावात्पूर्व निपातोन यननु उद्‌देश वचनं
अंत	:	तथाहि द्वौनऔ समाख्यातौ पर्युदास प्रसज्यकौ पर्युदासः सद्‌ग्राही प्रसज्यस्तु निषेधकृत १ तथाच पर्युदासोत्र नञ् गृहयते ततश्चपित्रादे । अङितङित्कणात् ङिद्वत्स्यदिति भाष्योक्ते ङिद्वलभ्यते ।।0।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 997** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	देवदत्त
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	धर्मशास्ति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 14 स०म० लिखित 28 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		24
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। पूर्ण विराम हेतु लाल स्याही प्रयोग की है। कुछ पंक्तियां मोटे अक्षरों में हैं तो कुछ छोटे अक्षरों में।
विशेष विवरण	:	रचना वाक् धर्म से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों अकथितं च ।। अपादानादि विशेर्ष रवि वक्षितं कारकं कर्म संज्ञंस्यात् ।। दुह्गच पचदंड रुधि प्रच्छिचि व्रूशासुजिमंथमुषां कर्मयु कस्याद कथितं तथानी ह्रकृष वहां ।।
अंत	:	अकर्मक धातु भिर्योगेदेशः कालो भावो गंतव्योऽद्वाच कर्म संज्ञा इति वाच्यं कुरुन् स्वपितिमा समास्र क्रोशमास्ते ।। इति रामाय नमोस्तेः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 998** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : सूत्रे लोप ग्रहणंकर्त्तव्यं

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 31

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। छूटे हुए वाक्यों के लिए पृष्ठ के किनारे प्रयोग किए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय लोकाचार से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु संयोगांतस्य लोपः इत्यस्मिन्सूत्रे लोप ग्रहणंन कर्त्तव्यम् नाम्नोनो लोपशधा वित्पतो लोपशोऽनवृत्तीं कृत्वा संयोगान्तस लोप भवतिर सेपदान्तेच इत्यर्थ करणेन सर्वत्रै.....

अंत : ननु द्वावित्यत्तद स्यमः इति सूत्रेणम त्वं कुतोन उच्यते दोम इति वक्तव्ये अकारोच्चारण मकारस्यै वदस्यम त्वांर्थ तेनद्वावित्पत्रमत्वं नस्यात् ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 999** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रस्य कोर्थः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 14 स०म० लिखित 29 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		36
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण शब्दों पर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननुत्यादौ भविष्यतिस्यप् इति सूत्रस्यकोर्थः उच्यते धातोर्भविष्यति कालेस्यप्रत्ययो भवति वाद्यष्टादशसुपर इत्ययर्थ ननुति वादीनां भविष्यति काले विद्या.......
अंत	:	ननु फसादित्यत्र लोपो ह्रस्वः कर्सज्ऊसे इत्येव सूत्रमस्तु पुनर्लोह्स्वाज्ऊ से इति सूत्रंमास्तु उच्यतेः इद्मेवन्याध्यम् ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1000** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	अनिटो नामिवतइत्यत्रं सूत्रे
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 14 स०म० लिखित 25 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		21
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है और अतिरिक्त शब्दों को मिटाने हेतु पीली स्याही प्रयुक्त की है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों नमः ननु अनिटोनामिवत इत्यत्र सूत्रे अनिट ग्रहणं व्यर्थ यतोअनिट त्वंयातु मात्रस्यैव भवति नहिमस्यापिधातोरिड विधीयते किंतु प्रत्ययस्यैवत स्नाद निटत्वं व्यर्थ उच्यते........
अंत	:	एव तस्माद निटइत्येव सूत्रमस्तु अनामिवत इति किमर्थम् उच्यते नामिवद्ग्रहण सुत्तरार्थम्

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1001** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	प्रथम मध्योत्तमा
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 13 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		21
विवरण	:	पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है। पृष्ठ के किनारे पर भी लिखा गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। नाम्निद्ययुष्सदि चास्मदि च भागैरित्पत्त । प्रथममध्यमोत्तमा इतिशेषाः कर्तुरि पंचेत्यतः.......
अंत	:	कर्मणियातोरुपपदे प्रयुज्य माने सतिचते च प्रत्यया भाग क्रमात् प्रथम मध्यमोत्तमव संज्ञकाःस्यु ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1002** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अविभक्ति नामेतिसूत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 31 X 15स०म० लिखित 28X 11स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 30

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई स्पष्ट है। महत्वपूर्ण शब्दों पर संतरी रंग लगाया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय विभक्तियों (व्याकरण) से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अविभक्ति नामेति सूत्र विषयेम दीपः प्रश्नः यानि सूत्रोपात्रानितानि वृत्तौखल्वेव प्रतीयन्ते इति वचने नवृत्तेः सूत्रानुसारित्वात् सूत्रेविभक्ति रहितमित्यादीप दानिनो दृश्यंते.

अंत : किच कुपोयूज इत्यन्वय व्यति रेकाभ्यां ककारय कारयोरर्थव त्वादन्येपि वर्णनामनर्थ क्यमभ्युपगतंस्यात् ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1003** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : उपसर्ग द्यांत्वर्थ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25X 13 स०म० लिखित 22X 10स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 23

विवरण : दो पृष्ठों की पूर्ण रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया गया है। लम्बाई में एक बड़ा पृष्ठ लेकर उसे बीच में दुहरा करके दो पृष्ठ बनाये हैं । जगह कम पड़ जाने से पृष्ठों के किनारे पर भी लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ॐ श्री गणेशाय नमः ।। उपसर्गेण धात्वर्थो वलादन्यत्त नीयते प्रहाराहार संहार प्रतिहार विहारवत् १ व्यादिः त्रादिश्वभूयात विभूत्यर्थे विनिश्वितः पराभि परिपूर्वोस्तिभू भूतिरस्कार्थ वोधकः २

अंत : अध्यादिस्याद धिष्टाने सचोत्था नेह्युदादि सचाते संमुतोहन स्यात् परायुक्त पराहतौ ३७ व्याचते व्याङ् प्रतोज्ञेयः उद्घाते चो प्रतो भवेत प्रत्यादि । प्रतिचाते स्याद्विघाते च विपूर्वकः ह्वजादादिरिहो द्वरि कथने व्यायुते भवेत निर्युक् निर्हरणे च स्यायभ्यवाभ्यां.... एवमेवान्य धातूनां ायोगे चाप्यर्थ भेदता उपसर्ग कृताज्ञेयाः दिङमात्रसिद्व दर्शितम्।। इति इत्थ उपसर्ग धात्वर्थ समाप्तम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1004** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	वचने वृत्तेः सूत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 16 स०म० लिखित 30 X 14स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		32
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। रचना काली स्याही से लिखी गई है। रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित क्रिया के साथ है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण शास्त्र से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों भ्वादिः । क्रियावाची भ्वादिर्यातु सज्ज्ञः स्पादित्पर्थः । ननु । पानिसूत्रो पात्तानिता निवृत्तौ खल्वेव प्रतीयन्ते इति वचने वृत्तेः सूत्रानु साखात्सूत्रे क्रियावाचीत्यादि पदं नो दृश्यते वृत्तौतु दृश्यते........
अंत	:	क्रिया पावौधनस्या शक्यत्वात् प्रथम स्यतियः समास प्रत्ययो रिति लेपेतर्थस्यानववोधान च कर्त्तृ द्वयादि वाधा काक्षायां पचत् इत्यादि रूपस्यै वल्याटय ल्वात् अएतव भ्वादि ग्रहण व्यर्थ मिति चेत्तदे दमेवन्याटयम् ।। रामय ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1005** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : यज्ञदत्त

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 15स०म० लिखित 24 x 11स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 27

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है और आरंभ तथा पूर्ण विराम लाल स्याही से लगाये हैं। लिखाई साफ—सुन्दर एवं स्पष्ट है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत वचनों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। देव दतो भवति भवंतं तं यज्ञदतः प्रेरयति यज्ञदतो देवदत्ते र्भययति ।। १ ।। देवदतौ भवतौ भवंतौ तौ यज्ञदतः प्रेश्यति यज्ञदत्तो देवदत्तौ भावयति ।।१।।

अंत : भविष्यं तं तंयज्ञदतः ग्रैरयिष्यत् यज्ञदत्तौ देवदतम भावधिष्यत् ।।६।। देवदतोऽभूत भूतं तंव यज्ञदतः ।। प्रैरिरत् यज्ञदतो देवेदत्त भवी भवत् ।। १० ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1006** (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	आसाविति सूत्रं कर्त्तव्य
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 13 स०म० लिखित 30 X11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		33
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ के किनारों पर भी लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु अनदवानित्यत्रनिरवकाशत्वे नाय वादत्वा दामं वाधितानुमेव कुतोनस्यादिति चेदुच्यते उप्पयोरा नित्यमिति सूत्रान्मंड कलुष त्पातृन्पादन वृत्यावर्णात्यरोधंनुमस्यात्तेन नुमाआमनवायते ।।
अंत	:	ननु आसावित्यत्त असावित्येव सूत्रंकरणीयम् तथाचनकारर्मत्रस्याते सवर्णे दीर्घत्वेन कृते यथा इति रूपसिद्धिस्यात् उच्यते अस्यविति सूत्रे पथीशक्षस्य पंथा इति न सिद्धि होत मुख्येपि रूपा सिद्धि अस्माद्त आसाविति सूत्र कर्त्तव्यमेव ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1006** (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अर्थवद् ग्रहणेन

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X13 स०म० लिखित 30X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 33

विवरण : पूर्ववत् । पृष्ठ के किनारे पर भी लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय दण्डी नीति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु अर्थवद्ग्रहणेनानर्थकरय ग्रहणामि परिभाषया इनांशौसावित्यस्मिन् सूत्रेऽर्थवत् इनो ग्रहण इंदडीत्पत्रार्थकस्येनः कथंदीर्घः उच्यते अर्थवद् ग्रहणेनार्थकस्य ग्रहणमिति परिभाषा पानित्यवादनार्थ कस्यापीनो......

अंत : अनेक वर्णत्वेन गुरुत्वासर्वादेशःस्यादितिचेन्न नानुवंयकृतमनेक वर्णत्व मित्युक्तत्वात् उच्यते डित्करण सामध्यान्सर्वादेशः अन्यथाडित्करणं व्यंर्थ स्पादितिवोध्यम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1006** (ग) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	इति परिभाषया प्रत्यय लोपे

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 13 स०म० लिखित 30 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		33
विवरण	:	पूर्ववत् । पृष्ठ के किनारे पर भी लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत प्रत्यय लोप से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु प्रियाष्टन इत्पत्तष्टुभिष्ट रिति सूत्रेणस्यणत्वं कुतोन स्यात् उच्यते असिद्वं वहिरंग मंतरंगे इति परिभाषया अलोपस्याति द्वत्वान्तस्यणत्वंन............
अंत	:	ननु तुदंतीत्पत्रा वर्णस्यादं इत्यनेन लोपेकृतंऽवर्ण परत्वान्तु मनस्यात् उच्यते प्रत्ययेलोपे प्रत्यय लक्षणं तपातीति परिभाषया प्रत्यये लोपेप्य वर्णपरत्वा ननुम् भत्येव।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1007** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	परिभाषया प्रत्यय
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 14 स०म० लिखित 30 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		33
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। काली स्याही का प्रयोग लेखनार्थ किया है। पृष्ठ के किनारों पर भी कुछ पंक्तियां लिखी हैं। पृष्ठ के किनारे भी काफी पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय प्रत्यय (व्याकरण) से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु भवामीत्पत्त परेव्मोरा इति सूत्रेणभकारोत्तवर्त्तिनोऽकारस्यात्वंकथंनस्यात् उच्यते प्रत्यया प्रत्ययोर्मध्येप्रत्ययस्यैव ग्रहणमिति परिभाषया प्रत्यय स्यैव ग्रहणदातेन.......
अंत	:	तस्य समुदायस्य युगपटुत्पत्त्पभावादा शुविनाशित्वाच्च परोक्षत्वम रुचेव अतः पधियातोर्ण वादिरेवास्नु नत्वन्ये प्रत्ययाः ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1008** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	उच्यते कृताकृत प्रसंग
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 14स०म० लिखित 28X 11स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की उत्कृष्ट रचना। रचना के किनारे भी लेखनार्थ प्रयोग किए हैं। लेखन हेतु काली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना उच्चारण कला से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु एटाङ्योरित्यस्मिन्सूत्रे टेरनु वर्त्तनेन कार्य्यम् त्यादादेरित्यत्वे एत्वेच कृतेरूप सिद्विःस्यादतष्टेरनुवर्त्तनंव्यर्थम् उच्यते कृताकृतप्रसंमित्वेन नित्यत्वादेत्वे कृते रूपसिद्वेष्टेरनुवर्त्तनं कर्त्तव्यमेव..........
अंत	:	उच्यते अत्र दीर्घोच्चारणांतु श्वश्रुरस्यो काराकार लोप उश्वेत्पादि लाभार्थम् तेन श्वश्रूरित्यादि सिद्वम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1009** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	संज्ञा पूर्वको विधि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 14 स०म० लिखित 27 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना । महत्वपूर्ण शब्दों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया है और अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही।
विशेष विवरण	:	व्याकरण के अंतर्गत संज्ञा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु सर्वादि कार्य्याणांस्मडा दीनांद्विवचनेऽभावात् उभशच्दस्य द्विवचनांत त्वात्सर्वादिषु उभश न्दस्य पाठोव्यर्थः उच्यते सर्वादिषु उभशच्छदस्य पाट्स्तु उभकावितिरूप सिद्यर्थः अन्यथा.........
अंत	:	उच्यते अत्तनाम्न इत्यनुवर्त्तमाने भूयोनाम गृहणंतु नाम संज्ञा प्रवृत्ति कालेस्थितस्यनस्यलोपः स्यादिति ज्ञापनार्थ तेन पचन् भवन् खनसुहिन पुशानित्यादौन लोपोनालि ...

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1010** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रश्लिष्य समासः कार्यः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 16 स०म० लिखित 29 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 32

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई सुन्दर एवं स्पष्ट है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है।

विशेष विवरण : रचना समास (व्याकरण) से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों ननु आप इति सूत्रंन करणीयम् हसेपःसे लोपइत्यस्मिनृसूत्रे हस आ ई प् इति प्रश्लिष्य समासः कार्यः तथाहि आश्इई श्चतौ अयौताभ्यां सहितः.......

अंत : ननु तिस्रइत्यत्तक्किलात्षः सः कृतस्येति सूत्रेण सकारस्य षत्वंस्यात् उच्यते तिसृचतसृ इत्यादि निर्देश सामर्थ्यात्सकारस्य षकारोन ।। ४४४४४४४४४४४ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1011** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	शिव परायण

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	14 X 8 स०म० लिखित 11 X 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	एक छोटे पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग।
विशेष विवरण	:	रचना संवादात्मक है। शिव को प्रसन्न करने हेतु पार्वती द्वारा बताए गये मंत्र हैं।
आरम्भ	:	उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। पार्वत्युवाच ।। रर्सयतं महादेवं मृत्युदरिद्र नाशनं ।। मनुष्याणाहि तर्स्याभ्यकरथ........
अंत	:	मामंत्र विद्यसार्नयांकथंल्केशत्तिजंतव ।। तेषां हितं प्रवक्ष्यामिबिधाना तुवरानने ।। १ ।। सफलांतां समुछत्य चूर्ण कृत्वा विशेष .....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1012** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : पंचाग रचना

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय : १६३२ संवत्

रचनाकाल : —

रचना–स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 13 स०म० लिखित 23 X 12 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9 पंक्तियां तत्पश्चात् लग्न लिखे हैं।

विवरण : एक पृष्ठ में राजा विक्रमादित्य की जन्म पतरी बनाई गई है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। पृष्ठ काफी पुराना पड़ चुका है।

विशेष विवरण : राजा विक्रमादित्य के जन्म लग्न निकाले गये हैं।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः अथ श्रुभ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्यात्संवत् १६३२ । तत्त मासोत्तममासे भाद्रपदमासेऽ मायां.......

अंत : तत्समयेतिथुन लग्नोदये हरिशरणनाम्नः पहचकषष्टिमो द्वप्रवेशः (६६) गताब्या ६५ अद्धलग्नं चंद्रलग्नं.....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1013** (संग्रह–क) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य

लेखक : कानिनस्य मुनि

टीकाकार : –

शीर्षक : विलास सालिव

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 20

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। कुल चार पृष्ठ हैं। पहले पृष्ठ की रचना अलग है दूसरे पृष्ठ की अलग है। लिखाई कहीं छोटी कहीं मोटी। काम भी साफ नहीं है। कई प्रकार के पक्षी तथा लाइनें डाली हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय कृष्ण कथा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री गणेशाय नमः कानिनस्य मुनेखवांध भव धुवैध व्यविघ्वसनोनप्रारः किल गोलतस्य तन पाकुं........

अंत : वधु विलाससा लिवनमा लिखितनोतु गम मंगलानि सतंनिदभ्य भोग्तुण्यं सहस्रंसनाव नमाचरैः लक्षविदृप्ततव्यंकाटिंव्यक्तहरिं भजेत् ।।५०५०।
श्रीमते रामानुजाय नमः श्री श्री श्री

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1013** (ख) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : सरस्वती एवं गणेश वंदना

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1—2 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 20

विवरण : पूर्ववत्

विशेष विवरण : रचना का विषय गणेश वंदना, सरस्वती वंदना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री सर्वउपभाग्य सकल गुण गगपृयभीरम धरम निष्टसुभा जन वरिष्ट सर्व गणु सम्पन्नेषु श्री मत्रिषल गुणगणालंकृतविद्वजन........

अंत : योगेचितस्य पदेनवाचामत समीर स्पच वैद्य केन पोपा करो प्रभु मुनिनाए ति जलि प्रा जलनान तोस्मि ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1014** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रंन कर्त्तव्यम्
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 12 स०म० लिखित 15 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		16
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अनावश्यक मिटाने के लिए पीला रंग प्रयुक्त किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु तस्मादि सूत्रंन कर्त्तव्यम् धातोरित्य ग्रिमाधिकात्ततः प्राक्तन प्रत्ययानां नाम्नंपरत्व मित्यवधेयं किं तस्मादित्यनेन।
अंत	:	इति कटिति वाच्यम् उच्यते ऋत आदिमध्येदिक् शत्रदस्य पाठा त्तद्यो गेतस्मदिति पंचमी ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1015** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	देवी स्तुति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	24 X 8 स०म० लिखित 20 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां	:	22
विवरण	:	पृष्ठ का भी आधा पृष्ठ लेखन हेतु प्रयोग किया है। लिखाई भी ठीक ही है। रचना छंदों में की गई है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री रामायनमः ।। राग शरंग ।। रिवसुतापत चरन भजोनमटेक ।। देवदुज को कीयो छाहतज्प्रवन को सुत करन ।।
अंत	:	दोहरा ।। जग भूषद्वैषं जना ओरसकल अधीन ।। सोतुमहम परराष जो एकमातराहीन ।।१।। राम राम राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1016** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	पदछेदा
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 16 स०म० लिखित 30 X 13 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		40
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ पुराना पड़ चुका है। पृष्ठ के किनारे भी लिखने के लिए प्रयुक्त किए हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय काल रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः उों मित्य व्ययं ब्रह्मांगी कारसमाधिबु उों नाम निगुण ब्रह्मणो नमः यद्वा ओमितित्रिधा मूर्ति वाचकं त्रिधामूर्तिवाचकत्वपक्षे समाहार समासः
अंत	:	परस्मै पदमिति वचनस्या सार्वत्तिकत्वादारत गामियालाभावे कुर्वे इत्यात्मने पद यथाकमलच नीद घाटनं कुर्वये मयूषा इति शेषः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS - 1017** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : पूर्व निपात

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 36 X 15 स०म० लिखित 30 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 38

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत निपात रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों ननु अलोन्त्यात्पूर्व उपद्येत्पत्त अलोन्त्याडपद्येति सूत्रं कर्त्तव्यं पूर्व शनृस्याक्षेयात्संभवात् परशवृस्याक्षेपः स्यादितिचेत्र.......

अंत : इत्यनेन द्वितीया चतुर्थीनांमध्येषस्या द्वितीय चतुर्थ्यो र्मध्ये चतुर्थ्याश्राल्पस्वरताप्पूर्व निपात इत्यवधेयाम् ।। ४ ।। ४ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1018** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	षटप्रणव महामृत्युंजय पद्धति
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	संवत् १६५२ माघ १० तिथि शुक्लपक्ष
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1–4 चित्र --
हाशिया	:	हाशिये खिंचे हुए पृष्ठ
आकार	:	20 X 16 स०म० लिखित 15 X 14 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		14
विवरण	:	चार पृष्ठों की रचना। लगता है किसी पुरानी डायरी के पृष्ठों का प्रयोग रचना के लेखन हेतु किया है। लिखाई ठीक ही है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय महामृत्युंजय मंत्र की पद्धति का वर्णन करने से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः ।। ओम्षट प्रणव महा मृत्युंजय पद्धति कर्त्तापृवें सुस्नातो नित्य कर्म विधाय शुक्लावासः प्रसादे मंदिरेवाश्शुद्ध देशेश्री
अंत	:	इति वसिष्ट कल्पे श्री मृत्युंजय मं. षटप्रणव संयुक्त प्रयोग विधिः समाप्तः शुभम् । संवत् १६५२ माघ शुक्लो पक्षे तिथौ दशभ्यां ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1019** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक : भृगुमिनि

टीकाकार : —

शीर्षक : लिगांष्टक

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 17 X 13 स०म० लिखित 14 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ भी कुछ पुराना पड़ चुका है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिवलिंग के साथ होते हुए शिवलिंग की महिमा गान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्त श्री गणेशाय नमः ब्रह्म मुरारि सुराच्चित लिगं निर्मल भास्कर शोभितलिंग जन्मनि दुःष निवारण लिगंत प्रणामामि सदा शिवलिंग 1र्देवी मुनीश्वर पूजित लिंग काम विनाश कारणलिंग.........

अंत : इत्यष्टकमिदं पुंण्पपः पठेत शिवसन्निधौ शिवलोक मवाप्नोति सनरोनात्रसंशय ईति श्री भृगुमिनिविरचित लिंगांष्टक सपूर्ण ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1020** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रंउ कर्त्तव्यम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	26 X 11 स०म० लिखित 17 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय प्रत्यय रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु तस्मादिति सूत्रंन कर्त्तव्यम् धातोरित्य ग्रिमाधि कारात्तत प्राक्तन प्रत्ययानांनाम्नं परत्वम वधेयं.........
अंत	:	अतः पंचम्यत्र कस्मिन्नर्थे इतिकटिति वाच्यम् उच्यते ऋत आदिमध्यदिक्शन्द स्पपाठा त्तद्योगे तस्मादिति पंचमी ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1021** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रेण वासिलोपे रूपसिद्धिः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	19 X 11 स०म० लिखित 17 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		19
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय शब्द रचना रूप से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु येररमा स्त्विदं सूत्रम् हसेपः सेंर्लोप इति सूत्रेण संयोगांतस्य लोप इति सूत्रेण वासि लोपे रूपसिद्धिःस्यात्
अंत	:	इत्यरिडिति टेरिति टिलोपेचरूप सिद्धिः स्यान्नकोपि दोषः उच्यते यद्येवंत्वन्म्न्स वर्त्तते तदेदंमम मतेपिसुवचम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1022** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	सूत्रं कर्त्तव्यम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 14 स०म० लिखित 29 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। रचनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। अनावश्यक मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सूत्र रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु अनटौसोरित्यत्र अनापीति सूत्रं कर्त्तव्यम् तथा चटाइत्याकारमारभ्यसु पः पकारेण प्रत्याहार ग्रहणे इतरेइतर विभक्तावत्यविधानात परिशेषा.......
अंत	:	ननु सुपथीत्पत्र प्रातिप दिकग्रहणोलिंग विशिष्टस्योपी ग्रहणं नेति निषेधानुतडात्वे नस्तः.........उच्यते विभक्ति निमित्ते कार्ये लिंग विशिष्टस्य ग्रहणं ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1023** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	वार्तिकं करणीयम्
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	25 X 10 स०म० लिखित 22 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		24
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय संप्रेषण/वार्तिक रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननुवभूवेत्यादौ वुकःथप्रमं वृद्विगुणौ कुतोनस्याताम् उच्यते । कृता कृत प्रसंगीयो विधिः सनित्यः नित्यानित्योयोर्मरचे नित्य विधिर्वलवान्.......
अंत	:	तीतिसूत्रेसतिवत्तइत्यादौ ।। संप्रसारणंस्यात्तन्निवृत्त्यर्थमिदं वार्तिकं करणीयम् ।।0।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1024** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अविभक्ति नामेति

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 14 स०म० लिखित 19 X 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 18

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही व पूर्ण विरामों के लिए लाल स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत विभक्ति चिह्नों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों ।। तावद्देवशवृोहिवर्ततेत त्रैकोव्युत्यंमि पक्ष एकश्चाव्युत्पति पक्षः ।। पक्षइयेपि ।। अविभक्ति नामेति ।।

अंत : मितिपर सज्ञांयां सत्यांस्रोर्विसर्ग ।। इति सूत्रेण विसर्गादेशेक्रियमाणे देव इत्याकारकरूपस्य दुर्वारत्वात् ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1025** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	विशेषणास्याभेद
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्वपूर्ण सथलों पर संतरी रंग लगाया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय विशेषण तथा उसके भेदों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु स्वाङ्गाद्वेत्यस्मिन्सूत्रेस्वांगंकिम् यदिस्वत्यार्ङ्गस्वाङ्म् तर्हिसुमुरवाशा लेत्पत्रमुखस्यणा लांगत्वादीप् कथंन.........
अंत	:	उच्यते विशेषणास्य भेद विवक्षातो नषष्टी किन्तु भेद विवक्षायामेवषष्टी भवतीतिज्ञेयम्।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1026** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	इति समासः
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 14 स०म० लिखित 28 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। रचना का अंत पृष्ठ के अंत में किनारे पर किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय समास रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु सहशिष्येण गतो गुक्षरित्पत्रक्ष्रौ तृतीया कथेन गुरोःप्रधानत्वान्नतृतीया मैवंवदयद्य प्रधाने तृतीया तर्हि गुरुणा सहागतः शिष्य इत्पत्र गुरोप्रधान त्वात्कथं तृतीया उच्यते...
अंत	:	नांनाम्नामन्वययोग्य त्वा भावात्कथं समासः उच्यते नाम्तामित्पत्रनाग्निच नामानिचेत्येक शेवेणद्वयोर्नाम्नोर पिग्रहणं तेन धवरव दिरादित्या दौसमासौ भवत्येवन कोपि दोषः ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1027** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रं कर्त्तव्यम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 14 स०म० लिखित 28 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		30
विवरण	:	एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। अनावश्यक को मिटाने हेतु पीली तथा महत्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु संतरी स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय सूत्र कर्त्तव्यों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु त्वम हंसिने त्पत्त त्वम हंसाविति सूत्रं कर्त्तव्यम् त्वम हमोर्हसांतत्वा देवहसेपःसेर्लोपइति सिलोपेसिद्वेसि नेति व्यर्थम्
अंत	:	त्वाम् माम् युष्मान् अस्मान् पुष्माभिः अस्मभिः पुष्मासु अस्मासु इत्यादि रूप सिद्विःस्यात् अत आम्स्भाविति सूत्रंव्यथम् उच्यते इदमेवन्याय्यम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1028** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	रामाश्रमाचार्य
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	संज्ञा विधायकानि सूत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	34 X 15 स०म० लिखित 31 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		35
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लिखाई साफ एवं पठनीय है। पृष्ठ के किनारे भी लिखने हेतु प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत संज्ञा से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	अथ रामाश्रमाचार्य्यः प्रतिज्ञातार्थोपयोगीनि सरस्वती प्रणीतानि संज्ञा विधायकानि सूत्राणि तावदुपन्यस्यति.........
अंत	:	सूत्रं कर्त्तव्यं ततः समानाद्वेर्लोपो धातोरित्येव लालोपोऽधातोरित्येव सूत्रं पठनीयम् एवं च अकार मारभ्य लृकारां...........समानपदं व्यर्थम् उच्यते इदमेवन्याय्यम् ननु ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1029** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : —

लेखक :

टीकाकार : —

शीर्षक : विद्यानेन चरितार्थ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : —

रचना—स्थान : —

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 30 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 32

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही काले शब्दों पर लगाई गई है।

विशेष विवरण : रचना का विषय धातु रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों प्रतिज्ञातार्थोपयोगिंनी चतुर्दश सूत्रीभादावुपन्यस्यति अइउणित्यादिः ननु अइउणित्यादिषुसूत्रेपु संधि......

अंत : इत्यादौस्यानेंतरतमइति परिभाषया विवृतरूत्वे प्राप्ते संकृतादेश विधनेन चरितारर्थ त्वदिति चेत्र वर्णसमाम्नाय ०

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1030** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : बोधति सूत्रेणाः

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 38 X 14 स०म० लिखित 31 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 35

विवरण : एक पृष्ठ की पूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय सूत्र रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों तावद्भूष बृस्तस्य सभा रूपार्थ क्रिया वाचकत्वा भूद्वारयो धातवस्त्येतन धातु संज्ञा धातु श्रद्विविधः सकर्मकोः

अंत : सार्वधातुकेति सूत्रेण गुणादेश एवोधवेति सूत्रेणाः वादेशेभवतीति सिद्धम् ।। १ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1031** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	सूत्रेधातु ग्रहणं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 15 स०म० लिखित 30 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		34
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों को दर्शाने हेतु काली के ऊपर संतरी रंग लगाया है। लिखाई साफ–सुथरी एवं पठनीय है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के संधि सूत्रों से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननुधातोर्नामिन इत्यस्मिन्सूत्रे धातुग्रहणं व कर्त्तव्यं तद्भावेनामिन इत्येवसूत्रंस्यात् तस्य च नाम्पंतस्य वृद्धिर्न्णितीत्यर्थ करणैन..........
अंत	:	ननु चिकित्सतीत्पत्र उपधापाल च्वोरितिसूत्रेण गुणः कथंनस्यात् उच्यते नानिविसे इति ।। निषेधाद्गुणान ।। ४४४४ ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1032** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : संज्ञा सिद्धांत

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 15 स०म० लिखित 30 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 33

विवरण : एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ के किनारे भी लिखने के लिए प्रयोग किए गए हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत संज्ञा से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ननु समानो वर्णो धर्म्मोयेषांते सवरणं इत्पन्वर्थ संज्ञयावलदेव सवर्ण संज्ञा सिद्वौतत संज्ञा विधायकं स्वदीर्घस्मुतभेदाः सवर्ण इतिसूत्रेकिमर्थम्.........

अंत : ननुपूर्वापरवर्णानांसंथानं सम्मग्मेलनं संधिः एवं च संज्ञायाः संधित्वा भावात्संज्ञा सिंधिपंच संधि र्वेतिकथनं कथम् ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1033** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	ब्रह्मांगी कां समाधि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 14 स०म० लिखित 30 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		32
विवरण	:	एक पृष्ठ की रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर केसरी/संतरी रंग लगाया गया है। पृष्ठ के किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय विभिन्न देवी—देवताओं की स्तुतिपरक मंत्रों से संबंधित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय यनमः उोमित्पव्ययं ब्रह्मांगीका समाधिपु उों नाम निर्गुण ब्रह्मणेनमः पद्वा उोमितित्रियामूर्तिवाचकं त्रिधामूर्त्तिवाचकत्वपक्षे समाहारासमासः ......
अंत	:	सानुवंयकस्य ग्रहणेनानुवंधकस्य ग्रहणमिति परिभाषयात्रनकारस्या ननुवंयकत्वान्नानादेशः नक्र नक्षत्रादिवत् ०

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1034** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	अष्टराह्युषि विधि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	2 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	30 X 12 स०म० लिखित 27 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		37
विवरण	:	दो पृष्ठों की पूर्ण रचना। जिसमें 48 छन्द हैं। संवादात्मक रचना में शिव एवं गौरा का संवाद है। लिखाई साफ—सुथरी है पर पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय राहू की पूजा विधि से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	एकदा शिखरे रम्ये गौरी पप्रच्छ शंकरं नारीणां दुःख माकर्ण्य गर्भवाल विघात्जे ।।१ ।। गौर्य्युवाच देवदेव जगन्नाथ त्वन्मुखद्यन्छूतं मया....
अंत	:	इतिते सर्वमारख्यातं यत्पृषृ सुंदरी त्वया जगतामुपकारार्थ वश वृद्धि करायवै ।४७। इति श्री गौरी हर संवादे अष्टराहुषि विधि सप्पाप्ता ।।..........यदा तदा गजछाया श्राद्वंपुन्येन लभ्यते ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1035** भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	द्विपद सूत्रं (संज्ञा विधायक सूत्रं)
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना–स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	36 X 15 स०म० लिखित 33 X 12 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		37
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखावट बहुत सुंदर है। सामग्री अधिक होने के कारण पृष्ठ के किनारों पर भी लिखा है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण के अंतर्गत द्विपद अक्षरों पर प्रकाश डालने संबंधी है।
आरम्भ	:	अथ रामाश्रमाचार्य्याः प्रतिज्ञार्थोपयोगिनि सरस्वती प्रगीतानि संज्ञा विधायकानि सूत्राणि ताव दुमन्यस्पति अद्र उऋलृ समाना इत्यादीनि अद्र उऋ लृ समाना द्विपदमिदं सूत्रं षट्य देवा नवीना नांमाते द्विपदामिदं सूत्रं..........
अंत	:	करर्णे व्यर्थम् उच्यते अनेनेत्यादि भगवत्यु लेखन क्रम द्योतनार्थम् अन्यथा प्रत्ययाहरकरणे मंदबुद्धि नां वर्णमाला क्रमस्य भ्रमो भवत ।। राम ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1036** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : कवचं

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 6–7 चित्र --

हाशिया :

आकार : 23 X 13 स०म० लिखित 17 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 9

विवरण : दो पृष्ठों की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर काली के ऊपर संतरी रंग लगाया है। लिखाई स्पष्ट है। पर रचना के आगे पीछे के पृष्ठ अनुपलब्ध हैं।

विशेष विवरण : रचना का विषय देवी स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों हरं शिखायैवषट हैंवै कवचायहुं हौं वौं त कवचाय नेत्रायाम वौषट् ह्‌: चः अस्भाय फट् अथ ध्यान् शांत पद्मासनस्यं शशिमुकुट धरंश्याम वर्ण त्रिनेत्र चंश्रूलं......

अंत : भीतोभया अमुच्यं देविसत्यंन संशयः निगतेश्च पियोवद्वोकाराग्रह निपातितः २६ श्रुंखलावंधनं प्राप्तः पठेत्त्चैव दिवानि शंयानयान सभी.............

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1037** संग्रह–(क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : विज्ञान नवका

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 27 X 15 स०म० लिखित 22 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 13

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय योग विज्ञान से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय यनमः तपोयज्ञदानदिभिः श्रुवबुद्धि नृपादेः पदेतुछ बुधा परित्पुज्य सर्वं पदान्योतितत्वं पुरंब्रह्मनित्पुंत......

अंत : इति श्री शंकराचार्य कृतं विज्ञान नवका समाप्त शुभंमस्तुः उंश्री विघ्नदेवजी कौं मेरी नमस्कार है बऊरियों कैसे हैं हरि सारे पूर्ण है निर्लेप है अनंतो अपारो..........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1037** संग्रह–(ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : भेदाभेद

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 15 स०म० लिखित 22 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 13

विवरण : रचना का एक ही पृष्ठ उपलब्ध है। कथा आगे भी चल रही है अतः अधूरी कृति है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषद् से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। भेदाभेदौ सपदि गलितो पुण्य पापेविशीर्णे माया माहो क्षय म थिगतौ नष्ट संदेह वृतिः शब्दातीतंत्रिगुण रहेतं प्राप्य तत्वा ववोयं निस्त्रै....

अंत : कस्मात् कोहं किम पिच भवान् कोय मत्त प्रयंचः स्वंस्वं वेद्यंगग नस......

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1038**	भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह	
मूल्य	:	–	
लेखक	:		
टीकाकार	:	–	
शीर्षक	:	श्रीकृष्णलीलामृतं	
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है	
रचना के विषय का समय :			
रचनाकाल	:	–	
रचना–स्थान	:	–	
पृष्ठ	:	1 चित्र --	
हाशिया	:		
आकार	:	11 X 8 स०म० लिखित 8 X 5 स०म०	
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		6	
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।	
विशेष विवरण	:	रचना का विषय श्री कृष्ण लीला के अंतर्गत जन्मलीला से सम्बन्धित है।	
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नमः आदौ देवकी देवगर्भ जननं गोपी ग्रहे वर्धनं मायापोतनतापजी वहरनं गोवर्धनं धारणं कंश छेदन.	
अंत	:	ईंद्री सवतारे गण चंद सोप्रकास मनप्राण ससतार चक्रलीन भयोलेषीये ।। कांम क्रोध लोभ मोह चोर सव भाज गये वेद पहरू वासो ऊ सोये है विसेषीये ।।११ ।।	

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1039** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शब्द कर्म
क्या हस्तलिखित / नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 X 13 स०म० लिखित 23 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		18
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों नमः सिद्धमः ।। गति बुद्धि प्रत्यवसानार्थ शब्द कर्मण्कर्म कणमणिकर्तासणौ ।। गत्याद्यर्थानां शब्द कर्मात्कर्म काणेणांचरणौयः कर्ता सणौकर्म स्यात १ ।।
अंत	:	आदि खाद्वोर्न आदयतिखाद यतिवाद्य वटुनाभदेरद्धिसार्थस्यन भक्षयत्यन्नवटुना ।।४।। हिंसोर्थस्य उों नभहकवजतदल 31 ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1040** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वर्ण मंत्र द्दरात्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : स०म० 27 x 13 लिखित 22 x 9 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय लक्ष्मी स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। श्री कृहमृस्य नारद प्रत्याह ।। चैत्रेनिष्टा फलंज्ञेय ।। निरा श्री जायते लोचनं ।। वैशाखे क्षेत्र लाभःस्य ज्येष्टश्च मरणं कर्वं ।

अंत : वड वर्गं क्षत्रिये वऽवर्गं कृहम वर्ण क्षत्रियोय यात् ।। वर्गेभवेद्दश्याः पीववर्ण मंत्र द्यात् ।। तस्मात् शूइउच्यते शूऽस्य वर्ण मंत्रंदटरातु ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1041** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	शिखा मुक्ति मंत्रः
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	28 x 13 स०म० लिखित 22 x 6 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		7
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है। लिखाई साफ सुथरी है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	इति शिखा मुक्ति मंत्रः ।। सिमृक्षोर्निखिलं विश्वंमुङः शक्लं प्रजापतेः । मातरः सर्वभूता नामा मापो देव्या पुनातुमां ।। इत्याचमानर्मत्रः ।।२ ।।
अंत	:	इत्य घमर्षणम् ।। ततोहस्तौ प्रक्षाल्याचभ्ये ।। सूर्य्य मंडलमात्थाप ।। अमुक देवातायैनमः ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1042** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकराचार्य

टीकाकार : –

शीर्षक : वेदांत्सा

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 23 X 11 स०म० लिखित 13 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 10

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेदांत से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः उों त्तभूमिर्न तोयं नतेजोन वायुर्नरंवनेंड्रियं वानत्रेषां समूहः अनैकौत्तिकत्वात्सुषुप्पैक सिद्धस्त देको वसिष्टः शिवकेव लोहं ।।१।।

अंत : केवल लांत्वंन शून्यंनचा श्रून्यम् द्वैत कत्वा कथं सर्ववेदांत सिद्धं व्रूवीमि ।।१०।। इति श्री मच्छकराचार्य विरचितायां वेदात्सा संपूर्ण। श्री गुरवे नमः ।। ।। ।। ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1043** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	एकांते सुख
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	22 X 9 स०म० लिखित 18 X 7 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		9
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया है और अतिरिक्त अथवा अशुद्ध मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय वेदांत से समबन्धित है।
आरम्भ	:	उों श्री गणेशाय नमः । वेदो नित्यमधीतां तदुदितं कर्मस्वनुवीतांतेनेशस्य विधीयतामयि चां चित्रकामेमतिस्यज्यतां पापौलुः परिधूयितां भव सुखेदोषोनुसंधीता १ ।।
अंत	:	न सांख्यं यन शैवंनतत्पंचसत्रंन जैनं नसी मांस कादेर्मतंवा ।। विशिष्टानुभूत्यां ।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1044** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	—
लेखक	:	
टीकाकार	:	—
शीर्षक	:	लक्ष्मी मंत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	—
रचना—स्थान	:	—
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	31 X 12 स०म० लिखित 22 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अतिरिक्त अथवा अशुद्ध शब्द मिटाने के लिए पीली स्याही प्रयुक्त की है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय लक्ष्मी—स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	उों अस्य श्री अन्नपूणामनस्य ब्रह्माऋषिः विराट छंदः अन्नपूर्णे देवता हीं बकीच श्री शक्ति उों कीलकं चतुर्वर्ग फल साधना...........
अंत	:	ततो नाग पत्रांचितंवाग्नि वृतं धारा मंदिरं चान्नपूर्णेष्टिचक्रं मूले उोंही श्री क्लीं नमो भठावति महेश्वरि अन्पूर्णे स्वाही उों अस्य श्री लक्ष्मी मंत्र ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1045** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : शंकरानंद

टीकाकार : –

शीर्षक : प्रादिभितस्य ग्रंथ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 14

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। पृष्ठ काफी पुराना पड़ चुका है। पृष्ठ के किनारों पर भी लिखा है।

विशेष विवरण : रचना का विषय ईश स्तुति/गुरु वंदना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों स्वास्ति श्री गणेशाय नमः उों नत्वा श्री भारती तीर्थ विद्यारण्य मुनीश्चरौ प्रत्यकत्व विवेकस्य क्रियते पददीपिका प्रादिभि तस्य ग्रंथस्या........

अंत : अत्रव शंकरा नंद पदद्वय समानाधिकरणे पन जीवन ब्रह्मणो रेक कत्व लक्षणे विषयः सूचितः जीवस्यभूम ब्रह्मम नूपतघापरिछित्र सुखा १

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1046** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : क्रिया रचना

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 32 X 15 स०म० लिखित 27 X 13 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 29

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। पृष्ठ काफी पुराना पड़ चुका है। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : द्वित्व विशिष्ट वचनेपि पूर्णे इवड भत इति रूपमा पद्येत तान्निवृत्त्गर्थ क्रिया वाचिग्रणं कर्त्तव्य मेवेतिनच वाच्यं सर्वादि..............

अंत : दिवोधा कांक्षायां पचत इत्यादि रूपस्यै वन्याय्पत्वात् भ्वादि ग्रहणं व्यर्थ मिति चेत्त देदमेवन्याय्यम् ।। 8 ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1047** संग्रह–(क) भाषा : देवनागरी

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : हङके कुता का उपाव

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 24 X 14 स०म० लिखित 15 X 12स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। जिसके लिए काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ पर दो यंत्र भी बनाए गये हैं। एक नज़र लगने का और दूसरा प्रीत का। पृष्ठ के दूसरी तरफ एक अन्य रचना है।

विशेष विवरण : रचना का विषय पागल हल्के कुत्ते के काटने के उपाय से सम्बन्धित है।

आरम्भ : मासा मोती मासा मूंगा मासा सौथ मासा भूरी पा मिरचा मासा मघा मासा फीम मासा सोरा मासा नसादर मासा फटकडी दी खिल मासा नीला थोथा मासा सावन मासा मलवी मासा लौग मासा कचमासा काला सुरला मासा चिटा सुरमा मासा मिसरी–खरी कूंजे दी अखां दी दारू ।

अंत : नुण जोगनी घापङ गीगी हाङ कुकरा जन कण भैकण सरीरी सिधका................
अतवार प्रसाद ब्रतावाण सुख होणे । चावल सर्ग तीन पाइ आटा गोली ३ पडणो ईकी बार २१ हङ के कुता का उपाव

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1047** संग्रह–(ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	संधि
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	13 X 11 स०म० लिखित 13 X 10 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। लिखाई बारीक है पर साफ–सुन्दर है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय व्याकरण से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	श्री गणेशाय नः नत्वासरस्वति दैवी सुद्ध गुरपांक रोन्यहं श्री गुरचरन कमलेम्यो नमः हा आ ता आ / 813/नी/स/मु/ता ता पू / अ/ प/ सु १६ संधि संज्ञा इको तस्मि ।
अंत	:	आङता दीर्घापदां ५६ इति हला विस/वारा । सस । अतो । हसि। भोमालोप । इसि । रोसु । अहन । रोरिहर्ला । किप्रये । रोतन । सोच १५ इति विसर संधिः ।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1048** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	ना.चं.टी.
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	109–111, 172 चित्र --
हाशिया	:	दोनों ओर काली स्याही के हाशिये
आकार	:	33 **X 112**स०म० लिखित 26 **X 13** स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		13
विवरण	:	अपूर्ण टंकित रचना जो पृष्ठ 109 से 111 तक चलती है फिर पृ0 172 उपलब्ध है। पृ0 172 की दस प्रतियां हैं पृ0 109 से 111 पर तो राम कथा प्रसंग है पृ0 172 पर भगवान की स्तुति है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय राम कथा एवं राम स्तुति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	त्मजं पुत्तंच पुनर्जातमिव मेने ६५ रूपोतितत: कोसलस्य देश विशेषस्मेशितु स्वामिनो दशरथस्य महिष्य: कौसल्याद्या: कृता भिषेका: स्त्रिय: रूपीशील कुलोपेता: स्नुषा: पुत्र वधु: प्रति गृह्यमुमुदिरे आननंदु: २६
अंत	:	श्री गुरुनानकस्य गुण्गणै राकृष्टचित्तेऽतेतत्प्रसादं प्रार्थयति परावरज्ञान निधिरिति पर: परमात्मा अवरंतत्कार्यतयोर्यज्ज्ञानं तस्य.........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1049** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : अज्ञात

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 2–6 चित्र --

हाशिया :

आकार : 28 X 14स०म० लिखित 23 X 9स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 10

विवरण : पांच पृष्ठों की अपूर्ण रचना जो पृष्ठ दो से छः तक चलती है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग हुआ है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मंत्र रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : प्रा नपंच ।। कअग्ने अग्ने चनिः फलं प्राप्तं कालेश्रृण सनयशोहानि ययंशंनाशं प्राप्तंच सर्वदा ।। उपरले विलवौ वित्तं विभ्रमः ।। पत्रिका चित्रं स्थितं ।। नहि जातिक दापित् विनाशवंतंच ।। दारुका आसने दरिद्रा स्यात् ।।

अंत : घटिका अमृत जन्मयं ।।५।। माता पिता महाशांति सपुत्र कुलदीपकं ।। दाता भुक्ताम महाश्भूरा भाव भक्ति महेश्वर ।। ६ ।। माता पिता...........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1050** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सूर्य कवच स्तोत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 12 X 13 स०म० लिखित 9 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : एक पृष्ठ की रचना है। लिखाई साफ–सुथरी है। लाल स्याही से लाइनें लगी हैं। रचना पूर्ण नहीं है।

विशेष विवरण : रचना स्तोत्र से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों अस्य श्री सवितासूर्यनारायण कवच स्रोत्र मंत्रस्य ब्रह्मात्रृषिः सूर्योदेवता । अनुष्टप छंदः घृणिरि तिवीजे.........

अंत : जिव्हां यातुतु जगन्नेत्रः कंठे पाठ विरोचनः स्कधौ ग्रहय........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1051** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	कमलनेत्र स्तोत्र
क्या हस्तलिखित/नक्ल है	:	हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय	:	
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	18 X 11 स०म० लिखित 15 X 8 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		9
विवरण	:	एक पृष्ठीय रचना। पृष्ठ काफी पुराना पड़ चुका है। रचना पूर्ण है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय स्रोत से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	तंत्रादि विस्मु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं श्री कृस्म केशव कृहम केशव कृहम जादोंपति केशवं श्री रामरघुवर राम रघुवर राम......
अंत	:	श्री वद्रिनाथ विश्वंभरं द्वारका के नाथ श्रीपति केशव प्रणमाम्यहं विस्मु अष्टपदी की पृनिविस्मुलोक सग छिते समाप्तं ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1052** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : व्याकरण सूत्र

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 20 X 12 स०म० लिखित 19 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 18

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। टेढी–टेढी पंक्तियां लिखी गई हैं। पृष्ठ के साथ थोड़ा सा फटा पृष्ठ भी जुड़ा है उसे भी लिखने हेतु प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय व्याकरण पर आधारित है।

आरम्भ : अं केशवे निमेनेत्रू आद्वारश्च पितामह ।।१ अर्थवोद च मण्डलया प्राशब्दः प्रकीर्तिताः१ उकार उच्यते कामो........

अंत : त्रदप्य सत्ण्याव छत एर्स्यनःदित्वे कातेत्पुरित्यार्दकिब संधि संभवात् ।। केचित्वेजानिया जांतः पावान् नियात एकाजनाङिति प्रगह्यत्वास्तु त प्रगृह्मा अचीति प्रकृति भावमाहं...........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1053** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक : श्री हर्ष

टीकाकार : –

शीर्षक : नैषध चरितम्

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 23 X 8 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 7

विवरण : एक पृष्ठ की अधूरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। लिखाई साफ सुथरी है।

विशेष विवरण : रचना का विषय नैषध चरित पर आधारित है।

आरम्भ : उों अथ धीन नैषधोपचरितं ।। प्रथम सर्गः निपोय यस्य क्षितिरक्षिणः कथा तथाद्रियन्ते नवधाः सूधामपि ।। नलः सितछत्रित कीर्त्तिमण्डलः.......

अंत : अधी तिवोधाचरण प्रचारणैर्दशाश्च तस्र प्रणय भुपा.......

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1054** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सर्वकार्य साधन यंत्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 19 X 12 स०म० लिखित 16 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 9

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। लिखाई साफ एवं सुन्दर है।

विशेष विवरण : रचना का विषय मंत्र रचना से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। अथसर्व कार्य साधन सर्वरोग शमन सव शत्रु साधस्यंत्र मंत्रच लिख्यते ।।

अंत : उों अः छः इछः रुछः रूछः एछः ओछः औछः अंछः अः छः छः । एरि मंत्रसे जप करिये । जही दिन........

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1055** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	नामत्व धातुव्यो
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	1 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	32 X 14 स०म० लिखित 28 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		30
विवरण	:	एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। पृष्ठ केदोनों ओर का प्रयोग करने के पश्चात् किनारों का प्रयोग भी लेखनार्थ किया गया है।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय धातु रचना से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	ननु नामत्व धातुत्व्योः परस्परं विरोधात्कथं सोमपाशन्दस्य धातुत्वं धातुत्वा भावेचाकार लोपाभावात्सोमपद्रव्यस्य कथं सिद्विःस्यात्........
अंत	:	इति ज्ञापनार्थे तेनदेवानित्यादौनस्य विसर्गोन ।। रमाङ ग्रहणं व्यर्थम् उच्यते अत्रङ ग्रहणं वर्णा मात्र विधौ ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1056** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : सूत्रेण पद संज्ञा

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 30 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 32

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण एवं अच्छी लिखाई की रचना।

विशेष विवरण : रचना का विषय प्रत्ययों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों तावदामश वृस्तत्रैको व्युत्यत्रियत एकश्चाव्युत्पतिपक्षः अव्युत्पाभ पक्षे अर्थवदधातर प्रत्ययइत्यनेन प्रतिपदिक संज्ञा।

अंत : सिद्ध लोपापादानेन दोषाद्घाटनमिति वाच्यम् पूर्वा त्रासिद्ध मितिपाणिनीय स्मरणात् ।।0।।

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1057** भाषा : संस्कृत
स्त्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–
शीर्षक	:	प्रिया वात्सल्य
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	पृष्ठों पर संख्या अंकित नहीं है पर अपूर्ण रचना के पांच पृष्ठ हैं। चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	33 X 16 स०म० लिखित 20 X 11 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियांः		12
विवरण	:	पांच पत्रों (पृष्ठों) की अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग हुआ है। महत्वपूर्ण स्थलों पर संतरी रंग लगाया है। रचना छंद संख्या 19 से उपलब्ध है और छंद संख्या 35 तक चलती है। छंद की संख्या दो पर दी गई है जैसे 18 नः छन्द के बाद पुनः 18 नः है फिर 19 फिर पुनः 19 नंबर तथा क्रमशः अंकित है
विशेष विवरण	:	रचना का विषय कृष्ण लीला से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	तछिनत्तिस्मयो वलः पूर्वया भक्ता रामावतारे लक्ष्मणरूपेण कृतया भक्ता परिखिन्न मनः सन कृहमाजूजः व भूव असोवलः वलभद्रः वःशो कंहरतु १७ सा रामानंवररोहा नगे......
अंत	:	श्रीकृष्मः तस्य प्रिया रुक्मणी अन्यत्र पूर्ववत् अन्ध्याजो जलंधरः तस्यारिः शिवः स्तस्यां कृत लेत्तत्संगेयरिजु वनलोचमानः अन्यत्र ध्यात्माजाल लक्ष्मीः ह्रकम्णी तस्या अर्य.....

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1058** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : वर्ण वसिष्ठ

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 30 X 13 स०म० लिखित 23 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 17

विवरण : अपूर्ण रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। तैंतीस छंदों तक रचना चलती है तत्पश्चात् अनुपलब्ध है।

विशेष विवरण : रचना का विषय उपनिषदों से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशायनमः त्रैलोकानाथ हरि भी इव मुदा रसत्वंशक्तेस्तवूजत नपं परियेष्टि कल्पं जीमूत मुक्त विमलांवर चारुवर्ण वसिष्ट मुग्त तप सप्रजतोस्मि तत्यं १

अंत : विषयाकृति रंजितधीगुण वद्धिययत्वमहं करण स्वतः ३३ विषय प्रकृति प्रतिपत्र वंती मतिवृति महं करणं चमतेः...........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1059** भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : नृसिंहहु दानके पुणहरे

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 21 X 7 स०म० लिखित 19 X 7 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 20

विवरण : एक पृष्ठीय पूर्ण रचना। जिसकी चौड़ाई–लम्बाई मात्र 7'' एवं 21'' है। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

विशेष विवरण : रचना का विषय नृसिंह पुराण से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों गजराज विराजत ही वनम वनतः जल कों जलपै जोचला अवजायधस्यो मधुसागरमः गहग्राह धस्यो नहि जातहला......

अंत : हरहनाकुश नाम एक दैत्य हुआ जाकपूता भया प्रह्लाद भला हरनाम उच्चर्ण को जधरयो सोतो............अवदेखत हुतेरि रामकला नृसिंह हुदानके पुणहरे ।। जके ।।8।। श्री ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1060** भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : शिव रहस्य पंचरात्र

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 25 X 13 स०म० लिखित 22 X 11 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 15

विवरण : एक पृष्ठीय रचना। रचनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। कुछ स्थानों पर स्याही फीकी पड़ चुकी है। लिखाई ठीक है। रचना समाप्त होने के पश्चात् एक अन्य पंक्ति दी गई है।

विशेष विवरण : रचना का विषय शिव स्तुति से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः । पार्वतिनुवाच ।। श्रुतं सर्वमयोदेव देवा नामो जगद्गुरु आगममि ममंचैच वीजावीजद्यंतथा १ समदायेन वीजानां मंत्रोमंत्र समाहिसाछंदोऋषिकल्पभेदो.........

अंत : इति श्री शिव रहस्ये पंचरात्रौयक्षेद्र संहीतायां इश्वर पार्वति संवादे शैव वैह्मवसोर शक्तिक गजेशातेषा सर्वमंत्रोत्किलन नाम समाप्त

हस्तलिखित क्रमांक	:	**PPS -1061** भाषा : संस्कृत
स्रोत	:	प्रो. प्रीतम सिंह
मूल्य	:	–
लेखक	:	
टीकाकार	:	–गोकल श्री आनंद पुरी
शीर्षक	:	एकोदिष्ट श्राद्धं
क्या हस्तलिखित/नक्ल है :		हस्तलिखित है
रचना के विषय का समय :		संवत् १६६३ कार्तिकमास – 10
रचनाकाल	:	–
रचना–स्थान	:	–
पृष्ठ	:	8–16 चित्र --
हाशिया	:	
आकार	:	22 X 13 स०म० लिखित 16 X 9 स०म०
प्रति पृष्ठ पंक्तियां:		11
विवरण	:	आठ पृष्ठों की अधूरी रचना। लेखनार्थ काली स्याही का प्रयोग किया गया है। पृष्ठ पुराने पड़ चुके हैं।
विशेष विवरण	:	रचना का विषय श्राद्ध पद्धति से सम्बन्धित है।
आरम्भ	:	चादाय उों अनग्नि दुग्धाये जीवाये प्रदग्धा कुलेममः भूमौदत्तेन तृष्यतु तृमांयां तु परांगतिं इति कृशोपरि अन्तविकटेत् ततः सष्यंकृत्वाचम्द हरि स्मृत्वा......
अंत	:	गोभ्यो नमः श्चवोवलम् ।। इति एकोदिष्ट श्राद्धं समाप्तम् ।। शुभं लिखितम् गोकुल श्री आनंद पुरीया शुभन संवत् १६४३ महीना कार्तिक प्र0 श्रुभम् ।।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1062** संग्रह (क) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गंगाचार्य संहिता गोलोक खंड

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1, 6, 30–45 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : खंडित प्रति । पृष्ठ एक के बाद छः और फिर 30 से 45 तक चलती है। लिखाई साफ एवं पठनीय है।

विशेष विवरण : रचना का विषय संवाद शैली में है। वेदों की संहिता पर आधारित है।

आरम्भ : उों श्री गणेशाय नमः ।। उों नारायणं नमस्कृत्य नरं चैवन नरोत्तमं देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत १ शर द्विकच पंकज श्रिय मती वचि..........

अंत : वकुलाश्व उवाच श्री कृस्मो भगवान्न्सावात् परमानंद विग्रहः अपरंचकारकिं चित्रं चरित्रं वदमे प्रभो ३३ पूर्वावतारैश्वरितं कृतंवैमंग...........

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1062** संग्रह (ख) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गंर्गाचार्य संहिता श्री मथुराखंड

क्या हस्तलिखित / नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 19–46 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियां: 11

विवरण : पूर्ववत् । अपूर्ण रचना ।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेद संहिता से सम्बन्धित मथुरा के महात्म्य पर आधारित है।

आरम्भ : गतः १ कंसस्य जन्म कर्माणि त्वयोत्कानिश्फतानिये केशपादी नात देवर्षे पूर्वजन्म कृतं श्रुभं २ कोयंत रजकः पूर्वमवधीयं हरिः कथं अहोयस्य महज्योतिः कृस्मिलीनंवभूवह २ नारद उवाच त्रेत्रायु..................

अंत : पादौचधिग्यौनुगतौ मयोर्वनं दृषोर्वनं दृषौचधिग्येन कदापि प्ष्यतः कर्णौ चधिग्धोट राउतो नमैथिल वाचं चधिग्यान करोत्पलंमनाक १६ द्विसप्तकोटी निवनानि यत्र तीर्था निवैदेहम ।

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1062** संग्रह (ग) भाषा : संस्कृत

स्त्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गर्ग संहिता वृंदावन खंड

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 36–40 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : पूर्ववत् । अपूर्ण रचना ।

विशेष विवरण : रचना का विषय वृंदावन के महात्म्य से सम्बन्धित है।

आरम्भ : श्री रागं चतथैवच ८ हिंडोलन जुगुः काश्चिद्ा तसप्त स्वरैसह काश्चिता सांत मुग्धाश्रकाश्रिन्मापा स्रियोनृप ६

अंत : रचिष्यति विहरांर्थ रोच सेद्यत्रत्वं स्वयं ३५ श्री राधोवाच हेमूढ पितरं स्तत्वामात रंमां विनिंदसि राक्ष..................

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1062** संग्रह (घ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : गंर्ग संहिता विष्वजीत खंड

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : संवत् १८६८

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 6–17, 46–48, 65–66,100 चित्र --

हाशिया :

आकार : 33 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : पूर्ववत् । अपूर्ण रचना। आरंभ नहीं, अंत है।

विशेष विवरण : रचना का विषय वेद संहिता से सम्बन्धित है।

आरम्भ : ज्योतिष्म तीतेषा वक्षां सिश्क्तवरुण नेत्रा स्फुरद धराचलङ्गर्भगा प्रोद्य द्रोषाग्निकर्णो छलच्छटामांय स्मारपरं क्रोध वकारते नस खंड मही............

अंत : समाप्तोयं विश्वजितखंड ।। अतः पंरवलभद्र खंडः भविष्यतिः संवत् १८६८ शुभमस्तु सर्वजगतां ।। रामःऽऽ रामःऽऽ रामऽऽ रामऽऽ रामःऽऽ रामचन्द्रायनमः

हस्तलिखित क्रमांक : **PPS -1062** संग्रह (ङ) भाषा : संस्कृत

स्रोत : प्रो. प्रीतम सिंह

मूल्य : –

लेखक :

टीकाकार : –

शीर्षक : श्री कृष्ण चरित (गर्गसंहिता)

क्या हस्तलिखित/नक्ल है : हस्तलिखित है

रचना के विषय का समय :

रचनाकाल : –

रचना–स्थान : –

पृष्ठ : 1 चित्र --

हाशिया :

आकार : 35 X 15 स०म० लिखित 25 X 10 स०म०

प्रति पृष्ठ पंक्तियांः 11

विवरण : पूर्ववत् अपूर्ण

विशेष विवरण : रचना का विषय गर्गसंहिता कृष्णचरित से सम्बन्धित है।

आरम्भ : उों नमो भगवते वासुदेवाय उों नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय साक्षिणे प्रद्युस्त्रायानिरुद्वायनमः संकर्षणायच १

अंत : महासंभृत संभारै र्हिमाद्रैः पार्श्वउत्तरे संवर्तमुनि र्ष्शादूलं गुरु कृत्वाह्म दीक्षित ६ पंच योजर्नव...............